श्रीमद्विजयानन्दसूरीश्वरचरणारविन्दाभ्यां नमः ।

जैनेतरदृष्टिए जैन.

अथवा

जैनेतर अनेक मध्यस्थ विद्वानोना जैनधर्म संबन्धि अभिप्रायो

संग्राहक—

जैनाचार्य-न्यायाम्भोनिधि-श्रीमद्विजयानन्दसूरीश्वर (अपरनाम श्रीमदात्मारामजी महाराज) ना लघु शिष्य मुनिश्री अमरविजयजी महाराज

छपावी प्रसिद्ध करनार—

शा. डाह्याभाई दलपतभाई.

मु. भरुच (गुजरात)

वीर संवत् २४४१ } प्रथमावृत्ति { आत्म संवत २०

विक्रम संवत १९७१ } प्रत ३००० { सन् १९२३

वडोदरा

लुहाणामित्र स्टीम प्रि प्रेसमां विठ्ठलभाइ आशाराम ठक्करे

प्रकाशक माटे छाप्यु ता ५-११-१९२३

जैनाचार्य-न्यायांभोनिधि-श्रीमद् विजयानन्दसूरीश्वरजीना सुशिष्य

दक्षिणविहारी-श्री अमरविजयजी महाराज

જન્મ સંવત ૧૯૩૫ ના ફાલ્ગુણ શુદિ ૧૫

દીક્ષા સંવત ૧૯૬૮ ના વૈશાખ શુદિ ૨

થિનોરવાસી શા ગુલાબચંદ શિવલાલભાઇએ પોતાની સ્વ
સધર્મચારિણીના શ્રેયાર્થે તથા ગુરૂભક્તિ નિમિત્ત આ
ફોટો દાખલ કરાવ્યો છે

दक्षिणविहारिसद्गुरुवर्य श्रीमदमरविजयमुनिपुङ्गव

गुणस्तुत्यष्टकम्.

" मन्दाक्रान्तावृत्तम् "

श्रेयोलक्ष्मीं विमलहृदयाऽयोद योऽभूदलक्ष्यो
योऽगाढाऽर्हत्समयजलधिं बुद्धिनावा गभीरम् ।
यस्माऽगूढेन्द्रियभरमरं यो व्यपादापवर्गान्
सोऽयं दद्यादमरविजयः सद्गुरुर्मङ्गलं नः ॥१॥
औभीद्भिर्वं विमलयशसा पाथसेवाऽम्बुवाहो
योऽधर्षिष्ट प्रचुरतपसा तेजसेवोष्णरश्मिम् ।
यस्याऽचर्तीत् समयमनघं मूर्त्तिमिद्धिप्रधानं
सोऽयं दद्यादमरविजयः सद्गुरुः सद्गतिं नः ॥२॥
और्णावीद्योऽयगुणनियहं शुद्धचेताः परेषां
नैषाऽक्षामीत् प्रतिदिनमरं चाऽक्रमीद्धर्चनां यः ।
धर्म्ये कार्येऽयसदमलधीरक्षुभन्नो खलोक्त्या
सोऽयं दिश्यादमरविजयः सद्गुरुः सन्मतिं नः ॥३॥
अस्खालीद्यो भवजलनिधिं बाडवार्चिर्वदुग्रं
योऽगोपायीत् स्वनिकरमरं पापकर्मप्रयान्तम् ।
यस्माऽद्रामीद्भविजनगणस्वान्तमहोऽयज्निसम्
सोऽयं छिन्द्यादमरविजयः सद्गुरुर्नोऽघजालं ॥४॥

अस्थापिष्टाऽमलगुणगणै शीतरोचिर्वरेण्यै
र्योऽवर्त्तिष्टाऽऽर्हतपथि सदा मुक्तये योऽस्थरिष्ट।
यश्चाऽभाक्षीत् स्मररिपुबल शीलसन्नाहशाली
सोऽय कुर्यादमरविजय सद्गुरुर्न सुखानि ॥५॥

अस्याक्षीद्यो गृहमघभिदे जैनदीक्षामयाक्षीद्
भक्त्याऽभाक्षीत् सुगुरुविजयानन्दसूरिक्रमाब्जम्।
तानध्याभीज्जिनमतरहस्यानि गूढार्थभाञ्जि
सोऽय तन्यादमरविजय सद्गुरुर्न प्रबोधम् ।६॥

श्रामण्य योऽदित हितमति योऽधित प्राणिवर्ग
यो नाऽखित्ताऽऽपदि सुबहुतोऽभित्त योऽन्तर्द्विपश्च।
पाप्माऽहार्षीद् घनमसुमता यो व्यहार्षीद्धरित्र्या
सोऽय भिन्द्यादमरविजय सद्गुरुर्नोऽन्तरारीन् ॥७।

विश्व विश्व विमलयशसा योऽस्नपिष्टाऽस्मरीष्टा
ऽन्तर्हृद्दैन्य सुमतिमनिश योऽवरीष्ट प्रशामम्।
योऽद्राप्सीच्चो निजगुणगणैर्नाऽकुपत् कर्हि कस्मै
सोऽय पुष्यादमरविजय सद्गुरु सम्पद न ॥८॥

इत्थ स्फूर्जत्सुगुरुचरणाम्भोजभृङ्गायमानो
भक्त्या नुन्नश्चतुरविजयश्चेतसि प्रस्फुरन्त्या।
दुष्कर्मौघक्षितिधरपवि तद्गुणग्राममेन
स्वश्रेयोऽर्थं स्तुतिपथमनैष यथाशक्त्यशक्त ॥९॥

॥ प्रस्तावना ॥

ॐ श्री स्याद्वादिने नम ।

प्रिय वाचको ! लोकोने बोध थवाना हेतुथी आ पुस्तकमा लेखोनो संग्रह करवामा आव्या छे, दुनीया "शातिनो" मार्ग दूंढे छे पण बीजा जीवोनु अहित करीने जो पोते शाति मेळववा चाहतो होय तो त कवल भ्रातिमय छे कदाच पूर्व पुण्यना मबल सयोगोथी वर्त्तमानकालमा विघ्न देखी शकतो न होय, पण परभवमा तो त पापनु प्रायश्चित भोगव्या विना छुटको थायज नहीं, एम सर्व धर्मना शास्त्रो पोकारी पोकारीने कही रह्या छे माटे पोताना आत्माने आ भवमा तेमज परभवमा शातिमय बनाववानी इच्छा होय तेवा महापुरुषोने कोई नि स्वार्थी महापुरुषोनो कहेलो, सर्व जीवोना हितवालो, तत्त्वस्वरूपमय, सत्य धर्म होय ते मेळववानी खास जरुर छे

जुवो के पूर्वकालमा केटलाक महापुरुषोने तेवा "हिंसक" मार्गना प्रपचथी तिरस्कार पण थयेलो जोवामा आवे छे, तेथी ते हिंसक प्रवृत्तिओने छोडी दई पोते भक्तिमार्गना अथवा

निवृत्तिमार्गनां रागोने प्रगट करी तेओए लोकोने ते तरफ दोरेला छे पण ते मुख्य पुरुषोनो अभाव थया पछी तेमना अनुयायीओने ते हिंसक लोकोए पोतानी चालती हिंसक प्रवृत्तिनी प्रथामां भेळसेळ करी दीधा छे, पण ते भक्तिमार्गमां के निवृत्तिमार्गमां शुद्धपणे रहेवा दीधा नथी. हिंसक प्रवृत्तिमां मळेला पापो करीथी हिंसक रूप तामसी कोटडीमांथी निकळवा पाम्या नहीं तेवा हेतुथी अनेक प्रकारनी मागणीओ पण करी मुकेली छे, जेमके "स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः" पुनः "हस्तिना ताड्यमानोऽपि न गच्छेज्जैनमंदिरं" इत्यादि अनेक प्रकारथी एवा क्रमाव्या छे के जेथी अज्ञानता कोई पण प्रकारथी सत्यधर्मना आश्रय मेळवी शके नहीं. वळी जोता स्वार्थीलोकोए सत्यधर्मथी वंचित राखी केवळ स्वार्थ साधवाना मार्गने आ प्रथा रचेली होय एम लागे छे, परंतु आ अग्रजोना राज्यमां ते वाग्जाळनु मान स्वभावथीज ओछु थतु जाय छे ए पण एक समयनीज बलिहारी छे ॥ हवे आपणे विचार करवानो ए छे के, जे धर्मथी पोतानु अने बीजा जीवोनुं सर्व प्रकारथी हित समायेलु होय, अने ते धर्म निःस्वार्थी एवा पूर्णतत्त्वज्ञानीना मुखथी प्रगट थयेलो होय, अने ते सत्यधर्म प्राचीन काळथी चालतो आवतो होय, तेवा

सत्य धर्मनो आश्रय मेळवीए तो जरूर आपणे आपणा आत्माने आ भवना तेमज परभवना जोखममा पडतो बचावी शकीए

हवे ते प्राचीनकाळथी चाल्यो आवेलो खरो सत्यधर्म कयो हशे ? अने तेमा केवा केवा प्रकारना तत्त्वो समायेला हशे ! विगेरे विचारो कोइ ताहित मध्यस्थ पुरुषोनी दृष्टिथी विचारीये तो जरूर सत्यासत्यनो निर्णय करी शकीये ते सत्यासत्यनो निर्णय क्यारे करी शकीये के ज्यारे आपणा दुराग्रहने छोडी दइ, माध्यस्थपणानी बुद्धिथी पुख्तपणे विचार करीये तो, अवश्य आपणा आत्माने अधोमार्गमा पडताने रोकी सत्य-धर्म उपर चडावी शकीए, ए शिवाय बीजो कोइ पण सुगम रस्तो जोवामा आवतो नथी ॥

सत्यधर्मना मार्गने शोधवानो उपाय ए छे के—धर्म ने प्रकारना हेतुथी चाल्यो आवलो होय छे—एक धर्म अल्पज्ञोथी प्रवर्त्तमान स्वार्थसाधक, अने बीजो सर्वज्ञोथी प्रवर्त्तमान परमार्थ-पोषक जो के स्वार्थ साधक धर्ममा परमार्थनी वातो न होय तो तेने कोइ पण मान आपे नहीं, माटे तेमा परमार्थनी वातो प्रसगने अनुसरीने लीधेली तो होयज पण ज्यारे बारीक

जूवो के धर्मनो विषय अगाध छे तेमज प्रपत्री पथो पण घणा छे, छता पण हिंदुओना धर्मानो विचार करी जोतां १ वैदिक २ जैन अने ३ बौद्ध ए त्रण धर्मोज घणा प्राचीनकालथी विस्तारपणे चालता आवला नजरे पडे छे तेमज तेमना तत्त्व-ग्रथोनो विस्तार पण जाणवा जेवोज होय छे बाकीना पथो ते त्रणे धर्मोमाथी किंचित् किंचित पोतानें मन गमता विचारोने ग्रहण करी प्रसिद्ध थयेला छे एम जणाइ आवे छे

प्रथम अमोए कह्यु हतु के-एक धर्म स्वार्थसाधक अने बीजो धर्म " परमार्थपोषक " तो हवे एनो सामान्यपणे विचार करी जोता–इद्रियोनाज सुखन माटे तेमज धन, पुत्र, कलत्रादिक ऐहिक सुखना माटे तेमज परलोकमा राज्यादिक सपदा मेलववा अथवा इद्रादिकनी पदवी मेलववाने माटे मुख्यपणे शास्त्रोनु बधारण थयेलु होय, ते धर्मशास्त्रने स्वार्थसाधक तरीके मानवामां हरकत आवे नहीं अने इद्रियोना विषयनी सुख प्रवृत्तिथी पोताना आत्माने हटाववाने माटे, तेमज धन पुत्रादिकना मोहथी विरक्त थइ आत्मतत्त्व मेलववानी प्रवृत्ति थवाने माटे, जे शास्त्रोनी रचना थएली होय, ते शास्त्रो " परमार्थपोषक " धर्म तरीकेनाज मनाय कारण के–सर्व कर्मोथी

मुक्त थयेज आत्माने दुःखनो अंत आववानार छे, एम हिंदु-
ज्ञानना तत्त्ववेत्ताओने कबूल करवु पडे छे

तो हवे विशेष विचार करवानो एटलोज के ते कर्मवस्तु शु
हशे ? अने दुनियामा उचामा उचा सत्य तत्त्वोनो विचार कोणे
कर्यो हशे ! अने ते तत्त्वो आज सुधी पूर्ण प्रसिद्धिमा आव्या
केम नहीं होय ! तेनु कारण जोता एज मालूम पडे छे के प्राचीन
कालमा मतांधतानुंज प्राबल्य वधारे होवु जोइए, अने ते
कारणथीज–बौद्धोने आपणा हिंदुस्थानमाथी हाकी मुकवामा
आव्या हता मात्र जैनधर्मवालीओ उपरज तटल्ो अत्याचार
करवा शक्तिमान थया न हता विचार करी जोता ए सिद्ध
थाय छे के–प्राचीनकालमा जैनधर्मना त वोथी अने बौद्ध
धर्मना तत्त्वोथी आगळ वधी शके एवो बीजो वर्ग
ख्याती धरावतो न हतो ते कारणने लीधेज पुराणोवाळाओने
बौद्धने पण नवमा " अवताररूप " कल्पवानी जरुर पडी हती,
जो के बौद्धधर्म तो हिंदुस्थानमाथी विदायज थएलो हतो मात्र
विशेष तत्त्वोनो प्रकाशक जे जैनधर्म हतो ते पण अनुकू-
ळताना अभाव दबाएलो रह्यो

ं तो पण जैनोना मूलतत्त्वोमा आज सुधी कोइ पण

प्रकारनो विकार थवा पाम्यो नथी, ए निर्विवाद सिद्ध छे ते केवल सर्वज्ञ पुरुषोनी वाणीनीज खुबी छे

वर्त्तमानकाळमा मध्यस्थ देशी तेमज परदेशी जैनधर्मना अभ्यासीओ, जनोना सुनिश्चित सत्य तत्त्वोने एकी अवाजे स्वीकारे छे, ते आ नवा जमानामा लोकोने आश्चर्य कर्या शिवाय रहेशे नहीं

कारण वेकालमा वैदिकधर्मी तथा ब्राह्मणधर्मी अनेक आग्रही पण्डितोना तरफथी जैनधर्मना मूलतत्त्वो उपर जूठा अने तद्दन अविचारित आक्षेपो सिवाय योग्य न्याय मळ्यो न होतो, तेमानो एकज आक्षेप आ प्रसगे टाकी बतावु तो भारी पडतो नहीं गणाय जुओ के–ब्रह्मसूत्रना प्रणेता वेदव्यास महर्षि "नैकस्मिन्नसभवात्" आ सूत्रमा जैनधर्मनु खडन बीजरूपे लखी गएला, पछी तेना भाष्यकार अवतारिक अने सर्वज्ञ बिरुदना धारक श्री आद्यशकरस्वामीजी जैनोना स्याद्वादन्यायनु विस्तारथी खण्डन करेलु, पण ते योग्य करेलु नथी, जुओ महा-महोपाध्याय प० गगनाथ एम ए डी एल एल इलाहाबाद-वाळा लखे छे के–" जबसे मैंने शकराचार्यद्वारा' जैनसिद्धात पर

खंडनको पढा है तबसे मुझे विश्वास हुआ कि—इस सिद्धान्तमें बहुत कुछ है, जिसको वेदान्तके आचार्यने नहीं समझा और जो कुछ अभी तक मैं जैनधर्मको जान सका हूं उससे मेरा यह विश्वास दृढ हुआ है कि, यदि वह जैनधर्मको उसके असली ग्रन्थोसे देखनका कष्ट उठाता तो, उनको जैनधर्मसे विरोध करनेकी कोई बात नहीं मिलती "

एज प्रमाणे वैष्णवाचार्य श्रीराममिश्रशास्त्रीजी पण लखे छे, जुओ आज पुस्तकना प्रथम भागना पृ ९६ थी "जैन दर्शन वेदान्तादि दर्शनोंसे भी पूर्वका है तब ही तो भगवान् वेदव्यास महर्षि ब्रह्मसूत्रमें कहते हैं ' नैकस्मिन्नसंभवात् ' ××× वेदोंमें अनेकान्तवादका मूल मिलता है " तथा पृ १०७ थी वारा कालकवर पण जणावे छे के—" जैनतत्त्वज्ञानमा स्याद्वादनो बराबर शो अर्थ छे ते जाणवानो दावो हुं करी शकतो नथी, पण हु मानु छु के " स्याद्वाद " मानवबुद्धिनु एकागीपणुज सूचित करे छ " इत्यादि

वळी पृ ११० थी आनन्दशकर बापुभाई ध्रुव पण लखे छे के—। शंकराचार्ये स्याद्वाद उपर जे आक्षेप कर्यो छे ते मूल रहस्यनी साथ सबन्ध राखतो नथी " इत्यादि

तथा बीजा भागना पृ ९० मा युरोपियन विद्वान् डॉ परटोल्ड लखे छे के " स्याद्वादनुज " एक वर्तमान पद्धतिनुज स्वरूप जुओ एटले बस छे धर्मना विचारोमा " जैनधर्म " ए एक नि सशयपणे परमहदराळो छे " इत्यादि

आ ठेकाणे विचार करवानो ए छे के–वदोना प्रवर्तक मनाता श्रीवेदव्यासमहर्षि तेमज सर्वज्ञ अने अवतारिक पुरुष गणाता श्रीशकराचार्यस्वामीजी जेवा पण सर्व पदार्थोनो सुलभ रीते बोध करावनार एक सामान्य जैनोनो " स्याद्वादन्याय " न समजी शक्या तो पछी त वखतना बीजा पण्डितो जैनोना तत्त्वोने समजेला हशे एम केवी रीते मानी शकाय ?

अमो तो एज कहिए छीए के–वर्तमानकालना आ तत्त्वन शोधक पण्डितो जे नि पक्षपणानी बुद्धिथी जैनोमा रहेला महत्त्वना तत्त्वोने जोई शक्या छे, त पूर्वेना मोटा मोटा पडितो पण पोताना दुराग्रहन वश थएला, जैनोना एक पण महत्त्वना तत्त्वने जाणी शक्याज नथी

आ विषयने वधारे न लबावता विशेष एज जणावु छु के

इन्हीं पवित्र महान् पुरुषोंके जीवनमें अमलीसूरत इख्तियार करती हुई नजर आती है

ये दुनियाके जबरदस्त रिफोर्मेर, जबरदस्त उपकारी और बडे ऊचे दर्जेके उपदेशक और प्रचारक गुजरे है । यह हमारी कौमी तवारिख (इतिहास) के कीमती (बहु मूल्य) रत्न है । तुम कहा और किसमें धर्मात्मा प्राणीओंकी खोज करते हो ? इन्हीं को देखो, इनसे बेहतर (उत्तम) साहबे कमाल तुमको और कहा मिलेंगे ? । इनमें त्याग था, इनमें वैराग्य था, इनमें धर्मका कमाउ था, यह इन्सानी कमजोरियों से बहुतही उंचे थे, इनका खिताब " जिन " है जिन्होंने मोहमायाको जीत लिया था, यह तीर्थंकर हैं, इनमें बनावट नहीं थी जो बातथी साफ साफथी ये वह लासानी (अनौपम) शख्सीयतें हो गुजरी हैं जिनको जिसमानी कमजोरियों व ऐबोंके छिपानेके लिये किसी जाहिरी पोशाककी जरूरत लाईक नहीं हुई क्योंकि उन्होंने तप करके जप करके

---

१ बहि अमल करनेवाली मूर्त्तियां ॥ २ महापुरुषो ॥

३ मानव तरिकेकी कमजोरीयांसे ।

४ बेशक ।

योगका साधन करके अपने आपको मुकम्मिल और पूर्ण बना लिया था" इत्यादि ॥

२ वळी—मि० कन्नुलाल जोधपुरी माह डिसेम्बर सन् १९०६ अने जान्युवारी सन् १९०९ The Theosophist (धी थिओसोफिस्ट) पत्रना अंकमा लखे छे के—" जैन धर्म " एक ऐसा प्राचीन धर्म है कि—जिसकी उत्पत्ति तथा इतिहासका पत्ता लगाना एक बहुत ही दुर्लभ बात है । इत्यादि

३ जर्मनीना—डॉ० जोहनस हर्टेल ता १७ । ६ । १९०८ ना पत्रमा कहे छे के—" मैं अपने देशवासियोंको दिखाउंगा कि—कैसे उत्तम नियम, और ऊंचे विचार, जैनधर्म और जैनआचार्योंमें है जैनका साहित्य बौद्धों से बहुत बढ कर है और ज्यों ज्यों मैं जैन धर्म और उसके साहित्यको समझता हुं त्यों त्यों मैं उनको अधिक पसंद करता हूं " ॥ इत्यादि

४ पेरिस (फ्रांसनी राजधानी) ना डॉ० ए० गिरनाट पोताना पत्र—ता० ३-१२-१९११ मा लखे छे के—"मनुष्योंकी तरक्कीके लिये जैनधर्मका चारित्र बहुत लाभकारी हैं, यह धर्म

---

२ यथायपणे परम स्वरूपको ।

बहुत ही असली स्वतन्त्र सादा बहुत मूल्यवान् तथा ब्राह्मणोंके मतोंसे भिन्न है तथा यह बौद्धके समान नास्तिक नहीं है "
इत्यादि ॥

५ श्रीयुत वरदाकांत मुख्योपाध्याय एम० ए० बंगाली श्रीयुत नथुराम प्रेमीद्वारा अनुवादित हिंदी लेखथी—

"१ जैनधर्म हिंदुधर्मसे सर्वथा स्वतन्त्र है उसकी शाखा या रूपांतर नहीं है

२ पार्श्वनाथजी जैनधर्मके आदि प्रचारक नहीं था, परंतु इसका प्रथम प्रचार ऋषभदेवजीने किया था इसकी पुष्टिके प्रमाणोंका अभाव नहीं है

३ बौद्धलोग महावीरजीको निग्रंथोंका (जैनियोंका) नायक मात्र कहते है स्थापक नहीं कहते है " इत्यादि

६ श्रीयुत तुकारामकृष्ण शर्मा लट्टु बी ए पी एच डी एम आर ए एस एम ए एस बी एम जी ओ एस प्रोफेसर—संस्कृत शिलालेखादिकना विषयना अध्यापक क्विन्स कॉलेज बनारस काशीना दशम वार्षिकोत्सव उपर आपला व्याख्यानमांथी—" सबसे पहले इस भारतवर्षमें ऋषभदेव नामके महर्षि उत्पन्न हुए, वे दयावान् , भद्रपरिणामी, पहिले

तीर्थंकर हुए जिन्होंने मिथ्यात्वअवस्थाको देखकर—सम्यगदर्शन, सम्यगज्ञान, और सम्यगचारित्ररूपी मोक्षशास्त्रका उपदेश किया बस यहही जिनदर्शन इस कल्पमे हुआ, इसके पश्चात् अजित नाथसे लेकर महावीर तक तेईस तीर्थंकर अपने अपने समयमे अज्ञानीजीवोंका मोहअन्धकार नाश करते रहे "

७ साहित्यरत्न डॉ **रवीन्द्रनाथ** टागोर कहे के— " महावीरने डींडीम नादसे हिंदमे ऐसा सदेसा फैलाया कि—धर्म यह मात्र सामाजिक रूढि नही है, परतु वास्तविक सत्य है, मोक्ष यह बाहरी क्रियाकाड पालनेसे नही मिलता परतु सत्य-धर्म स्वरूपमे आश्रय लेनेस ही मिलता है और धर्म और मनुष्यमे कोई स्थाई भेद नहीं रह सकता कहते आश्चर्य पेदा होता है कि—इस शिक्षाने समाजके हृदयमे जड करके बैठी हुई भावना-रूपी विघ्नोंको त्वरासे भेद दिये और देशको वशीभूत कर लिया इसके पश्चात् बहुत समय तक इन क्षत्रिय उपदेशकोंके प्रभावबलसे ब्राह्मणोंकी सत्ता अभिभूत हो गईथी " इत्यादि

८ नेपालचद्रराय अधिष्ठाता ब्रह्मचर्य्याश्रम शातिनिकेतन बोलपुरवाला कहे छे के—" मुझको जैन तीर्थंकरोंकी शिक्षा पर अतिशय भक्ति है " इत्यादि—

९ मुहम्मद हाफिज सय्यद बी ए एल टी थीयोसोफिकल हाईस्कूल कानपुरवाला लखे छे के—" मैं जैनसिद्धातके सूक्ष्मतत्त्वोंसे गहरा प्रेम करता हू " इत्यादि

१० एम डी पांडे थियोसोफिकल सोसायटी बनारस लखे छे के—" मुझे जैनसिद्धातका बहुत शौख है, क्योंकि कैर्मसिद्धातका इसमें सूक्ष्मतासे वर्णन किया गया है "

११ श्री स्वामी विरूपाक्ष वडियर—धर्मभूषण, ' पंडित, ' वेन्तीर्थ ' ' विद्यानिधि ' एम ए प्रोफेसर सस्कृतकॉलेज इन्दौर स्टेट, एमनो " जैनधर्म मीमांसा " नामनो लेख चित्रमयजगत्मा छपायेल छे तेमा लख्यु छे के—

१ "ईर्षा द्वेषके कारण धर्म प्रचारको रोकनेवाली विपत्तिके रहते हुए जैनशासन कभी पराजित न होकर सर्वत्र विजयी ही होता रहा हैं इस प्रकार जिसका वर्णन है वह " अर्हन् देव " साक्षात् परमेश्वर (विष्णुस्वरूप) है, इसके प्रमाणभी आर्यग्रन्थोंमें पाये जाते है

---

१ अनिर्वचनीया माया कह करकेभी वदांतिओ अनिर्णीतपणे लिखते रहे वही परिस्फुट सूक्ष्मवस्तुरूप कर्मसिद्धात जैनोमें लाखो श्लोकोंमें लिखा गया हैं ।। सग्राहक ।।

२ उपरोक्त अर्हत परमेश्वरका वर्णन वेदोंमेंभी पाया जाता है

३ एक बगाली बैरिष्टरे " प्रेकटिकल पाथ " नामक ग्रन्थ बनावेल छे तेमा एक स्थान उपर लख्यु छे के—" ऋषभदेवका नाती मरीची प्रकृतिवादी था और वेद उसके तत्त्वानुसार होनेके कारण ही ऋगवद आदि ग्रन्थोंकी ख्याति उसीके ज्ञानद्वारा हुई हैं फळत मरीची ऋषिके स्तोत्र, वेद पुराण आदि ग्रन्थोमे है यदि स्थान स्थान पर जैनतीर्थकरोंका उल्लेख पाया जाता है तो कोई कारण नही कि हम वैदिककालमें जैनधर्मका अस्तित्व न मानें

४ साराश यह है कि इन सब प्रमाणोंसे जैनधर्मका उल्लेख हिंदुओंके पूज्य वेदमेंभी मिलता है

५ इस प्रकार वेदोंमें जैनधर्मका अस्तित्व सिद्ध करनवाले बहुतसे मत्र है वडके सिवाय अन्य ग्रन्थोंमेभी जैनधर्मके प्रति सहानुभूति प्रगट करनेवाले उल्लेख पाये जाते है स्वामीजीने इस लेखमें वेद, शिवपुराणादिके कइ स्थानों के मूल श्लोक देकर उस पर व्याख्या भी की है

६ पीछेसे जब ब्राह्मणलोगोंने यज्ञ आदिमे बलिदान कर " मा हिंस्यात् सर्वभूतानि " वाले वेदवाक्य पर हरताल फेरदी

उस समय जैनियोंने उन हिंसामय यज्ञ यागादिका उच्छेद करना आरभ किया था वस तभीसें ब्राह्मणोंके चित्तमे जैनोंके प्रति द्वेष बढ़ने लगा परतु फिरभी भागवतादि महापुराणोंमें ऋषभदेवके विषयमे गौरवयुक्त उल्लेख मिल रहा है इत्यादि " ॥

१२ अम्बजाक्ष सरकार एम ए बी एल लिखित " जैनदर्शन जैनधर्म " जैनहितैषी भाग १२ अक ९ १० मा छपावल छे तेमा लख्यु छे के—

१ "यह अच्छी तरह प्रमाणित हो चुका है कि जैनधर्म बौद्धधर्मकी शाखा नहीं है उन्होंने केवल प्राचीनधर्मका प्रचार किया हैं

२ जैनदर्शनमें जीवनतत्त्वकी जैसी विस्तृत आलोचना है वैसी और किसीभी दर्शनमें नहीं हे इत्यादि "

१३ तथा श्रीयुत महामहोपाध्याय डॉक्टर सतीशचन्द्र विद्याभूषण एम ए पी एच डी एफ आई आर एस सिद्धान्तमहोदधि प्रीन्सीपाल सस्कृतकॉलेज कलकत्ता, एमणे ता २६ डिसम्बर सन् १९१३ काशी (बनारस) नगरमा जैनधर्मना विषयमा व्याख्यान आपेल तेमा कहे छे के—" जैन-साधु एक प्रशसनीय जीवन व्यतीत करनेके द्वारा पूर्णरीतिसे

व्रत, नियम और इंद्रियसंयमका पालन करता हुआ जगत् के सम्मुख आत्मसंयमका एक बडाही उत्तम आदर्श प्रस्तुत करताहै। प्राकृत भाषा अपने संपूर्ण मधुमय सौन्दर्यको लिए हुए जैनियोंकी रचनामेंही प्रगट की गई है" इत्यादि

१४ मि आबे जे ए डुबाई Di cription of the character Manners and Customs of the people of India and of their institution and ciril (डिस्क्रीप्शन ऑफ धी केरेक्टर मेनर्स एन्ड कस्टम्स ऑफ धी पीपल ऑफ इन्डिया एन्ड ऑफ धेर इन्स्टीट्युशन-एन्ड सीरील) आ नामना पुस्तकमा जे सन् १८१७ मा लंडनमा छपाएल छे, तेमा ऐमणे जैनधर्मने घणोज प्राचीन जणावेल छे, अने जैनोना चार वेद १ प्रथमानुयोग, चरणानुयोग, करणानुयोग अने द्रव्यानुयोग ने आदीश्वर भगवाने रच्या एम कह्यु छे अने आदीश्वरने जैनीओमा घणा प्राचीन अने प्रसिद्ध पुरुष जैनिओना २४ तीर्थंकरोमा सहुथी पहेला थयेला जणाव्या छे.

---

१५ वळी रा रा वासुदेव गोविन्द आपटे बी ए इन्दोर निवासी एक वखतना व्याख्यानमा लखे छे के–

१ " प्राचीनकालमे जैनिओने उत्कृष्ट पराक्रम वा राज्य-भार* का परिचालन किया है

२ जैनधर्ममें अहिंसा का तत्त्व अत्यन्त श्रेष्ठ है

३ जैनधर्ममें यतिधर्म अत्यन्त उत्कृष्ट है–इसमें सन्देह नही

४ जैनियोमें स्त्रियोको भी यतिदीक्षा लेकर परोपकारी कृत्योमें जन्म व्यतीत करने की आज्ञा है वह सर्वोत्कृष्ट है

६ हमारे हाथसे जीवहिंसा न होने पावे इसके लिए जैनी जितने डरते है इतने बौद्ध नहीं डरते ।

बौद्धधर्मदेशोमे मांसाहार अधिकतामे जारी है । आप स्वतः हिंसा न करके दूसरेके द्वारा मारे हुए बकरे आदिका मांस खानेमे कुछ हर्ज नहीं ऐसे सुभीतेका अहिंसा तत्त्व जो बौद्धोने निकालाथा वह जैनियोको सर्वथा स्वीकार नहीं है

७ जैनिओंकी एक समय हिंदुस्थानमे बहुत उन्नतावस्था थी

---

* प्राचीनकालमे चक्रवर्ती, महामंडलीक, मंडलीक आदि बडे बडे पदाधिकारी जैनधर्मी हुए है जैनिओंके परमपूज्य २४ सौं तीर्थंकर भी सूर्यवंशी चन्द्रवंशी आदि क्षत्रियकुलोत्पन्न बडे बड राज्याधिकारी हुए जिनकी साक्षी जैनग्रंथो तथा किसी किसी अजैनशास्त्रों व इतिहास ग्रन्थोमे भी मिलती है

धर्म, नीति, राजकार्यधुरन्धरता, शास्त्रदान, समानोन्नति आदि बातोंमे उनका समाज इतरजनोंसे बहुत आगे था. "

१६ रायबहादुर पूर्णेन्दु नारायणसिंह एम. ए बाकीपुर वाला लखे छे के-" जैनधर्म पढनेकी मेरी हार्दिक इच्छा है, क्यों की मे खयाल करताहु कि व्यवहारिक योगाभ्यासके लिये यह साहित्य सबसे प्राचीन (Oldest) है. यह वेदकी रीति रिवाजोसे पृथक् है इसमे हिन्दुधर्मसे पूर्वकी आत्मिकस्वतन्त्रता विद्यमान है, जिसको परमपुरुषोंने अनुभव व प्रकाश किया है यह समय हे कि हम इसके विषयमे अधिक जाने "

१७ टी पी कुप्पु स्वामी शास्त्री एम ए. एसिस्टेन्ट गवर्नमेंट मुझियम तजोरना एक अग्रेजी लेखनो अनुवाद जैनहितैषी भाग १० अक २ मा छपाएल छे तेमा जणाव्यु छे के—
१ " तीर्थंकर जिनसे जैनियोंके विख्यात सिद्धातोका प्रचार हूआ हे वह आर्य क्षत्रिय थे.

२ जनी अवैदिक भारतीय आर्यो का एक विभाग है "

सूचना—अमाए ए १७ लेखोनो उद्धार मुन्सी केशरीमल मोतीलाल रांका-अर्जीनवीस-ब्यावरवालाए छपावेला पुस्तकपरथी करेल छे माटे जिज्ञासुओए ते मगावी जोइ लेवु

हये आ पुस्तकमांना केटलाक हिंदी अने गूजराती लेखोनो टुकमां तेज भाषामां सार आपीए छीए—

१ "जैनधर्म विषये बे शब्दो" नामना पोताना पहेला लेखमा वासुदेव नरहर उपाध्ये लखे छे के–आर्यलोकोना जूदा जूदा वशोमा स्तोत्रो गवाता ते स्तोत्रोनो समह करीने कर्मकाड योज्यू ते कर्मोमा विधिओ प्रार्थनाओ नांखवाथी कर्मकांड वधतु गयू मुख्य चार सहिताओ थई तेनु समिश्रण करवाथी अग्निष्टोमादियाग तैयार थया ते एटला वधा वधी गयां के खेतरमा बीज वाववु होय के तेमाथी घास काढवो होय तो करो याग छेवट कोई कोई यज्ञविधिमा तो कपाटी उठे तेवा दुष्ट कर्म थया तेथी मासना ढगले ढगला देखावा लाग्या आ, हिंसाप्रधान यागादि कर्मकाड बिलकुल निरर्थक छे एमां पुरुषार्थ बिल्कुल नथी, एम ते वखतना घणा विद्वानोना समजवामा आव्यु, पण समाजमा घणा दिवसथी घूसेली दुष्ट बाबतोनो नाश करवानी इच्छा धराव नाराओमां अलौकिक धैर्य, ज्ञान, अने पोताना स्वार्थनो भोग आपवानी जरुर होय छे

इंद्रिय दमन करवु एज पुरुषार्थ छे एम माननारा प्रथम जे लोको हता ते जैन हता हालआपणा आचारो विचारो जोता तेमा

बौद्धोए अने जैनोए अमारा भारतीओ उपर घणी क्रियाओ करीने बनावी छे, ए निर्विवादरीते सिद्ध थाय छे खिस्ती धर्मोपदेशकोमां जे व्रत देखाय छे, अने तत्पथियलोको जेनु मोटु मान धरावे छे, ते तमाम व्रतो घणा प्राचीन कालमा जैनधर्मीओमा हता, एम मानवाने अमोने घणा प्रमाणो मल्या छे जैनयतिओ पोताना धर्मनो प्रचार करवामा घणु चातुर्य वापरता, जैनधर्मना ग्रथोनु सूक्ष्मावलोकन करवा लागीए तो काइ जूदीज हकीकतो नजरे पडे छे, हालना जनसमूहमा-जैन अने बौद्ध विषे मोटी गेरसमजूतीओ थएली छे हिंदुस्थानमा लाखो करोडो लोको वैदिक धर्म करता एने बिल्कुल जूदो माने छे, जैनधर्मीओना मदिरोनी ठठ्ठा निभर्त्सना करे छे घणा स्मृतिग्रथोमा, शास्त्रग्रथोमा, अने टीकाग्रथोमा, वेदबाह्य माने छे जैनग्रथोनु सूक्ष्मावलोकन करी जोता जैनधर्म ए जूदो नथी पण उपनिषत्कालीन, अने ज्ञानकाडकालीन, महान् महान् ऋषिओना जे उत्तमोत्तम मतो हता, ते सर्वे एकत्र करीने बनावेलो धर्म होय एम देखाई आवे छे जैनधर्मनु प्रथमनु स्वरूप कहीए तो विशुद्ध छे एटले **वैदिकधर्म तेज जैनधर्म छे.** जैनकाव्योमा जैनपडितोना वर्णनोमा तेओ चारे वेदोमा निपुण

हता एवा वर्णनो मली आव छे, कुमारील भट्ट विगेरे मोटा मोटा पुरुषोए, जैनधर्मीओनो नाश करी, वैदिकधर्मनी पुन स्थापना करी, आ बाबतमा सामान्यलोकोना मतमा अने अमारा मतमा तफावत छे ते कहीए छीए कडकडीत तीव्र वैराग्यादिना आचरणोथी, स्वार्थत्यागथी, अने अनेक सद्गुणोनो फेरफार करी लोकोने सन्मार्ग तरफ झूकावा जे साहित्य निर्माण कर्यू, अने वैदिक धर्मानुयायीमा रहेला प्राचीन चित्तशुद्धि, सदाचरण, चारित्र्य विषयोना सबधमा आपणा 'हृदयने हरी लेनारा, अने तल्लीन करीनेज छोडी मुकनारा साहित्यथी, विषयरसमा तन्मय थई गयेलाओने–मात्र श्रवणथीज ठेकाणे लावनार, जे विचार प्रचलित करेलो, तेनो नाश कुमारिल भट्ट विगेरेना हाथथी बिलकुल थएल्लोज नथी भारतीयलोकाना जे आचार विचार अने धर्म सस्थाओ छे तेओमा जैनधम सस्था अने विचार मली गयेला छे शिवाय कुमारिल भट्टादिकोए जनोनी साथे ठेकठेकाणे वादविवाद करी पराभव कर्यो, विगेरे जे दतकथाओ छे, तेनु तेटलु स्वरूप नही, होइन दयानदसरस्वतीना खडन प्रमाणे–तेमा लटपट अने ग्राम्यव्यवहार विशेष देखाय छे, भारतीय लोकोमा गेरसमजूतीओ थवाने जूदा जूदा कारणो पण थया हता, परतु

जैनधर्मनु अने बौद्धधर्मनु आद्यस्वरूप तपासी जोईशु तो विशुद्ध वैदिक तेज जैन अने बौद्ध धर्म छे एम जणाशे जैन अने बौद्ध ए बिषे जे अनेक कारणोथी विरुद्ध मवाद उत्पन्न थयो ते हवे भूली जईने जे धर्म हालना हिंदुधर्ममा विलीन थई गयेलो छे ते धर्मना ग्रथो तरफ हालना विद्वानो कटाक्ष अनुकपानी बुद्धिथीज जोशे तो तेओने अत्यत आनद उत्पन्न थशे, हालना जगतमाना प्रचलित धर्मो तथा बौद्ध अने जैनधर्मो एनो जेवो जेवो सबध तेओनी नजरमा आवतो जशे तेम तेम आ नवीन मळेली विलक्षण रत्नोनी अगाध खाण देखीने तेओनु मन आनदसागरमा तल्लीन थई जशे एटलुज आ ठेकाणे कहेवु बस छे

इति वासुदेव न० उपाध्येना पहेला लेखनो सार ॥

---

२ उपाध्येजीना बीजा लेखनो सार नीचे मुजब—

घणा पंडितो साशक लेखो लखता रह्या छे, एम करवाने बिल्कुल कारण नथी कारण जैनग्रथोनी योग्यता जोता तेना उपर अणविश्वास राखवाने बिलकुल कारण जणातु नथी साधारणपणे सस्कृतभाषाना ग्रथो प्राचीन होय छे जैनधर्मना ग्रथो

तेनाथी पण प्राचीन छे बौद्धना ग्रथो निर्विवादपणे साधन मनाय छे, त्यारे बौद्धना ग्रथो करता विशेष करी उत्तरीय बौद्ध ग्रथो करता **जैनग्रथोनु** धोरण घणुज जुदु जणाय छे **जैनधर्मना ग्रथोनी** जे वास्तविक योग्यता छे तेनु तेवा प्रकारनु स्वरूप लोकाना समक्ष मुकवु अगत्यनु छे

ए सबधी शोधखोळ करता जनधर्मना सस्थापक छेल्ला तीर्थकर **"महावीर"** नामनी खरेखर कोइ व्यक्ति नथी पण जैनधर्मना अनुयायीओमानी आ एक व्यक्ति छे तेनु निराकरण सयुक्तिक थई शके तेवी माहीती उपलब्ध थई छे आ प्रमाणे अनेक युक्ति प्रयुक्ति बतावी **जैनधर्मना नायक महावीरनी** अने बौद्धधर्मना नायक **गौतमनी** सर्वथा प्रकारथी भिन्नता बतावी अतमा लख्यु छे के **महावीरना** चरित्रनु विवेचन करवानु कारण एटलुज के **जैनधर्मनी** उत्पत्ति बुद्ध धर्ममाथी न होईने बिल्कुल स्वतत्र छे एनो निकाल करती वखते उपयोगी थशे, इत्यादि कहीने-प्रोफेसर वेबरनो बौद्धनी शाखा तरीकेनो मत, अनेक प्रमाणोथी अयोग्य थएलो जणाव्यो छे प्रो० **लेसने** पण जैनो करता बौद्धने प्राचीन ठरावता प्रमाणो आप्या छे ते योग्य थएला नथी—जेम के प्रथम तीर्थकरोनी पूजाविधि, बौद्ध पासेथी जनोए

लीवी ते योग्य नथी, पण ते विधि बन्नेनी स्वतन्त्र छे एम मानवु युक्तियुक्त बताव्यु छे

कालनी गणना विषे जैनोज अधिक छे बौद्धो करता अने ब्राह्मणो करता एक नवीनज योजना काढेली छे ते **बौद्धोना** चार मोटा अने ऐंशी नाहना कल्पोमाथी पण काढी शकाय तेम नथी तेमज ब्राह्मणोना कल्पोमाथी अने युगोमाथी पण काढी शकाय तेम नथी जैनोनी उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी महादेवनी रात्रि दिवसथी निकली होवी जोईए, एम अनुमान करीने बताव्यु छे

आगल जाता जैन अने बौद्ध यतिओना आचार विचार उपर अनुमान चलावता—जैन अने बौद्ध ब्राह्मणधर्ममाथी निकल्या हशे ? पण जैनधर्म बौद्ध धर्ममाथी निकल्यो एम कहेवाने बिल्कुल कारण मलतु नथी जुवो के हिंदुतत्त्वज्ञानमा ज्ञाननी सपूर्ण अवस्था सुधीना जुदा जुदा पगथीया मानेला छे, पण ए विषे जैनोनो मत स्वतन्त्र छे, तेओनी परिभाषा ब्राह्मणो करता, अने बौद्धो करता बिल्कुल जुदीज छे जैनोना मत प्रमाणे **यथार्थ** ज्ञानना पाच प्रकार छे ते आ प्रकारे—

१ मतिज्ञान, २ श्रुतज्ञान, ३ अवधिज्ञान, ४ मन-पर्ययज्ञान, अने ५ कैवल्यज्ञान, एवा प्रकारनु साम्यदर्शावनारु वर्णन

बौद्धोना अध्यात्मग्रन्थोमा कई पण देखातु नथी आगळ जता जैन अने बौद्धोना केटलाक विचारो ब्राह्मणोनी साथे मळता छे ते बताव्या छे जेमके—पूर्वजन्म, पूर्वजन्मना करेला कर्म, इत्यादि पुन जैनोना तीर्थंकरो चोवीश, तो बौद्धोना पचीश, आमा पण चोवीशनी कल्पनाज प्राचीन ठरावी जैनोन प्राचीन ठराव्या छे

आम उपर जणाव्या प्रमाणे केटलीक वातो जैनधर्मवाळानी बौद्धोथी अने ब्राह्मणोथी सरखी छे केटलीक जैनोनी स्वतन्त्र बतावी छेवटमा निकाल करता जणाववामा आव्यु छे के जैनधर्म ए बौद्ध धर्ममाथी निकळेलो नथी तेनो उद्भव स्वतन्त्र होवाथी बौद्धधर्ममाथी विशेष लीधु पण नथी बौद्ध अने जैन ए बन्ने ओए पण पोतानो—धर्म, नीति, शास्त्र, तत्त्वज्ञान अने सृष्टिनी उत्पत्तिनी कल्पनाओ विगेरे' बधो प्रकार ब्राह्मणो पासेथी विशेष करी सन्यासीओ पासेथी लीधेलो छे, अहीं सुधी जे विवचन करवामा आव्यु हतु ते जैनलोकोना पवित्र ग्रंथोमा लखेली दतकथाओ विगेरेने प्रमाण मानीने कर्यु हतु

बार्थ साहेबनो मत एवो हतो के—जैनोनो पण केटलाक सैकाओ सुधी क्षुद्र अवस्थामा होवाने लीधे, पोताना धर्मग्रथो लखेला नहीं होवा जोईए. विगेरे दलीलो यथार्थ नथी, एटलुज

न हतु पण जैनलोको प्राचीनकाले पण क्षुद्र न होइने, पोताना धर्ममतो विषे केवळ उपर उपरनी कल्पनाओ करनारा करता, विशेष होशीयारज हता, ए निर्विवाद सिद्ध थाय छे

जैनोमा जे अग ग्रथो छे ते पूर्वेना हता, श्वेतांवर अने डिगंबर ए बन्ने पोताना ग्रथोना माटे कहे छे के– पूर्वना ग्रथोनु ज्ञान जता जता बिल्कुल चाल्यु गयु जो के नवा मतो प्राचीन ग्रथो लुप्त थवानु बहानु घणे ठेकाणे बनावे छे परतु जैनग्रथो माटे एम मानवानु कारण नथी पूर्व एटले पेहला उपलब्ध थएला ग्रंथो, एम मानवु विशेष योग्य लागे छे एकदर रीते जैनधर्मनो उद्भव, अने विकाश, बीजाथी न थता स्वतत्र छे एम सारी रीते सिद्ध थाय छे "

॥ इति उपाध्येजीना बीजा लेखनो सार सपूर्ण ॥

---
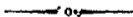
२ लेख त्रीजो पृ ७८ थी–योगजीवानदपरमहसे जनाचार्य श्रीआत्मारामजी महाराजा उपर लखेला पत्रनो सार–" महात्मन् ? व्याकरणादि नाना शास्त्रोंके अध्ययनाऽध्यापनद्वारा–वेदमत गलेमें बाध में अनेक राजा प्रजाके सभा विजय कर देखा, व्यर्थ मगज मारना है एक जैनशिष्यके हाथ

दो पुस्तक देखा, वो लेख इतना सत्य, वो निःपक्षपाती, मुझे दिख पडा कि–मानो एक जगत् छोडके दूसरे जगत्में आन खडे हो गये आबाल्यकाउ ७० वर्षमें जो कुछ अध्ययन करा, वो वैदिकधर्म बाधे फिरा सो व्यर्थमा मालूम होने लगा प्राचीन धर्म, परमधर्म, सत्यधम, रहा हो तो जैनधर्म था जिमकी प्रभा नाश करनेको वैदिकधर्म, वो षट्शास्त्र यो भयकार खडे भये थे 'वैदिक बातें वही वो लीई गई सो सब जनशास्त्रोंसे नमूना इकठी करी है इसमें सदेह नहीं " ॥

॥ इति निजा लेखनो टुक सार ॥

---

४ पृ ८२ थी–राममिश्र शास्त्रीजीना व्याख्याननो सार–

" जैनमत सृष्टिकी आदिसे बराबर अविच्छिन्न चला आया है

आजकल अनेक अल्पदामन बौद्धमत और जैनमतको एक जानते है यह महाभ्रम है

बडे बडे नामी आचार्योंने अपने ग्रंथोमे जो जैनमतका खडन किया है, वह ऐमा किया है कि देखकर हासी आती है

एक दिन वह था कि–जैनसप्रदायके आचार्योंके हूकारसे दशों दिशाए गूज उठतीथी

मरी मनल्सिमे—मुझे यह कहना सत्यक कारण अवश्य हुवा है कि जैनोंका ग्रथसमुदाय सारस्वत महासागर है उस्की ग्रथसख्या इतनी अधिक है कि—उन ग्रथोंका सूचिपत्रभी एक महानिबध हो जायगा और उस पुस्तकसमुदायका—लेख, और लेख्य, कैसा गभीर, युक्तिपूर्ण, भावपूरित, विशद, और अगाध है—इसके विषयमे इतनाही कहना उचित हैकि जिनोंने सारस्वत समुद्रमे अपने मतिमथानको डाल कर चिरान्डोलन किया है वेही जानते है

जनदर्शन वेदातादिदर्शनोंसे भी पूर्वका है तब ही तो भगवान् वेदव्यास महर्षि ब्रह्मसूत्रमे कहते है 'नैकस्मिन्नऽसभवात्'

वेदव्यासके समय पर जनमत था तब तो खडनार्थ उद्योग किया गया. यदि नहीं था तो खडन कैसा और किसका ?

वेदोंमे अनेकातवादका मूल मिलता है, वेदाताकिदर्शन-शास्त्रोका और जनादिदर्शनोंका, कौन मूल है यह कह कर सुनाता हू—उच्चश्रेणिके बुद्धिमान् लोगोके मानसनिगूढ विचार ही दर्शन है जैसे अजातवाद, विवर्तवाद, दृष्टिसृष्टिवाद, परिणाम-

वाद, आत्मवाद, शुन्यवाद, आदि दार्शनिकोंके निगूढ विचार ही दर्शन है, तब तो कहना ही होगा कि सृष्टिकी आदिसें जनमत प्रचलित है

सज्जनो ? अनेकांतवाद तो एक ऐसी चिज हैं उसे सबको मानना होगा और लोकोंने मानाभी है- देखिये-" सदऽसद्भ्यामनिर्वचनीय जगत् " कहनाही होगा किसी प्रकारसें सत् होकर भी वह किसी प्रकारसें असत् है तो अब अनेकांत मानना ही सिद्ध हो गया नैयायिक-तम को तेजोऽभाव स्वरूप कहते है वह्मानिक जोरसोरसे खंडन करते है जैनसिद्धांत-किसी प्रकारसे भावरूप कहते है, और किसी प्रकारसें अभावरूप भी कहते हे, तो अब दोनोकी लडाईमें जैनसिद्धांतही सिद्ध हो गया क्योंकि दोनो सच नही, परंतु जैनसिद्धांत ही सच है

इसी रीतिपर कोई कोई आत्माको ज्ञानस्वरूप कहते है, और कोई ज्ञानाधार स्वरूप बोलते है, तब तो कहना ही क्या जैनोंका अनेकांतवादही पाया गया

इसी रितीपर कोई ज्ञानको द्रव्यस्वरूप मानते है तो कोई वादी-गुणस्वरूप मानते है

कोई जगत्को भावस्वरूप कहते है, तो कोई शून्यस्वरूप बतलाते है, तब तो अनेकान्तवाद अनायाससे सिद्ध हो गया

कोई कहते है घटादि द्रव्य है, और उनमे रूप, स्पर्शादि गुण है । दूसरा वादी कहता है कि, द्रव्य कोई चीज नहीं है, वह तो गुणसमुदाय रूप है

कोई कहता है कि आकाश नामक शब्दजनक एक निरवयव द्रव्य है, अन्यवादी कहता है कि वह तो शून्य है कोई वादी कहता है कि, गुरुत्व गुण है, दूसरा कहता है कि, गुरुत्व कोई चीज ही नही है, पृथ्वीमें जो आकर्षण शक्ति है उसे गुरुत्वनामक गुण माना है

मित हित वाक्य पथ्य है, उसीमें ज्ञान होता है, वाग्जालका कोई प्रयोजन नही है " इत्यादि ॥

---

९ पृष्ट १०१ थी लोकमान्य तिलकना उद्गारो—"पूर्वकालमें यज्ञके लिए असख्य पशुहिंसा होतीथी इसमे प्रमाण मेघदूतादिक अनेक ग्रन्थोसे मिलते है रतिदेव नामक राजाने यज्ञमें इतना प्रचुर वध किया था कि नदीका जल खूनसे रक्तवर्ण होगया, उन

नदीका नाम चर्मवती प्रसिद्ध है ब्राह्मण और हिंदुधर्ममें मांसभक्षण और मदिरापान बंद हो गया यह भी जैनधर्मका प्रताप है महावीर स्वामीका अहिंसाधर्मही ब्राह्मणधर्मम मान्य हो गया " इत्यादि ॥

---

६ १ १०२ थी—काका कालेलकरना लेखनो सार—विहार-भूमीना प्रवासना वखते महावीर भगवाननी कैवल्यभूमीनामना लेखमा पोते लखे छे के "जनोनी मूर्तिओज ध्याननें माटे होवी जोइए, चित्तने एकाग्र करवानी शक्ति ए मूर्तिओमा जरर छे, पावापुरीमा महावीरनु निर्वाणस्मरण कराव छे के आ ससारनु परम रहस्य, जीवननो सार, मोक्षनु पाथेय, तेमना मुखारविंदमाथी ज्यारे वरतु हशे त्यारे ते साम्भळवा कोण कोण बेठा हशे ? पोतानो देह हव पडनार छे एम जाणी प्रसन्न, गभीर उपदेश करी अधी छेल्ली घडीओ काममा लई लेनार ते परमतपस्वीनु छेरलु दर्शन कोणे कर्यु हशे ? तमनो उपदेश—दृष्टिने पण अगोचर एवा सूक्ष्मजतुथी माडीने अनतकोटी ब्रह्माड सुधी सर्व वस्तुमात्रनु कल्याण चाहनार ते अहिंसामूर्तिनु ' हार्द ' कोणे ग्रहण कर्यु हशे ? माणस अल्पज्ञ छे, तेनी दृष्टि एकदेशी सकुचित

संपूर्णज्ञान विनानी छे, माणसनु सत्य एकागी छे, तेथी बीजाना ज्ञानने वखोडवानो हक नथी तेम करता अधर्म थाय छे, एम कही मानवबुद्धिने नम्रता शिखवनार ते परमगुरुने ते दिवसे कोणे वन्दन कर्युं हशे ? । आ शिष्यो पोतानो उपदेश आखी दुनियाने पहोंचाडशे, अने ते मानवजातिने सपमा आवशे, एवो ख्याल ते पुण्यपुरुषना मनमा आव्यो हशे खरो ?

जगतत्त्वज्ञानमा स्याद्वादवादनो बराबर शो अर्थ छे, ते जाणवानो हु दावो करी शकतो नथी, पण हु मानु छु के—"स्याद्वाद" मानवबुद्धिनु एकागीपणुज सूचित करे छे अमुक-दृष्टिए जोता बीजी रीते देखाय छे । जन्मांधो जेम हाथीने तपासे तेवी आपणी दुनियानी स्थिति छे आ वर्णन यथार्थ नथी एम कोण कही शके ? आपणी आवी स्थिति छे, एटलु जेने गळे उतर्युं तेने आ जगत्मा यथार्थज्ञानी माणसनु ज्ञान एक-पक्षी छे, एटलु जे समज्यो तेने सर्वज्ञ वास्तविक संपूर्ण सत्य जे कोई जाणतो हशे, ते परमात्माने आपणे हजु ओळखी शक्या नथी आ ज्ञानमाथीज अहिंसा उद्भवती छे सर्वज्ञ सिवा बीजा उपर अधिकार न चलावी शकाय पोतानु सत्य पोताना पूरतुज बीजाने तेनो साक्षात्कार न थाय त्या सुधी धीरज राखवी

एवी वृत्ति तेज अहिंसावृत्ति आखी दुनिया शांतिने खोळे छे, अने दुनिया आहे आही फरीने पोकारे छे, छतां तेने शांतिनो रस्तो जडतो नथी विहारनी आ पवित्रभूमिमां शांतिनो मार्ग क्यारनो नक्की थइ चुक्यो छे, पण दुनियाने त स्वीकारता हजु वार छे दुनीया ज्यारे निर्विकार थशे, त्यारेज महावीरनु अवतारकृत्य पूर्णताने पामशे " इत्यादि ॥

७ पृ० ११० थी—आनंदशंकर बापुभाइ ध्रुवना उद्गारो—
"स्याद्वाद एकीकरणनु दृष्टिबिंदु अमारी सामे उपस्थित करे छे शंकराचार्ये—स्याद्वाद उपर जे आक्षेप कर्यो छे ते मूलरहस्यनी साथे संबंध राखतो नथी। ए निश्चय छे के—विविध दृष्टिबिंदुद्वारा निरीक्षण कर्या वगर, कोई वस्तु संपूर्णस्वरूपे समजवामां आवी शके नहीं "स्याद्वाद" संशयवाद नथी, पण विश्वनु केवी रीते अवलोकन करवु जोइए ए अमने शिखवे छे "

८ पुन पृ० ११२ थी—जेम आधुनिक तटस्थ पंडितोना जैनधर्मना तत्त्वो जोवाथी—वेदवेदांतादिक एकांत पक्षना वि-

चारो फरता जाय छे तेम प्राचीनकालमा पण घणा पंडितोना विचारो फरेला छे तेनु कारण जैनोना पूर्वापर विरोधरहित अगाध तत्त्वोनीज खुबी छे जुओ के–सिद्धसेनसूरि, धनपाल पंडित, हरिभद्रसूरि ए त्रणे ब्राह्मण पंडितोज हता जैनधर्मना तत्त्वोने समज्या पछी जेवी रीते आ आधुनिक पंडितोए पोताना अभिप्रायो प्रगट कर्या छे तेवी रीते ते पंडितो पण एज कही गया छे के–हे वीतराग भगवान् जे जे उत्तम तत्त्वो बीजा मतवालाओमा देखाय छे, ते ते जैनधर्मना तत्त्वसमुद्रमाथी निकलीने बहार पडेला बिंदुरूपेज देखाय छे एम निश्चयपूर्वक सिद्ध छे ॥

---

९ पृ १२२ थी–हेमचंद्रसूरिजीना लेखनो सार–एमणे वीतरागनी स्तुति करता कह्यु छे के–हे भगवन्! वेद वेदांतना मतवालाना शास्त्रो एकांतपक्षवाला, अने तमारां शास्त्रो–अनेकांतपक्षवाला एटलु ज नही पण तेमना शास्त्रो–हिंसाना उपदेशथी मिश्रित थएला, अने तमारां सर्वजीवोना हितना उपदेशवाला बीजा मतना आचार्योए सरल भावे काइ अयुक्तपणे कहेलु हशे, पण तेमना शिष्य परिवारे तो काइनु काइ उलटुज करीने बह्यु छे पण तमारा शासनमां ए बनाव बनवा पाम्यो नथी तेमा तो ए

तमारा शासनना यथारणनीज खूबी छे बीजाना मतोमा पूर्वापर विरोध, अयथार्थपणु, अने देवोना चरित्रो पण निंद्यपणायी शास्त्रोनु बधारण थएलु छे पण हे भगवन् तमारा शास्त्रोमा एम बन्यु नथी एज तमारा शासननी अलौकिक खूबी छे हे भगवन्! तारी मूर्त्ति वीतरागी छे, अने तेमना देवोनी मूर्त्तिओ पण विकृतिवाळीओ छे उता पण तेओ विचार नथी करी शकता पण अमो बधाए मतवादिओना सन्मुख पोकार करीने कहीए छीये के—वीतरागी मूर्त्ति जेवी बीजा काई पण देवनी मूर्त्ति ध्यान करवाने योग्य नथी तेमन सर्वपदार्थोना स्वरूपनु यथार्थज्ञान मेलववा माटे अनेकातना मार्ग जेवो (स्याद्वादमार्ग जेवो) बीजो कोई पण न्यायमार्ग, दूनियामा छेज नहीं एम जे अमो कहीये छीये ते श्रद्धामात्रथी केहता नथी, पण परीक्षापूर्वक निःपक्षपातपणायी कहीए छीए

॥ इति रैससग्रहे प्रथमभागनी प्रस्तावना ॥

हव भाग बीजानी प्रस्तावना

डॉ० हर्मन जेकाबी—जैनसूत्रोनी प्रस्तावनाना प्रथम भागमा लखे छे के—अत्यार सुधीनी चर्चा, ज्योनी परंपरागत कथाओनी प्रमाणिकताउपरज चालेली छे तेथी

विद्वान् मी यार्थना–अभिप्राय मुजब, जैनोनी साम्प्रदायिक परं-पराओ बौद्धोना अनुकरणरूपे उपजावी काढेली छे मी यार्थनी दलील ए छे के–जैन घणी शदीओ सुधी एक नानो सप्रदाय हतो हु पुछु छु के–थोडा अनुयायीओ वडे, पोताना मौलिक सिद्धातो अने परपराओ सुरक्षित राखी शके छे के, जे धर्मने एक मोटा जनसमूहनी धार्मिक जरूरीआतो पूरी पाडवानी होय ते ? जैनोने पोताना सिद्धातनु एटलु बधु स्पष्ट ज्ञान हतु के, न जेवी बाबतमा मतभेद करावनारने, पोताना विशाल समुदायमाथी जुदा करी दीधा हता आना प्रमाणमा–डॉ० ल्युमने प्रकट करेली सात निन्हवोनी परपरा छे आ सघली हकीकतो उपरथी सिद्ध थाय छे के, जैनोनी सूक्ष्ममा सूक्ष्म मान्यता पण सुनिश्चित स्वरूपवाली हती जेवी रीते जनोना धार्मिक सिद्धातो सिद्ध थई शके छे, तेवीज रीते ऐतिहासिक बाबतो पण सिद्ध थई शके तेवी छे जो के दरेक सप्रदायने–पोतानो सप्रदाय, आप्त पुरुषथी उतरी आवेलो छे–एम बतावबाने गुरुपरपराना नामो उपजावी काढवानी जरुर पडे छे परतु कल्पसूत्रमा–स्थविरो, गणो, अने शाखानी नामावली छे, ते कल्पी काढवामा जनोने कोइ पण प्रकारनु प्रयोजन होय तेम हू मानी शकतो नथी आटलु सिद्ध

करी बतावबाथी ए सिद्ध थाय छे के जैनो तेमना आगमोनुं स्वरूप नक्की थया पेहला पण–पोतानो धर्म, सम्प्रदाय, तेमज अन्यदर्शनीयसिद्धांतोना समिश्रण थोने उत्पन्न थती अव्यवस्थाथी, तेने बचावी सुरक्षित राखवा माटे, योग्य गुणसंपन्न हता जे जे बाबत करी शकवानु सामर्थ्य हतु, ते सघलु तेमणे सपूर्ण रीते कर्यु हतु। आ चर्चा उपरथी जैनसाहित्यना कालनी चर्चा उपर आवी जइए छे

जैनसिद्धांत वीरनिर्वाण पछी ९८० (अथवा ९९३) मा देवर्द्धिगणिना अध्यक्षपणा नीचे निश्चित करवामा आव्यो हतो तेनी पहेला–तेओ शिखवनी वखते लिखितग्रंथोनो उपयोग करता नहोता आ हकिकत तद्दन साची छे एनो भावार्थ मानी शकाय के–सर्वथा नज लखता होय ब्राह्मणोनी माफक जैनोनु एवु मानवु तो हतुज नही क, लिखितपुस्तको अविश्राम्य छे ज्या सुधी जैनयतिओ भ्रमणशील जीवन गुजारता त्या सुधी तेमन लागु पडे तेवु छे इत्यादि ॥

हवे आपणे जैनोना पवित्र आगमोनी रचनाना समय-विषयक विचार करीए, संपूर्ण आगमशास्त्र प्रथमतीर्थंकरनुज प्ररूपेलु छे–ए जातना जैनोना विचारनु निराकरण करवा खातरज,

हू अहीं सूचन करू छु के–सिद्धांतना मुख्य ग्रंथोनो समय नक्की करवा माटे आना करता वधारे सारा प्रमाणो एकत्र करवा जोइए ग्रीकनु ज्योतिषशास्त्र ई स नी त्रीजी, अगर चोथी, शताब्दिमा हिंदुस्थानमा दाखल थयू हतु ते समय पहेला जैनोना पवित्र आगमो रचाया हता बीजू प्रमाण तेनी भाषाविषयक छे. तेमा अनेक तर्क वितर्कना अंते–ई स नी शरुआत पहेला रचाएला मानवा जोइए, एम कही छेवट–ई स पूर्वे त्रीजी शताब्दीना प्रथम भागमा स्थिर करीए तो ते खोटु नहीं गणाय. तथापि एक बाबत अहीं ध्यानमा लेवा लायक छे ते ए छे के–श्वेतांबरो अने दिगंबरो ए बन्नेनु कहेवु ए छे के–अंगो शिवाय पहेलाना कालमा तेनाथी वधारे प्राचीन एवा चौद पूर्वो हता, ते पूर्वोनु ज्ञान–नष्ट थतु थतु सर्वथा नष्ट थइ गयू आवा प्रकारनी प्राचीन परंपरा मानी लेवामा घणी सावचेती राखवानी जरूर छे. परंतु प्रस्तुत बाबतमा (प्राचीन परंपरानी सत्यताना विषयमां) शंका करवाने कोई कारण जणातु नथी पूर्वोनु ज्ञान व्युच्छिन्न थतु चाल्यु हतु, एवी जे हकिकत छे ते तद्दन वास्तविक छे अमो-ए एवो खुलासो करेलो छे के–पूर्वो ते सौथी प्राचीन ग्रंथो हता, ते पछी तेनु स्थान नवा सिद्धांते लीधु हतु, ते युक्तिसंगत छे.

आवी रीते प्राचीन सिद्धांतनो त्याग करवामा शु प्रयोजन हशे ? आ विषयमा कल्पना शिवाय अन्य कोई गति नथी

आ उपरात ए पण एक वात ध्यानमा राखवानी छे के, महावीर कोई एक नवा धर्मना सस्थापक न हता, परतु जेम म सिद्ध करेलु छे के, तेओ एक प्राचीन धर्मना सुधारक मात्र हता जैनधर्म ए स्वतत्रपणेज उत्पन्न थयो छे परतु कोई अन्यधर्मनी अने खास करीने बौद्धधर्मनी शाखारूपे बिल्कुल प्रवर्तेलो नथी

पृ ३० थी–डॉ० हर्मन जेकोबीनी जैनसूत्रो परनी प्रस्तावनाना बीजा भागनो सार—

जैनसूत्रोना मारा भाषान्तरना प्रथमभागने प्रकट थए दश वर्ष थया ते दरम्यान–प्रो० ल्युमन, प्रो० हॉर्नल, टोमस 'बुल्हर, डॉ फुहरर, एम ए बार्थ,' मि लेवीस राइस, आदि यूरोपीयन आक विद्वानोद्वारा जैनसूत्रोना भाषातर शिलालेखो विगेरे बहार पडवाथी, जैनधर्म अने तेना इतिहास विषयक आपणा ज्ञानमा घणा महत्वनो वधारो थयो छे हवे आन कल्पनाओ–आ विषयमा केटलाक जाणवा रहेने

अरी कटाक्ष विवादगस्त मुद्दाओ नुं स्पष्टीकरण करवा इच्छु छु

जेओ जैन अथवा आर्हतना नामथी प्रसिद्ध छे, तेओ ज्यारे बौद्धधर्म स्थपाइ रह्यो हतो, त्यारे एक महत्वशाली सम्प्रदाय तरीके क्यारनाए प्रसिद्ध थइ चुक्या हता आ विषयनी सिद्धिमा बौद्धनाज प्राचीनमा प्राचीन गणाता १ अगुत्तरनिकाय, २ महावग्ग, ३ दीघनिकाय, ४ बुद्धघोषनी टीका आदि अनेक ग्रंथोना उदाहरणो आपी, सर्व प्रकारथी सिद्ध करीने बताव्यु छे जेमके बौद्धग्रंथोमा लख्यु छे के 'नातपुत्त–सर्वज्ञान अने सर्वदर्शन प्राप्त करवानो दावो करे छे' ए प्रकारनु जे कथन छे तेने प्रमाण आपवानी जरुर नथी कारण के–आ तो जैनधर्मनु खास एक मौलिक मतव्यज छे

पृ ४१ मां लख्यु छे के–" पापे ए आचरनारना आशय

१ जैनोना सवज्ञ असत्य निरूपण करेलु नथी पण सत्यस्वरूपेज भण्यु छे, जेमके–सूक्ष्मनिगोदना, पृथ्वी, जल, आदि पाच स्थावरना, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरिन्द्रिय अने छेवट सम्मूर्छन पचेंद्रियना जीवोने मन होतु नथी, छता पापनो बध तो थाय छे, तेथी पापनु बधन केवल आशयथीज थाय छे तेम नथी, पण मिथ्यात्वाऽवृत्ति आदिना योगे आशय

उपर आधार राखे छे, बौद्धना आ एक महान् सिद्धांतने, जैनोए मिथ्याकल्पित अने मूर्खतापूर्ण उदाहरण साथे मेळवी उपहास्य पात्र बनावी दीधो छे

जैनविषये बौद्धोए करेली भूल पृ० ४७ मा "चातुयाम" पार्श्वनाथने लागु पडे छे, तेने महावीर उपर आरोपित करवामा भुल करेली छे. बौद्धोनी आ भूलद्वारा महावीरना समयमा पण पार्श्वनाथना शिष्यो विद्यमान हता

पृ० ४८ मा त्रीजी भूल—नातपुत्तने अग्गिवेसन कहे छे पण महावीरनो एक मुख्य शिष्य जे सुधर्मा हतो ते अग्गिवेश्यायन हतो तथी शिष्यनु गोत्र गुरुने लगाडी बेवडी भूल थवाथी महावीरना शिष्य सुधर्मानी साक्षी आप छे.

पृ० ५० बौद्धधर्मनो प्रादुर्भाव थयो त्यारे निर्ग्रंथोनो (जैनोनो) सम्प्रदाय एक मोटा सम्प्रदायरूपे गणातो होवो जोइए, केमके बौद्धपिटकोमा—ए निग्रंथोमाना केटलाकने विरोधी अने केटलाकोने अनुयायी थएला वर्णवला छे, पण निर्ग्रंथोनो ए

विना पण पाप बधाय छे तथी ते विषयनु खडन अयोग्यपणे थएउ नथी, एम खास ध्यानना राखवा जेवु छे

सम्पादक

नवीन सम्प्रदाय छे एम सूचनमात्र पण नथी आ उपरथी अनुमान करी शकीए छीए के–निर्ग्रंथो बुद्धना जन्म पेहला घणा लांबा काळथी अस्तित्व धरावता हशे

पृ० ९१ थी—बीजी एक बाबतद्वारा पण जैनोनी प्राचीनताने टेको मळे छे

गोशाळे मनुष्य जातिनी छ वर्गमा वहेंचणी करी हती, ते वर्गमाना त्रीजा वर्गमा निर्ग्रंथोनो समावेश कर्यो हतो

जो तेज अरसामा हयातीमा आव्या होत, तो तेमनी गणना खास तरीके कदापि न करवामा आवी होत

पुन पृ० ९२ मा—मज्झिमनिकायथी सचकनो दाखलो आपी जणाववामा आव्यु छे के–निग्रंथोनो सम्प्रदाय बुद्धना समयमा स्थापित थयो होय तेम भाग्येज मानी शकाय

पृ० ९९ थी—बुद्ध अने महावीरना समयमा प्रचलित एवा अन्य तात्त्विक विचारोना विषयमा जैन तथा बौद्ध ग्रन्थोमा मळी आवती नोंधो गमे तेटली जुज होय तो पण ते नामाकित काळना इतिहासकारने अति महत्त्वनी छे

एक बाजूए आ बधा पाषंडीमतोमा मळी आवती परस्परनी

आपी शकाय, अने तेना विज्ञानमां केटलु महत्व छे ए बतावव मारो प्रयत्न छ

धर्मोनी सरखामणीनु विज्ञान, ए शास्त्र नवीनम छे

प्रथम–ई० स० १८ मा शतमां अंग्रेजी तत्त्वविवेचनपद्धतिमा अने जर्मनीना धार्मीक तत्त्वविज्ञानमा बीजरूपे जोवामां आव छे, पण प्रो० मेक्समूल्लरे पद्धतिसर स्वरूप आपलु पछी घणा विद्वानोए वृद्धिगत करेलु प्रो० टीले आ सर्व धर्मविज्ञाननी पुनर्घटना करी सरो पायो नाख्यो छे ग्रेटब्रिटनमां स्वतन शास्त्र समजवामा आवतु गयु आ शास्त्रनी वृद्धि माटे, बे गृहस्थोए बे सस्थाओ स्थापन करी आ शास्त्रनो हेतु खरो धर्म कयो, अने कवल नामनो कयो, अने धर्मना विकाशनो काल कयो, ए ठरावत्रानो उद्देश छे ए काम प्रो० मॅटट विद्वाने सारी रीते करी मुकेलु छे आ पडितना मतथी कनिष्टधर्मनु स्वरूप आस्ट्रेलीयामा-टॅबू अने मान, ए बेमा दृष्टिगोचर थाय छे हवे धर्मनो उच्चतम स्वरूप ठराववानो बाकी रहे छे

पोतान अत्युच्च समजनारा अनेक धर्मो विद्यमान छे कयो धर्म अत्युच्च ए ठराववो अशक्य नथी पण कठीन छे आ विचार करवा सामान्यथी धर्मना इतिहास तरफ नजर नाखता

जेमनु स्वरूप वृद्धिगत थयु छे—एवी नि सशय वे जातिओ छे. 'सॅमेटिक' अने 'आर्य' ए वे छे सॅमेटिकमा—क्रिस्ती, याहूदीन, मुसलमीन, आरब विगेरे छे आर्यपूर्वकालना हिंदुस्थानमा वे विशिष्ट जातिओना धर्म हता आ बन्ने वर्ग जीवद्देवस्वरूपना हता के, एक वर्ग जीवद्देवस्वरूपनो थईने बीजो जडदेवस्वरूपनो हतो, ए यथार्थ कही शकाय नही तेमा जडदेवस्वरूपनो प्रादुर्भाव काइक गूढकारणथी उत्पन्न थएलो, उन्मादअवस्थामा अथवा आनदातिरेकमा मग्न थवाथी थयो

जीवद्देवस्वरूपवालो जे बीजो वर्ग हतो, तेमा—वैराग्य, अने तपस्विवृत्तिनो सबध हतो आ वे तत्वथी आर्यधर्मना जुदा जुदा धर्म उत्पन्न थया

अत्यार सुधीनु विवेचन, उपोद्घातरूपे थयु. हवे यूरोपियन पद्धतिथी जैनधर्मनो विचार करवानो छे आ देशमा—धर्मविचारोमाथी जैनधर्म उत्पन्न थयो एम मानवानी साधारण प्रवृत्ति छे आ मत सामान्यथी यूरोपियन पडितोमा प्रचलित छे, पण ए मत भूल भरेलो छे.

जूनी शाखाना यूरो० विद्वानो एवु मानता हता के—महावीर गोतमबुद्ध करता जरा मोटा समकालीन हता । तेमणेज जैनधर्मनी

स्थापना करी, आ मत मूळमेंरजो सिद्ध थई गयो छे हाळना यूरोपियन विद्वानोनो मत एवो छे के–जैनधर्मनो संस्थापक पार्श्वनाथ होईने महावीर जागृति करनार हता जैनोनी परंपराप्रमाणे तो जैनधर्म अनादिनो होईने अनेक व्यक्तिओ तरफथी जागृति मळी छे तेम चोवीश तीर्थंकरो अथवा जिनो छे आ मतने नि मशय असळ इतिहासनो आधार मळे छे। कयो आधार ? ए, कहेवु कठीन छे तो पण नीति ए विषय उपर–हेर्स्टिंग्स साहेबना ग्रन्थमा अने प्रो० जेकोबीना निबंधमा " जैनधर्म पोताना केटलाक मनो प्राचीन जीववेदना धर्ममाथी लीधेला होवा जोइए " एवु कहेलु होवाथी प्रत्येक प्राणी तो शु पण वनस्पति अने खनिज पण जीवस्वरूपज छे। एवो जे तत्त्व छे ते महत्त्वनो छे, आ कारणथी जैनधर्म ए अत्यत प्राचीन छे जैनोना निग्रन्थोनो उल्लेख वेदोमा पण मळे छे तेथी आ मारा कथननी प्रतीति थशे

लोकोने जैनधर्मनो विचार महावीरना पछीथी करवो पडे छे। अथवा श्वेतांबर अने दिगंबर उपरथी करवो पडे छे जैन धर्मनु स्वरूप अनार्य लोकोनी प्रवृत्ति थया पछीथी झाखु देखाइ रह्यु छे, पण तेज स्वरूप आर्यधर्मनो उचामा उचो आदर्श छे जैनधर्मनु मूळकाम, धर्मना मूळ उपर फटको मारनारा–ब्राह्म-

णोनो जे नास्तिकवाद अने अज्ञेयवाद कहेवामा आवे छे तेने अने महावीरनी सुधारणा पेहला-ब्राह्मणधर्मना विधिविधानमा जे केवळ अत्याचार थएलो हतो तेने पाछो हठाव्यो ते हतु

जैनधर्मनो बौद्धधर्म जेटलो जो के विस्तार थयो नथी, पण तेनुज महत्व हिंदुस्थानवालाने वधारे छे

कारण जैनधर्मवालानी क्रिया सरु थवाथी, पाछलना विचारोनो वधारो थवाथी बचाव थतो गयो

जैनधर्मनु खरु महत्व धर्मना अगोनी यथाप्रमाण वहेचणी थवाने लीधेज छे तेनो थोडो घणो खुलाशो करु छु

प्रत्येकधर्मना-१ भावनोद्दीपक कथा पुराणो, २ बुद्धि-वर्द्धक तत्त्वविज्ञान, अने ३ आचारवर्द्धक कर्मकाड, ए त्रण मुख्य अगो होय छे

घणा खरा धर्मोमा-विधिविधानरूप जे कर्मकाड तेनोज प्रचार थई, इतर बे अगो गोणपणे थईने रहेला होय छे अने भावनोद्दीपक कथा पुराणानु अग मात्र लोकप्रिय होय छे बौधिक एटले तत्त्वज्ञाननी अभिवृद्धि, आर्यधर्मनुं मुख्य लक्षण होय छे पण ए त्रण अगोनी एकला जैनधर्ममाज सर-

स्थापणायी वहेंचणी करेली होवायी, प्राचीन ब्राह्मणधर्म, अने बौद्धधर्म, एमा बौधिकअगोनु विना कारण मोटापणु बतावेलु छे

बीजा धर्मना प्रमाणमा जैनधर्मवालाने क्यु स्थान आपी शकाय ? तेनो निश्चय करवा, तेना अतरगनो थोडो अधिक विचार करीए

जैनधर्मने बधा धर्मोथी विशेष महत्व केम प्राप्त थयु छे तेज हु बतावु छु

देव विषयोना सबधे, जैनधर्मनो प्रमाण तरीके मानेलो मत, एज तेनामा पेहली मोटी महत्वनी वात छे जैनधर्म मनुष्योत्सारी (नरथी नारायण सुधी चडेलो) धर्म ठरे छे वैदिकधर्म, अने ब्राह्मणधर्म, ए पण मनुष्योत्सारी छे खरा, पण ते केवल औपचारिक छे, कारण देव एटले कोई मनुष्यातीत प्राणी छे, तेने मत्रोथी वश करी, इष्ट प्राप्ति करी लेवु मानी लीधेलु छे पण खरु मनुष्योत्सारीपणु जैन अने बौद्धमाज देखाई आवे छे बौद्धनो ईश्वरविषयक मत घणोज जुदो बनी गयो छे, मूलमाज ते अनीश्वरवादी हतो के केम ? एवो सशय उत्पन्न थई जाय छे

जनोनी देवविषयक कल्पना, विचारीपुरुषोना मनमा आवी शके तेवी छे देव ए परमात्मा छे, पण जगत्नो स्रष्टा अने नियता नथी, पूर्णावस्थाने पोंहचेलो-जीवज होइने, अपूर्णावस्थावालानी पेठे, जगत्मा पाछो आववानो अशक्य होवाने लीधे पूज्य अने वदनीय थयो छे

आज बाबतमा मने जैन धर्मनो अत्युदात्त स्वरूप देखावा लाग्यो छे

बोधिकनिषयोनी उतम परिपुष्टि करवाने माटे तेटलाज उचतम ध्येयने (देवनी मूर्त्तिने) जनधर्मवालाए हाथे धर्या छे

आ बधा कारणोने लीधे जैन धर्मने आर्यधर्मनीज नहीं, पण एकदर सर्व धर्मोनी परम मर्यादावालो समजीए तो पण कोई प्रकारनी हरकत आवे तम नथी आ परम सीमावाला जैनधर्मने मोटु महत्व प्राप्त थएलु छे धर्मनी सरखामणीना विज्ञानमा जैनधर्मवालाए एटलुन एक महत्व नथी परतु जैनोनु-१ तत्त्वज्ञान, २ नीतिज्ञान, अने ३ तर्कविद्या, पण तेटलाज महत्ववाला छे

अहिं जनोना नीतिशास्त्रनी-बेज वातानो उल्लेख कर छु तेमा पेहली ए छेके-जगत्मांना सर्व प्राणीओने सुख समाधानथी

एका केवी रीते रेहतां आवे ? आ प्रश्नना आगल, अनेक नीति वेत्ताआन हायज टेकवा पड्या छे आ विषयनो सपूर्ण निर्णय आज सुधी कोइ पण करी शकेलो नथी पण जैनशास्त्रमा बहुज सरल रीते करीने मुकेलो छे बीजाओने दु ख न देवु अगर अहिसा आ वातनो केवल तात्त्विक विधिथीज नहीं, पण खिस्ती धर्ममांनी–तत्सदृश दश आज्ञाओ करता, अधिक निश्चयथी अने कडकपणाथी, तेनो आचार कहेलो छे, तेटलीज सुल्मताथी तथा पूर्णताथी, तेनो खुलासो जैनधर्ममा करेलो छे बीजो प्रश्न स्त्री पुरुषोना पवित्रपणानो छे जैनधर्मने सर्वधर्मनी, विशेषथी आर्यधर्मनी परम हदवालो मानवो जोइए बौधिक विषयोने पण बाजु उपर न मुकता जैनधर्मनी बाजु घणी मजबुत रचाएली छे खिस्तिधर्ममा बौधिक प्रश्नोनो विशेष उहापोह के विवेचन थएलु नथी

टुकमा साराश ए छे के–उच्च धर्मतत्त्वो अने ज्ञाननी पद्धति ए बन्नेनी दृष्टिए जोता–जैनधर्म धर्मनी सरखामणीवाला शास्त्रोमा घणोज आगळ पहोंचेलो छे, एम तो मानवु ज पडे छे अने द्रव्योनु ज्ञान करी लेवाने माटे, तेमा जोटी दीधेला–स्याद्वादनुज एक स्वरूप जुवो एटले बस छे

धर्मना विचारोमा जैनधर्म ए एक निःसशयपणे परम हदवाळो छे अने ते केवळ स्याद्वादनी[1] दृष्टिथी सर्व धर्मोनु[2] एकीकरण करवाने माटेज नहीं, पण विशेषपणाथी, धर्मोना लक्षण समजवाने माटे अने तेनो अनुसारथी सामान्यपणे धर्मनी-उपपत्ति सगत करी लेवाने, माटे तेनो काळजीपूर्वक अभ्यास करवानी जरूर छे ॥

---

४ पृ १०८ मा—डॉ० एल पी टेसीटोरी अने डॉ० हर्टल ए बन्ने विद्वानोना लेखोमाना मात्र बेज फकराथी जैनधर्मना तत्त्वोनी दिशा केटली बधी उची छे एटलुज जणाववामा आव्यु छे

---

५ पृ १०९ मा 'जैनदर्शन अने जैनधर्म ' मूळ लेखक-मि० हर्बर्ट वारन साहेब छे, तेमा जैनोना मुख्य मुख्य तत्त्वोनी टुक नोंध करी बतावेली छे ॥ इति यूरोपियन लेखकोना लेखोना सग्रहरूप द्वितीय भाग सपूर्ण ॥

---

१ स्याद्वादना.   २ सर्वधर्मोनी.

सूचना.

प्राये आ पुस्तकमा जणावेल लेखोना लेखको शोचक दशामा रहीने पण घणाज आगळ वधीने लखता रह्या छे, ए नि संशय छे, जैनोना तत्त्वो पण व्हजु गूढ दशामा रहेला छे, माटे लेखकोना बधाए विचारो, जैनोने सम्मत थइ गयानी, कोइए भूल करवी नहि

आ पुस्तकमा लेखो तथा प्रस्तावनामा आपेला फकराओ मळी ३४–३९ महाशयोना अभिप्रायो जणाववामा आव्या छे, ते जनताने विशेष उपयोगी निवडे अने तेथी कोइने पुनरावृत्ति छपाववानो विचार थाय तो अमारा तरफथी कोई पण प्रतिबंध नथी

काळजीपूर्वक संशोधन कर्युं छे छता कोइ स्थळे अशुद्धि जणाय तो ते सुधारी वांचवा भलामण करीये छीये

सीनोर
(रेवाकांठा)
ता १-१०-२३

संग्राहक–

मुनी श्रीअमरविजयजी महाराज

प्रथम भागना १३ लेखोनी

अनुक्रमणिका

वैदिकाऽनुयायी पक्षना सर्वमतोने, पोताना स्याद्वादना सिद्धांतथी पोताना मतमा मेळवी लेवानी सत्ता छे तेज जैनधर्म ले० वैष्णवाचार्य 'राममिश्र शास्त्रीजी पृ ८२ थी

६ यज्ञमा थती हिंसाना निरोधनु मान जैनधर्मवालानेज छे– ले० लोकमान्य टिलक पृ. १०१ थी

७ जैनधर्मना स्याद्वादमा मानवबुद्धिनु एकागीपणु रह्लु छे अने विहारनी पुण्यभूमीमा बे महापुरुषो, जेमाना एक श्रीमहावीर अने बीजा श्रीबुद्ध, तेमनाथी प्रगट थएलो शांतिनो मार्ग लेखक–काका–कॉलेलकर पृ १०३ थी

८ शंकराचार्ये दूषित करेलो जैनधर्मनो स्याद्वादन्याय संशयवाद नथी पण एक दृष्टिबिंदु मेळवी आपनार परमोपयोगी न्याय छे ले० प्रो० आनंदशंकर बापुभाई ध्रुवे पृ ११० थी

९ जैनधर्मने बौद्धनी शाखा घणा खरा विद्वानो जणावता हता ते पडलो हवे नष्ट थवा लाग्या छे अने जैनधर्म पूर्वेना धर्ममा पोतानु स्थान लेतो जाय छे ले० श्रीयुत राजवाडे पृ १११ थी

भाग बीजो-यूरोपियन विद्वानोना ६ लेखोनी

अनुक्रमणिका

—»⁂«—

जैनेतरदृष्टिए जैन.

प्रथम भाग

हिन्दु विद्वानोना अभिप्रायो

श्रीः ।

शार्दूलविक्रीडितवृत्तम् ।

यं शैवाः समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो
बौद्धा बौद्ध इति प्रमाणपटवः कर्तेति नैयायिकाः ।
अर्हन्नित्यथ जैनशासनरताः कर्मेति मीमांसकाः
सोऽयं वो विदधातु वाञ्छितफलं श्रीवीतरागः प्रभु ॥१॥

अर्थ–शैवानुयायिओ शिव समजीने, वेदांतिओ ब्रह्म गणीने, बुद्धना भक्तो बुद्ध जाणीने, प्रमाणमा चतुर एवा नैयायिको कर्त्ता कल्पीने, जिनेंद्रना उपासको जिन मानीने, अने मीमांसको कर्म वर्णीने जेनी उपासना करी रह्या छे, ते रागद्वेष आदि दोषोथी मुक्त थएलो श्रीवीतरागप्रभु* तमारा वाञ्छित फळो आपवावाळो थाओ

* श्रीवीतराग प्रभुनु यथार्थ स्वरूप जाणवा एज पुस्तकना प्रथम भागना पृ १५०, थी श्रीसिद्धसेनदिवाकरविरचितपरमात्मस्वरूपद्वात्रिंशिकापी बनावल छे त्यांथी जोई लेवु

कुल पृथक् पणु पडीने तेना अनुआयिओमा जे भेद पड्या हता ते नष्ट थईन सर्वे यदानुयायिओनु ऐक्य करवाना हेतुथी ऋग्वेदनु होत्र, यजुर्वेदनु आध्वर्यव, सामनु गायन, विगेरे संमिश्र करवाथी अग्निष्टोमादियाग तैयार थया, पछी आ यज्ञयागादिकोनु कर्मकाड घणुन वध्यु, खेतरमा बीज वाववानु होय तो पण याग जोइये, हाट उग्या पछी अदरनु गाम काढी नाखवु होय तो पण याग, पर्जन्यनी जरूर पडे क ते माटे ईष्टि छे ज, सन्तति जोइये तो करो इष्टि, धन जोइये तो करो इष्टि, साराश ए प्रमाणे बधे ठेकाणे यज्ञ याग विगेरे पुष्कळ वधारी दीधा अश्वमेधादि यागोमाते मांसना ढगले ढगला देखावा लाग्या यज्ञोमा अतिशयहिंसा थती केटलाक यज्ञोमा तो वधारी उठे एवा प्रकारनी विधिओ अने कर्मो हता स्वाभाविक रीते मद्य मास तरफ अभिरुचि राखनाराओने ए यज्ञादि क्रियाओमाज मद्य मास ग्रहण करवु विगेरे परिसख्यादि विधानोथी प्रतिबध करवामा आवतो हतो तो पण आ–हिंसादि क्रियाओ जे यागादिकोमा थाय छे ते विधिओ निंद्य अने विहित हिंसा होय तो पण ते परम गर्ह्य छे, एम केटलाक विद्वानोना समजवामा आव्यु परन्तु घणा दिवसोनी

---

१ इष्टि एटले यज्ञ

रूढमूल थई गयेली प्रवृत्तिओनो एकदम निरोध पण शी रीते करी शकाय ? 'राष्ट्रोमा जेटला प्रमाणमा कर्मकाड वधतु जाय तेटलाज प्रमाणमा अज्ञाननु जोर वधे छे' आ नियमने अनुसरी यज्ञ याग अने पुत्र, धन, सपत्त्यादिकोनी प्राप्ति विगेरेना कार्यकारणभाव विषे जे निविडतर अज्ञान पसरेलु हतु तेमा दिवसे दिवसे फरक पडवा लाग्यो अमुक यागथी अमुक थाय छे एवु शास्त्रमा मळे पण तेनो कार्यकारणभावसबध शु होवो जोइये ? एवी शकाओनो उद्भव थवा लाग्यो ते वखतना कर्मकाड-निपुण आचार्यो एवी शका काढनारा सामान्य लोकोने कर्मानो अने फळोनो तुलनादर्शक सबध दर्शावी गमे ते उपपत्तिथी समाधान करता आ प्रमाणे केटलाक दिवसो चाल्ता चाल्ता शास्त्रीयदृष्टिथी अथवा नियुक्तयागादिकोना नियुक्त-नियमोने अनुसरी फावे तेम हो, पण तेटलामा शङ्का समाधान अने उत्पत्ति ए विषे विचार थवा लाग्यो. ते पछी पूर्वमीमांसा शास्त्र नन्यु तो पण मीमासको कर्मकाडना पूरा अभिमानी हता, बुद्धिवाद करनारा लोकोए कर्मकाडीओनी साथे तेओनाज वेदवाक्यो लई शका काढी ते

१ आडु अवळु समजावीने

उपर वादविवाद शरु थरी कर्मकांडीय जडोने पण वादविवादनी, बुद्धिवादनी अने प्रत्यक्षनी साथे मेळ राखी वेदवाक्योनो अर्थ करवानी टेव पाडी "लोके व्यवायामिषमद्यसेवा" इत्यादि स्वाभाविक संसार सुखमा आसक्त रहेनारा अने इन्द्रियसुख एज पुरुषार्थ छे एम मानानारा लोकोमा विषयोना माटे तिरस्कार उत्पन्न थयो विषयसुखोपभोग करता इन्द्रियदमन करवामा विशेष मजा छे अने खरु सुख छे, एम माननाराओनों वर्ग वधवा लाग्यो (**इन्द्रियदमन करवुं एज पुरुषार्थ छे एम माननारा जे लोको तेज प्रथम जैन हता एम अमोने लागे छे.**) तेओने ए मांसादि हिंसानो परम तिरस्कार उत्पन्न थयो ते वखतना यज्ञ यागादिकोना अत्यन्त प्रमाणभूत ग्रन्थो विगेरे अप्रमाण छे एम चोक्खी रीते कही पोतानु कार्य साधवा करता तेमाथीज काइएक तोड काढ्यो ए तेओने पोतानो हेतु साधवा माटे विशेष ठीक लाग्यु तेओए ब्राह्मण ग्रन्थोमा मधोने प्रथम पुरुषमा, पछी घोडामा, पछी बळदमा, पछी मृगमां, पछी हरिणमा ए प्रमाणे आणता आणता छेवटे धान्यमा आणी मुक्यु तात्पर्य-आ प्रमाणे यज्ञ यागादिकोमा प्रत्यक्ष पशुओनी

---

१ मैथुन मांस अने मदिराना सेवनथी २ यज्ञने

जे हिंसा थती तेना बदले पिष्टपशुथी ते यज्ञो करवा आटला सुधी ते वखतना लोकसमाजने पकडी रहेनाराओने जैनोए तथा बौद्धोए पहोंचाड्या पछी आ हिंसाप्रधान यागादि कर्मकाड बिल्कुल निरर्थक छे एमा पुरुषार्थप्राप्ति बिल्कुल नथी " न कर्मणा न प्रजया त्यागेनैकेन अमृतत्वमानशुः " एटले अमृतत्व कर्मथी प्राप्त थतु नथी प्रजाथी प्राप्त थतु नथी पण त्यागथी प्राप्त थाय छे एम माननारानो वर्ग तैयार थयो कर्मकाड उपरनी श्रद्धा दहाडे दहाडे लोप थवा लाग्यो ब्राह्मण ग्रन्थोमा अने मीमासादि शास्त्रोमा वादविवादनी टेव पडवाथी प्रखरबुद्धिना लोकोए हवे चोक्खी रीते कर्मकाडने फेंकी देई ज्ञानकाडने प्रधानपणु आपवानी शरुआत करी, ते हवे जुदीज दृष्टिथी (श्रद्धा छोडी दइने स्वतन्त्र-पणाथी) विचार करवा लाग्या आ जगत्मा जे जुदा जुदा पदार्थो भासमान थाय छे तेओनु आदि कारण शु ? शुरुष्यना देहमा चालक शक्ति कई होवी जोइये ? जेनाथी देहादिकोनो व्यापार चाले छे, अने जे तत्त्वना अभावे देहक्रिया बन्ध पडे छे ते तत्त्व कयु ? ए विषे विचार थवा लाग्यो सृष्टिनो कर्त्ता कोण ? आ जे क्रियाओ चाले छे ते कोनी सत्ताथी ? आ सर्व सृष्टिना

---

१ आत्मकल्याण

कार्यो चलावनारो अने सर्वेनो नियामक कोण छे ? अथवा आ बधु स्वभावधीन चाले छ, ए विषे पडितो स्वतन्त्र रीते वादविवाद करवा लाग्या "स्वभावमेके कवयो वदन्ति" इत्यादि अनेक सैकाओ सुधी पडितोमा एवा प्रकारना वादविवादो चालता हता पण ते पडितोए एवा मतनो स्वतन्त्र पन्थ कहाड्यो नहोतो ते वखतना पडितोमा बे मोटा पक्ष पड्या हता तेमा एक पक्ष ससारमा मग्न रहेनाराओनो, अने बीजो विरक्त रहेनाराओनो हतो परन्तु प्राचीन काळथी चालती आवती रूढीओ फेंकी देनाराओमा विलक्षण धैर्य अने श्रद्धानी जरुर होवी जोइए पोताना मतो केवळ सामदामादि प्रकारोथी प्रसरी शकता नथी लोकोमा प्राचीन रूढिने वळगी रहेनाराओनी सख्या बहुज होय ए कारणथी जोइये तेवो मत प्रसार थतो नथी ए प्रकारे जोइने जैनोए अने बौद्धोए मासभक्षक पाखडिओनी साथे सग्राम करवा माटे कमर कसी अर्थात् दुनियाना स्वाभाविक नियमने अनुसरी प्राचीन मतावलबी लोको तरफथी तेओनो छल थवा लाग्यो समाजमानी दुष्ट वातोनो नाश करवो जोइये अने ते वखतनी दुष्ट वातनोज सत्यानाश थवा इच्छनाराओमा खरी लागणी धरावनारा जे लोको हता तेओने ते वखतना आचार विचारोनी दिशा फेरवी

जूदा प्रकारनी दिशा लगाडवा माटे खटपट करनारा लोकोनी जुदी सस्थाज निर्माण करवानी आवश्यकता भासवा लागी अने ए कार्य माटे पोतानु ससारसुख विगेरे सर्वनो भोग आपवानो एमणे निश्चय कर्यो जे कोइने समाजमाना दु खो देखीने ते दूर करवानी इच्छा होय तो तेना माटे सर्वस्वनो भोग आपी ते वातनी पाछळ पडवा ससार छोडी देवो एम लागे ते वखते तेणे ससार छोडी दई प्रव्रज्या धारण करवी (सन्यास लेवो) एवु एक वाक्य छे (यदहरेव विरजेत तदहरेव प्रव्रजेत्) त्याथीज अमो बौद्धोना अने जैनोना सन्यासनी उत्पत्ति समजीये छे तात्पर्य—पछी बधा ससारनो त्याग करी सन्यास (दीक्षा) ग्रहण करी पोताना मतोनो उपदेश करवो एम माननारामा बुद्ध अने महावीर एवा बे राजवंशीय अग्रगण्य निकळ्या आखा जगतमाना ससारसुखमा अत्यत स्पृहणीय जे राज्यपद तेनो खुशी—रीते त्याग करी सन्यास लेई उपदेशकनु काम करवामाज आनद छे एम बोलीने नहीं पण प्रत्यक्ष कृतिथी बतावनारा ज्यारे राज-पुरुषो निकळ्या त्यारे ते पक्षने घणुज जोर मळ्यु ज्या ज्या ए उपदेशको जता त्या त्या मूर्त्तिमन्त राज्यसुखनो त्याग करेला ते अग्रणीओना व्याख्यानना श्रवणथी लोकोना टोळेटोळा सन्यास

लेवा माटे तेओनी पासे भेगा थता. साराश—माणस मात्रने परमप्रिय जे ससारसुख तेनो त्याग करी सन्यासव्रत लीधेला लोकोने जोई समानमाना लोकोने शु लागशु हशे वारु ? देखीतुन छे के, मोटा मोटा श्रीमान् अने सपत्तिमान् राजवंशीय लोको जे अर्थ प्रत्यक्ष सुखनो त्याग करी एकदम उपदेशकोनी दिक्षाओ लेवा लाग्या छे, एम ज्यारे लोकोना जोवामा आवे त्यारे तेओना माटे पूज्यबुद्धि उत्पन्न थई अने तेओना अनुयायिओनी सख्या झडपथी वधवा मांडी माणस मात्रने परमप्रिय एवा ससारसुख अने विषयसुखने लात मारी धर्मोपदेश करवा माटे विरक्त थयेला ,लोकोना,टोलेटोळा धर्मोपदेश माटे सर्वत्र भरतखडमा ज्यारे देखावा लाग्यां, अने तेओनी सरी लागणी जोई तेओना अनुयायिओनी सख्या जे प्रमाणमा झपाटाथी वधवा माडी, तत्प्रमाण प्रमाणमा तेओना प्रतिस्पर्द्धिओ तरफथी तेओनो विशेष छल थवा माड्यो परमार्थ-सुखश्रद्धाथी परिपूर्ण बनेला तेवा छलने नहीं गणता त महावीरोए पोताना धर्मप्रचारनु काम आगळ चलाववा माटे तेओमां लोकोत्तर धैर्य उत्पन्न करनारा शास्त्रो पण तेओना स्थापकोए निर्माण कर्यो ते शास्त्रश्रद्धाथी परिपूर्ण थईने ते महावीरोए ते काम आगळ घणी झडपथी शरु कर्यु तेनु परिणाम केटलु प्रचण्ड

थयुं ए पाउळ कह्या प्रमाणे जैन अने बौद्धमतनो सर्वत्र भरतखडमा प्रचार थयो ते शिवाय बौद्धपन्थियोनो मसदेश, सयाम, चीन, जापान, सीलोन, तिबेट, अफगाण, सेबीरीया विगेरे पृथ्वीना लग-भग अर्धा भाग उपर प्रचार थयो हतो, एम लोक मानता हता. पण पाउळ कह्या प्रमाणे जैन अने बौद्धमत सर्वत्र भरतखडमा तो प्रसरेलाज हता ए उपरथी सहेज ध्यानमा आवशे पछी कालान्तरे यद्यपि ते लुप्त थयो तो पण हालना आपणा आचार विचारो जोता तेमा बौद्धोए अने जैनोए अमारा भारतीयो उपर घणी निया करीने बतावी छे ए निर्विवाद रीते सिद्ध थाय छे लातो मारो, गालो आपो, हाकी कहाडो, पथरा मारो, मारी नाखो, वखते खावा मळो या न मळो, तो पण उपदेशनु काम अखड रीते चालु राखवु तेमा जरा पण पाछळ हठवु नहीं, एवु जे ख्रिस्तीधर्मोपदेशकोमा व्रत देखाय छे, अने तत्पन्थिय लोको जेनु मोटु अभिमान धरावे छे, ते तमाम व्रतो घणा प्राचीनकालमां जैनधर्मियोमा हता, एम मानवाने अमोने घणा ग्रन्थोमा कहेला प्रमाणो मळ्यां छे तात्पर्य–ए प्रमाणे नाना प्रकारना कष्टो वेठी, अने अत्यन्त कठिन एवा कमाल स्वार्थनो त्याग करी, जैनोए आखा भरतखडमा ठेकठेकाणे, शहेर-शहेरमां जैनधर्मनो प्रचार

क्यों धर्मनो अथवा विशिष्टमतनो प्रचार समाजमा हालना प्रमाणे वर्त्तमानपत्रो, अथवा मासिक पुस्तकोद्वारा थयो नथी तो ते मतो प्रसिद्ध करनारी ते वखतनी काइ जुदीज सस्थाओ हतीं (सर्वे सस्थाओनु अमारा महाराष्ट्र साधु मडळोए महाराष्ट्रमा तुरत अनुकरण करी लीधु एटले ते पद्धति उपर पोताना पन्थोनी सस्थाओ तेओए स्थापन करी) ते मत प्रसार करनारी अतिशय महत्वनी सस्थाओ कई ? एवो स्वाभाविक प्रश्न उद्भवशे, माटे ते विषे थोडी माहिती आपवानी आवश्यकता छे ते सस्थाओ एटले नगरप्रदक्षिणाओ, वरघोडा, उत्सवो भजनो, तीर्थयात्राओ विगेरे हती ते दिवसे हजारो लाखो लोको भेगा थता पछी यति-मडलो अने तेओनु अनुयायिमडल विगेरे नाना प्रकारना रागोमा तेमज जुदाजुदा मनोरजक छदोमा घणा मजुल स्वरोथी जैनधर्म विषे जुदी जुदी माहिती विगेरे तेमा भेगी करी जैनसाधुओना चरित्रो, वर्णनो, प्रार्थनाओ, स्तोत्रो, उपदेश, विगेरे जेमा ओत-प्रोत भरेला हता एवी कविताओ बनावी समाजमा गाता, तेथी घडाणे सुधीमा ते मतोनो प्रचार थयो हतो तेज प्रमाणे जैन-यतिओना व्याख्यानो पण थता कथाओ, पुराणो, रासो, जुदा-जुदा साधुपुरुषोना अने रामचर्योना रसयुक्त अने मनोरजक

चरित्रो, काव्यना रूपमा रची तेओमा ठेकठेकाणे प्रसंगो साधी मोटा मोटा यतिओना अने साधुपुरुषोना संवादो नाखी धर्मतत्वनुं प्रतिपादन करता सामान्यजनोनी तेमज श्रीमान् राजवर्यो विगेरेनी धर्म उपर अने धर्मप्रचारक संस्थाओ (रथयात्राओ, रथोत्सवो, नगर प्रदक्षिणा विगेरे) उपर श्रद्धा उत्पन्न थई एवी विधिओ करवा तरफ तेओनी प्रवृत्ति थता माटे पहेलाना जे जे मोटा मोटा राजाओए तेनी विधिओ करोडो रुपिया खरच करी करी हती तओना पूर्वेना धर्माचरणोना रसनिभृत वर्णनो विगेरे करी मुकता, अने ते वर्णनो साधारण लोको, श्रीमानो, राजाओ, राजपुत्रो, राणीओ विगेरेने पहेलाना राजालोकोए एवु एवु कर्युं विगेरे वाची बतावी तेओ करता वधारे अथवा तेओना जेटलुज आपणे करीशु एवो उत्साह निर्माण करता घणी वखते जैनयतिओ पोताना धर्मप्रचार अथवा पन्थप्रवर्त्तन करवामां घणु चातुर्य वापरता जैनधर्मना ग्रन्थोनुं सूक्ष्मावलोकन करवा लागाये तो कांई जुदीज हकीकतो नजरे पडे छे हाल सामान्य जनसमूहमा तो जैन अने बौद्ध ए विषे घणी मोटी गेरसमजुतीयो थयेली छे. हिंदुस्तानमा लाखो करोडो लोको जैनधर्म अने बौद्धधर्म ए कोई बिल्कुल जुदो (वैदिक धर्म करता)

एम माने छे जैन धर्मिओना मन्दिरोनी ठठ्ठा अने निर्भर्त्सना करे छे अने घणा स्मृतिग्रन्थोमा शास्त्रग्रन्थोमा अने टीकाग्रन्थोमाथी जैन अने बौद्ध एओने वेदबाह्य माने छे जैनग्रन्थोनु सूक्ष्मावलोकन करता जैनधर्म ए जूदो धर्म नथी पण उपनिषत्कालीन अने ज्ञानकाड कालीन महान् महान् ऋषीयोना जे उत्तमोत्तम मतो हता ते सर्वे एकत्र ग्रथित करीने बनावेलो धर्म होय एम देखाई आवे छे अर्थात् जनधर्मनु प्रथमनु स्वरूप कहिये तो विशुद्ध छे एटले जे वैदिक धर्म तेज जैन धर्म छे एना अनेक प्रमाणो छे अनेक ग्रन्थोमा वदोने पोताना कहेवाने तेओए वेदोना प्रमाणो आप्या छे तेज प्रमाणे जुदा जुदा जैनकाव्योमा जैन पंडितोना वर्णनोमा, तेओ चारे वेदोमा निपुण हता एवा प्रकारना वर्णनो मळी आवे छे घणा जैनग्रन्थो उपरथी तो एवु लागे छे के, जैन एटले एक विशुद्ध वैदिक धर्मनी शाखा छे जैनोमाना डाह्या पंडितो अने अग्रणीओ पोते वेदिक धर्मना अथवा जुना प्रचलित मार्गना द्वेष्टा छीये एम नही बताववा माटे घणी काळजी

१ महान् महान् ऋषियोना उत्तमोत्तम मतथी ग्रथित करेलो एम अन यगतियी वेद्यु पड्यु हशे केमके–जीवादिक तत्वोनु, पाचज्ञाननु, अने कर्मना सिद्धांतोनु सूक्ष्म स्वरूप, बीजे टेकाणे संपूर्ण रीते न होय तो जैनोना मत ग्रन्थोमाथी गयेलुमानवामा शु हरकत आवे ?

रास्ता पडी अनेक कारणोना लीधे जैनधर्मियोमा अने जुना मार्गे चालनाराओमां मतभेद अने टटा विगेरे थयाथी जैनधर्म ए बिल्कुल जुदो पन्थ छे एम लोकोने भासवा लाग्यु जैनधर्मना ग्रन्थोमा बीजी एक ध्यानमां राखवा जेवी वात नजरे पडे छे ते ए छे के वैदिकधर्मना अथवा वेदानुयायि भागवतादि ग्रन्थोमां जे सेंकडो राजाओना नामो छे ते सर्वेने (राजाओने शु पण पडितोने पण) जैनग्रन्थकारोए जैन बनाव्या छे उदाहरण तरीके— राम जैन, कृष्ण जैन, पाडव जैन, नळ जैन, दमयन्ती जैन, चाणक्य जैन, विगेरे घणा ठेकाणे कथाओमा विपर्यास करेलो नजरे पडे छे परशुरामे एकवीस वखते पृथ्वी निःक्षत्रिय करी. तेओना जैन राजाए सत्तावीस वखते पृथ्वी निर्ब्राह्मण करी. परिक्षित राजा मरणोन्मुख थयो त्यारे सात दिवसोमा तेने श्रीमद् भागवत संभळाव्युं एवी जे वैदिकधर्मानुयायिओमा एक कथा छे तेज प्रमाणे तेओना एक ग्रन्थमा पण तेवीज कथा छे कथाओमा ए प्रमाणे साम्य अने विपर्यास मळी आवे छे एमा आश्चर्य नथी कारण के, मतना शब्दोमा पण साम्य अने शब्द विभिन्नता नजरे पडे छे—

वैदिकधर्मानुयायिओना शब्दो	अने	जैनमतानुयायिओना तेवाज अर्थना शब्दो
अहिंसा		प्राणातिपातविरमणव्रत
सत्य		मृषावादविरमणव्रत
अस्तेय		अदत्तादानविरमणव्रत
ब्रह्मचर्य		मैथुनत्यागव्रत

उपर आपेला शब्दो उपरथी अने वैचित्र्य उपरथी एम देखाई आवे छे के एकाद नवीन धर्मने ज्यां सुधी ते जुदो पन्थ छे एम मानवामां आवतो नथी त्यां सुधी ठीक होय छे पण पछी एक वखते जुदापणु थवा लाग्यु एटले अमो तमारा करता बिलकुल स्वतन्त्र अने जूदा छीये एम बतावबा माटे केवा केवा विचित्र प्रयत्नो करवा पडे छे तेनु प्रत्यक्ष उदाहरण जैन धर्मना शब्दो उपरथी अने ग्रन्थो उपरथी देखाई आवे छे वैदिक धर्मिओनु अने जैनधर्मिओनु आगल जे जुदापणु मनायु अने ते बन्नेमा जे द्वेषभाव मच्यो अने जे द्वैतपणु उत्पन्न थयु ते

---

१ अहिंसादिकनु कथन कुरानादिक बधाए मतना मूल ग्रंथोमां तात्पर्यरूपथी वस्तु होय छे, मात्र पोताना सुखोना माटे आगळ पाछळ फेरवी मानवामा आव्या पछी स्वार्थी लोको तने सिद्धांत तरीके मानी बेठ छे

पण एटली हृद सुधी पहोच्यु के, एकज विषय उपर ब्राह्मणी ग्रन्थो अने जैन ग्रन्थो एवा भेद पडवा लाग्या ब्राह्मणोए जैन ग्रन्थोनु अध्ययन करवु एटले पाप, अने जैनोए ब्राह्मण ग्रन्थोनुं अध्ययन करवु एमा हल्कापणु छे, एम मानवानो रिवाज पड्यो- ए वाग्भट्ट, अमरकोष, हैमव्याकरण, विगेरे विषे जे वार्ताओ छे ते उपरथी खुली रीते जणाय छे जे प्रमाणे जैनोए वैदिक राजाओ, पंडितो अने देव विगेरेने पोताना ग्रन्थोमा जैन बनाव्या ते प्रमाणे ब्राह्मणोए पण भागवत विगेरे ग्रन्थोमा जैनोना आद्य धर्मस्थापक ऋषभदेव विगेरेने भागवत बनाव्या ए प्रमाणे भरत-खंडमा पोताना कटकहित वैराग्यथी अनेक सैकाओ सुधी पोतानो कायम अमल जमाव्यो छता कुमारिलभट्ट, शङ्कराचार्य, रामानुज, मध्व, वल्लभ इत्यादि अनेक आचार्योए अविश्रान्त परिश्रमथी तेओनी सत्ता नष्ट करी वैदिकधर्मनु पुनरुज्जीवन कर्युं लागो नहीं पण करोडो लोको समजे छे के, कुमारिलभट्ट, विगेरे मोटा मोटा महापुरुषोए जैन धर्मिओनो जगोजगो पर पराभव करी तेओना स्थापन करेला धर्मनु सत्यानाश करी पोताना परमपूज्य प्राचीन वैदिक धर्मनी स्थापना करी

ए बाबतमा सामान्य लोको करता अमारी समजुती

बिल्कुल जुदा प्रकारनी छे जैनधर्मनुं पहेलुं स्वरूप एटले **विशुद्ध वैदिक धर्म ए छे** पछी अनेक कारणोथी ते जूदो धर्म छे एम मनायो (आ जैनधर्मनुं पाछळनुं स्वरूप) अने पछी लोकमत प्रमाणे कुमारिल्भट्ट विगेरे मोटा मोटा महापुरुषोए जैनोनो अने बौद्धोनो जगोजगो पर पराभव करी तेओना धर्मनो सर्वथा प्रकारे (जडा मूल्थी) नाश करी वैदिक धर्मनी स्थापना करी आ जैनधर्मनुं छेल्लुं स्वरूप

सामान्य लोकोना मतमा अने अमारा मतमा जे तफावत छे ते हवे कहीए छे—कडकडित तीव्र वैराग्यादिना आचरणोथी पछी राज्याश्रयथी अने स्वार्थत्यागथी जैनोए भारतीय लोकसमाज उपर जे क्रियाओ करी अने अनेक सद्गुणोथी जे फेरफार कर्यो, जे जुदी जुदी सम्थानु स्थापन करी अनेक विधिओ शरु करी, तेमज लोकोने सन्मार्ग तरफ झुकाववा माटे जे साहित्य निर्माण कर्युं, अने वैदिक धर्मानुयायिओमा रहेल–प्राचीन **चित्तशुद्धि, सदाचरण, चारित्र्य,** इत्यादि विषयोना सबन्धमा आपणा हृदयने हरी लेनारा अने तल्लीन करीने ज छोडी मुकनारा साहित्यथी विषयरसमा तन्मय थई गयेलाओने मात्र श्रवणथीज तत्काळ ठेकाणे लावनार जे

विचार प्रचलित करेलो तेनो नाश कुमारिलभट्ट विगेरेना हाथथी बिलकुल थयोज नथी हवे हालमा भारतीय लोकोना जे आचार विचार अने धर्मसंस्थाओ छे तेओमा जैन धर्मसंस्था अने विचार मळी गएला छे ए नगर प्रदक्षिणा, आल्दीनी पाल्खी, पोताना षोडषोपचारनी पूजा, नैवेद्यसमर्पण विगेरे जैनधर्मिओना साथे तुलना करी जोता तरत ध्यानमा आवी जशे ए शिवाय कुमारिलभट्टादिकोए जैनोनी साथे ठेकठेकाणे वादविवाद करी तेओनो पराभव कर्यो विगेरे जे दन्तकथाओ छे ते विषे शोध करता सामान्य लोको ते विषे जेटलु माने छे तेटलु तेनु स्वरूप नहीं होईने दयानन्द सरस्वतीना खडन प्रमाणे तेमा लटपट अने ग्राम्य व्यवहार विशेष देखाय छे

तात्पर्य—जैन अने बौद्ध धर्मविषे भारतीय लोकोमा आजदिनसुधी जे भयकर गेर समजुतीयो थई छे, ते गेरसमजुतिओ थवान जैनधर्मनु अने बौद्धधर्मनु पछीनु स्वरूप तपासीए एटले तेना प्रकारना जुदाजुदा कारणो पण थया हता एम देखाय छे परन्तु जैनधर्मनु अने बौद्धधर्मनु आद्यस्वरूप जोइशु तो जैन अने बौद्ध ए जुदा नथी पण **विशुद्ध वैदिक धर्म तेज जैन अने बौद्ध धर्म** छे एम जणाशे

भारतीय लोकसमाजमा जैन अने बौद्धधर्म एटलो बधो व्यापी गयो छे के [1]पौराणिक धर्ममा अने पछीना पन्थमा तेमाना विचारोनु, आचारोनु अने तेओनी धर्मपद्धतिनु तादात्म्य थई गयु छे ए भगवद्गीतादिग्रन्थोमा बौद्धोना निर्वाणादिशब्दो जे बिल्कुल लीन थइ गया छे ते उपर तुरत ध्यान आपवा जेवु छे पछी जैनधर्मनो द्वेष करता करता अमारा आचार विचार उपर, सन्ध्या पूजादि विधिओ उपर, हमेश बोलवाना स्तोत्रो विगेरे उपर पण तेनो असर थयेलो छे ए जैन अने बौद्धोना सर्वे ग्रन्थोनु कालजी पूर्वक अवलोकन करीए तो तरतज ध्यानमा आवी जशे छेवटे वाचकोने एटलुज कहेवानु के, एक वखते जैन अने बौद्ध ए विषे अनेक कारणोथी जे विरुद्ध संबंध उत्पन्न थयो ते हवे मुली जग्न जे धर्म हालना हिंदुधर्ममा विलीन थई गयेलो छे, ते धर्मना ग्रन्थो तरफ हालना विद्वानो कदाच अनुकंपानी बुद्धिथीज जोशे तो

१ प्रथम बौद्धोने वैदिकधर्मवाला तरफथी शत्रुभूत मानेला परंतु जैन धर्मना अने बौद्ध धर्मना पूर जोसमा पोताना स्वार्थनी रक्षा माटे पुराणोनी रचना करी बुद्धने अवताररूप मान्य राखी जैनोना अने बौद्धोना आचार विचारोने भेलसेलपणे गूथन करी लोकोने थोभावी राखवा प्रयत्न करेलो पण पछी आश्रयकरावायला वखत राज्याश्रय मल्या पछी बौद्धोनो नाश करवा प्रयत्न करेलो मात्र जैनो उपर पोतानी प्रभा पाडी दाबेला नहीं एम विचार करतार्थी सारी रीते जणाई आव छ

तेओने अत्यन्त आनन्द उत्पन्न थई भरतखडमा तो शु पण बन्ने धर्मोए आखा जगत उपर केटलो अपरिमित उपकार कर्यो छे, ए नजरे आव्या पछी हालना जगतमाना प्रचलित धर्मो तथा बौद्ध अने जैनधर्मो एनो जेवो जेवो सबन्ध तेओनी नजरमा आवतो गयो तेम तेम आ नवीन मळेली विलक्षण रत्नोनी अगाध खाण देखीने तेओनु मन आनन्दसागरमा तल्लीन थई जशे एटलुज आ ठेकाणे कहेवु बस छे छेवट जे श्रीमत सयाजीराव महाराजनी कृपाथी मने आ भावी लाभनो यत्किंचित् अश प्राप्त थयो ते महाराजानी आ धार्मिक जिज्ञासा एवीज वृद्धि पामी रहो आ प्रमाणे ईश्वर पासे प्रार्थना करीने कराळो आवता जेवो आ लेख पूरो करु छु'

एमाना केटलाक विचारो साथे जैनोनो सहज भेद छे ते तेमना समागमथी समजी शकाय तेम छ

आगलना लेखमा पण एज प्रमाणे समजी लेवु

मुनिश्री अमरविजयजी.

प्रसंगवशात् जैन धर्मनी उत्पत्ति संबंधे कांइक विचार.

(लेखक—वासुदेव नरहर उपाध्ये
वडोदरा मराठी शाळा नं १ ए मा)

जैन धर्मनी उत्पत्ति अने विकास ए सबंधिनी घणीखरी माहीती मळी शके तेम छे. हाल केटलाक पंडितो आजदिन सुधी ए विषय उपर साशक लेख प्रसिद्ध करता रह्या छे. खरु जोता एम करवानु बील्कुल कारण नथी कारणके जेमने एवी शोधखोळ करवानी इच्छा होय तेवा पंडितोने माटे जोइए तेवा जैन धर्मना प्राचीन घणा ग्रंथो उपलब्ध थयेला छे, अने ते उपरथी जैन धर्मनो शरुवातनो इतिहास मेळववा माटे घणीज सामग्री मळेली छे शिवाय आ ग्रंथोनी योग्यता जोता तेना उपर अणविश्वास राखवाने बील्कुल कारण जणातु नथी-

साधारण रीते जोता सम्कृत भाषामा ग्रथो घणा प्राचीन छे ते छेज एवी घणाखरानी समज थएली होय छे पण जैन धर्मना ग्रथो तनाथी पण प्राचीन छे प्राचीनपणाना सवधनेज देखीये तो तमाना घणासरा पुस्तको औत्तरीय बौद्ध धर्मीओना अति प्राचीन पुस्तकोना वखतनाज छे बुद्धोनो अन बौद्धधर्मनो इतिहास लखवाने ज्यारे उपरना बौद्धधर्मीय प्राचीन ग्रथो निर्विवादरीते साधन तरीके मनाय छे त्यार जैनोना धर्मनो इतिहास लखवाने तेमना ग्रथोना माटे शका लेवानु आपणने बील्कुल कारण रहेतुज नथी जैनधर्मना ग्रथोमा ज्यारे परस्पर विरुद्ध वातो मळी आवे, अथवा तो तेमा आपला दिवसो उपरथी परस्पर विरुद्ध एवा अनुमानो ज्यारे नीकळ्ता हाय त्यारे कदाच तमना ग्रथो इतिहासना काममा साधन तरीके न गणवाने कारण छे परतु एवा सवधनीज दृष्टियी जोवा लागीए तो बौद्धधर्मना ग्रथो करता विशेष करी उत्तरीय बौद्ध ग्रथो करता जैनग्रथोनु धोरण घणुज शुद्ध जणाय छे एम छता वास्तविक रीत तेमना धर्मग्रथथी पण उपरनो जैन धर्मनो जे उद्भव अन उत्पत्तिकाल मानवो जोइए तेम न मानता पुष्कळ पडितो त विषयमा जुदाज अनुमानो करी बेसे छे तेनु कारण शु हशेवारु? तनु कारण जोता साधारण

लोकोने पण देखातु एवु बन्ने धर्मोनु बाह्य निकटसाम्य होवामा कइ सशय नथी जे बे धर्मोमा एवी अनेक बाबतो बीलकुल सामान्य होय तेवा बे धर्मो बीलकुल स्वतत्र होय ए अशक्य छे कारण एवु साम्य जे धर्मोमा होय एमानो कोईपण एक धर्म बीजामाथी नीकळेलो होवोज जोइए, एवा प्रकारनी जे एक वखत केटलाक पंडितोनी समज थइ गएली छे तेज कारणथी अनेक पडितोना मतो ते बाजु तरफ वळेला छे अने आजदिन सुधी पण घणाखरा पडितो तेवाज प्रकारनो मत पकडीने बेठा छे जैनधर्मग्रथोनी जे वास्तविक योग्यता छे तेनु तेवा प्रकारनु स्वरूप लोकोना समक्ष मुकवु अगत्यनु छे

ए सबधी शोधखोळ करता जैन धर्मना सस्थापक अने छेल्ला तीर्थकर जे **महावीर** तेमना विषयमा विशेष विवेचन करवु जोइए एटली शोधने अन्ते **महावीर** नामनी खरेखर कोइ व्यक्तिनथी पण जैनधर्मना अनुयायीओए जैन धर्म उत्पन्न थया पछी केटलाक सैकाओ गए **महावीर** नामनी एक व्यक्ति उभी करी छे, एवो जे आक्षेप छे तेनु सारी रीत अने सयुक्तिक निराकरण थई शके तेवी माहिती हाल उपलब्ध थई छे एम समजवामा आवशेज श्वेताबर जैन अने दिगबर ए बन्ने **महावीर** ए कुण्ड-

साधारण रीते जोता संस्कृत भाषामा ग्रंथो घणा प्राचीन छे ते
छन एवी घणाखरानी समज थएली होय छे पण जैन धर्मना
ग्रंथो तेनाथी पण प्राचीन छे प्राचीनपणाना सबंधमा देखीये तो
समाना घणाखरा पुस्तको औत्तरीय बौद्ध धर्मीओना अति प्राचीन
पुस्तकोना वखतनाज छे बुद्धोनो अने बौद्धधर्मनो इतिहास
लखवाने ज्यारे उपरना बौद्धधर्मीय प्राचीन ग्रंथो निर्विवादरीते
साधन तरीके मनाय छे त्यारे जैनोना धर्मनो इतिहास लखवाने
समना ग्रंथोना माटे शंका लेवानु आपणने बीलकुल कारण रहेतुज
नथी जैनधर्मना ग्रंथोमा ज्यारे परस्पर विरुद्ध वातो मळी आवे,
अथवा तो तेमा आपणा दिवसो उपरथी परस्पर विरुद्ध एवां
अनुमानो ज्यारे नीकळता होय त्यारे कदाच तेमना ग्रंथो इति-
हासना कामना साधन तरीके न गणवाने कारण छे परंतु एवा
संबधनीज दृष्टिथी जोवा लागीए तो बौद्धधर्मना ग्रंथो करतां
विशेष करी उत्तरीय बौद्ध ग्रंथो करता जैनग्रंथोनु धोरण घणुज
शुद्द जणाय छे एम छता वास्तविक रीते तेमना धर्मसबधी
पण उपरनो जैन धर्मनो जे उद्भव अने उत्पत्तिकाळ मानवो
जोइए तेम न मानता पुष्कळ पंडितो ते विषयमा जुदाज अनुमानो
करी बसे छे तेनु कारण शु हशे वारु? तेनु कारण जोता साधारण

लोकोने पण देखातु एवु बन्ने धर्मोनु बाह्य निकट साम्य होवामा कइ सशय नथी जे बे धर्मोमा एवी अनेक बाबतो बील्कुल सामान्य होय तेवा बे धर्मो बील्कुल स्वतन्त्र होय ए अशक्य छे कारण एवु साम्य जे धर्मोमा होय एमानो कोईपण एक धर्म बीजामाथी नीकळेलो होवोज जोइए, एवा प्रकारनी जे एक वखत केटलाक पडितोनी समज थइ गएली छे तेज कारणथी अनेक पडितोना मतो ते बाजु तरफ वळेला छे अने आजदिन सुधी पण घणाखरा पडितो तेवाज प्रकारनो मत पकडीने बेठा छे जैनधर्मग्रथोनी जे वास्तविक योग्यता छे तेनु तेवा प्रकारनु स्वरूप लोकोना समक्ष मुकवु अगत्यनु छे

ए सबधी शोधखोळ करता जैन धर्मना सस्थापक अने छेल्ला तीर्थकर जे **महावीर** तेमना विषयमा विशेष विवेचन करवु जोइए एटली शोधने अन्ते **महावीर** नामनी खरेखर कोइ व्यक्ति नथी पण जैनधर्मना अनुयायीओए जैन धर्म उत्पन्न थया पछी केटलाक सैकाओ गए महावीर नामनी एक व्यक्ति उभी करी छे, एवो जे आक्षेप छे तेनु सारी रीते अने सयुक्तिक निराकरण थई शके तेवी माहिती हाल उपलब्ध थई छे एम समजवामा आवशेज श्वेताबर जैन अने दिगबर ए बन्ने **महावीर** ए कुण्ड-

ग्राम अथवा कुंडपुर त्याना सिद्धार्थ नामना राजानो पुत्र हतो एम कहे छे जैनधर्मी लोकोनी जे विगतो छे ते उपरथी कुण्डग्राम नामनु कोई एक मोटु शहेर हतु अने सिद्धार्थ नामनो कोई एक अद्वितीय मोटो बलाढ्य राजा हतो एम ते बताव छे बौद्ध लोकोए जे प्रमाणे कपिळवस्तु अने सुद्धोदनना सबधमा प्रतिष्ठा वधारी हती तेज प्रमाणे जैनधर्मीओए पण कुण्डग्राम अने महावीरना सबधमा कह्यु छे आचाराग-सूत्रमा कुण्डग्रामने सन्निवेश कह्यु छे, टीकाकारोए एनो अर्थ वेपारी लोकोने मुकाम करवानी जग्या एम कर्यो छे ए उपरथी कुण्डग्राम नामनु एक सामान्य स्थळ होवु जोईए एम देखाय छ लोकवार्ता उपरथी एटलुज दखाय छे क ते विदेहमा हतु (आचारांग सूत्र २–१५–१७ जुवो) बौद्ध ग्रथोनु अन जैन ग्रथोनु सूक्ष्म निरीक्षण करीये तो महावीरनी जन्मभूमिनो पत्तो बराबर लावी शकीए महापरागा नामना बौद्धना ग्रथमा कह्यु छे के बुद्ध कोटिग्राममा रहेतो हतो त वखते त्यानी विशाली नामनी राजधानीमाथी अबापाली अन लिच्छिवा ए मळवान आव्या हता पछी बुद्ध कोटिग्रामथी नादिका तरफ गयो, नादिकागाममा तेणे एक ईटोना मकानमा मुकाम कर्यो हतो,

तेनी पासे अंबापालीउ एक अंबापालीवन नामनु स्थान हतु-ते बुद्ध अने बुद्धना अनुयायीओने समर्पण कर्यु पछी त्यांथी ते विशाली गयो त्यां तेणे 'निग्रंथीओमांनो गृहस्थाश्रमी जे लिछिवी लोकोनो नायक तेने पोतानो अनुयायी बनाव्यो-बौद्धधर्मीओनी कुण्डग्राम एवी कोइ जग्या होवीज जोइए एम गणा अने मानी शराय नामना साम्यनो विचार एक बाजुए मुकीए तो नातिका नामनो जे उल्लेख बौद्धोए कर्यो छे ते उपरथी पण उपरनुज अनुमान दृढतर थाय छे नातिका, महावीर जे ज्ञातिक क्षत्रियमंडळमांनो हतो त पैकीज ए होय एमा संशय जणातो नथी

त्यारे एकंदर रीते कुण्डग्राम ए विदेहनी राजधानी जे विशाली नगर तेना नजीकनुज एक स्थान होवु जोइए ए विशेष सभवनीय लागे छे सूत्रकृताग नामना जैनग्रंथमा महावीरने वैशालिक एम जे कहेल छे ते उपरथी अमारु मानवु सप्रमाण छे एम सिद्ध थाय छे (सूत्रकृतांग १, २ जुओ) टीकाकारोए वैशालिक शब्दनो अर्थ बे रीते करी तना बिजो पण एक नवी अर्थ न आपता त्यारे जुदे जुदे अर्थ आप्यो छे त्यारे [illegible]सते पण ते

---

१ [illegible]माता

शब्दना अर्थना विषे निर्विवाद एकमत न हतो एम स्पष्ट देखाय छे अर्थात् ते शब्दनो हाल्ना जैनग्रंथकार जे अर्थ करे छे तेनु अमो प्रमाण आपता नथी तो एमा काइपण खोटु नथी ए प्रगल्भ छे सताराना आसपासना गाममा रहेता छता " अमे सताराना छीए " एम कहेवानो जे प्रमाणे एक लोकव्यवहार छे ते प्रमाणेज वैशालिक शब्दनो व्यवहार समजवो जोइए वैशालिक शब्दनो यद्यपि विशालीमा रहेनारो एवो अर्थ थाय छे तोपण जे प्रमाणे सतारानो रहनारो कहेवाथी नजीकना गामडाओमा रहेनाराओनो समावश थाय छ तेम प्रमाणे कुण्डग्राम ए विशालीना नजीकनु होय तोपण कुण्डग्रामना रहेनाराओनो पण वैशालिक शब्दथी ग्रहण थाय छे हव कुण्डग्राम ए विशालीना पासेनु एक नहानु गामडु गणीए तो कुण्डग्रामाधिपति एटले मोटो सार्वभौम राजा एवो अर्थ न लेता एकाद गामडानो अधिपति एमज मानवु जोइए हवे जैनग्रंथकारोए सिद्धार्थने मोटो बलाढ्य राजा गणी एना ठाठमाठनो अने वैभवनु जे भपकादार वर्णन आप्यु छे तेमाथी अतिशयोक्ति बाद करी यथार्थ रीते गणीए तो सिद्धार्थ ए एक नहानो जमीनदार हतो एवुज ठरे कारण जे ठेकाणे तना उल्लेख आवे छे ते ठेकाणे पण तेने क्षत्रियज कह्यो

छे तेनी स्त्रीना नामनो उल्लेख देखीशु तोपण तेने देवी न कहेतां क्षत्रियाणी एमज कहेलु मळी आव छे ज्ञात्रिक क्षत्रियनो पण जे ठेकाणे उल्लेख आवे छे ते ठेकाणे पण तेमने सिद्धार्थना सामन्त अथवा तदनुयायी एम न कहेता तेना समान दरज्जाना गण्या छे. आ प्रमाणे ते सबधी जुदा जुदा उल्लेखोनो विचार करीए तो एटलुज नक्की थाय छे के, सिद्धार्थ ए सार्वभौम राजा तो नहोतोज पण साधारण ठाकोर जेटलो अथवा एकाद टोळीना मुख्य अधिपति नहीं पण सामान्यत एकाद जमीनदार जेटलो तेनो दरज्जो हतो एम देखाय छे आम छता पण तेना दरज्जाना लोको करता ते वखतनी मडळीमा ते विशेष प्रतिष्ठित अने मामान्य गणातो हतो एनी विशेष प्रतिष्ठा अने वजन होवानु कारण तेनो विवाह सबध मोटा घरोनी साथे थयो हतो अने ते सबध विशाली नगरीना चेटक राजानी बहेननी साथे थयो हतो सिद्धार्थनी स्त्रीने वैदेही अथवा विदेहदत्ता एम कहेता हता, कारण विदेह नगरीना राजवशनी साथे तेनो आप्त सबध हतो

बौद्ध लोकोना ग्रथोमा विशाली नगरीना राजा जे चेटक तेना विषे विशेष उल्लेख मळतो नथी बुद्ध ग्रथोमा एटलुज मळे छे के

विशालीना राजानी राजपद्धतिमा राज्यव्यवस्थानो अधिकार एक सरदार सभाना हाथमा हतो अने तेनी साथे राजानो सत्वअध्यक्ष तरीके हशे अने तेनो अधिकार हालना व्हॅाइसरॉय अथवा जनरल इन चीफ जेवो हशे लिच्छिवी लोकोनी राज्यपद्धतिनो जैन ग्रंथोमा पण उल्लेख मळे छे निरयावलिसूत्रमा एम कह्यु छे के चपाना राजा अजातशत्रुए चेटक राजा उपर स्वारी करवानी तैयारी करी ते वखते तेणे पोताना जेवा बीजा काशीकोशलना १८ राजाओने ' तमे शत्रुओनी मागणीओ कबुल राखशो के तेनी साथे लडवा तैयार थशो ? ' त अमोने जणावो एम पूछाव्यु हतु तेज प्रमाणे महावीरना काळ धम थया पछी १८ राजा ओए तमनी मरणप्रीत्यर्थे एक उत्सव करवानी सम्था निर्माण करी हती तेमा प्रमुख गणेश चेटक राजाना कोइ पण ठेकाणे जुदो उल्लेख नथी ए उपरथी चेटक राजा ते १८ राजा पैकीज एक होइ तेनो अधिकार पण इतर राजाओना जेटलाज हतो एम लागे छे शिवाय तेनो अधिकार विशालीनी राज्यपद्धतिथी नियमित थयो हतो बौद्ध ग्रन्थकारोए चेटकना नामना पोताना ग्रंथोमा उल्लेख कर्यो नथी एनी आ उपरनी हकीकत उपरथी खुलासो

१ वाणिज

थाय छे कारण एक तो ते मोटो वजनदार नहोतो, अने बीजुं तेणे पोतानु वजन जैनधर्मनो महिमा करवा माटे वापर्यु हतु बौद्ध ग्रथकारोए यद्यपि चेटक तरफ दुर्लक्ष्य करेलु तोपण जैनोए तेमना धर्म सस्थापक जे **महावीर** तेना मामा अने आश्रयदाता जे चेटक तेने न विसरी जता तेना नामनो उल्लेख पोताना ग्रथोमा सारी रीते कर्यो छे जैन ग्रथकारोनु पोताना ग्रथोमा चेटक राजानु वर्णन करवानु कारण प्रगटज छे ते एवी रीते क तेना वजनथी **विशाली** नगरी जैनधर्मनु आश्रमस्थान बनावी अने तेज कारणथी अर्थात् जैनोना प्रतिस्पर्धी जे बौद्ध तेमणे **विशाली** नगरीने पाखडीनी भूमिका अथवा शारदापीठ एवु नाम आप्यु उपर **महावीर**ना आप्त सबधी विष जे माहिती आपी छे ते कदाच निरर्थक जेवी लागशे पण तेम मानवाने बील्कुल कारण नथी **महावीर** धर्म सस्थापक थया पछी तेमना धर्मनो प्रचार केवी रीत थयो ते, उपरना तेना आप्त सबधीनी माहिती उपरथी सारी रीते समजी शकाय छे-**बुद्ध** अने **महावीर** ए हालना रजपुत जेवाना अथवा **श्रीकृष्ण**ना वशाना हता क्षत्रिओना वशमा अने जातिमा आप्त सबधीनो पाश घणो प्रबल होय छे अने तेमनामा आप्त सबधीओने

पुष्कळ दिवस सुधी याद राखे छे (महावीरना आप्त सबधी जनोना नामो अने गोत्रो कहेवाना विषे जैन लोकोनो विशेष लक्ष्य होय छे) बुद्धे पोताना धर्मनो उपदेश प्रथम क्षत्रिय लोकोमा कर्यो, तेज प्रमाणे जैनधर्मसस्थापकोए पण ब्राह्मणो करता क्षत्रियोनेज उपदेश करवानु विशेष पसद कर्यु ए उपरथी महावीर अन बुद्ध ए बन्नेए पोताना धर्मनो प्रसार करवा माटे पोताना आप्त सबधीओनी आ कार्यमा विशेष मदद ग्रहण करी जैनोए अने बौद्धोए जे प्रदेशोमा पोताना धर्मनु वर्चस्व महत्व स्थापन कर्यु ते प्रदेशोमा बीजा धर्मो उपर जैनोए अने बौद्धोए स्वमता स्थापन करवामा ते प्रदेशोना जे मोटा मोटा वशोना हता तेमनी साथे थएलो तेमनो सबध घणे अशे कारणभूत थयो महावीरनी माताना सबधथी मगध देशना राजवशनी साथे सबध थयो हतो चेटक राजानी चेलहणा नामनी पुत्रीनु राजगृह-नगरीमा रहेनारा बिंबसार[1] राजानी साथे लग्न थएलु हतु जैनोए अने बौद्धोए बिंबसारने तो महावीरनो अने बुद्धनो आश्रय-दाता तरीके सारी रीते वर्णवेलो छे चेलहणाना उदरथी बिंबसार-नो कुणिक नामनो पुत्र थयो (जैने बौद्ध अजातशत्रु कहे छे)

---

१ श्रेणिक

तेने बौद्ध धर्मना विषये बीलकुल लागणी हती नहीं बुद्धना मृत्यु पहेला ८ वर्षे तेणे बौद्धधर्मने आश्रय आप्यो हतो, एटला उपरथी तेना मनमा बौद्ध धर्म विषे मोटी श्रद्धा उत्पन्न थइ हती एवु यद्यपि कोइ मानतु होय तो ते मात्र मोटी भुल भरेलु छे एमा सशय नथी कारण प्रत्यक्ष रीते जेणे पोताना पितानो वध कर्यो अने दादाना राज्य उपर स्वारी करी ते धर्मने थोडोज माननारो हतो ए देखीतुज छे कुणिके प्रथम बौद्ध धर्म विषे बीलकुल सहानुभूति न दर्शावता पाछळथी तेणे बौद्धधर्मने आश्रय शा माटे आप्यो ? एनु कारण हव आपणी ध्यानमा सहज आवशे. जे प्रमाणे तेना पिताए अगदेशनु राज्य पोताना राज्यनी साथे जोडी दीधु हतु तेज प्रमाणे विदेहदेशनु राज्य पोताना राज्यनी साथे जोडवानी व्यूह रचना तणे पोताना मनमा करी मुकी हती विदेहदेशना लोकोने क्हाडी मुकवाना इरादे नहीं पण ते लोकोने पोताना ताबामा राखवाना हेतुथी तेणे पाटलीग्राममां एक मोटो किल्लो बाध्यो अने पछी हळवे रहीन पातानो दादो जे विशालानो राजा तेनी साथे टगे उपस्थित कर्यो विशालीनो राजा महावीरनो मामो थतो हतो एवा ते जैन धर्मना आश्रयदाता उपर ज्यारे स्वारी करी ते कारणथी जैनधर्मी लोको तेना

उपर गुस्से थया तेथी हव कुणिके तेमना प्रतिस्पर्धी जे बौद्ध तेओने आश्रय आपवानो निश्चय कर्यो एज बौद्धलोकोनो पोताना पिताना प्रीतिपात्र होवाथी तणे नणो छळ करी छेवटे तेमनो वध पण कर्यो हतो (१) अजातशत्रुन हव जय मळ्यो तेथी तेणे विशाळी नगरी पोताना ताबामा लीधी हती तथा नन्द अने मोर्य एमना साम्राज्यनो पायो तेणे नाख्यो मुक्यो हतो ए प्रमाणे मगध राज्यनी सीमा वध्या पछी बने धर्मीओन पोतपोताना धर्मनो प्रसार करवा माटे विपुल क्षेत्र मळ्यु अने तेज प्रमाणे ए प्रदेशोमा आ बन्ने धर्मोनो प्रसार नणीज झडपथी थयो ते वखतना बीजा अनेक पथो तेवान सकुचित रही जैन अने बौद्ध ए बन्ने धर्मानोज उदय शा माटे थयो ? एनु स्वभाविक कारण जोतां कुणिके करेलो मगध दशनो राज्यविस्तार एज होवो जोइए एमा सशय नथी एम महावीरना सपूर्ण चरित्रनो विचार हवे लखवा वेसना नथी पण केवळ जैना योगथी बुद्धमा अने तेनामा जे तफावत छे ते समजाय तल्लीज बाबतोनु दिग्दर्शन करीए छीए

वर्धमान ए काश्यप गोत्रीय हता मा बाप मरता सुधी ते पोताना घरमाज हता तेमनी पाछळ तेनो नदिवर्धन नामनो मोटो

भाई हतो ते वडिलोपार्जित सस्थाननो मालिक थयो ते वखतना जे मताधीशो हता तेनी अनुमतिथी तेणे सन्यास लीधो ११ वर्ष सुधी तपश्चर्या करी जुदा जुदा जगली लोकोना प्रदेशो जोया एक वर्ष सुधी तेणे दिगबर व्रत धारण कर्यु हतु बार वर्ष ए प्रमाणे नित्या पछी वर्धमानने केवलज्ञान प्राप्त थयु ने पछीथी तेने शाक्यमुनि प्रमाणे सर्वज्ञ, सर्वशक्ति, तीर्थकर अने महावीर एम कहेवा लाग्या छेल्ला त्रीस वरसनो बधो वखत तेणे लोकोने धर्मोपदेश आपवामा अने यतिजनोनी गणादिक व्यवस्था करवामा गाळ्यो हतो आ यतिजनोने तेनी मातृद्वारा अग, मगध, अने विदेह ए स्थानोमाना जे आप्त सबधीओ चेटक, श्रेणिक अने कुणिक नामना राजाओ हता तेमना तरफनो आश्रय मळ्यो दिक्षा लीधा पछी वर्षाऋतुना बधा दिवसो तेणे नमीकना शहेरमा गाळ्या छतां तेणे पश्चिम तरफ श्रावस्ति सुधी अने उत्तर तरफ हिमालय सुधी प्रवास कर्यो हतो तेमना मुख्य अग्यार गणधर हता तेओना नाम श्वेतांबर अने दिगबर ए बन्नेए जे आपेला छे तेमां बील्कुल मतफेर नथी महावीरना चरित्रमां मस्करीनो पुत्र जे गोशालक तेणे तेनी साथे करेली

१ एक वर्ष सुधी वस्त्र धारण कर्यु हतु एवु जैनोनु मतव्य छे

स्पर्धी अने तेमा महावीरने मळेलो विजय अने छेवटे पपार्मा थएलु तेनु मृत्यु ए विगतो विशेष विचार करवा जेवी छे जैन ग्रथो शिवाय महावीरना चरित्रनी माहिती बौद्धोना ग्रथोमा पण मळी आव छे बौद्ध लोकोए तेने नटपुत्र एवु नाम आपीने ते निग्रथनो मुख्य अने बुद्धनो प्रतिस्पर्धी हतो एवु वर्णन कर्यु छे बौद्ध ग्रथोमा महावीरनु गोत्र अग्निवैशायन एम आप्यु छे तो हवे खर जोता तेमना शिष्य ज सुधर्मा तेनु ते गोत्र हतु महावीर अने बुद्ध बन्ने समकालीन होवाथी बिंबसार अने तेना अभयकुमार, अजातशत्रु, लिखिवामह, गोशाल (मखलीपुत्र) विगेरे राजपुत्रो पण तेओनाज समकालीन हता जैन लोको तेनी जन्मभूमी विशालीनी आसपास हती एमज कहे छे तेना तेनी साथे सारी रीते मेळ खाय छे उदक सर्व जीवमय छे विगेरे जैन धर्मना मतनो अनुवाद बौद्ध ग्रथोमा करेलो मळी आव छे बौद्ध लोकोए नटपुत्रना मृत्युनु पपा (पावापुरी) नामनु जे स्थान आप्यु छे ते अचुक बराबर छे महावीरनी बुद्धनी साथे सरखामणी करीए तो बुद्धना अने महावीरना आयुष्यक्रममा जे विलक्षण सरखापणु मळी आव छे तेनु साहजीक कारण एवु हतु क ते बन्ने सन्यासीओ हता

महावीरना केटलाक आप्त सबंधीओना नामो बुद्धना आप्त-सबंधीओनी साथे सारी रीते मेळ खाय छे महावीरनी स्त्रीनु नाम यशोदा त्यारे बुद्धनी स्त्रीनु नाम यशोधरा हतु महावीरना ज्येष्ठबधुनु नाम नंदिवर्धन हतु त्यारे बुद्धना सावका भाईनु नाम नद ए बुद्ध राजा हतो ते वखते तेनु नाम सिद्धार्थ हतु त्यारे महावीरना पितानु नाम सिद्धार्थ हतु नामोमा साम्य होवानु कारण एटलुज के ते वखते एवा प्रकारना नामो राखवानो विशेष रिवाज हतो बन्ने क्षत्रियपुत्रोए ब्राह्मणोना धर्म विरुद्ध धर्म स्थापन कर्या एमा आश्चर्य मानवाने बीलकुल कारण नथी ब्राह्मणो जेमने मिथ्या सन्यासीओ मानता हता ते ए बौद्धोज हता. बन्नेमानो तफावत खोळी काढवा माटे हवे आपणे बुद्ध अने महावीरना जीवनक्रममानी केटलीक बाबतोनो विचार करीशु

१ बुद्धनो जन्म कपिलवस्तु शहेरमा थयो	१ महावीरनो जन्म विशाली नगरीनी पासे थयो
२ बुद्धनी माता तेनो जन्म थनाज मृत्यु पामी	२ महावीरना मा बाप घणो मोटो थता सुधी हयात हता
३ बुद्धे पोताना वडीलोनी परवानगी न लेता अने तेमनी	३ महावीरे पोताना वडीलोनी-परवानगी लई तेमनी समक्ष

हयाती छतां सन्यास लीधो	सन्यास लीधो
३ बुद्धे ६ वरस तपश्चर्या करी	४ महावीरे १२ वरस तपश्चर्या करी
५ तपश्चर्यानो काळ फोगट छे एम बुद्धनो मत हतो	५ तपश्चर्या जरूरनी छे एम महावीरनो मत हतो माटे जे तेणे तीर्थकरना निर्वाण (१) पछी तपश्चर्यानु मत पाळ्यु
६ बुद्धनु देहावसान कुशि-नगरमां थयु	६ महावीरनु देहावसान पपा (पावापुरी) शहेरमा थयु

महावीरना चरित्रनु एटलु विवेचन करवानु कारण एटलु ज के, जैन धर्मनी उत्पत्ति बुद्ध धर्ममाथी न होईने बीलकुल स्वतंत्र छे के नहीं एनो निकाल करती वखत तमाने घणी बाबतो उपयोगी थई पडशे कटलाक पंडितो महावीर अने बुद्ध ए बने जुदा जुदा महापुरुषो हता एम तो माने छे छतां ते उपरथी पण आ शंकायुक्त प्रश्ननो निकाल थाय छे एम समजता नथी जैनसाहित्य विषे लखता प्रोफेसर वेबर एम कहे छे के जैन ए अति प्राचीन बौद्ध धर्मीओनी एक शाखा होय

१ तेमना अनुयायीओए तपश्चर्या करवानु कायम राख्यु.

जैनधर्म बौद्धधर्ममाथी नीसळ्यो होवो जोईए एम मान-वा तरफ मोटा मोटा पंडितोनी प्रवृत्ति थवानु कारण बन्ने धर्मोमां जे साम्य देखाय छे ते छे ते विषे हवे आपणे विचार करवो जोईए जैन धर्म ए बौद्ध धर्मनी शाखा होय एम प्रोफेसर लेसने चार अत प्रमाणोथी सिद्ध करी बताव्यु छे ते विषे हवे क्रमवार विचार थशे

बन्ने धर्मोमा तेमना सस्थापकोने जिन,अर्हत, महावीर, सर्वज्ञ, सुगत, तथागत, सिद्ध, बुद्ध, संबुद्ध, परिनिर्वृत्त अने मुक्त एवा नामो आपवामा आव्या छे घणा वखतना सम-यने अनुसरीने बन्नेना ग्रथोमां उपरना नामो अपायां परतु तेमां विशेष एटलुज के जिन अने श्रमण ए सिवाय ते सवथी केट-लाक नामो एकपथमाना लोकोए विशेष पसद कर्या अने केटलाक तेमना विरुद्ध बीजा पथमाना लोकोए विशेष अर्थनी दृष्टिथी पसद कर्या

उदाहरण तरीके—बुद्ध, तथागत, सुगन अने संबुद्ध एवा शाक्यमुनिना हमेशानाज नामो छे मह वीरनी साथे एवा नामोनो प्रसगविशेषज उपपद तरीके उपयोग करवामां आवतो

तेज प्रमाणे **वर्धमान**ना उपपदार्थक जे **वीर** अने **महावीर** एवा शब्दो तेज प्रमाणे उपपदना अर्थे उपयोगमा लीधेला जणाई आवशे

तीर्थंकर शब्दना ते एथी पण जुदा स्वरूपे उपयोग करता हता जैनोना मत प्रमाणे **तीर्थंकर** एटले धर्मसस्थापक अने तेज **तीर्थंकर** शब्द बौद्ध अनुयायीओना मतमा बुद्धधर्मविरुद्ध नास्तिक-पथ काम्नाराओना माटे वपराएलो छे **सुगत** अने **तथागत** विगेरे शब्दोमाथी हरएक पथानुयायी तेमना केटलाक विशेष शब्दो पसद करी पोताना ग्रथोमा वापरता हता ए उपरथी शु सिद्ध थाय छे ? ते शब्दो जैनोए बौद्धो पासेथी लीधा एम सिद्ध थई शके सर ? बिल्कुल नहींज कारण उपरना शब्दनो धात्वर्थी करतां काई जुदाज अर्थे एक वखत एनो नक्की उपयोग थई चुक्यो एटले पछी एक तरफ ते शब्दनो उपयोग तेज अर्थमा करवो जोइए अथवा तो ते शब्दनो कायमनो त्याग करवो जोईए *तथागत*, *सुगत*, विगेरे शब्दोना एक वखत अर्थ करी चुक्या पछी जैनोए तेओना पासेथी ते शब्दो लेईने तेज अर्थमा वापरेला होय एम सभवतु नथी ए विष विचार करता एम देखाय छे के सामान्य माणसो करता विशेष सद्गुणी पवित एवा पुरुषोने

लगाडवा जेवा केटलाक विशेषणो अने शब्दसमुदाय होय छे ते प्रमाणे ते वखते मोटा मोटा सद्गुणी महान् पुरुषोने लगाडवा जेवा केटलाक विशेषणो अने नामो होय छे ते शब्दोना मूळ अर्थने अनुसरीने ते वखते तेवा शब्दो अनेक महान् पुरुषोने लगाडता हता पछी तेवा शब्दो पोताना विरुद्ध पयोमा लोकोए पोताना धर्मसस्थापकोने लगाड्या ए कारणे अथवा पोताना महान् लोकोत्तर सद्गुणयुक्त धर्मसस्थापकोने लगाडवा तेवा शब्दो अयोग्य लागेला एटले पछी ते शब्दोनो धर्मसस्थापकोना उपपद अर्थे उपयोग थवा लाग्यो उदाहरण तरीके— तीर्थकर शब्दनो योगरूढार्थ देखीए तो धर्मसस्थापक एवो थाय छे जैनधर्मग्रथोमा तेवा अर्थे ते शब्द वापरेलो छे परतु बौद्ध लोको ते शब्द तेना मूळ अर्थे न वापरता नास्तिकपथप्रवर्तकोने लगाडता रह्या एज कारणथी बौद्ध लोको पोते जैनधर्मना द्वेषिओ छे एम स्पष्टपणे दर्शावे छे बुद्ध शब्दनो मुक्त एवा अर्थे उपयोग करे छे जैन—ग्रंथोमा एवा अर्थे ए शब्दनो घणा वखते उपयोग कर्यो छे. परतु बौद्धग्रथोमा बुद्धशब्दनो धर्मसस्थापक एवा अर्थेज उपयोग करेलो मळी आवे छे उपरनी हकीकतनो सार काढीए तो एटलोज देखाय छे के बौद्धलोकोए ज्यारे उपरना शब्दोनी

परिभाषा गोठवेली त्यारे तेमनु जैनोनी साथे सन्य तो नहोतुज पण तेमनो तेमनी साथे झगडो थाउनो हतो

जैनो करतां बौद्धो पूर्वेना एम नक्की करवाने माटे–प्रोफेसर लेसने एक प्रमाण आप्यु छे ते कहे छे के बने धर्मोमा तेमना धर्मसस्थापकोना मृत्यु थया पछी तेमनी मूर्तिओनी प्रतिमा विगेरेनी देवळोमा पूजा करे छे जगतमां आज सुधी जे अनेक धर्मसस्थापको थया के जेमणे बुद्ध प्रमाणे अमे सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान् छीए एम लोकोने दर्शाव्यु ते पैकी जैन अथवा बुद्ध एमना अनुयायीओ शिवाय कोईए पण जैन अने बुद्ध प्रमाणे पोताना धर्मसस्थापकोना ईश्वरोने मान आपेलु नथी तेवाज कारणथी अर्थात् एक तो बौद्धो पासेथी जैनोए आ पद्धति लीधी होवी जोईए अथवा तो बौद्धोए जैनोनी पासेथी लीधी होवी जोईए ए शिवाय त्रीजी उत्पत्ति लागु थती नथी

आम छता पण ए मूर्तिपूजानो अने मूळना जैनधर्मनो अथवा बौद्धधर्मनो एक बीजानी साथे कोईपण प्रकारनो सबध नथी कारण साधुपूजा, प्रतिमापूजा अथवा चैत्यवदन विगेरेनी बाबतोनु मूळ जोतां तेनो आरभ मूळना यतिजनोनी साथ न होईने गृहस्थजनोनी साथे विशेष देखाय छे सामान्यजनोने

तेमना प्राचीन परंपरागत यक्ष, भूत, पिशाच देवताओ करतां काईपण विशेष पूज्यतम भाव होवो जोईए एम ज्यारे भास थवा लाग्यो, त्यारे उपरनो प्रकार (प्रतिमापूजा विगेरे) गृहस्थ-जनोना तरफथी हळवे हळवे प्रचारमा आवेलो होवो जोईए. प्रतिमापूजा चैत्यवंदन विगेरे विशेष प्रकारो उत्पन्न थवानु कारण ते वखते ८४ लक्ष योनिओना फेरीमाथी पार उतरवानो भक्ति-मार्ग एज एक रस्तो छे एवो भरतखंडमा ते समये प्रचलित थएलो मत होय त्यारे जैनोए तीर्थकरादिकोनी पूजा विगेरे विधिओ बौद्धो पासेथी लीधी अने बौद्धोनी ते विधिओ मात्र स्वयंभ हती एम मानवा करता ते वखते भरतखंडमां जे सामान्य धार्मिक उत्क्रांति चालेली हती ते मूळ कारणथीज बनेए पोतपोतानी विधिओ लीधी एम मानवु ए वधारे सयुक्तिक लागे छे. बन्ने धर्मोमा बीजु एक साम्य 'अहिंसा परमो धर्म.' ए पण छे ते विषे आगळ एकाद वखत विचार करीशु

उपरना सिद्धांतोनु समर्थन करवा माटे प्रोफेसर लेसने थोडुं एक प्रमाण आप्यु छे, ते ए छे के जैन अने बौद्ध ए बन्ने सृष्टिनी उत्पत्तिना काळनी कल्पनातीत अपरिमेय संख्याथी गणना करे छे. जैन शास्त्रोमा पल्ये, युगो विगेरे विषे जे तेओनो हिसाब छे तेमां

तेओ एवी कल्पनाओ बौद्धो उपरथी लेंची होय एम नथी तोपण ए कल्पना तओए ब्राह्मणो पासेथी लीधी होय एम विशेष संभवनीय लागे छे युगो विगेरनी कालगणना विषे जैनोए बौद्धो करता अने ब्राह्मणो करता पण मुख्य बाबतमा एक विचित्र नवीन योजना काढेली छे जैनोए उत्सर्पिणी, अवसर्पिणी अने आरा एवा नामथी कालगणनानी पद्धति काढेली छे तेनी उत्पत्ति बौद्धोना ४ मोटा अने ८० नहाना कल्पोमाथी पण काढी शकाय तेम नथी अने तेज प्रमाणे ब्राह्मणोना कल्पोमाथी अने युगोमाथी पण काढी शकाय तेम नथी तेमनी उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी ब्रह्मदेवनी रात्री दिवसथी नीकळी होवी जोईए एम लागे छ

अहिंसा विषे पछी विवेचन करीशु एम पाछळ कहेलुज हतु तेथी ते विषये हव थोडु विवेचन करीशु प्रोफेसर वेबेरे जनोना पांच मुख्य धर्मो अने बौद्धोना दश धर्मो एमा निकट साम्य छे एम बताव्यु छे ते नीचे प्रमाणे –

* बौद्ध यतिओना १० धर्मो त नीचे प्रमाणे—

१ प्राणिओनी हिंसा नहि करवानु व्रत

---

* आ मतोनी बाबतमा–डॉ हर्मन् जेकोबीना लेख साथे अक्षोनी गोठवणीमां फरक पड छ

१ चोरी नहि करवानु मत
१ अपवित्र कृत्य नहि करवानु मत
१ असत्य नहि बोलवानु मत
२ असत्य भाषण करवु नहि (अहिंसा)
३ अदत्त वस्तुनु ग्रहण करवु नहि (अस्तेय).
४ ब्रह्मचर्य धारण करवु (ब्रह्मचर्य)
५ अने ऐहिक वस्तु उपर ममत्व राखवो नहि
बौद्धो अने जैनोना ५ मतो बीलकुल सरखा छे

आ साम्य जोता ए पैकी कोईए पण बीजानी नकल करेली होवी जोईए एम मानवुज ठीक देखाय छे तो पण आ मतो जैनोए बौद्धो पासेथी लीधा के बौद्धोए जैनो पासेथी लीधा ए वाद तो हजु कायम छे ते छेज तेनो आ उपरना प्रमाणोथी कांई पण नीकाल थई शकतो नथी हवे ए विषे त्राहित दृष्टिथी विचार करीए तो एम जणाई आवशे के आ मतो मूळना जैनोना पण नथी परतु बनेए आ मतो त्रीजा पासथी (ब्राह्मण सन्यासीओ पासेथी लीधा छे) एवु सप्रमाण सिद्ध थाय छे (जुवो बौद्धायन स्मृति २–१०–१८ मुम्बु भाषातर Sacred Book in the East) भाग १४ पानु २७५

६ प्रगति अने सद्गुण नष्ट करनारा मादक द्रव्योनु सेवन नहि करवानु व्रत

२ निषिद्ध समये भक्षण नहि करवानु व्रत

७ गायन, नर्तन, वादन अने नाट्य इत्यादियी दूर रहेवानु व्रत

८ भूषण, अलंकार, हार, सुगंधी द्रव्यो विगेरेनु सेवन नहि करवानु व्रत

९ मोटी शय्या नहि स्वीकारवानु व्रत

१० सुवर्ण अने रौप्यनु ग्रहण न करवानु व्रत

ए शिवाय बौद्धोनी बीजी ८ विधिओ छे ते पैकी प्रत्येक बौद्धे पहेली ५ विधिओ पाळवीज जोईए अने छेवटनी गृहस्थोना माटे छे ते आठ धर्म नीचे प्रमाणे—

१ जीवहिंसा करवी नहि.
२ आप्या वगर लेवु नहि
३ असत्य भाषण करवु नहि
४ मादक द्रव्योनु सेवन करवु नहि.
५ व्यभिचार करवो नहि.

६ रात्रे निषिद्ध अन्न खावु नहि.

७ माळा, सुगंधी द्रव्यो विगेरेनु सेवन करवु नहि.

८ चटाई उपर उंघवु.

बौद्धोना ९ व्रतो जैनयतिओना ९ व्रतोनी साथे सारी रीते मळी जाय छे

१ हवे जैन अने बौद्ध एमना यतिओना आचार विचारोनो उद्भव क्याथी थयो हशे? ए विषे पण आपणे शोध करवाना छे संन्यासाश्रमनी अनेक विधिओ जैनोए अने बौद्धोए ब्राह्मण सन्यासीओना नियमो उपरथी लीधी छे एवो फक्त अमारोज मत नथी डॉक्टर ब्युलरे बौद्धायन सूत्रनु भाषातर कर्यु छे तेमा तेणे पोतानो मत एवोज दर्शाव्यो छे प्रोफेसर केर्ने ' भरतखड-माना बौद्धोनो इतिहास ' नामनो ग्रथ कर्यो छे तेमा पण पोतानो मत अमारा प्रमाणेज आप्यो छे. जैनोना यतिओना जे नियमो छे ते ब्राह्मणोना चतुर्थाश्रमना नियमोनी केटलीक आवेहुब नकल छे ए स्पष्ट रीते दर्शाववा माटे हवे अमे गौतम अने बौद्धायन स्मृतिमाना सन्यासीओना नियमोनी जैनयतिओना नियमोनी साथे तुलना करीने बतावीशु एटले घणा ठेकाणे बौद्धोना नियमो

पण स्मृतिमाना नियमोनी साथे मळे छे ते हव स्पष्ट रीते ध्यानमा आवशे

११ सन्यासीए धान्यनो सग्रह करवो नहीं बौद्ध अने जैनयतिओने पण सासारिक प्रमाणे सग्रहनो निषेध छे (जैनोनु ९ मु मत जुओ) जैन यतिओ पोतानी साथे भिक्षापात्र, * कुचलो, कपडा विगेरे जे काई राखे छे ते पण तेमनी माल्मत्ता होती नथी पण धार्मिक विधि माटे आवश्यक छे ए दृष्टियी ते राखे छे

१२ सन्यासिओए ब्रह्मचर्य पाल्वु, बौद्धायनस्मृति प्रमाणे अने जैनयतिओना नियमो प्रमाणे आ बन्नेनु चोथु मत छे बौद्धोना यतिओनु ए पाचमु मत छे

१३ पर्जन्यकालमा सन्यासिए एकज शहेरमा रहेवु ए उपरथी एम देखाय छे के, बौद्ध अने जैन एमनु वसो नामनु जे मत छे ते पण ब्राह्मणो पासेथीज लीधेलु होवु जोईए

१४ तेणे नाना गाममा फक्त भिक्षा माटे जनु जैनोनो नियम ए बाबतमा एटलो कडक नथी जैनयतिओने शहेरमा अगर गाममा सुवानी परवानगी छे, तोपण तेणे त्या वधारे दिवस

* रजोहरण

मुकाम करवो नहीं महावीर शहेरमा ५ दिवस करता वधारे अने गाममा १ रात्रि करता वधारे रहेता नहोता

१५ सन्यासिए मोडा भिक्षा माटे जवु (लोकाना घरनु जमण थया पछी) जैनयति सवारे अथवा बपोरे पोतानी भिक्षा आणे छे एनु कारण जमवाना वखते जता आवता भिक्षा "माटे" निकळता पोताना प्रतिस्पर्धिओनी मुलाकात थवानो सभव होय छे ते टाळवा माटे तेओ सवारे अथवा बपोरे जता हशे जैनयति घणा भागे दिवसमा एकज वखत भिक्षा माटे निकळे छे एक दिवस करता वधारे उपवास कर्या होय तो तेओ बे वखत पण भिक्षा माटे जई शके छे

१६ मिष्टान्न भक्षण विषे इच्छानो त्याग, जैनयतिओना पाच महाव्रतो पैकी चोथा व्रतमा एज कहेलु छे

१७ वाचा, नेत्र अने कृति एनु नियमन करवु जैनोनी त्रण गुप्तिओनी साथे अथवा काया वाचा अने मन एना सयमनी साथे ए घणा अश मळे छे

१८ गुप्तेंद्रियोनु आच्छादन करवा माटे तेमणे वस्त्र धारण करवु पोषाक विषे जैनयतिओना नियमो एटला सादा नथी. जैनोना शास्त्र प्रमाणे यतिओ नग्न फरी शके छे अथवा तेओ

केश अने हाथना नखोनु नियमन करवु (काढी नांखवां) एम कह्यु छे सन्यासना वखते जैनो पण केश विगेरे काढी नाखे छे

२३ तेणे बीज नाश करवो नहीं आचारांगसूत्रना बीजा अध्ययनमां जैनयतिए इंडा, जीवता प्राणिओ, बीज विगेरेने पीडा न आपवा विषे अने अतिक्षुद्र प्राणी अथवा वनस्पतिने पण पीडा न करवा विषे जैनयतिओनो घणो कटाक्ष छे

२४ कोई उपकार करो अथवा अपकार करो त सर्वेनी साथे उदासीन पणे वर्त्तवु

२५ ऐहिक अथवा पारत्रिक कल्याण * विष पण प्रयत्न करवो नहीं

छेवटना बे नियमो जैनग्रन्थोमा पण मळी आवे छे कारण जैनधर्मनु पण धोरण उपरला नियमोना धोरण प्रमाणेज छे महावीरे उपरना बन्ने नियमोने अनुसरिनेज पोतानु वर्त्तन राख्यु हतु चार महिना करता वधारे काळसुधी नानाप्रकारना जीव, जन्तुओ तेना शरीर उपर चरता अने फरता, तमने वेदना पण उत्पन्न करता, तेमणे घास, ठंडी, पवन, अग्नि अन मच्छरो

* इन्द्रियोना सुखन माटे

एमना सम्बन्धथी जुदा जुदा प्रकारना दु खो सहन कर्यां तेणे नाना-
प्रकारना दैवी अने मानवी प्राणिओथी उत्पन्न थनारा सर्व
प्रकारना सुखदायक अने दु खदायक प्रसगो पणी धीरजथी
सहन कर्या

सन्यासाश्रमनी छेल्ली स्थितिमा जीवन मरण विषे सन्यासी
बिल्कुल उदासीन हता बौद्धायनसूत्रमाना अनेक नियमो जैनोना
नियमोनी साथे बिल्कुल नजीकमा मळे छे यतिए कायिक,
वाचिक अने मानसिक रीतिथी कोई पण सूक्ष्मप्राणिने इजा करवी नहीं-

जेना विषे पहेली योजना करेली नथी अने जे अकस्मात्
प्राप्त थयु छे एवा प्रकारनु अयाचित अन्न सन्यासिए भक्षण करवु
तेनु पण प्रमाण शरीर धारणने जेटली जरूर होय तेटलुज ते होवु
जोईए ए विषे जैनयतिओना नियमो, बौद्धायनस्मृतिमा ब्राह्मण-
सन्यासी विषे जेवा नियमो छे तेज प्रमाणे छे एम जणाई आवशे-
ए विषे बौद्धभिक्षुनो काई विशेष कटाक्ष नथी तेनामा तेओना
भोजननी पहेली व्यवस्था करी मुकी होय तोपण चाले छे अने
भोजनना आमत्रणो आवे तोपण ते स्वीकारे छे ब्राह्मणसन्या-
सिओना अने जैनयतिओना नियमोनी आपणे उपर जे तुलना
करी ते उपरथी जैनोए ब्राह्मणोना नियमोनु अनुकरण करेलु होय

जोईए एम सिद्ध थाय छे कारण एटला नहाना प्रदेशमाना बौद्ध-यतिओनु सर्व भरतखंडमा प्रसरेला सन्यासिओए अनुकरण कर्यु होय एम मानवु ते असमान्य लागे छे सिवाय गौतमस्मृतिकार बौद्धधर्मस्थापनाना पहेला थइ गयो छे प्रोफेसर ब्यूलरना मत प्रमाणे आपस्तंबसूत्र इ स पहेला ४००–६०० वर्ष पूर्वे रचेलु होवु जोईए तेज प्रमाणे ब्युलरना मतथी बौद्धायन, आपस्तंब करता पुष्कळ प्राचीन छे १०३६ वर्ष नहीं पण कटलाक सैकाओ प्राचीन होवो जोइए एवो तेमनो मत छे बौद्धायनसूत्र करतां गौतम स्मृतिकार प्राचीन, अने गौतम अने बौद्ध ए बन्ने पण बौद्धधर्मस्थापनाना पूर्वेना हता अर्थात् तेवाज कारणथी ए बन्नेए बौद्धोनु अनुकरण कर्यु एम कहेवु असबद्ध छे ए स्पष्ट छे कदाच ब्युलर साहेबनी कालगणनामा भूल थई हशे एम गणिए अने बौद्धधर्म पछी ए बन्ने स्मृतिकार थया एम तुष्यदुर्जनन्यायथी उलाच मान्यु तोपण ब्राह्मणोए बौद्धो पासेथी पोताना सन्यासना नियमो लीधा होवा जोईए एम मानवु युक्तिविरुद्ध थाय कारण सर्वत्र प्रगट नास्तिक गणाएला बौद्धोना नियमोनु अनुकरण ब्राह्मणोए कर्यु होय ए कवी रीते सभवे ?, हवे ए उपर केटलाक एम कहेशे के, बौद्धोए ब्राह्मणोनु अनुकरण कर्यु एम तमो कहो

छो ते पण केवी रीते समज ?, कारण चोकखी रीते ढंपी गणाएला ;
ब्राह्मणोनु बौद्धो केवी रीते अनुकरण करशे ? तो तेनो उत्तर ए
छे के, बौद्धधर्मनी स्थापना वखते बौद्धो पण ब्राह्मणोने तेओनी
विद्वता बद्दल अने नीति माटे घणु मन्मान आपता माटे बौद्धोएज
ब्राह्मणोनु अनुकरण कयु तोपण जैनोए खुद ब्राह्मणोना नियमोनु
अनुकरण कर्युं के बौद्धोए ब्राह्मणोनु अनुकरण कर्युं अने बौद्धोनु
जैनोए अनुकरण कर्युं ? ए प्रश्न तो हजु रहे छेज ए शकानु
निराकरण बे प्रकारथी थई शके छे एक तो जैनोए अनुकरण
करवानु ते बौद्धो करता ब्राह्मणोनु अनुकरण करवु तेओने वधु
प्रशस्त लागशे कारण एक तो नास्तिक गणाएला बौद्ध मार्फत
अनुकरण करवा करता प्राचीन कालथी मन्मान पामला ब्राह्म-
णोनुज खुद अनुकरण करवु विशेष समजनीय लागे छे शिवाय
केटलेक ठेकाणे जैनोए जे ब्राह्मणोना नियमो लीधा ते बौद्ध-
ग्रन्थोमां मळी आवता नथी (बौद्धोए ते लीधा नथी). जो
बौद्धोए ब्राह्मणो पासेथी नियमो लीधा अने बौद्धो पासेथी जैनोए
लीधा एम मानीए तो उपरना बौद्धग्रन्थोमा नही होय एवा
परन्तु ब्राह्मणग्रन्थोमा अने जैनग्रन्थोमा मळी आवनारा निय-
मोनी उत्पत्ति शुं ? अर्थात् तेवाज कारणथी जैनोए बौद्धो मार्फत

अनुकरण न करता ब्राह्मणो पासेथी ते नियमो लीधा एज सिद्ध थाय छे *

हवे कदाच कोई एम कहे के, ब्राह्मणोए सन्यासिओना नियमो जैनो पासेथी अथवा बौद्धभिक्षुओ पासेथी लीधा एम केम न मानिए ? आ आक्षेपनो एक उत्तर छे, ते आ प्रमाणे—ब्राह्मणोना चारआश्रमो पैकी छेल्लो चोथो आ सन्यासाश्रम छे आ सन्यासाश्रम ब्राह्मणसस्था उत्पन्न थवाना पूर्वे पण हतो एम यद्यपि मानी शकाय नहीं तो पण ते आश्रम जैन अथवा बौद्ध करता घणो प्राचीन हतो ए निर्विवाद छे

बीजु—ब्राह्मणसन्यासिओ आखा हिंदुस्तानमा प्रसरेला हता अने बौद्धयतिजनोनो धर्म स्थापन थयाने बे सैकाओ थया तो पण तेनो प्रसार नियमित प्रदेशोमाज हतो, सन्माननीय अने

---

* पृ ८५ थी लइने अहिं सुधी जे जे विचारो करवामां आव्या छे ते प्राय जैनधर्मनी सामान्य कथाओने जोवा वाला लेखकोना विचारोने लईनेज करवामा आव्या छे, बारीक दृष्टिथी विचारीए तो बौद्ध तथा ब्राह्मणो करतां विशिष्ट—अनेक सूक्ष्मतत्त्वविचाररत्नोने [illegible] करनार जैनधर्मने—यमनियमादि जेवी सामान्य बाबतो बीजा पासेथी लेवानी जरुरी पडेज नहीं आगळ जतां लेखकना खुलासा पण एवाज रूपमां अनेक स्थळोनामा आवशे

विद्वान् एवा ब्राह्मणोनु अनुकरण करवामा बौद्धोने सरमाववानु बिल्कुल कारण नथी ए देखीतुज छे एटला माटेज जैन अने बौद्ध जाते ब्राह्मण नहीं होय छता पण बहुमानथी पोताना प्रयोमां ब्राह्मण शब्द लगाडे छे

हवे केटगाक कहेशे के, आ संन्यास कदाच जैनोए अने बौद्धोए ब्राह्मणो पासेथी लीधो होय तो पण तेनो उद्देश क्षत्रिओनी प्रीतिना माटेज हतो एम देखाय छे

बुद्धे प्रथम मोटा मोटा मडलोने उपदेश कर्या एम ऑल्डेन-बर्गे सिद्ध करीने बताव्यु छे कारण बुद्धे प्रथम बनारसमा जे व्याख्यान आप्यु हतुं तेनो भावार्थ एम छे के, "एमना माटे मोटा वशना मोटा मोटा पुरषो गृहस्थाश्रमनो त्याग करी यतिधर्मनी दिक्षा ले छे" जैनो पण ब्राह्मणो करता क्षत्रियोने विशेष पूज्य गणे छे एम तेमनो धर्मसस्थापक जे महावीर तेनी हकीकत लखता जैन चरित्रकारोए तेना जरायुगर्भने ब्राह्मणश्री देवानन्दाना गर्भाशयमाथी काढीने क्षत्रियाणीना गर्भाशयमा मुक्यो ए उपरथी स्पष्ट देखाय छे एम थवानु कारण जैनलोको एम कहे छे के, तीर्थंकर जेवा धर्मसस्थापकोनो जन्म ब्राह्मण जेवा हल्का कुलमा थतो नथी इतरजातिओना यतिओने ब्राह्मणसन्यासी.

जेवा गणता नहोता एम पण घणा अंशे समजनीय छे आ तरफ तो चारे आश्रमनो अधिकार फक्त ब्राह्मणोनेज छे एवो मन दृढ थयो छे अने तेने मनुस्मृतिनो अध्याय ६, श्लो ९७ नो आधार आपे छे ते उपरनी हकीकत जोता बधा टीकाकारोनो एम मत हतो ते देखातो नथी केवळ आ तरफ मात्र चार आश्रम ब्राह्मणोए ग्रहण करवा, त्रण क्षत्रिओए, ने बे वैश्योए, अने क्षुद्रोए फक्त एकज आश्रम ग्रहण करवो एवी समज थई छे

ए सर्व हकीकत उपरथी एम सिद्ध थाय छे के, अति प्राचीन वखत पण ब्राह्मणेतरयतिवर्ग ब्राह्मणयतिवर्गा करता बिलकुल जुदो गणाएलो होवो जोइए ए खरु नथी, कारण क्षत्रिओने चारे आश्रमनो अधिकार हतो खराजाति राजाओ पुत्रने राज्यकारभार सोंपीने जगल्मा जईने सन्यास लइने रह्या हता एवा वर्णनो छे तेनी उपपत्ति शु ? जनकादि तपस्विओ हता ए सिवाय अनेक क्षत्रिय तपस्विओना दृष्टांत आपी शकाशे

(वारु, त्यारे ब्राह्मण अने ब्राह्मणेतर एवा मार्गा करतां द्विज (ब्राह्मण, क्षत्रिय अने वैश्य) अने द्विजेतर एवा कदाच थई शकशे) ब्राह्मणेतरोना मोक्षना साधनभूत जे चतुर्थाश्रम एमा प्रवेश थतो नहोतो। एटला माटेज बौद्ध अने जैन विगेरे ब्राह्मणोथी

विरुद्ध पर्यो निर्माण थया अने एज कारणथी ब्राह्मणेतरयतिजनोने मोक्षपन्थ सर्वेने सुगम करवा माटे जुदा जुदा पन्थो काढवानी जरूर पडी ब्राह्मणधर्मप्रमाणे अनधिकारी यतिजनोने पोताना जुदा जुदा पन्थो काढवाने वधु शु साधन थयु ए वशिष्ठोक्ति उपरथी सारी रीते ध्यानमा आवशे वशिष्ठ कहे छे, सन्यासिए सर्वेनो त्याग कर्यो तोपण वेदाध्ययननो त्याग ते करी शकता नथी सन्यास लीधा पछी केटलाक पंडितोना मतथी वेदोक्तकर्मकांडनी कई पण जरूर नथी एटलु कारण मल्या पछी शु पूछवु ? केटलाकोए तो कर्मकांड बधज कर्यु, अने वेदपठन पण बध करी दीधु ए विषे वशिष्ठ कहे छे, सन्यासिए कर्मकांडनो त्याग कर्यो तो पण हरकत नथी पण वेदपठन करवुज जोईए. कारण वेदपठन न करे तो ते शूद्र थाय छे माटे तेणे वेदपठन बध करवु नहीं जोईए. वशिष्ठना एना स्पष्ट उपरथी केटलाकोए फावे तेम होय तोपण वेदपठन ते वखते बध कयु ए निर्विवाद छे हवे केटलाकोए वेदपठन बध कर्यु एनो अर्थ थता थता हळवे हळवे केटलाकोए तो वेदोमा कांई तात्पर्य नथी, ते निरुपयोगी भाग छे एम मानवानी शरुआत करी एवा प्रमाणे ब्राह्मणो तरफथी धिक्कार पामेला ब्राह्मणेतरयतिजनोने फावतु आव्यु केटलाक ब्राह्मणसन्यासिओए

संन्यास लीधा पछी वेदपठन बध करेलु जोयु तनो अथ ते निरुपयोगी अने अप्रमाण छे एटला माटेन ब्राह्मणसन्यासिओए छोडी दीधो एवु ब्राह्मणेतर लोकोए लोकोमा फेलाव्यु एवी दृष्टिथी जोता जैन अने बौद्ध एमना जेवा जुदा जुदा पन्थो उत्पन्न थवानु मूल चतुर्थाश्रम छे अने ते चतुर्थाश्रम नास्तिकपन्थनो नमुनो होवो जोईए एम लागे छे एकदर रीते जैन अने बौद्ध ए ब्राह्मण धर्मोमाथी निकळ्या एम मानवुज योग्य लागे छे मात्र जैन अने बौद्ध ए एकी वखते ब्राह्मणधर्मोमाथी निकळ्या एम नथी तो पण केटलाक वर्षे हळवे हळवे फेरफार थता थता परिणत अवस्थामा आवता गएला ब्राह्मणधर्ममाथी ते निकळ्या हशे एम मानवु विशेष प्रशस्त लागे छे

जैनोए पोताना छेल्ला तीर्थङ्कर महावीर विषे जे विगतो आपी छे ते तपासता अने जैनयतिओना नियमो तथा जैनोना अनेक आचार विचार तपासीशु तो जैनधर्म बौद्धधर्ममाथी निकळ्यो एम कहेवाने बिलकुल प्रमाण मळतु नथी बौद्ध अने जैन ए बन्ने धर्मोमाना मुख्य मुख्य मुद्दाओना मतो एटला बधा भिन्न छे के, बन्नेना मुख्य मतो एक छे अथवा सामान्य छे एम पण कही शकशेज नहीं उदाहरण तरीके–बुद्धना निर्वाण विषे गमे

तेम होय पण सर्वजगत्नी उत्पत्ति शून्यथी थई ने तेनो शून्यमां लय थाय छे एवी उपपत्ति ते करे अथवा अन्यथा करे पण सर्वव्यापि आत्मा तत्त्व छे एम जे अद्वैतवादिओनो मत छे तेना विरुद्ध बुद्धनो मत हतो ए देखीतो छे. जैनलोको ब्राह्मणो प्रमाणे आत्मतत्त्व माने छे परन्तु सांख्य, न्याय अने वैशेषिकदर्शनकारो प्रमाणे ते जगत्व्यापि न मानता तेनु विभुत्त्व नियमित माने छे. बौद्धलोकोना पंचस्कन्ध विगेरे जे सिद्धान्तो छे तेनी नकल जैनशास्त्रमा नथी जैनोना अध्यात्मग्रन्थोमा सर्व जगो पर जे एक विशेष उपलब्ध थाय छे ते ए छे के, फक्त प्राणी अथवा वनस्पतिमात्र जीवतत्त्व न मानता पंचमहाभूतोना अत्यतवारिक परमाणुमा—एटले पृथ्वी, आप, तेज, वायु अने आकाश इत्यादिकोमा पण जीवतत्त्वनु अस्तित्व माने छे बौद्धोना अध्यात्मग्रथोमा एवा प्रकारनु क्यांए प्रतिपादन करेलु नथी हिंदुतत्त्वज्ञानमां ज्ञाननी संपूर्ण अवस्था सुधी जुदा जुदा पगथियां मानेला छे पण ए विषे जैनोनो स्वतंत्र मत छे ए संबंधि तेओनी परिभाषा ब्राह्मणो करता अने बौद्धो करता बिलकुल जुदीन छे तेओना मत प्रमाणे यथार्थ ज्ञानना ५ प्रकार छे ते एवा प्रकारे के, १ मतिज्ञान, २ श्रुतज्ञान, ३ अवधिज्ञान, ४ मन पर्यवज्ञान.

९ केवल्यज्ञान, जैनोना ग्रन्थकारो जुदा जुदा साधुओना चरित्र आपती वखते ए परिभाषानो उपयोग करे छे एवा प्रकारनु साम्य दर्शावनारु वर्णन बौद्धअध्यात्मग्रन्थोमा कई पण देखातु नथी जैनोना केटलाक मतो बौद्धोनी साथे मळता नथी ते पैकी केटलाकोनु उपर विवेचन कर्यु छे ,हवे जैन अने बौद्ध ए बन्नेना जे मतो ब्राह्मणदर्शनकारोनी साथे मळे छे तेनु निदर्शन करिशु १ पुनर्जन्म, २ पूर्वजन्ममा करेला सारा खोटा कृत्यो प्रमाणे आ जन्ममा फलप्राप्ति थवी ३ तेमज यथार्थज्ञानथी अने सद्वर्तनथी पुनर्जन्म अने मरण एनी यातनाओमाथी मुक्त थई शकनु ४ धर्मनी ग्लानि थई एटले अवतार × थई धर्मस्थापना थवी विगेर जेम जैना अने बौद्धो माने छ ते प्रमाणेज ब्राह्मणोमा पण मानेलु छे जे प्रमाणे अनेक वखत असुरोए वद चोर्या अने विष्णुए मत्स्यादि अवतार धारण करीने तओनो उद्धार कर्यो एम ब्राह्मणो माने छे तेज प्रमाणे प्राचीनकाळमा थई गएला जैन-

× मुक्तात्मा तो फरीथी जन्म धारण करता नहीं परन्तु बीजा बीजा जीवो अनेक जन्मोमा सुकृतनो सचय करा तेवा पदनी योग्यता मेळवी एक कालचक्रमा मात्र २४ तीर्थङ्करज थाय छे अने ते तत्त्वज्ञानने पुन प्रसिद्ध कर छे पण एकज व्यक्ति फरी फरीथी अवतार धारण करीने धर्मनी ग्लानि थती मटाडे एम जैनानु मन्तव्य नथी,

ग्रंथोनो उद्धार महावीरादि तीर्थंकरोए कर्यो एम जैनोनु मानवु छे. अने बौद्धग्रंथोमा पण ' जैनोना नवीन उत्पन्न थएला पन्थवालाए एम कह्यु छे ' एवा प्रकारना उल्लेखो छे तेथी बौद्धोना वखते पण जैनोने प्राचीनपन्थमाना गणता हता अने नटपुत्र एमने यद्यपि जैनधर्मनो सम्थापक मानता तो पण २३ मो तीर्थङ्कर जे पार्श्वनाथ तेमणे स्थापन करेलो, परतु आगळ जता भागी पडेला धर्मनु पुनरुज्जीवन करनार एटलुज समजता

जैन अने बौद्ध ए बन्ने धर्मोनो विचार करती वखते आश्चर्य लागवा जेवी एक बाबत छे ते ए छे के, बन्नेना धर्मसस्थापकोनी सख्या बिलकुल पासे पासे छे. एटले जैन २४ तीर्थङ्करो माने छे अने बौद्धो २५ बुद्धो माने छे एवा प्रकारनु साम्य देखाय एटले बन्नेनो एक बीजानी साथ सबन्ध होवोज जोइए अने एवा प्रकारनी मान्यतावालाओना मतनु खडन करवाने घणी अडचणो पडे छे तो पण ए साम्यतामा बन्ने पैकी एक सख्या कोणे कोना पासेथी लीधी हशे ? अथवा बन्ने धर्मवालाओए अवतारकल्पना ब्राह्मणो पासेथी लीधी हशे के शु ? ए प्रश्ननो निर्णय थई शकतो नथी. बुद्धना निर्वाण पछी पहेला सैकामा बौद्धलोको २५ बुद्धोनी पूजा करता हता ए उपरथी बौद्ध

प्राचीन छे एम कहीए तो जैनो पण ओछा प्राचीन न हता एम मानवाने बिलकुल कारण नथी कारण निर्वाण पछी बीजा सैकामां विभक्त थएला जैनोना जुदा जुदा जे श्वेताम्बरजैन, अने दिगम्बर जैन ते बन्ने पण २४ तीर्थङ्करोने पूज्य मानता हता ए उपरथी २४ तीर्थङ्करोनी कल्पना जुनीज ठरे छे २४ तीर्थंकर अने २५ बुद्ध ए अवतारोनी कल्पना बौद्धोए जैनो पासेथी लीधी के जैनोए बौद्धो पासेथी लीधी एनो विचार करिए तो निर्णय थई गएलो छे तोपण हाल अमे जे केटलीक बाबतो ठरावेला छीए तेने एथी कोईए धक्को लागतो नथी ते बाबतो आ प्रमाणे छे—

१ जैनधर्म ए बौद्ध धर्ममाथी निकळेलो नथी तेनो उद्भव स्वतन्त्र होवाथी तणे बौद्धधर्ममाथी विशेष लीधेलु पण नथी

२ बौद्ध अने जैन ए बन्नेओए पण पोतानो धर्म, नीति, शास्त्र, तत्त्वज्ञान अने सृष्टिनी उत्पत्तिनी कल्पनाओ विगेरे बधो प्रकार ब्राह्मणो पासेथी विशेष करी सन्यासिओ पासेथी लीधेलो छे अहिं सुधी जे विवेचन थयु हतु ते जैनलोकोना पवित्रग्रंथोमा लखेली तेओनी दतकथाओ विगेरे प्रमाण मानीने कयु हतु बार्थनामना एक मोटा विद्वान् हता ते दरेक बाबतमां विशेष उडा उतरी विचार करता अन पछी घणी काळजीथी

पोताने योग्य लागे त मत जाहेर करता हता, ते आ जैनग्रन्थो-
मांनी दतकथाओने प्रमाणभूत मानता न हता नटपुत्रने ते
कबुल राखता हता परतु जनोनो मत स्थापन थया पछी प्रकटपणे
५०० वर्ष लखाएला ग्रथोने प्रमाण्य मानीने तेना उपरथी तर्क
काढता रहेतु तेओने पसद नहोतो ते कहे छे के केटलाक सैका-
ओ सुधी जैओनु विशेष महत्व नहोतु एवा सन्यासिओना
अनेक टोळाओथी जैनलोको पृथक थया नहोता जैनोनी
दन्तकथाओ बौद्धोनी दन्तकथाओ उपरथी लीधेली होवी जोईए-
एवु बार्थ साहेबनु मत छे ज्यारे अनेक सैकाओमा जैनमत
विशेष प्रबळ थयो नहोतो ते वखते तेओए पोताना पवित्रग्रथो
लखी राख्या नहोता एवु मानीने बार्थ साहेबे उपरनी दलीलो
करी छे

जनोनो पन्थ केटलाक सैकाओ सुधी बिलकुल क्षुद्र
अवस्थामा होवाने लीधे तेओए पोताना धर्मग्रथो विगेरे लखेला
नही होवा जोईए, विगेरे दलीलो तेओए प्रमाणीभूत मानेला
ग्रथोमानी केटलीक बाबतोमा जैओनो जुजमाज मतभेद थयो
तेओने तेओए पोतानी जुदा राख्या विगेर जे हकिकतो छे ते
उपरथी त दलीलो यथार्थ नथी एटलुज नहतु पण ए

जैनलोको प्राचीनकाले पण बिल्कुल क्षुद्र न होईने पोताना धर्ममतो विषे केवल उपर उपरनी कल्पनाओ करनारा करतां विशेष होंशिआर हता ए निर्विवाद सिद्ध थाय छे

डॉक्टर ल्युमाने श्वेताम्बर जैनोना सात विभागो विषे जे माहिती आपी छे ते उपरथी पण उपरना मतने पुष्टि मळे छे बीजा अथवा त्रीजा सैकामा श्वेताम्बर जैनो पासेथी केटलाक अध्यात्मविचारोनी बाबतमा मतफर पडवाथी दिगम्बर जैनो विभक्त थया अध्यात्मविचारोमा मतभेद थयो तोपण आचार विचारोमा मतभेद नहीं होवाथी श्वेताम्बरोए तेओने कदी पण पाखंडमा गण्या नथी आ जुदा जुदा प्रमाणो उपरथी जैनलोकोना पवित्रग्रन्थो परिणत अवस्थामा आववाना पहेलां पण ते लोको केवळ क्षुद्र अने तेओना धर्ममतो अव्यवस्थित अने बीजा धर्मने अनुसरीने चालनारा, एम न थतां तेओना मतमा बिल्कुल झीणी झीणी बाबतो पण नियमित ठरावेली हती एमज मानवु योग्य लागे छे जैनधर्मग्रन्थो प्रमाणे तेओनी ऐतिहासिकदन्तकथाओ विषे पण विचारतां जुदी जुदी गाथाओमां जे जे विस्तृत गुरुपर

अध्यात्मविचारोमां भेद तो छे पण आचारविचारोमां विशेष नथाथी विभक्त करेला ॥

पराओ आपी छे ते उपरथी तेओ पोताना मतना इतिहास तरफ पण दुर्लक्ष्य करता नहोता ए चोक्खु देखाय छे कदाच ए परंपराओ कल्पित होवी पण संभवनीय छे परन्तु कल्पसूत्रमा तेओए जे गण, शाखा अने गुरुपरंपरानी यादि आपी छे ते जैनोए बनावेली होय एम मानवान कया सबल कारणो छे वारु ?, हालना जैनोने कल्पसूत्रमां आपली यादि शिवाय कई विशेष माहिति नथी, अने माहिती छे एम तेओ कहेता पण नथी तेओए केवल नामोनी जे एक विस्तृत यादि रक्षण करीने मुकी छे ते उपरथी प्राचीनकालना धर्मपन्थना अनुयायिओनी माहिती होवा तरफ तेओनुं ध्यान हतु ए निर्विवाद सिद्ध थाय छे

जैनधर्मना ग्रन्थो वल्लभराजानी कारकीर्दीमा देवर्द्धिगणि-क्षमाश्रमणना परिश्रमथी परिणत अवस्थामा आव्या छे एम घणा खरा पंडितोना मतथी मान्य थयु छे देवर्द्धिगणिने पूर्वे उपलब्ध थएला जुदा जुदा ग्रन्थोना आधारे सिद्धान्तना ग्रन्थो बनाव्या हवे जैनग्रन्थो कया कालमा रचाएला होवा जोइए एनी शोध करीशु जैनोना सिद्धान्तग्रन्थो पैकी आचाराङ्गसूत्रनो पहेलो भाग अने सूत्रकृताङ्ग ए भागो अतिशय प्राचीन होवा जोइए सूत्रकृताङ्गसूत्र वैतालीयछन्दमा लखाएलु छे बौद्धोना

बीजा अनेक ग्रन्थो वैतालीयछन्दमा रचाएला छे ललितविस्तरा ग्रन्थमानी वैतालीयछंदोबद्ध कविताओ करता सूत्रकृताङ्ग-ग्रथमानी कविताओनु स्वरूप प्राचीन देखाय छे, एकदररीते अनेक साधकबाधक प्रमाणोनो विचार करता ई स ४०० वर्ष पहेला जैन ग्रन्थो रचाएला होवा जोइए एम देखाय छे जैन-ग्रन्थोमाना प्रमाण मानेला जे अङ्गग्रन्थो छे ते तेनाथी पूर्वेना हता एवु श्वेताम्बर अने दिगम्बर ए बनेनु कहेवु छे ते कहे छे के; पूर्वना ग्रन्थो ज्ञान दहाडे दहाडे चाल्यु जता जता आगळ बिलकुल चाल्यु गयु कोई पण धर्मस्थापकोने पोताना नवा मतो प्राचीन आधार उपर चलावी देवाना होय तो ' फलाणा पूर्वग्रन्थो हता ते आगळ जता लुप्त थई गया तेमानो जे भावार्थ ते हु तमोने कहु छु ' एम कहेवा माटे जे प्राचीन ग्रन्थो लुप्त थयानु बहानु घणा ठेकाणे बनाव छे **परन्तु जैनग्रन्थो माटे एम मानवानु कारण नथी** अङ्गग्रन्थो पूर्वोना आधारे थया छे एम जैनलोको मानता नथी त तने अनादि माने छे पूर्वशब्दना उपरथी ज्यारे जोईशु त्यारे पण पूर्व एटले पहेला उपलब्ध थएला ग्रन्थो एम मानवु विशेष योग्य लागे छे शिवाय पूर्व-ग्रन्थोनु ज्ञान एकी वखते लुप्त न थता क्रमवार रीत लुप्त थयु छे.

जैनोनु एम कहेवु छे के—भद्रबाहु पछी १४ पैकी १० पूर्वो उपलब्ध हता ए उपरथी ते केवल मोटुज छे एम कही शकाय नहीं. जैनोना १४ पूर्वो विषे विचार करता एम देखाय छे के, आ पूर्वग्रन्थो जैनोना पहेलाना धर्मग्रन्थो होवा जोईए पछी नवा ग्रन्थो थया एटले ते ग्रन्थो जुना थई पड्या दृष्टिवादमां १४ पूर्वोनो समावेश थएलो हतो आ ग्रन्थोमा दृष्टि एटले जैनोना अने तेनी साथेना बीजा यतिओना सिद्धांतोनु निरूपण करेलु हतुं एम देखाय छे ए प्रमाणे पूर्वोमा महावीर अने तेमना प्रतिस्पर्द्धिमतवालाना वादविवादनु कथन होवु जोईए एम लागे छे दृष्टिवादमा प्रवाद विगेरे शब्दो वापर्या छे ते उपरथी तेमां वादविवादनी बाबत होवी जोईए एम लागे छे, पहेला एम कह्यु छे के, 'महावीर नवो पन्थ नहीं काढता पहेलाना धर्ममतोमा सुधारणा करीने प्राचीन मतोनो उद्धार कर्यो छे अर्थात् तेमनो पोतानो मत स्थापन करती वखते अनेक जुना मतवादिओ साथे वादविवाद करीने केटलाकोना मतनु खंडन करीने पोतानो मत स्थापन करवो पड्यो हशे कारण धर्मस्थापकोने एम करवानी जरुर पडे ज छे हवे महावीरनु अने तेमना प्रतिस्पर्धिओनु महत्व महावीरनु प्रतिस्पर्धिमंडल नष्ट थया पछी अर्थात नहीं जेवु थयु हशे ते

वखतना लोकोने यद्यपि एवा × वाग्विवादर अर्थात् महत्व लागता जेतु होय तोपण कालांतरे ते ग्रन्थोमानी सुंदरता नष्ट थायत एटलुज नही पण आगळना लोकोने एवा पवित्रग्रन्थो पण मानवा सारा लागता नहीं होय अर्थात् देशकाल बदलायो त्यारे देश-कालने अनुसरीने नवा ग्रंथो तैयार करवानी जरूर विशेष पडवाथी - नवा ग्रन्थो तैयार करवा पड्या एटले जुना ग्रन्थो पाउत्र पड्या ए स्वाभाविक छे. शिवाय एम पण कहे छे के, नवा ग्रन्थो तैयार थया पछी कटलाक वरसो सुधी पूर्वो उपलब्ध हता पछी हलवे हलवे ते ग्रन्थो लुप्त थइ गया ए उपरथी एम देखाय छे के, ते पूर्वग्रन्थोनो जाणी जोईने खोइए नाश कर्यो एम नथी पण नवा ग्रन्थोमा जैनसिद्धान्तोनु निरूपण विशेषपद्धतिसर थवाथी अने ते ग्रन्थोनो विशेष प्रचार थवाथी पूर्वग्रन्थो जुना थई पड्या होवा जोइए एम मानवु विशेष प्रशस्त लागे छे एकदर रीते जैन-**धर्मनो उद्भव अने विकास ए बीजाथी न थता स्वतंत्र छे एम सारी रीते सिद्ध थाय छे**

× पूर्वना ग्रन्थोमा अति महत्त्वनु—सूक्ष्ममा सूक्ष्म ज्ञान हतु ते धारण करनार बुद्धिमान् पुरुषोना अभावथी धीरे धीरे लुप्त थतु गयु एवी जैनोनी मान्यता छे पण ते केवल वादविवादना ग्रथा न हता

श्री ।

उपाध्येजीना बन्ने लेखोनो टुकमां सार.

वेदशास्त्रसंपन्न श्रीवासुदेव नरहर उपाध्ये पोतानी मराठी भाषामा आ बन्ने लेखो निर्मलद्दष्टियथी लखेल ए तो निर्विवादज छे, छता केटलाकोना तरफथी मने एवी सूचनाओ मळी क—आ लेखोमा केटलेक ठेकाणे जैनधर्मना तत्त्वोथी विरुद्ध भासे छे, मारी समज मुजब तो प्राय लेखक पोताना विचारोने आगळ पाछळ जाहेर करी गया छे, कदाच तेवा अतीतजैनसाधुना समागमना अभावथी अथवा जैनधार्मिकग्रन्थोना अभ्यासनो विशेष लाभ न मळवाथी सहेज गफलतमां आव्या होय तो त सुधारीने वाचवु ए आपणी (वाचकनी) फर्ज छे

एकज लेखमा कोईनी समज केवा प्रकारनी थाय अने कोईनी केवा प्रकारनी थाय ए उरेकना विचारो उपर आधार राखे छे माटे सूक्ष्म वातोने छोडी दई तेमना मुख्यविचारोनो सबन्ध जोडी आपु एटले आगळ पाछलनो विचार कर्या वगर

कोई अजाण माणम तमनु एकाद वचन मात्र पकडीने तेनो सबन्ध मेळव्या विना आडो अवळो अर्थ करी बेसे नही

'जैनधर्म विपये बे बोल'

नामना तेमना पहेला लेखमा वद प्रथम केवी अवस्थामा हता, पछी तेणे कवु स्वरूप धारण कर्युं अने तेथी कवु बीभत्सपणु जगत्मा चाल्तु हतु विगेरेनु विवचन करेलु छे

आ वदनो विषय तो लेखरना घरनोज हतो

पछी जैन अने बौद्धना दयालु महात्माओथी त वेदोक्त हिंसाकर्म केवी रीत हटवा पाम्यु, त महापुरुपोनो तप, वैराग्य अने ज्ञान कटली बधी उची हदनु हतु अन तेमणे लोको उपर केटलो बधो अपरिमित उपकार करेलो विगेर जणावेल छे

लेखमा बीजा पण्डितोने पण जैन अने बौद्धोना ग्रन्थोमा रहेल अगाधतत्त्वरत्नोने जोवानी भलामण करी लेखनी समाप्ति करेली छे

'जैनधर्मनी उत्पत्ति अने विकास'

आ मथाळाना बीजा लेखमां—प्रथम सस्कृतग्रन्थोने प्राचीनतानु स्थान आपी बौद्धोना ग्रन्थोने विशेष प्राचीन ठराव्या

औत्तरीय बौद्धग्रन्थोनी अधिक प्राचीनता ठहरावी तेना जटलीज प्राचीनता जैनधर्मना ग्रन्थोने आपली छे परतु जैनोना ग्रन्थोनु घोरण घणुज जुदा प्रकारनु छे ए पण स्पष्टपणे दर्शाविलु छे

आगळ जता जैनधर्मना नायक महावीरप्रभुनु अने बौद्ध-धर्मना नेता बुद्धभगवाननु टुक वृत्तान्त आलेखी ते बन्ने धर्मनाय-कोने भिन्न ठरावबा प्रयत्न करेल छे अने बन्ने धर्मोना आचारो विचारोने अरसपरस सरखावीने ते कोनामाथी कोनामा गया हशे विगेरे अनेक कल्पनाओ करीन पृ. ४९ मा फरीथी एवी तर्क उठावी के–जैन अने बौद्ध ए बन्नेना आचार विचारोनो उद्गम क्याथी थयो हशे ? ब्राह्मणो पासेथी के तेमना सन्यासिओ पासेथी ? छेवटे पृ ५४ मा तो एवो निश्चय करी देवामा आव्यो के–जैनोए बौद्धोनु अनुकरण न करता ब्राह्मणो पासेथी ते नियमो लीधा एज सिद्ध थाय छे

एज पृष्टनी टीपमा अमोए जणाव्यु हतु के–अनेक सूक्ष्मतत्त्व-रत्नोन निरूपण करनारा जैनधर्मिओने यमनियमादि जेवी सामान्य बाबतो बीजा पासेथी लेवानी सभवि शके नहीं आगळ जता

लेखकना पण एवाज प्रकारना अनेक खुलासा जोवामा आवशे ते खुलासा नीचे प्रमाणे—

(१) पृ ९९ मा " हिन्दुस्तानमा ज्ञाननी सपूर्ण अवस्था सुधीना जुदा जुदा पगथिया मानेला छे पण ए विषये जैनोनो स्वतन्त्रज मत छे ए सबन्धी तेओनी परिभाषा ब्राह्मणो करता अने बौद्धो करता बिलकुल जुदी छे "

अहिं विचार करवानो ए छे के मोक्षनी पूर्ण अवस्थानो पायो सर्व मतोमा मुख्यपणे ज्ञान उपरथी रचाएलो छे 'ज्ञानात्ते न मुक्ति' एवु वेदवाक्य पण छे तेनो विचार हजारो श्लोकोना विस्तारथी जैनग्रन्थोमा करेलो छे ज्यारे तेवा मुख्य मुख्य विषयोमा पण जे जैनधर्म बीजा कोईनी पण अपेक्षा राखतो नथी तेवा स्वतन्त्रमत (जैनधर्म) वालाने यमनियमादि जेवी सामान्य बाबतो बीजा पासेथी लेवानी केवी रीते जरूर पडे ? अर्थात् नज पडे एम अर्थापत्तिन्यायथी लेखके स्वय सिद्ध करी बताव्यु छे

(२) पृ ६२मा " जैनधर्म ए बौद्धधर्ममाथी निकळेलो नथी, तेनो उद्भव स्वतन्त्र होवाथी तेणे बौद्धमाथी विशेष लीधेलु पण नथी "

(३) पृ ६२ मा " बौद्ध अने जैन ए बन्नेओए पण पोतानो धर्म, नीति, शास्त्र, तत्त्वज्ञान अने सृष्टिनी कल्पनाओ विगेरे घणो प्रकार ब्राह्मणो पासेथी विशेष करी सन्यासिओ पासेथी लीधेलो छे, अहिं सुधी जे विवेचन कर्युं हतुं ते मात्र तेमनी दन्तकथाओ विगेरेने प्रमाण मानीने कर्युं हतु पण पुख्त विचार करनार बार्थ साहेब ते दन्तकथाओ उपरथी अनुमान करी बेसवानु योग्य मानता नहता " इत्यादि

आ फकराथी लेखके ए सिद्ध करी बताव्यु छे के–जैनोना मुख्यसिद्धान्तोने जोता पृ ४९ थी ते पृ ६२ सुधी जे जे अनुमानो करी बताव्या छे ते यथार्थपणे थएलां नथी

(४) पृ ६४ मा " जैनलोको प्राचीनकाले पण बिल्कुल क्षुद्र न होइने पोताना धर्ममतो विषे केवल उपर उपरनी कल्पना करना-राओ करता विशेष होंशियार हता ए निर्विवाद सिद्ध थाय छे "

आ लेखथी तो अमोने ए विचार उद्भवे छे के–बौद्धधर्मना अने ब्राह्मणधर्मना तत्त्वो करता पण जैनधर्मना तत्त्वो लेखकने केटलाबधा महत्त्ववाळा भासमान थया हशे वारु ?

आगळ वळी लेखक जणावे छे के–" जैनोना चौदपूर्वनुं ज्ञान यद्यपि लुप्त थइ गएलु छे तोपण ते जैनोनी वातो कल्पित नथी

पण सन्यरूपज छे" इत्यादि लखीने छेवटमां "जैनधर्मनो उद्भव अने विकास ए बीजामाथी न थता स्वतन्त्रज छे" आ छेवटना फकरायी विचार करीए तो पण जैनोए पोताना आचारो अने विचारो बीजा कोईनी पासेथी लीधा नथी ए चोख्खे चोख्खु लेखके सिद्ध करी बताव्यु छे उदाहरण तरीके–पृ १७ मा लेखक लखे छे के–
"हालमा भारतीयलोकोना जे आचार विचार अने धर्मसस्थाओ छे तेओमा जैन धर्मसस्था अने विचार मळी गएला छे ए नगर प्रदक्षिणा, भालदीनी पालखी, पोताना षोडशोपचारनी पूजा, नैवद्यसमर्पण विगेरे जैनधर्मिओना साथे तुलना करी जोता तरत ध्यानमा आवशे " तथा पृ १८ मा "भारतीय लोकसमाजमा जैन अने बौद्धधर्म एटलो बधो व्यापी गयो छे के -पौराणिक धर्ममा अने पछीना सन्यमा तेमना (जैनधर्मना) आचारविचारोनु अने तेओनी धर्मपद्धतिनु तादात्म्य थई गयुछे, ए भगवद्गीतादिग्रन्थोमा बौद्धोना निर्वाणादिशब्दो पण बिलकुल लीन थई गया छे ते उपर तरत ध्यान आपवा जेवु छे पछी जैनधर्मनो द्वेष करता करता अमारा आचार विचार उपर, सन्ध्यापूजादि विधिओ उपर, हमेश बोलवाना स्तोत्रो उपर पण तेनो असर थएलो छे " पृ १९ मा "भरतखण्डमा तो शु पण आखा जगत् उपर बन्ने

धर्मोए कटलो बधो अपरिमित उपकार कर्यो छे ए नजरे आव्या पछी हालना जगत्माना प्रचलित धर्मो तथा बोद्ध अने जैन धर्मो एमनो जेवो जेवो स्वन्च तओनी (पण्डितोनी) नजरमा आवतो जशे तेम तेम आ नवीन मळेली विलक्षण रत्नोनी अगाध खाण देखीने तेओनु मन आनन्दसागरमा तल्लीन थई जशे एटलुज आ ठेकाणे कहेवु बस छे "

लेखकना आ वाक्योथी पण एज सिद्ध थाय छे के—हिन्दु-धर्मना आचारोनु, विचारोनु अने तेमनी धर्मपद्धतिनु मूलस्थान ते जैनधर्मना ग्रन्थोनेज आभारी छे अने तेथीज ते धर्मो यत्किञ्चित् शोभापात्र थएला होय ए पण लेखकना विचारोथीज सिद्ध थायछे. इत्यलं विस्तरेण

संग्राहक-

ॐ

परमहंसश्री योगजीवानन्दस्वामिजीनो पत्र ।

आ दुनियामा घणा माणसो तो पोताना धर्ममा चालता आवेला गमे तेवा विचारोने वळगीनेज रहेला होय छे कदाच कोई कोई पंडितो बीजाना धर्ममा रहेला महत्वना विचारो जाणी शके छे अने विचारी पण शके छे छता पोताना व्यवसायमा फसेला होवाथी गौणपणामा गणी काढे छे, अने केटलाक पंडितो तो वातचितना प्रसंगमां बीजामा रहेला महत्वना विषयोने मुखथी कही पण बतावे छे, अमुक धर्ममा अमुक विचारो विचार करवा जेवा छे परन्तु खरी लागणीथी तो कोई महात्मा पुरुषोज बीजाधर्मना तत्त्वोनो अभ्यास करी तेनी वासनाथी वासित थवाथी खरेखरु अन्तःकरण महमहाटवाळु थया पछी लोकप्रसिद्धिमा मुकी शके छे कदाच एकाद पण्डितना तेवा विचारो बहार पडेला होय तो तेमा शु सत्य छे अने शु असत्य छे ते जाणवानी दरकार कर्या विना मात्र पोतानो कक्को खरो करवाना हेतुथी तेनो यद्वा तद्वा पण उत्तर घडी कढीने लोकोमा तेने समजविनानो ठरावना प्रयत्न करे छे, पण ए वात

तत्त्वज्ञपुरुषोने करवी ते योग्य न गणाय भले अजाण गमे तेम बोले "

अमोए जैनधर्मविषयना विचारो जे उपाध्येजीना थएला छे ते प्रसिद्धिमा मुक्या छे छता पण कोईना मनमा एवी शकानो पण उद्भव थवा पामे के—आ एकज माणसना विचारो खरा छे एम आपणाथी केवी रीते निश्चय थई शके ? माटे अमो आगळ बीजा पण अनेक पडितोना नाना मोटा लेखो जे अमारा जोवामा आव्या तेमाना केटलाक लेखो आ लेखसग्रहमा दाखल करी वाचकोने विचार करवानी सुगमता करी आपवानु दूरस्त धारी टाकी बतावीए छीए जुवो के—जेवी रीते वदशास्त्रसपन्न उपाध्ये-जीनो पहेलो लेख छे तेना अभिप्रायोने प्राय मळतो वेदशास्त्रमा निपुण आ एक परमहस के जेमणे कोई पण जैननो समागम थया वगर अमारा गुरुवर्य महाराजाना हाथथी लखाएला मात्र वेज ग्रन्थोना परिचयथी ग्रन्थकारनो पत्तो मेळवी पोताना अत क-रणनो उभरो केवळ पत्रद्वाराज केवी रीते ठलव्यो छे ते आ ठकाणे दाखल करीने बतावु तो ते अस्थाने नहीं गणाय

सग्राहक

तत्वनिर्णयप्रासाद ग्रन्थ पृष्ठ ५२६ मा प्रगट थएलो पत्र नीचे प्रमाणे छे—

पूर्वपक्ष—ऐसें महात्मा योगजीवानदसरस्वतीस्वामीजी कौन है ?

उत्तरपक्ष—संवत १९४८ आषाढ सुदि १० मीका लिखा एक पत्र गुजरावाले होके हमारे पास (अर्थात ग्रंथकार आत्मारामजी महाराजाके पास) माझापट्टीमे पहुचा तिस पत्रको वाचके तिस लिखनेवाले नि पक्षपाती और सत्यके ग्रहण करनेवाले महात्माकी बुद्धिको कोटीश धन्यवाद दीया और तिसके जन्मको सफल माना सो असली पत्र तो हमारे पास है तिसकी नकल अक्षर अक्षर हम यहा भव्यजन पाठकोंके वाचने वास्ते दाखिल करते हैं

स्वस्ति श्रीमज्जैनेंद्रचरणकमलमधुपायितमनस्क श्रीलश्रीयुक्त परिव्राजकाचार्य परमधर्मप्रतिपालक **श्रीआत्मारामजी** तपगच्छीय श्रीमन्मुनिराजबुद्धिविजयशिष्यश्रीमुखजीको परिव्राजक **योग जीवानदस्वामी** परमहंसकाप्रदक्षिणात्रयपूर्वक क्षमाप्रार्थनमेतत् ॥ भगवन् व्याकरणादिनानाशास्त्रोंके अध्ययनाध्यापनद्वारा वेदमत ग-

ठेमें बाघ मैं अनेक राजा प्रजाके सभाविजय करे देखा व्यर्थ मगज मारना है इतनाही फलसाधनाश होता है कि राजे लोग जानते समझते है फलाना पुरुष बडा भारी विद्वान् है परतु आत्माको क्या लाभ होसकता देखा तो कुछ भी नहीं। आज प्रसगवश रेलगाडीसे उतरके बठिंडा राधाकृष्णके मदिरमे बहुत दूरसे आनके डेरा किया था सो एक जैनशिष्यके हाथ दो पुस्तक देखें, तो जो लोग (दो चार अच्छे विद्वान् जो मुझसे मिलने आये) पै कहने लगे कि ये नास्तिक (जैन) ग्रथ है इसे नहीं ठेगना चाहिये अत उनका मूर्खपणा उनके गले उतारके निरपेक्षबुद्धिके द्वारा विचारपूर्वक जो देखा तो जो लेख इतना सत्य वो निष्पक्षपाती लेख मुझे देखपडा कि मानो एक जगत् छोडके दूसरे जगत्में आन खडे हो गये और आचार्यकाल ७० वर्षसे जो कुछ अध्ययन करा वो वैदिकधर्म बाधे फिरा सो व्यर्थसा मालूम होन लगा. जैनतत्त्वादर्श वो अज्ञानतिमिरभास्कर इन दोनो ग्रंथोंने न्याय रात्रिन्दिव मनन करता बैठा यो ग्रथकर्ता प्रशसा अपनेसा बठिंडेम बैठा हू सेतुबधरामेश्वरयात्रामे अब मैं [illegible] पढा हू। परतु अब मेरी ऐसी असामान्य मरनी इच्छा [illegible] बनाय रही है कि किसी प्रकारसे भी एकवार आपका [illegible] समागम वो

परस्पर सदर्शन हो जाय तो मैं कृतकर्म्मा होजाऊं। महात्मन् हम सन्यासी हैं आजतक जो पाण्डित्यकीर्त्तिगभद्वारा जा सभाविजयी होके राजा महाराजाओमें ख्यातिप्रतिपत्ति कमायके एक नाम पंडिताइका हासल करा है, आज हम यदि एकदम आपसे मिले तो वो कमायी कीर्त्ति जाती रहेगी। ये हम खूब समजते वो जानते हैं परंतु हठधर्म भी शुभपरिणाम शुभआत्माका धर्म्म नहीं। आज मैं आपके पास इतना मात्र स्वीकार कर सकता हूं कि प्राचीनधर्म्म परमधर्म्म अगर कोई सत्यधर्म्म रहा हो तो जैनधर्म्म था जिसकी प्रभा नाश करनेको वैदिकधर्म्म वो पट्शास्त्र वो ग्रथकार खडे भये थे परंतु पक्षपातशून्य होके कोई यदि वैदिकशास्त्रोपर दृष्टि देवे तो स्पष्ट प्रतीत होगा कि वैदिकबातें कही वो लीई गई सो सब जैनशास्त्रोंसे नमूनाईकठी करी है ईसमे सदेह नहीं कितनी कबातें एसी हैं कि जो प्रत्यक्ष विचार करे विना सिद्ध नहीं होती हैं सवत् १९४८ मिती आषाढ सुदि १०॥

पुनर्निवेदन यह है कि यदि आपकी कृपापत्री पाई तो एक दफा मिलनेका उद्यम करूंगा ॥ इति योगानदस्वामी किंवा योग-जीवानदसरस्वती स्वामि ॥

॥ *मालाग्रश्लोको यथा ॥

योगोऽगानुगामी द्विजमजननिनि शारदारक्तिरक्तो
दिग्जेताजेतजेता मतिनुतिगतिभि पूजितो जिष्णुजिद्दैः ।
जीयाग्गायाग्यात्री स्वलखलनो लोलरीलस्वलज्ज
केदारोदास्यगारी विमलमधुमदो—द्दामधामप्रमत्त ॥१॥

इस श्लोकके ५१ अर्थ है वसव अय जैनप्रशंसा वो श्रीआ-त्मारामजीकी विभूतिकी प्रशंसा निकले है प्रत्यक्ष पुष्पाक बीचका जो अक्षर है वो तीनवार एक अक्षरको कहना चाहिये ऐसा काव्य दर्शवीश श्लोक बनाय के जरुर चाहता था कि जैनतत्वादर्श वो अज्ञानतिमिरभास्करम जैनदेवप्रशंसा होनी चाहेती थी । एकवार आपको मिथ्न बाट अपना सिद्धातका निश्चय फिर करना बने तो देखी जायगी ॥

यह लेख उनका एक कागजके टुकडेम अल्गा था यह सर्व लेख पूर्वोक्त महात्मा का है ॥

---

* आ काव्यनु चित्र साधनना अभाव अमाए दाखल परंतु नथी मनि जने जाणवानी इच्छा होय तेमने तत्त्वनिर्णयप्रासाद ग्रन्थ पृ ५२८ मा जोइ लेवु

श्रीसुजनसम्मेलनम्

नाम

सर्वतन्त्रस्वतन्त्रसत्सम्प्रदायाचार्यस्वामिराममिश्रशास्त्रिप्रणीते जैनधर्मविषये व्याख्यानदशके प्रथमव्याख्यानम्।

॥ श्रीमते रामानुजाय नमः ॥

सज्जन महाशय !

आज बडा सुदिन और माङ्गलिक समय है कि हम भारतवर्षीय जिनके यहाँ सृष्टिके आदिकालहीसे सभ्यता, आत्मज्ञान, परार्थे आत्मसमर्पण, आत्माकी अनाद्यन्तता ज्ञान चला आया है, बल्कि समयके फेरसे कुछ पुरानी प्रतिष्ठा पुरानी सी पडगयी है, व इस स्थानमें एकत्र हुये हैं, अवश्यही इसे सौभाग्य मानना, और कहना चाहिये, क्योंकि वैदिक मत और जैन मत सृष्टिकी आदिसे बराबर अविच्छिन्न चले आये हैं, और इन

---

१ गत विद्यावता यस्य प्रथम नाम घोष्यते ।
सर्वतन्त्रस्वतन्त्रोऽसौ राममिश्रसुधारयम् ॥

दोनों मजहबोंके सिद्धान्त विशेष घनिष्ट समीप सम्बन्ध रखते हैं,
जैसा कि पूर्वमें मैं कह चुका हूँ और जैसा कि—सत्कार्यवाद,
सत्कारणवाद, परलोकास्तित्व, आत्माका निर्विकारत्व, मोक्षका
होना, और उसका नित्यत्व, जन्मान्तरके पुण्यपापसे जन्मा-
न्तरमें फलभोग, व्रतोपवासादिव्यवस्था, प्रायश्चित्तव्यवस्था,
महाजनपूजन, शब्दप्रामाण्य इत्यादि समान हैं, बस तो इसी हेतु
मुझे यहाँ यह कहते हुए मेरा शरीर पुलकित होता है कि—आज
का यह हमारा जैनोंके सङ्ग एकस्थानमें उपस्थित होकर
सम्भाषण वह है कि जो चिरकालके बिछुड़े भाई भाइका होता
है। सज्जनों! यह भी याद रखना जहाँ भाई भाइका [illegible]
वहाँ कभी कभी लड़ाइकी भी लीला लग जाती है [illegible]
रहे उसका कारण केवल अज्ञानही होता है।

इस देशमें आज कल अनेक अल्पज्ञ जन [illegible]
जैनमतको एक जानते हैं, और यह महा[illegible]
बौद्धोंके सिद्धान्तको एक जानना ऐसी भूल है [illegible]
सिद्धान्तको मान कर यह कहना कि [illegible]
नहीं है, अथवा जातिव्यवस्था नहीं है, [illegible] कि
ब्राह्मणोंने शूद्रोंको झूठ मूठ छोटा बनाकर रक्खे हैं [illegible]

अब हम उन्हें हेंशगुक करेंगे । सज्जनों ! आप जानते हैं दुनियाम रुपया बहुतही आवश्यक वस्तु है, और वह बडेही कष्टसे मिलता है । यदि कोई उस्का सीधा और उत्तम द्वार है तो–शिल्प, और सेवा, तो अब ध्यानसे जानना, कि द्विजार्म ब्राह्मण, क्षत्रिय सबसे बड़े समझे गये है, उन्होंने अपने हाथम आवश्यक बात कोइ न रक्खी । ब्राह्मणोंने अपने हाथमें केवल कुशामुष्टि रक्खी, आर क्षत्रियोंने खड्गकोशमुष्टि रक्खी। तब भला देखो तो जिन्होंने अपने हाथम निकम्मी चीजें रख कर वैश्योंको कृषिवाणिज्य दे डाला, और शूद्रोंको उससे भी बढ कर शिल्प और सेवा दे डाली । सज्जनो ! जानते हो–शिल्प कौन चीज है ? शिल्प वह है कि जिसके कारण इगलैंड जगत्का बादशाह है, नहीं २ कहो शाहनशाह है, और जिस्के अभावही से हमारा देश, देश इसे क्या कहें, जन्मभूमि, जननी, भारतभूमि रसातलको जा रही है । विचारका स्थान है जब शिल्प शूद्रों-के हाथम दे डाला तब तो वैश्य भी विचारे शूद्रोंके पीछे पड गये, क्योंकि कृषिमें दैवीआपत्का भय रहता है, और वाणिज्यम तो और भी अधिक आपत्ति है, सबसे अच्छी शूद्रोंकी जीविका है । शिल्प, और सेवा, जिस्के न कोई आपत् है मनो लुकमान । तब ही तो कहा गया है–

स्वर्णपुष्पमयीं पृथ्वीं चिन्वन्ति पुरुषास्त्रय. ।
शूराश्च कृतविद्याश्च ये च जानन्ति सेवितुम् ॥[1]

तब तो देखनेका स्थान है कि क्षत्रियकी जीविका तो हथेलीमें जान रख कर है और ब्राह्मणकी तो उससे भी कठिन है। जब वह बारह और बारह चौबीस वर्ष विद्यार्जन करेगा तब वह जीविका करेगा परन्तु शूद्रका जीवन कैसा सुलभ है। जहाँ पर देखो वहाँ पर सर्वत्र शूद्रों पर अनुग्रह है—

न शूद्रे पातकं किञ्चिन्न च संस्कारमर्हति ।[2]

द्विजोंके लिये मनुने नियम किया है कि व फला फलां देशमें निवास करें। परन्तु शूद्रोंके लिये वे कहते हैं—

एतान् द्विजातयो देशान् संश्रयेरन् प्रयत्नत ।
शूद्रस्तु यत्र कुत्रापि निवसेद् वृत्तिकर्षित ॥[3]

---

१ आ पृथ्वी सोनाना फूलमयी छे ते फूलोने शूरमा पुरुषो, विद्यावाला, अने राजादिकनी सेवा करवानु जाणे छे त्या त्रण पुरुषाज चुंटी रह्या छ ॥ स०

२ शूद्रामा कोई पातक नथी तेम संस्कारनी जरूर पण नथी ॥

३ ब्राह्मणो आ बतावेला देशोमाज रहे पण शूद्र तो पोतानी आजीविका माटे गमे त्या रही शके ॥ स०

तब तो शूद्रोंके लिये मनुने वेदकी यथेच्छ आज्ञा देदी अब क्या चाहिये ।

बस तो इस रीति पर यह भी अज्ञोंकी दन्त कथा है कि जैन और बौद्ध एकसमान हैं । सज्जनों ! बुरा न माना, और बुरा माननेकी बातही कौनसी है ? जब कि खण्डनखण्डकार श्रीहर्षने स्वय अपने ग्रन्थमें बौद्धके साथ अपनी तुलना की है, और कहा है कि हम लोगोंसे [याने निर्विशेषाद्वैतसिद्धान्तियोंसे] और बौद्धोंसे यही भेद है कि—हम ब्रह्मकी सत्ता मानते हैं, और सब मिथ्या कहते हैं, परन्तु बौद्धशिरोमणि माध्यमिक सर्व शून्य कहता है, तब तो भिन्न—जैनोंने सब कुछ माना उनसे नफरत करने वाले कुछ जानते ही नहीं, और मिथ्या द्वेषमात्र करते हैं यह कहना होगा ।

सज्जनों ! जैनमतसे और बौद्धसिद्धान्तसे जमीन आसमानका अन्तर है । उसे एक जान कर द्वेष करना यह अज्ञजनोंका कार्य है । सबसे अधिक व अज्ञ हैं कि जो जैनसम्प्रदायसिद्ध मेलोंमें विघ्न डाल कर पापभागी होते हैं ।

सज्जनों ! आप जानते हैं जैनोंमें जब रथयात्रा होती है

१ विपरीत विचार

तब किनकी मूर्त्ति रथमें बिराजती है ? सज्जनों ! देव गन्धर्वों से लेकर पशु पक्षि पर्यन्त जो पूजा की जाती है वह किसी मूर्तिकी ? अथवा मट्टी पत्थरकी ? नहीं की जाती है, जो ऐसा जानते हैं व ऐसे अज्ञ हैं कि—उन्हें जगत्में डेढ अक्ल मालुम होती है—यानें एकम आप स्वय, आधीमें सब जगत्। क्या मूर्त्तिपूजक मूर्त्तिनिन्दकोंसे भी कम अकल हैं ?

सज्जनों ! मूर्त्तिपूजा वह है कि जिसे मूर्त्तिनिन्दक नित्य करते हैं परन्तु यह नहीं जानते कि इस्से हमारी ही निन्दा होती है। देखिये ऐसा कौन देश, नगर, ग्राम, वन, उपवन है कि जहाँ पूज्य महारानी विक्टोरियाकी मूर्ति नहीं है और लोग उसे पवित्रभावसे पूजन नहीं करते ? । ठीक ही है।

गुणा सर्वत्र पूज्यन्ते। पद हि सर्वत्र गुणैर्निधीयते।

जब उनमें ऐसे गुण थे तो उनकी पूजा कौन न करे ? । बस तो अब आपको ढोलकी पोल अवश्य ज्ञात हुई होगी, मिशनरीलोगोंकी मूर्त्तिपूजननिन्दा देख करहीं हमारे (मजहबी

---

१ बध ठ्काणे गुणोनी पूजा थाय छ अने उची पदवी मळे छे त पण तेना गुणोथीज स०

न सही देशभाई ब्रह्मसमाजी आर्य्यसमाजी) देशवासी मूर्त्तिनिन्दा करने लगे हैं।

सज्जनों! बुद्धिमान् लोग जब गुणकी पूजा करते हैं तब जैसी हमारी पूज्यमूर्तियोंमें पूज्यताबुद्धि है वैसेही जहां पूजायोग्य गुण है वहाँ सर्वत्र पूजा करनी चाहिये। सज्जनों! ज्ञान, वैराग्य, शान्ति, क्षान्ति, अदम्भ, अनीर्ष्या, अक्रोध, अमात्सर्य, अलोलुपता, शम, दम, अहिंसा, समदृष्टिता इत्यादि गुणोंमें एक एक गुण ऐसा है कि जहाँ वह पाया जाय वहाँ पर बुद्धिमान् पूजा करने लगते हैं तब तो जहाँ ये पूर्वोक्त सब गुण निरतिशयसीम होकर विराजमान हैं उनकी पूजा न करना अथवा गुणपूजकोंकी पूजामें बाधा डालना क्या इनसानियत-का कार्य है? महाशय! वैदिक जन! अथवा मूर्तिपूजाविद्वेषि नूतनमजहबी सुजन जन! जैनोंमें जिनका रथ प्राय निकलता है वह किनका निकलता है? आप जानते हैं? वे महानुभाव हैं पारसनाथ स्वामी, महावीर स्वामी जिनदेव और ऐसेही ऐसे तीर्थ-ङ्कर तब तो उनकी पूजाका विरोध करना अथवा निन्दा करना यह अज्ञका कार्य नहीं है? सुजनों! आपने कभी यह श्लोक सुना है जिनमें पार्श्वनाथस्वामीके विषयमें कामदेव और उनकी सखीका सम्वाद है।

कोऽयं नाथ ! जिनो भवेत्तव वशी हूं हूं प्रतापी प्रिये !
हूँ हूँ तर्हि विमुञ्च कातरमते ! शौर्यावलेपक्रियाम् ॥
मोहोऽनेन विनिर्जितः प्रभुरसौ तत्किङ्कराः के वय-
मित्येवं रतिकामजल्पविषयः पार्श्वः प्रभुः पातु नः ॥

सज्जनों ! जिनके ब्रह्मचर्यकी स्तुति काम और रति करते हैं वे कैसे हैं ? जिसकी हुशयारीको चोर सराहे वेही तो हुशयार हैं । पूरा विश्वास है कि अब आप जान गये होंगे कि वैदिक सिद्धान्तियोंके साथ जैनोंके विरोधका मूल केवल अज्ञोंकी अज्ञता है और वह ऐसी अज्ञता है कि अनेक बार पूर्वमें उस अज्ञताके कारण अदालत हो चुकी है । सज्जनों ! अज्ञता ऐसी चीज है उसके कारण अनेक बेर अनेक लोग बिना जाने बूझे दूसरेकी निन्दा कर

१ ध्यानारूढ भगवान् पार्श्वनाथने देखीने–रति पोताना पति कामदेवने पुछे छे–हे नाथ ! आ कोण छे ? उ० जिनदेव छे । प्र० शुं तमारा वशमां छे ? । उ० ना ना, ए तो घणा प्रतापी छे । अरे कातरमति ! जगतने वश करवा रूप आ तारा शौर्यपणाना गर्वने छोड हे प्रिये ! एतो मोहने जितवावाला जगतना प्रभु छे. अमे तो एना किंकरो एमना आगल अमारो शो हिसाब ?, जेमना विषयमां रति अने कामदेव आवा प्रकारनो वार्तालाप करी रह्या छे तेवा पार्श्वनाथ प्रभु अमारुं रक्षण करो ॥ स० ॥

बैठते हैं। थोड़े ही दिनकी बात है कि—किसीने नये मजहबी जोशमें आकर जैनमतमें मिथ्या आरोप किये और अन्त में हानि उठाई। मैं आपको कहाँ तक कहूँ बड़े २ नामी आचार्योंने अपने ग्रन्थोंमें जो जैनमतखण्डन किया है वह ऐसा किया है कि जिसे सुन देख कर हँसी आती है।

मैं आपके सम्मुख आगे चल कर स्याद्वादका रहस्य कहूंगा, तब आप अवश्य जान जाँयगे कि वह एक अभेद किला है, उसके अंदर मायामय गोले नहीं प्रवेश कर सकते। परन्तु साथही खेदके साथ कहा जाता है कि अब जैनमतका बुढ़ापा आगया है, अब इसमें—इने गिने साधु, गृहस्थ, विद्यावान् रह गये हैं। जैसे कि साधुवर्य परमोदासीनस्वभाव, आत्मविज्ञानपरायण, ज्ञानविज्ञानसम्पन्न श्रीधर्मविजयजी साधुसम्प्रदायमें हैं, और गृहस्थोंमें तो विद्वानोंकी संख्या और भी कम है, जहाँ तक मुझे यादगारी और जानकारी है—पण्डितशिरोमणि पन्नालालजी न्यायदिवाकर, इस मतके अच्छे जानकार हैं और उनके कारण जैनसम्प्रदायकी बड़ी प्रतिष्ठा है और नाम है। और नवीन गृहस्थमण्डलीमें होनहार और जैनसम्प्रदायको लाभ पहुँचाने की योग्यतावाले—खुरजाके सेठ मेवाराम जी हैं, व शास्त्रानु-

रागी है और उन्होंने अपने यहाँ एक स्वरूपानुरूपा सम्स्कृतपाठशाला स्थापित की है, और उस पाठशालामें विविधविद्याविशारद प्रसिद्धनामा श्रीमान्–पण्डित चण्डीप्रसादजी सुकुल जैसे धुरन्धर अध्यापक है । देखा जाता है कि इस पाठशालाका फल उत्तम है । पण्डित श्यामसुन्दर वैश्य इसी पाठशालाके फल स्वरूप है जिनका शास्त्रमें अच्छा अभिनिवेश है । आशा है कि यह पाठशाला जैनलोगोंमें विद्याप्रचारकी मूलभूत होगी । सज्जनो ! एक दिन वह था कि जैनसम्प्रदायके आचार्योंके हुङ्कारसे दशों दिशाएँ गूँज उठती थी, एक समयकी वार्ता है कि हमारेही (यानि वैदिकसम्प्रदायी वैष्णवने) किसी साम्प्रदायिकने हेमचन्द्राचार्यजीको देख कर (जोकि सन्यासवयके थे) कहा ।

आगतो हेमगोपालो दण्डकम्बलमुद्वहन् ।

तब तो फिर क्याथा उन्होंने मन्दमुसुकानके साथ उत्तर दिया कि ।

---

१ जुओ भाईओ ! दंड अने कांबलने धारण करतो पेलो हेम गोवालीओ आव छे

आवश्यक होगा कि जैनोंकी ग्रन्थसंख्या जितनी सुदीर्घ है उतनी (वैदिकसम्प्रदाय छोडकर) अन्यकी नहीं है। और उस पुस्तकसमुदायका लेख और लेख्य कैसा गम्भीर, युक्तिपूर्ण, भावपूरित विशद और अगाध है। इसके विषयमें इतनाही कहदेना उचित है कि जिन्होंने सारस्वतसमुद्रमें अपने मतिमन्थानको डाल कर चिरान्दोलन किया है वेही जानते हैं। तबही तो कहागया है कि—

[1]देवीं वाचमुपासते हि बहवः सारं तु सारस्वतम्।
जानीते नितरामसौ गुरुकुलक्लिष्टो मुरारिः कविः॥
अब्धिर्लङ्घित एव वानरभटैः किन्त्वस्य गम्भीरता-
मापातालनिमग्नपीवरतनुर्जानाति मन्थाचलः॥

१ सरस्वती (अर्थात् विद्या) नी उपासना तो घणाए लोको करे छे पण ते विद्यामां कया प्रकारनो रहस्य छे तेनो तेनो सार तो निरंतर गुरुकुलमां क्लेशोने सहन करवावालो, एक मुरारि कविज जाणे छे तात्पर्य— बुद्धिमान् छतां पण-गुरुकुलमां रही अनेक प्रकारना क्लेशोने सहन करी निरंतर ते विद्यानो अभ्यास करतो रहे त्यार पछी ते विद्यानो सार केटलेक अंशे जाणी शके अन्यथा नहीं। जुओ के— वानरभटो बधा समुद्रनु ओलंघन तो करी गया हता पण तेनी गम्भीरतानु प्रमाण तो पाताल सुधी पेठेलीने मंथन करवावालो मंदराचलज जाणी शक्यो हतो पण केवल समुद्रनु लंघन करवावाला ते वानरभटो जाणी शक्या न हता।

सज्जनों ! जैनमतका प्रचार कबसे हुआ इस बारेमें लोगोंने नाना प्रकारकी उछल कूद किई है और अपने मनोनीत कल्पना किई है। और यह बात ठीक भी है जिस्का जितना ज्ञान होगा वह उस वस्तुको उतनाही और वैसाही समुझेगा। किसी अन्धेने हाथीके पूँछको धरा और कहने लगा कि हाथी लाठी जैसा लम्बा होता है। परतु दूसरे अन्धेने जब उसकी पीठ छुई तो कहने लगा कि वह छात जैसा होता है। परतु हाथीके कानस्पर्श करने वालेने तो कहा कि वह सूप जैसा होता है।

तो बस यही हाल समार का है, जिस्के यहाँ जब सभ्यता का प्रचार हुआ तो उसने उसी तारीखसे दुनियाकी सब बात मान ली। जो छ हजार वर्षमे सृष्टिको मान बैठे हैं उन्हें हम यदि अपना नित्यख्यानका मसल्प सुनावें तो व हँस देंगे, और कहेंगे कि—कृष्ण बारह कल्प, श्वेत बारह कल्प, ब्रह्माका द्वितीय परार्द्ध, और मनु, मन्वन्तर, चतुर्युग व्यवस्था सब कल्पित है।

तब उन्हें जैनमतप्रचारकी तारीख भी अवश्य ईस्वी समयके अनुसार ही कहनी होगी। और कह देंगे कि अधिक भी यदि जैनमतके प्रचारका काल कहा जाय तो छठीं सदी होगी। परतु सज्जनों ! हम आपको ऐसी कची मनमानी बात न

चह्नी चाहिये । ईश्वरकी सृष्टि अनाद्यनन्त है, और कल्पके भी पूर्वमें कल्प है, जब ऐसी स्थिति है तब तो इस कल्पकी इस सृष्टिको भी इतना समय बीत चुका है कि जिस्के अङ्कोकी शून्यसूचक बिन्दुमाला देख कर बुद्धिमान् गणककी बुद्धिमें भी चक्र आ जायगा ।

सज्जनों ! यह सृष्टि बहुतही प्राचीनकालसे चली आती है, और आप यह भी जानते है कि सृष्टिकी आदिहीमे सर्जन करने वालेने आवश्यक वस्तुओंका ज्ञान दे दिया था, उसका निरूपण मेरे जैसा अज्ञ कहाँ तक कर सकता हे परतु यह अवश्य कहा जा सकता है कि–परमेश्वरने अपनी सृष्टिमें लौकिक उन्नतिकी सीढीपर्यन्त सबही विषय सृष्टिक आदि में जीवोंको दिखा दिया था, तो अब आप ऐसा जानिये कि जैसे उन्हें आदिकालमे–खाने, पीने, न्याय, नीति और कानून का ज्ञान मिला, वैसेही अध्यात्मशास्त्रका ज्ञान भी जीवोंने पाया । और वे अध्यात्मशास्त्र सब हैं जैसे साख्ययोगादि-दर्शन और जैनादिदर्शन ।

तब तो सज्जनों ! आप अवश्य जान गये होंगे कि–जैन

मत जबसे प्रचलित हुआ है। जबसे संसारमें सृष्टिका आरम्भ हुआ तबसे यही इसका सत्य उत्तर है।

जिनकी सभ्यता आधुनिक है व जो चाहे सो कहें परंतु मुझे तो (जिसे अपौरुषेय वेद माननेमें किसी प्रकारका असंतोष और अनङ्गीकार नहीं है यही नहीं, परंतु सर्वथा तृप्ति, विश्राम, और चेत प्रसत्ति है) इसमें किसी प्रकारका उज्र नहीं है कि जैनदर्शन वेदान्तादिदर्शनोंसे भी पूर्वका है। तबही तो भगवान् वेदव्यासमहर्षि ब्रह्मसूत्रोंमें कहते हैं—नैकस्मिन्नऽसम्भवात्। सज्जनो! जब वेदव्यासके ब्रह्मसूत्र-प्रणयनके समय पर जैनमत था तब तो उसके खण्डनार्थ उद्योग किया गया। यदि वह पूर्वमें नहीं था तो वह खण्डन कैसा और किसका ? सज्जनो! समय अल्प है और कहना बहुत है इसमे छोड दिया जाता है, नहीं तो बात यह है कि—वेदोंमें **अनेकान्त वादका मूल मिलता है**। सज्जनो! मैं आपको वेदान्तादि दर्शनशास्त्रोंका और जैनादिदर्शनोंका कौन मूल है यह कह कर सुनाताहूँ। उच्चश्रेणीके बुद्धिमान् लोगोंके मानस-निगूढ विचारही दर्शन हैं। जैसे—अजातवाद, विवर्तवाद, दृष्टि सृष्टिवाद, परिणामवाद, आरम्भवाद, शून्यवाद, इत्यादि दार्श-

निर्कि निगूढ़ विचारही दर्शन है। बस तब तो कहना होगा कि–सृष्टिकी आदिसे जैनमत प्रचलित है, सज्जनों! अनेकान्तवाद तो एक ऐसी चीज है कि–उसे सबको मानना होगा, और लोगोंने माना भी है। देखिये विष्णुपुराण अध्याय ६ द्वितीयांशमें लिखा है—

> नरकस्वर्गसंज्ञे वै पापपुण्ये द्विजोत्तम!
> वस्त्वेकमेव दुःखाय सुखायेर्ष्योद्भवाय च।
> कोपाय च यतस्तस्माद्वस्तु वस्त्वात्मकं कुतः [1] ॥ ४२ ॥

यहाँ पर जो पराशर महर्षि कहते हैं कि–वस्तु वस्त्वात्मक नहीं है, इसका अर्थ यही है कि कोई भी वस्तु एकान्ततः एकरूप नहीं है, जो वस्तु एकसमय सुखहेतु है वह दूसरे क्षणमें दुःख की कारण हो जाती है, और जो वस्तु किसी क्षणमें दुःखकी

---

१ तात्पर्य–हे द्विजोत्तम! नरकसंज्ञा ए पापनी अने स्वर्गसंज्ञा ए पुण्यनी छे एकज वस्तुथी–एक वखत दुःख थाय छे. तो फरीथी सुख पण थाय छे अने ते ज वस्तुथी ईर्ष्या पण उद्भवे छे कोइ वखते तेनाथी क्रोध पण थाय छे ज्यारे वस्तुनी आ प्रकारनी स्थिति छे तो पछी सदा एकज स्थितिमा रहे छे एम केवी रीते कही शकाय? अर्थात् वस्तु सदा एकज स्वरूपमा रही शकती नथी एज सिद्ध थाय छे ॥ संग्राहक

कारण होती है वह क्षणभरमें सुखकी कारण हो जाती है। सज्जनों! आपने जाना होगा कि यहाँ पर स्पष्टही अनेकान्त-वाद कहा गया है। सज्जनों! एक बात पर और भी ध्यान देना जो—"सदसद्भ्यामनिर्वचनीय जगत्" कहते हैं उनको भी विचारदृष्टिसे देखा जाय तो अनेकान्तवाद माननेमें उज्र नहीं है, क्योंकि जब वस्तु सत् भी नही कही जाती, और असत् भी नहीं कही जाती, तो कहना होगा कि किसी प्रकारसे सत्—हो कर भी वह किसी प्रकारसे—असत् है, इस हेतु—न वह सत् कही जा सकती है, और न तो असत् कही जा सकती है, तो अब अने-कान्तता मानना सिद्ध होगया।

सज्जनो! नैयायिक—तम को तेजोऽभावस्वरूप कहते हैं, और मीमांसक और वैदान्तिक बडी आरभटीसे उसको खण्डन करके उसे भावस्वरूप कहते हैं, तो देखनेकी बात है कि आज तक इसका कोई फैसला नहीं हुआ कि कौन ठीक कहता है, तो अब क्या निर्णय होगा कि कौन बात ठीक है, तब तो दोकी लडाईमें तीसरेकी पौवारा है याने जैनसिद्धान्त सिद्ध हो गया, क्योंकि वे कहते हैं कि वस्तु अनेकान्त है उसे किसी प्रकारसे भावरूप कहते हैं, और किसी रीति पर अभावस्वरूप भी कह

सकते हैं। इसी रीति पर कोई आत्माको ज्ञानस्वरूप कहते हैं, और कोई ज्ञानाधारस्वरूप बोलते है, तो बस अब कहनाही क्या अनेकान्तवादने पद पाया। इसी रीति पर कोई ज्ञानको द्रव्यस्वरूप मानते हैं, और कोई वादी गुणस्वरूप। इसी रीति पर कोई जगत्को भावस्वरूप कहते है और कोई शून्यस्वरूप-तब तो अनेकान्तवाद अनायास सिद्ध हो गया।

कोई कहते हैं कि घटादि द्रव्य हैं, और उनमे रूपस्पर्शादि-गुण हैं। परन्तु दूसरी तरफ के वादी कहते हैं कि द्रव्य कोई चीज नहीं है, यह तो गुणसमुदायस्वरूप है। रूप, स्पर्श, संख्या, परिमाण इत्यादिका समुदाय ही तो घट है, इसे छोड कर घट कौन वस्तु है। कोई कहते हैं आकाशनामक शब्द-जनक एक निरवयव द्रव्य है। परतु अन्य वादी कहते हैं कि यह तो शून्य है।

सज्जनो! कहाँ तक कहा जाय कुछ वादियोंका कहना है कि गुरुत्व गुण है। परतु दूसरी तरफ वादी लोगोंका कहना है कि गुरुत्व कोई चीज नहीं है, पृथ्वीमे जो आकर्षण शक्ति है उसे न जान कर लोगोने गुरुत्व नामक गुण मान लिया है।

मित हित वाक्य पथ्य है, उसीसे ज्ञान होता है वाग्जाल-

का कोइ प्रयोजन नहीं है, इस हेतु यह विषय यहाँही छोड दिया जाता है और आशा की जाती है कि जैनमतके क्रमिक व्याख्यान दिये जायँगे।

पक्षपातो न मे वीरे
न द्वेष कपिलादिषु ।
युक्तिमद्वचन यस्य
तस्य कार्य परिग्रह ॥
श्रीहरिभद्रसूरि

शुभानि भूयासुर्वर्द्धमानानि ।
शम्
स्वामी रामभिश्र शास्त्री
अगस्त्याश्रमाश्रम
काशी
मि० पौषशुक्ल प्रतिपत्—
बुधवार स० १९६२

लोकमान्य पण्डित बालगङ्गाधर तिलकना उद्गारो—

" जैनधर्म अनादि है × × ×

" ब्राह्मणधर्म पर जैनधर्मकी छाप "

श्रीमान् महाराज गायकवाडने पहले दिन कोन्फरन्समे जिस प्रकार कहा था उसी प्रकार ' अहिंसा परमो धर्मः ' इस उदारसिद्धान्तन ब्राह्मणधर्म पर चिरस्मरणीय छाप (महोर) मारी है

यज्ञयागादिकोम पशुओंका वध होकर जो 'यज्ञार्थ पशुहिंसा' आजकल नही होती है जैनधर्मने यही एक बडी भारी छाप ब्राह्मणधर्मपर मारी है पूर्वकालम यज्ञके लिए असंख्य पशुहिंसा होती थी इसके प्रमाण मेघदूतकाव्य तथा और भी अनेक ग्रन्थोसे मिलने है रतिदेव (रन्तिदेव) नामक राजाने यज्ञ किया था उसम इतना प्रचुर पशुवध हुआ था कि, नदीका जल खूनसे रक्तवर्ण हो गया था उसी समयसे उस नदीका नाम ' चर्मवती ' प्रसिद्ध है पशुवधसे स्वर्ग मिलता है इस विषयम उक्त कथा साक्षी है परन्तु इस घोर हिंसाका ब्राह्मणधर्मसे बिदाई ले जानेका

श्रेय (पुण्य) जैनके हिस्सेमें है " परन्तु ब्राह्मणधर्म पर जो जैनधर्मने अक्षुण्ण छाप मारी है उसका यश जैनधर्मके ही योग्य है अहिंसाका सिद्धान्त जैनधर्ममें प्रारम्भसे है और इस तत्त्वको समजनेकी त्रुटिके कारण बौद्धधर्म अपने अनुयायी चिनीयोके रूपमें सर्वभक्षी हो गया है ब्राह्मण और हिन्दुधर्ममें मांस-भक्षण और मदिरापान बन्द हो गया यह भी जैनधर्मका प्रताप है "

" दया और अहिंसाकी ऐसी ही स्तुत्य प्रीतिने जैन-धर्मको उत्पन्न किया है स्थिर रक्खा है और इसीसे चिरकाल स्थिर रहेगा इस अहिंसाधर्मकी छाप जब ब्राह्मणधर्म पर पडी और हिंदुओंको अहिंसा पालन करनेकी आवश्यकता हुई तब यज्ञमें पिष्टपशुका विधान किया गया सो महावीरस्वामीका उपदेश दिया हुआ धर्मतत्त्व सर्वमान्य होगया और अहिंसा जैनधर्मम तथा ब्राह्मणधर्ममें मान्य होगई " इत्यादि

ता ३०-९-१९०४ श्री जैनश्वेताम्बर कोन्फरन्सना त्रीजा अधिवे-शन-वडोदरामा आपेला भाषण उपरथी

(भगवान्) महावीरनी कैवल्य भूमि.

ले अध्यापक कालेलकर

मल्हा अने राजगृही जता पावापुरीना दर्शननो लाभ अमने अणधार्यो ज थयो अरुन्धतिदर्शन न्यायथी कहेवु होय तो पावापुरी बिहार शरीफ पासे छे बिहार शरीफ बख्त्यारपुरथी वीस पचीस माइल दूर छे, अने बख्त्यारपुर बिहारनी राजधानी बाकीपुर पटनाथी पूर्व तरफ मेईन लाईन उपर आवेलु छे

बख्त्यारपुरथी राजगृहीना कुंड सुधी जे रेल्वे जाय छे ते नानी छे अने ट्रामनी माफक गाडीओने रस्ते गामडाना घरोनी बे हारोनी वच्चे थईने जाय छे देशदेशान्तरना जिज्ञासु यात्राळुओ माटेज आ रेल्व निर्माण करेली होय एम लागे छे मुमुक्षु यात्राळुओ पण तेनो लाभ लई शके छे × × × ×

बार वागे नीकळेला अमे लगभग बे वागे पावापुरी पासे आवी पहोंच्या पावापुरीना पाच सुधाधवल मन्दिरो दूरथीज एकाद सुन्दर बेट जेवा लागे छे आसपास बधे डांगरना सपाट

सेतरो, अने वचेना मदिरोनु सफेद जूथ रस्तो जरा गोळ फरीने आपणने मन्दिर तरफ लई जाय छे

पाच मन्दिरोमा एकज मन्दिर विशेष प्राचीन जणाय छे मन्दिरो जैनोना छे, एटले तेनी प्राचीनता क्याये टकवा तो दीधीज नथी खुब पैसा खरची खरचीने प्राचीनतानो नाश करवो ए जाणे तेमनो खास शोख होय एमज लागे छे पालीताणे पण एज दशा थइ गई छे फक्त देलवाडामाज जूनी कारीगरीने छाजे एवी मरामत थाय छे

मुख्य मन्दिर एक सुदर तळावनी अन्दर आवलु छे × × अमृतसरना सुवर्णमन्दिरनी पेठे आ मन्दिरमा जवानपण एक पुल बाधेलो छे मन्दिरो बेठा घाटना अने प्रमाणशुद्ध छे गभगृहनी आसपास चारे बाजुपर लबचोरस गुबज छे ए आ मन्दिरनी विशेपता छे क्लाकोविद लोको आवा गुबजनो आकार बहुज वखाणे छे बाकीना आसपासना मन्दिरो उचा शिखरोवाळा छे शिखरोमा कई खास कळा जणाती नथी, छता दृष्टि पर तेनी छाप सारी पडे छे

आ मन्दिरोनी केटलीक मूर्तिओ असाधारण सुदर छे सुदर ध्यानने माटे आवीज मूर्तिओ होवी जोइए मूर्तिनी सुदरता

जोई तेमने हु मोहक कहेवा जतो हतो, पण तरतज याद आव्युं के आ मूर्तिनु ध्यान तो मोहने दूर करवा माटे होय छे चित्तने एकाग्र करवानी शक्ति आ मूर्तिओमा जरुर छे

आ मन्दिरोनी पूजा त्याना ब्राह्मणोज करे छे जैन-मन्दिरोमा ब्राह्मणोने हाथे पूजा ए एक रीते अजुगतु लाग्युं. छता " हस्तिना ताडयमानोऽपि न गच्छेज्जिनमदिरम् " कहेनारा ब्राह्मणो भले लोभथी–पण आटला उदार थया एथी मनमा समाधान थयु आजे पावापुरी एक नानकडु गामडु छे अहिंसा धर्मनो प्रचार करनार महावीर ज्यारे अही वसता हता त्यारे तेनुं स्वरूप केवु हशे? हिंदुस्तानमा केटलीए महान् महान् नगरीओनां गामडा थई गया छे, अने केटलीक नगरीओना तो नामनिशान पण रह्या नथी, एटले आजना गामडा उपरथी प्राचीन पावापुरीनी कल्पना थईज न शके प्राचीन काळनो अही कशो अवशेष देखातो नथी फक्त ते महावीरना महानिर्वाणनु स्मरण आ स्थानने वळगेलु छे, अने तेथीज श्रद्धानी दृष्टि ये अढी हजार वर्ष जेटली पाछळ जई शके छे, अने महावीरनी क्षीण पण तेजस्वी काया शान्तचित्ते शिष्योने उपदेश करती होय एवी दृष्टि आगळ उभी रहे छे

आ ससारनु परम रहस्य, जीवननो सार, मोक्षनुं पाथेय तेमना मुखारविंदमाथी ज्यारे सरतु हशे त्यारे ते सामळवा कोण कोण बेठा हशे ? पोतानो देह हव पडनार छे एम जाणी ते देहनु छेल्लु कार्य–प्रमत गभीर उपदेश अत्यन्त उत्कटताथी करी लेवामा छेल्वेल्ली बधी घडीओ काममा ल्ई लेनार ते परम तपस्वीनु छेल्लु दर्शन कोणे कोणे कर्युं हशे ? अने तेमना उपदेशनो आशय केटला जण बरोबर समज्या हशे ? दृष्टिने पण अगोचर एवा सुक्ष्मजन्तुथी माडीने अनन्तकोटि ब्रह्माड सुधी सर्व वस्तुजातनु कल्याण चाहनार ते अहिंसामूर्तिनु हार्द कोणे समज्युं हशे ? 'माणम अल्पज्ञ छे, तेनी दृष्टि एक देशी होय छे, सकुचित होय छे, माटे तेने सपूर्ण ज्ञान नथी थतु, दरेक माणसनु सत्य एकांगी सत्य होय छे, तेथी बीजाना अनुभवने वखोडवानो तेने हक नथी तेम करता तेन अधर्म थाय छे,' एम कही स्वभावथी उन्मत्त एवी मानवीबुद्धिने नम्रता शीखवनार ते परमगुरुने ते दिवसे कोणे कोणे वन्दन कर्युं हशे ? आ शिष्यो पोतानो उपदेश आखी दुनीआने पहोंचाडशे अने अढी हजार वर्ष पछी पण मानवजातिने—हा, समस्त मानवजातिने ते स्वपमा आवशे एवो ख्याल ते पुण्यपुरुषना मनमा आव्यो हशे खरो ?

जैनतत्वज्ञानमा स्याद्वादनो बरावर शो अर्थ छे ते जाणवानो दावो हु करी शकतो नथी पण हु मानु छु के स्याद्वाद मानवबुद्धिनु एकागीपणुज सूचित करे छे अमुकदृष्टिए जोतां एक वस्तु एक रीते दीसे छे, बीजी दृष्टिए ते बीजी रीते देखाय छे, जन्मान्धो जेम हाथीने तपासे तेवी आपणी आ दुनियामां स्थिति छे

आ वर्णन यथार्थ नथी एम कोण कही शके ? आपणी आवी स्थिति छे एटलु जेने गळे उतर्यु तेज आ जगतमा यथार्थ ज्ञानी माणसनु ज्ञान एक पक्षी छे एटलु जे समज्यो तेज माणसोमा सर्वज्ञ वास्तविक सपूर्ण सत्य जे कोई जाणतो हशे ते परमात्माने आपणे हजु ओळखी शक्या नथी

आ ज्ञानमायीज अहिंसा उद्भवेली छे, ज्या सुधी हुं सर्वज्ञ न होउ त्या सुधी बीजा उपर अधिकार चलाववानो मने शो अधिकार ? मारु सत्य मारा पूरतुज छे बीजाने तनो साक्षात्कार न थाय त्या सुधी म्हारे धीरज ज राखवी जोईए आवी वृत्ति तेज अहिंसावृत्ति

कुदरती रीते ज माणसनु जीवन दु खमय छे जन्म-जरा-व्याधिथी माणस हेरान थाय ज छे पण माणसे पोतानी मेळे

कई दु खो ओछा उभा कर्या नथी माणस जो सन्तोष अने नम्रता मेळव तो मनुष्यजातिनु ९० टका दु ख ओछु थई जाय आजे जे देश देश वचे अने कोम कोम वचे कलह चाली रह्यो छे अने मृत्यु पहेलाज आपणे आ सृष्टि पर जे नरक उपजावीए छीए ते एकली अहिंसावृत्तिथी ज आपणे अटकावी शकीए

हिन्दुस्ताननना इतिहासनो जो कई विशेष सार होय तो ते एज छे के—

सर्वेऽत्र सुखिन सन्तु सर्वे सन्तु निरामया ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दु खभाग्भवेत् ॥

हिंदुस्तानमा जेटला आव्या तेटला बधा अहीं ज रह्या छे कोई गया नथी आश्रित तरीक आव्या तेओ पण रह्या छे अने विजेताना उन्मादथी आव्या तओ पण रह्या छे बधा ज भाई भाई थईने रह्या छे अने रहेशे विशाळ हिन्दु धर्मनी, जनत्ना हिन्दुधर्मनी, गौतमबुद्धना हिन्दुधमनी, महावीरना हिन्दुधर्मनी आ पुण्यभूमिमा सौने स्यान छे, केमक आज भूमिमा अहिंसानो उदय थयो छे

आखी दुनिया शान्तिने खोळे छे नस्त दुनिया त्राहि

त्राहि करीने पोकारे छे, छता तेने शान्तिनो रस्तो जडतो नथी. जेओ दुनियाने लूटे छे, महायुद्धोने सळगावे छे, तमने पण आखेर तो शान्तिज जोईए छे पण शान्ति ते कम प्राप्त थाय?

बिहारनी आ पवित्र भूमिमां शान्तिनो मार्ग क्यारनो नक्की थई चूक्यो छे पण दुनियाने ते स्वीकारता हजु वार छे पावापुरीना आ पवित्र स्थळे ते महान् मानवे पोतानु आत्म-सर्वस्व रेडी दुनियाने ते मार्ग समजाव्यो हतो, अने पछी शान्तिमा प्रवेश कर्यो हतो दुनियाना शान्तितरस्या लोको नम्र थई, निर्लोभ थई, निरहंकार थई, ज्यारे फरी ते दिव्यवाणी साम्भळशे त्यारे ज दुनियामा शान्ति स्थपाशे अशान्ति, कलह, विद्रोह ए दुनियानो कानून नथी, नियम नथी, स्वभाव नथी, पण ते विकार छे दुनिया ज्यारे निर्विकार थशे त्यारेज महावीरनु अवतारकृत्य पूर्णताने पामशे

"नवजीवन"
ता ४-२-२३ } दत्तात्रेय बाळकृष्ण कालेलकर काका

प्रो० आनंदशकर बापुभाई ध्रुवना उद्गारो.

गूजरातना प्रसिद्ध विद्वान् प्रो० आनदशकर बापुभाई ध्रुवे पोताना एक वखतना व्याख्यानमा "स्याद्वादसिद्धांत" विषे पोतानो अभिप्राय दर्शावता जणाव्यु हतु के—

"स्याद्वादनो सिद्धात" अनेकसिद्धातो अवलोकीने तेनो समन्वय (अर्थात् मेलाप) करवा खातर प्रगट करवामां आव्यो छ स्याद्वाद एकीकरणनु दृष्टिबिंदु अमारी सामे उपस्थित करे छे शकराचार्ये स्याद्वाद उपर जे आक्षेप कर्यो छे ते मूल रहस्यनी साथे सबध राखतो नथी ए निश्चय छे के विविध दृष्टिबिंदुओद्वारा निरीक्षण कर्या वगर कोई वस्तु सपूर्ण स्वरूपे समजवामा आवी शके नही आ माटे स्याद्वाद उपयोगी तथा सार्थक छे महावीरना सिद्धातमा बतावेल स्याद्वादने केटलाको सशयवाद कहे छे, ए हु नथी मानतो स्याद्वाद सशयवाद नथी किंतु ते एक दृष्टिबिंदु अमने मेळवी आपे छे विश्वनु केवी रीते अवलोकन करवु जोईए ए अमने शिखवे छे "

श्रीयुत प्रो. वी वी राजवाडे एम ए बी एस सी

जैनधर्मना विषयमा जणावे छे के—

× × × " प्रारम्भमा विद्वानोना मगज उपर बौद्धधर्मनी एटली तो प्रबल सत्ता जामी गई हती के तेओ जैनधर्मने बौद्धधर्मनी एक शाखा तरीकेज जणाववा लाग्या हता परन्तु, हवे तेओनी दृष्टि-मर्यादाने आच्छादित करनारा पडलो नष्ट थवा माड्या छे अने तेथी जैनधर्म पूर्वना धर्मामा पोतानु स्वतन्त्रस्थान प्राप्त करतो जाय छे

पूर्वकालीन महात्माओना उद्गारो.

ज्ञान ए मोक्षना पायारूपे छे, जुओ अमरकोश " मोक्षे धी र्ज्ञानमन्यत्र विज्ञान शिल्पशास्त्रयो " मोक्षनी बुद्धिथी जेनो अभ्यास करवामा आवे ते ज्ञान छे, बाकीनु शिल्पज्ञान, अने शास्त्रज्ञान तरीकेज मनाय छे

मोक्षज्ञान ते तत्त्वमय होइने सर्वदेशीय महत्त्ववाळु होवु जोईए ते ज्ञाननो यत्किञ्चित् परिचय करीने जेमणे पोताना खरा

अन्त करणथी उद्गारो प्रगट कर्या छे तेवा आधुनिक ब्राह्मण तेमज सन्यासि महात्माओनो परिचय अमो आपी गया छे अने बीजा यूरोपियन पण्डितोनो परिचय पण आपवानु धारीए छे

जेम आधुनिक तटस्थ पण्डितोना जैनधर्मना तत्वो जोवाथी– वेदवेदातादिकना एकातदृष्टिपणेना विचारो फरता जाय छे तेम प्राचीनकालमा पण घणा पडितोना विचारो थएला छे तेनु कारण जोता जैनधर्मना अगाध तत्त्वोनी खूबीज नजरे पडे छे आ ठेकाणे तेवा एक बे पण्डितोनो परिचय आपीने तत्त्वना जिज्ञासु पुरुषोने जैनोना पूर्वापर विरोध रहित अगाध तत्त्वो तरफ बारीक दृष्टिथी जोवानी प्रेरणा करु छु

(१) श्रीसिद्धसेनसूरिः ।

जुवो के—ए महात्मा विक्रमादित्यना वखतमा वेदवेदान्तादिक सर्वविद्यामां महानिपुण, प्रौढकवित्वनी शक्तिवाळा अने महावादीपणानु बिरुद धारण करनार ब्राह्मण पडितज हता

वादमा अनेक महान् पण्डितोने निर्माल्य करीने छोडी देता छेवटे जैनाचार्य वृद्धवादी साथे वादमा उतरतां पोताना एकान्तवादथी फाव्या नहीं पछी वस्तुना स्वरूपने यथार्थपणे प्रगट करीने

बतावनार एवा अनेकान्तवादनु स्वरूप समजीने जैनी दिक्षा पण ग्रहण करी हती पछी वीतराग भगवान्ना गुणोनी स्तुतिरूप बत्रीश बत्रीसीओनी रचना करी छे तेमाथी मात्र आ प्रसङ्गने अनुसरता तेमना वे काव्यो बतावीए छीए

सुनिश्चित न परतन्त्रयुक्तिषु स्फुरन्ति या काश्चन सूक्तसम्पदः ।
तवैव ताः पूर्वमहार्णवोत्थिता जगत्प्रमाण जिन! वाक्यविप्रुषः ॥१॥

तात्पर्य—हे जिनदेव! अमोने निश्चय थयो छे के जगतने प्रमाणभूत जे काई श्रेष्ठ वचनो–परमतना शास्त्रोमा जोवामा आवे छे ते बधा तमारा चौदपूर्वनामना ज्ञानरूपसमुद्रमाथी उडी उडीने बहार पडेला वचनबिंदुओज नजरे पडे छे ॥ १ ॥

आमा दृष्टान्त आपी दृढ करी बतावे छे

उदधाविव सर्वसिन्धवः समुदीर्णास्त्वयि नाथ! दृष्टयः ।
न च तासु भवान् प्रदृश्यते प्रविभक्तासु सरित्स्विवोदधिः ॥ २ ॥

तात्पर्यार्थ—हे नाथ! चोफेरथी विचार करी जोईए छे तो सर्व नदिओ जेम समुद्रमा प्रवेश करी जाय छे तेम तमारा ज्ञानरूपसमुद्रमा बधाए दृष्टिवाळाओनो प्रवेश थई जाय छे पण

भिन्न भिन्न नदीओमा जेम समुद्र ओवामां आवतो नथी तेवी रीते तमारु ज्ञान ते मतवादीओना ग्रयोमा अमो देखता नथी

स्याद्वादना स्वरूपवाळु तमारु ज्ञान ते समुद्रनी ओपमाने धारण करे छे अने एकान्तदृष्टिवाळानु ज्ञान ते नदीओनी ओपमावाळु छे

(२) धनपालपण्डित

महान् पण्डित धनपाल प्रथम भोज राजानी सभाना अग्रेसर ब्राह्मणज हता अने जैन धर्मवाळाओनी साथे तद्दन विरुद्ध वर्त्तनज करता हता पण पोताना भाई जैनसाधु शोभनमुनि पासेथी जैन-मतना तत्त्वो समज्या पछी पोतानो वैदिक मत छोडी दईने जैन मन्तव्यानुसार तिलकमञ्जरी विगेरे अनेक ग्रन्थोनी रचना करेली छे तेमा एक ऋषभपञ्चाशिका नामनो पण ग्रथ छे तेमां प्रभुनी स्तुति करता लखे छे के—

पावति जस असमजसावि वयणेहिं जेहिं परसमया ।
तुह समयमहोअहिणो ते मदा बिंदुनिस्सदा ॥ ४१ ॥

तात्पर्यार्थ—हे नाथ ! परमतवाळा यद्यपि परस्परविरुद्ध वचनादिकथी असमजसस्वरूपवाळा छे छता पण जे जे वचनोथी

यश मेळवी रह्या छे ते बधाए वचनो तमारा सिद्धान्तरूपमहा-
समुद्रथी उडी रहेला बिन्दुओज छे ॥ ४१ ॥

(३) श्रीहरिभद्रसूरिः ।

ए हरिभद्रसूरिजी पण प्रथम वदवेदान्तादिक सर्वविद्यामां महानिपुण प्रसिद्ध ब्राह्मणज हता " मने जे वाक्यनो अर्थ बेसे नही अने ते बीजो बतावे तो हु तेनो शिष्य थइने रहु " एवी प्रतिज्ञा करीने वादिओने हूदता फरता हता

एक दिवसे जैनउपाश्रयनी नजीकमाथी नीकळता 'चक्किदुग्ग हरिपणग' नामनु वाक्य गोखी रहेली वृद्धसाध्वीना मुखथी साभळ्यु अर्थ न बेसता अन्दर जई साध्वीने अर्थ पूछ्यो तेणीए पोतानो अधिकार न होवाथी गुरुनो उपाश्रय बताव्यो तेमनी पासे जैनतत्त्वनो रहस्य समजी जैनाचार्य बनी चोदसो ने चुमालीश नवीन ग्रन्थोनी रचना करी छे तेमाना एक लोकतत्त्वनिर्णय नामना ग्रन्थमा पोते कहे छे के—

> नेत्रैर्निरीक्ष्य विषकण्टकसर्पकीटान्
> सम्यक् यथा व्रजति तान् परिहृत्य सर्वान् ।

कुज्ञानकुश्रुतिकुदृष्टिकुमार्गदोषान्
सम्यग् विचारयय कोऽत्र परापवादः ॥ २१ ॥

भावार्थ—जूओ के जेर, कांटा, सर्पो अने कीडाओनो नेत्रथी के विचारथी पोतानो बचाव करीनेज आपणे आपणी प्रवृत्तिओ करीए छीए तो तेज प्रमाणे अनेकप्रकारथी सृष्टि उत्पत्तिनी कल्पनारूप कुज्ञानना, जीवोनी हिंसा करवाथी पण धर्म जणावनार कुश्रुतिओना, रागद्वेष मोह अज्ञानादिथी दूषितने पण देव तरीके मानवारूप कुदृष्टिना, अने एकान्तनित्यानित्य पक्षना कदाग्रहरूप कुमार्गना दोषोने वर्जिने पूर्वाऽपरविरोधरहित सत्यधर्मना मार्गने शोधिए तो तेमां कया प्रकारनी निन्दा गणाय ? तेनो जरा विचार करीने जुओ ॥ २१ ॥

प्रत्यक्षतो न भगवानृषभो न विष्णु-
रालोक्यते न च हरो न हिरण्यगर्भः ।
तेषां स्वरूपगुणमागमसंप्रभावा-
ज्ज्ञात्वा विचारयय कोऽत्र परापवादः ? ॥ २२ ॥

भावार्थ—हे सज्जनो ! जैनधर्मना प्रवर्त्तक ऋषभदेवने, तेमज विष्णु, महादेव अने ब्रह्माजीने पण आपणामांथी कोईए प्रत्यक्ष नजरे जोया नथी मात्र तेओनुं स्वरूप अने तेमना

गुणो—जैनसिद्धांतथी के वरस्मृतिपुराणादिकथी जाणीने तेमनी योग्यता के अयोग्यतानो विचार करीए, तेथी शु निन्दा करी गणाय ? नज गणाय ॥ २२ ॥

हवे ते देवोनु स्वरूप केवा प्रकारनु छे ते बतावे छे—

विष्णु समुद्धतगदायुधरौद्रपाणि
शम्भुर्ज्वलन्नरशिरोऽस्थिकपालपाली ।
अत्यन्तशान्तचरितातिशयस्तु वीर
क पूजयाम उपशान्तमशान्तरूपम् ॥ २३ ॥

भावार्थ—जुओ के विष्णु भगवान् गदानु शस्त्र हाथमा लई जाणे कोईने मारवाने तत्पर थया होय तेवा भयानकस्वरूप-वाळा देखाय छे तेमज महादेवजी पण मनुष्योना माथानी निन्द्य खोपरीओनी माळा गळामा धारण करवाथी भयानकस्वरूपवाळा जोवामा आवे छे अने जिनेश्वर वीर भगवान् तो अत्यन्तशान्ता-कृति परमयोगीना स्वरूपने धारण करी बेठेला जणाय छे माटे हे सज्जनो ! एक तो विकराळस्वरूपनी मूर्त्ति अने एक परमशान्त मूर्त्ति आ, बेमाथी आपणे कोनी सेवा करवी ? तेनो विचार करीने तमोज अमने कहो एटले बस छे ॥ २३ ॥

रागादिलोपजनकानि वचासि विष्णो-
रुन्मत्तचेष्टितकराणि च यानि शम्भो ।
नि शेषरोपशमनानि मुनेस्तु सम्यग्
वन्द्यत्वमर्हति तु को नु विचारयध्वम् ॥ २६ ॥

भावार्थ—कामी पुरुषोना जेवा राग उत्पन्न करवावाळा विष्णु भगवान्‌ना वचनो छे अने उन्मत्त पुरुषना जेवा महादेवना वचनो छे अने सर्वप्रकारना रोषनी शान्ति करवावाळा जिनेश्वरना वचनो छे, तो आ त्रणेमा क्यो देव वन्दन करवाने योग्य मानवो? तेनो विचार करीने जूओ ॥ २६ ॥

यश्चोद्यत परवधाय घृणा विहाय
त्राणाय यश्च जगत शरण प्रवृत्त ।
रागी च यो भवति यश्च विमुक्तराग
पूज्यस्तयो क इह ब्रूत चिर विचिन्त्य ॥ २७ ॥

भावार्थ—एक देव भक्तोनो रागी बनी हृदयमा दयाहीन थई शस्त्रो धारण करी जीवोनो नाश करवाने तैयार थाय छे अने एक देव रागद्वेषथी सर्वथा रहित आ लोक अने परलोकना दु खोथी बचाव करी प्राणिओने शरणरूपे थाय छे हे सज्जनो ! एक तो

छे रागी अने बीजो छे वीतरागी आ बेमाथी आपणे क्या देवने पून्य तरीके मानवो तेनो लावो विचार करीने कहो ? ॥२७॥

पक्षपातो न मे वीरे न द्वेष कपिलादिषु ।
युक्तिमद्वचन यस्य तस्य कार्य परिग्रह ॥ ३८ ॥

भावार्थ—प्रथम ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वरादिक देवोनु स्वरूप यत्किञ्चित् जुदु जुदु कथन करीने हव ग्रन्थकार पोतानी मध्यस्थता प्रगट करीने कहे छे के— मने वीरप्रमुमा पक्षपात नथी, के ते जे कहे ते युक्तिशून्य होय तोपण मानी लउ तेम कपिलादिक देवोमा द्वेष पण नथी, के ते जे काई कहे ते मारे मानवु नहीं' तेवु कई छेज नही मात्र जेनु वचन मने युक्तिवाळु लागे ते ग्रहण करवु ए हु मारी फरज समजु छु ॥ ३८ ॥

अवश्यमषा कतमोऽपि सर्वविज्जगद्धितैकान्तविशाल्शासन ।
स एव मृग्यो मतिसूक्ष्मचक्षुषा विशेषमुक्त किमनर्थपण्डितै ॥३९॥

भावार्थ—आ बधाए मनवादिओना देवोमा कोईने कोई तो जरूर सर्वज्ञ होवोज जोईए अने एकान्तपणे जगतने हितकारी अने विस्तारवाळु जेनु शासन (सिद्धान्त) होय तेवा महापुरुषने आपणे मतिरूपसूक्ष्मचक्षु थी शोधीने मेळवी लेवो जोईए बाकी

अर्थ विनानु घणु कहीने केवळ अनर्थनेज करवावाळा पण्डितोथी आपणा आत्मानु शु हित थवानु छे ? अर्थात् कांईज नहीं ॥ ३९ ॥

हवे नीचेना श्लोकथी शोधवानो उपाय पण बतावे छे—

यस्य निखिलाश्च दोषा न सन्ति सर्वे गुणाश्च विद्यन्ते ।
ब्रह्मा वा विष्णुर्वा हरो जिनो वा नमस्तस्मै ॥ ४० ॥

भावार्थ—हवे आपणने जोवानु ए छे के जे देवोमा रागद्वेष मोहादि कोई पण प्रकारना दोषो जोवामा आवता न होय अने जेना चरित्रमा, जेना वचनमा, जेना शास्त्रोमा जे तरफ जोइए ते तरफ तेनामा ज्ञानादिक निर्मल गुणोज जोवामा आवता होय, ते चाहे तो नामथी ब्रह्मा होय, चाहे विष्णु होय, चाहे महादेवना नामथी ओळखाता होय के जिनदेवना नामथी प्रसिद्ध होय, तेवा महापुरुषने अमारो मन नमस्कार छे अने ते अमारो परम देव पण छे ॥ ४० ॥

हवे बधाए देवोना चरित्रो जोता जोता जे देवनु चरित्र निष्पाप लागवाथी जनो आश्रय लीधो छे ते पोताना देवनो नामथी पण बतावे छे—

बन्धुर्न न स भगवानरयोऽपि नान्ये साक्षान्न दृष्टतर एकतमोऽपि चैषां ।
श्रुत्वा वचः सुचरितं च पृथग् विशेषं वीर गुणातिशयलोलतया श्रिता
स्म ॥ ३२ ॥

भावार्थ—जुओ के वीरप्रभु ते कांई अमारो बाधव नथी-तेम ब्रह्मा, विष्णु अने महेश्वरादि देवो ते कांइ अमारा शत्रुओ नथी तेमज आ बधा देवोमांथी कोई पण देवने प्रत्यक्षपणे अमोए जोयो नथी मात्र ते बधाए देवोना जुदा जुदा स्वरूपवाळां, वेमनाज ग्रन्थोथी चरित्रो साभळ्या वीरप्रभुनु चरित्र सर्व प्रकारथी शुद्ध लाग्यु माटे तेमना गुणोना लोलुपी थइने अमोए तमनो आश्रय लीधो छे ॥ ३२ ॥

नास्माकं सुगत न पिता न रिपवस्तीर्थ्या धन नैव तै-
र्दत्त नैव तथा जिनेन न हृत किंचित् कणादादिभि ।
किन्त्वेकान्तजगद्धित स भगवान् वीरो यतश्चामल
वाक्य सर्वमलापहर्तृ च यतस्तद्भक्तिमन्तो वयम ॥ ३३ ॥

भावार्थ—सुगत (बुद्ध) अमारो पिता नथी बीजा (ब्रह्मादि देवो) काई अमारा शत्रुओ नथी तथा आ देवोमांथी कोईए अमोने धन आप्यु नथी तेम जिनेन्द्रे पण आप्यु नथी, अने

कणाद गौतमादि ऋषिओए अमारु धन लेंधी लीधु पण नथी विशेष–कारण एज छे के–एकातपणे जगत्नु हित करनारो तो भगवान् महावीरज छे अने तेनु निर्मल वचन सर्व पापने हरनारु छे माटेज अमो वीरप्रभुनी भक्ति करवावाळा थया छे ॥ ३३ ॥

(४) श्रीहेमचन्द्रसूरिः ।

अढारदेशोना राजाधिराज गूजरातपट्टनाधीश श्रीकुमारपाल महाराजाना गुरुवर्य्य जगत्प्रसिद्ध सर्वज्ञकल्प श्रीहेमचन्द्रसूरीश्वरजी श्रीमहावीरप्रभुना सत्यसिद्धातत्त्वोना स्वरूपथी आकर्षित थई प्रभुना गुणरूपनी स्तुति करता–एक अयोगव्यवच्छेदिका अने बीजी अन्ययोगव्यवच्छेदिका नामनी बे बत्रीशिओनी रचना करेली छे पहेलीमा महावीर प्रभुमा क्या क्या गुणोनी योग्यता छे तेनो, अने बीजीमा अन्यमतना देवोमा क्या क्या गुणोनी अयोग्यता छे तेनो, टुकमा साराश गुथन करीने बताव्यो छे आ बेमाथी बीजी अयोगव्यवच्छेदिका बत्रिशीनी–स्याद्वादमजरी नामनी टीका पूर्वाचार्य श्रीमल्लिसेनसूरिमहाराजा करी गएला छे पण प्रथम बत्रीशीनी टीका नहीं होवाथी तेनो अर्थ भाषामा अमारा गुरु महाराज (श्रीमद्विजयानन्दसूरीश्वरजी–अपरनाम

श्रीआत्मारामजी महाराजा) पोताना तत्त्वनिर्णयप्रसाद ग्रन्थमां विस्तारथी करीने बतावेलो छे, ते जोवानी भलामण करीने हुं अहि आ प्रसङ्ग अनुसरता वे चार श्लोको लखी बतावु छु—

प्रादेशिकेभ्य परशासनेभ्य पराजयो यत्तव शासनस्य ।
खद्योतपोतद्युतिडम्बरेभ्यो विडम्बनेय हरिमण्डलस्य ॥ ८ ॥

भावार्थ—वस्तुने एकान्तपणे नित्यादि अने एकातपणे अनित्यादिरूप एकप्रदेशने मानीने वाद करनारा परमतना वादीओ छे तेनाथी हे भगवन् ! अपेक्षाथी नित्यादि अने अनित्यादिरूप तारा स्याद्वादसिद्धान्तनो जे पराजय छे, ते खजुआना बचाना तेजथी सूर्यमण्डलना तेजनी विडम्बना करवा जेवो न्याय थाय छे ॥ ८ ॥

शरण्यपुण्ये तव शासनेऽपि सन्देग्धि यो विप्रतिपद्यते वा ।
स्वादौ स तथ्ये स्वहिते च पथ्ये सन्देग्धि वा विप्रतिपद्यते वा ॥९॥

भावार्थ—हे भगवन् ! शरण करवाने योग्य अने परम-पवित्ररूप तारा सिद्धान्तमा जे सन्देह करे छे अने फोगटनो विवाद करवा उभा थाय छे, ते पुरुषो खरेखरा स्वादिष्ट अने तथ्यरूप तथा पोताने हितकारक अने सर्वप्रकारथी पथ्यरूप वस्तुमा सन्देह

अने तक़रार करवा जेवोज यथो लई बेसे छे पण अधिकपणु काई करी शकता नथी

तेवा पण्डितो उपर दया उत्पन्न थवाथी ग्रन्थकारे आ काव्यमा पोतानी दिलगीरीज प्रगटपणे करी बतावी छे ॥ ९ ॥

हिंसाद्यसत्कर्मपथोपदेशादसर्वविन्मूलतया प्रवृत्तेः ।
नृशंसदुर्बुद्धिपरिग्रहाच्च ब्रूमस्त्वदन्यागममप्रमाणम् ॥ १० ॥

भावार्थ—हे भगवन् ! हे जिनेन्द्र ! तारा कथन करेला आगम विना बीजा वेदादि आगमो सत्पुरुषोने सर्वप्रकारथी मान्य थइ शके तेम नथी कारण के ते वेदादिआगमोमा हिंसादि असत्कर्मोना मार्गनो उपदेश होवाथी अने वरमूलथी असर्वज्ञ-पुरुषोथी प्रवृत्त थएला होवाथी अने निर्दय तथा स्वार्थसाधक दुष्टबुद्धिवाळा पुरुषोथी ग्रहण थएला होवाथी अमो तने अप्रमाण कहीए छीए ॥ १० ॥

हितोपदेशात् सकलज्ञकॢप्तेर्मुमुक्षुसत्साधुपरिग्रहाच्च ।
पूर्वापरार्थेऽप्यविरोधसिद्धेस्त्वदागमा एव सता प्रमाणम् ॥११॥

भावार्थ—हे जिनेन्द्र ! तारा कथन करेला आगमोमा सर्व जीवोना हितनो उपदेश होवाथी, तथा सर्वज्ञपुरुषोथी बधारण थएला

होवाथी, तेमज मोक्षाभिलाषी सत्साधु पुरुषोए ग्रहण करेला होवाथी अने पूर्वापरनो विचार करता विरोधरहित होवाथी, सत्पुरुषोने प्रमाणरूपे थएलां छे पण उपरना १० मा काव्यमा कहेला हेतुवाळां आगमो प्रमाणरूपे थएला नथी ॥ ११ ॥

क्षिप्येत वाऽन्यैः सदृशीक्रियेत वा, तवाङ्घ्रिपीठे लुठनं सुरेशितुः ।
इदं यथावस्थितवस्तुदेशनं परैः कथङ्कारमपाकरिष्यते ? ॥ १२ ॥

भावार्थ—हे वीतराग भगवन् ! इन्द्रे तमारा चरणपीठमां लुठन कर्युं एम जे मनाय छे ते वात बीजा अन्यमतवाळा चाहे तो उखेडी काढे के चाहे तो पोतानामा सरखापणु करीने बनावो पण आ तमारा तरफथी यथार्थ (पूर्वापरविरोधरहित) कथन थएलुं वस्तुनुं स्वरूप (पदार्थोनुं स्वरूप) छे तेनो इन्कार बीजामतवाळा केवी रीते करी शकवाना छे वारु ? अर्थात् कोई पण प्रकारथी हठावी शकवाने समर्थ थई शके तेम नथी ॥१२॥

यदार्जवादुक्तमयुक्तमन्यैस्तदन्यथाकारमकारि शिष्यैः ।
न विप्लवोऽयं तव शासनेऽभूदहो अधृष्या तव शासनश्रीः ॥१३॥

भावार्थ—अन्यमतना सरळपुरुषोथी मूळमा अयुक्तपणे कथन थएलुं पण ते तेमना शिष्योने गोठतुं न आवता श्रुतिओने

फेरवता गया स्मृतिओमा ऋषिओ पण भिन्न भिन्न विचारो गोठवता गया, अने पुराणोनी लीलानु तो कहेवु ज शु ? हे जिनेन्द्र ! तमारा शासनमा ए उपद्रव थइ शक्यो नथी तेनु कारण एज छे के तमारा शासननी ठकुराईज अधृष्य छे अर्थात् तमारा शासनमा कोईपी पण उपद्रव थई शके तेम छेज नहीं ॥ १६ ॥

यदीयसम्यक्त्वबलात् प्रतीमो भवादृशाना परमस्वभावम् ।
कुवासनापाशविनाशनाय नमोऽस्तु तस्मै तव शासनाय ॥ २१ ॥

भावार्थ—हे वीतराग ! जे यथार्थ सिद्धान्तना बळथी तमारा जेवा परमात्माओना स्वभावने अर्थात् सर्वज्ञपणाना स्वभावने अमो जाणी शक्या छे, अने जे यथार्थ ज्ञाने अमारी खोटी वासनाओना पाशनो नाश करी दीधो छे, तेवा तमारा अलौकिक सिद्धान्तने अमारो नमस्कार थाओ ॥ २१ ॥

अपक्षपातेन परीक्षमाणा द्वय द्वयस्याऽप्रतिमं प्रतीम ।
यथास्थितार्थप्रथनं तवैतदस्थाननिर्बन्धरसं परेषाम् ॥ २२ ॥

भावार्थ—हे वीतराग ! पक्षपातरहितपणे परीक्षा करता पदार्थोना स्वरूपने यथार्थपणे कहेवामा कोई पण प्रकारनी न्यूनता तमारा सिद्धान्तमा थएली अमो जोता नथी अने बीजा मतना ऋषिओनी जुदी जुदी कल्पनाओ ठेकाणे ठेकाणे विरुद्ध गरबड

गोटाळायी भरपूर तेमना सिद्धान्तोमा विपरीतपणानी खामिओ पण ओळी जोता नथी एम बन्नेमा बे प्रकारथी असादृश्यपणाना स्वरूपने अमो प्रत्यक्षपणाथी जोई रह्या छे ॥२२॥

सुनिश्चित मत्सरिणो जिनस्य न नाथ ! मुद्रामतिशेरते ते ।
माध्यस्थ्यमास्थाय परीक्षका ये मणौ च काचे च समानुबन्धा ॥२७॥

भावार्थ—हे परमदेव ! जे परीक्षको मध्यस्थपणु धारण करीने राग अने द्वेषथी सर्वथा मुक्त एवी तारी वीतरागी मुद्राने (मूर्त्तिने) अतिशयशाली न मानता–रागी द्वेषी एवा ब्रह्मा, विष्णु, महादेवादिक देवोनी मूर्त्तिनी साथ एकसरखी गणी ले छे ते जरूर मत्सरवाळा पत्थर मणि अने काच ए बन्नेनु सरखापणुज करी रह्या छे ॥ २७ ॥

इमा समक्ष प्रतिपक्षसाक्षिणामुदारघोषामवघोषणा ब्रुवे ।
न वीतरागात् परमस्ति दैवत नचाऽप्यनेकान्तमृते नयस्थिति ॥२८॥

भावार्थ—हवे छेवटमा हु (हेमचन्द्राचार्य) तमारा (बधाए प्रतिवादिओना) सन्मुख उभो रहीने खास विचार करवा जेवी मात्र बेज वातोनो विचार करवानु उच्च स्वरथी पोकारी पोकारीने कहु छु के— दुनियामा वीतराग जेवो बीजो कोई पण परमदेव

नथी, अने दुनियाना पदार्थोनु यथार्थस्वरूप समजवा माटे अने कान्त विचार विनानो बीजो कोई पण न्यायमार्ग नथी, एम हु तमोने (सर्व मतवाळाओने) निश्चयपणाथी ग्हो बतावु छु के– तमो सर्वे मळीने पण आन्तो विचार तो जरूर करो एम आ काव्यथी सूत्रवी आचार्य महाराज पोतानो करेलो निश्चय कही बतावे छे ॥२८॥

न श्रद्धयैव त्वयि पक्षपातो न द्वेषमात्रादरुचि परेषु ।
यथावदाप्तत्वपरीक्षया तु त्वामेव वीर ! प्रभुमाश्रिता स्म ॥२९॥

भावार्थ—हे वीर भगवान् ! अमोने श्रद्धामात्र थकीज तमाराभा पक्षपात थएलो छे एम नथी तेमज हरिहरादि देवोमां द्वेषमात्र थकीज अरुचि थएली छे एम पण नथी मात्र ते देवोमा यथार्थपणे आप्तपणु (सर्वज्ञपणु) न होईने ते यथार्थपणे आप्तत्वपणु (सर्वज्ञपणु) तमाराभा छे एम खात्रीपूर्वक परीक्षा करीनेज अमो तमने प्रभुपणे मानीनेज तमारा आश्रित थईने अर्थात् किङ्करो थईने रह्या छे बीजु काई पण कारण नथी ॥२९॥

संग्राहक

श्री ।

श्रीहेमचन्द्राचार्यजीना एक बे काव्यनो विशेपार्थ

प्रथम पृ १२४ मा हेमचद्राचार्यनी बत्रीशीमाना दशमा काव्यमा एम कह्यू हतु के—

हिंसाद्यऽसत्कर्मपथोपदेशात्—आ पदनो अर्थ एटलोज के वेदादिक शास्त्रमा हिंसादिकनु कथन होवाथी ते शास्त्रो सत्पुरुषोने सर्वप्रकारथी मान्य थयेलां नथी ते वात–वा० न० उपाध्येना पहलाज लेखथी सिद्ध थएली छे तोपण द्विवेदी मणिलाल नभुभाईना लेखथी स्पष्ट करीने बतावीए छीए जूवो सिद्धातसार पृ ४३ मां लख्यु छे के—

" यज्ञो सबधे एक बात बहु मुख्य रीते विचारवा जेवी छे. घणा खरा मोटा यज्ञोमां एक वेथी सो सो सुधी पशु मारवानो सप्रदाय पडेलो नजरे पडे छे बकरा, घोडा, इत्यादि पशुमाननो बलि अपातो एटलुज नहि पण आपणने आश्चर्य लागे छे के माणसोनो पण भोग आपवामा आवतो ! पुरुषमेध ए नामनो

यज्ञन वेदमा स्पष्ट कहेलो छे, अने शुन शेफादि वृत्तातो पण ए वातनी साक्षी आपे छे वळी आ रक्तश्रावमा आनंद मानवा उपरात सोमपानथी अन छेवटना वखतमा तो सुरापानथी पण आर्यलोको मत्त थता मालम पडे छे परमभावनाना अग्रणीपने पामेला ऋषिओमा आवो सप्रदाय जणाय ए अत्यत आश्चर्य पेदा करनारु छे ने यद्यपि थोडाक वखत सुधी ए रिवाज बध थता पछुने छेटी सुरवानो के पिष्टपशु करवानो रीवाज आपणी नजरे पडे छे "

पुन सिद्धातसार पृ ७३ मा—" विवाह सबधे मधुपर्कनी वात जरा कही लेवा जेवी छे एवो समाचार छ के आवला अतिथिने माटे मधुपर्क करवो जोईए वर पण अतिथिज छे असल जेम यज्ञने माटे गोवध विहित हतो तेम मधुपर्क माटे पण गाय के वल्दनो वध विहित हतो मांस विना मधुपर्क नहि एम अश्वलायन सूत्र कहे छे, ने नाटकादिकोथी जणाय छे के सारा महर्षिओ माटे पण मधुपर्कमा गोवध करेलो छे आश्चर्यनी वात छे के जे गाय आजे बहु पवित्र गणाय छे तेने प्राचीनसमयमा यज्ञ माटे तथा मधुपर्क माटे मारवानो रीवाज हतो ? हाल तो मधुपर्कमा फक्त दहीं मध अने घीज वपराय छे "

मणिलालभाई पोते द्विवेदी छे तेमने घणा दुःखनी साथे आ वे फकरा लखवा पड्या हशे बाकी चारे वेदोमा ठगले ठगले हिंसक श्रुतिओ भरेली छे वधारे जोवानी इच्छा होय तेमणे अमारा गुरुवर्य श्रीमद्विजयानंदसूरीश्वरजी (प्रसिद्धनाम, आत्मारामजी) महाराजाना रचेला अज्ञानतिमिरभास्कर अने तत्त्वनिर्णयप्रासाद आ वे ग्रंथो जोई लेवा वेदोमा केटलुं गहन ज्ञान (?) छे तेनी खात्री थशे

एज दशमा वाक्यनु बीजु पद—असर्वविन्मूलतया मद्दनैः— आ पदनो अर्थ एटलोज के—वेद, स्मृति, पुराणादिक शास्त्रो सर्वज्ञ पुरुष विनाज प्रवृत्तमान थएला छे ते पण तेमनाज सिद्धांतथी सिद्ध थाय छे जुओ—शिवपुराण धर्मसंहिता अध्याय ४७ मां पार्वतीजीने महादेवजी कहे छे के—

ब्रह्मा विष्णुरहं देवि ! बद्धा स्म कर्मणा सदा।
कामक्रोधादिभि र्दोषै—स्तस्मात्सर्वे ह्यऽनीश्वरा ॥७॥

भावार्थ—हे देवि ? (हे पार्वति ?) ब्रह्मा, विष्णु अने हुं एम त्रणे देवो कर्मथी अने काम विकारना दोषथी, तेमज—क्रोध, मान, माया, लोभादिक दोषोथी सदा बंधाएलाज छीए, तेथी अमो सर्वे ईश्वर स्वरूपे नथी

पुन द्विवेदी मणिलाल नभुभाई पण पोताना सिद्धांतसारना पृ ३१ थी लखे छे के—

" अत्रे एटलु निश्चयपूर्वक जणाय छे के–सर्वोपरि कोई सत्तानी भावनासहित अनेक देवता पूजा, एज मूळ धर्म विचारतु रूप होतु जोईए आ वात वेदमंत्रोथी पदे पदे स्पष्ट थाय छे यद्यपि मंत्रोमा अनेक देवतानी स्तुतिओ आव छे, अने जे वखते जे देवने स्तव्यो होय छे ते वखत ते देवने जेटला अपाय तेटला विशेषणादिक आपी परमेश्वररूपे ठराव्यो होय छे तथापि ऋषिओना मनमांथी ए वात खसती नथी के–कोई सर्वनियंता, सर्वोपरि, एक देव होवो जोइए आवा मुख्य ईश्वरनी शोधखाने शोधमा तेओ घडीमा आ देवने, घडीमा पला देवने, एम अनेक देव-देवताने ईश्वररूपे भजे छे पण एकथी सतोषपामी विरामता नथी ईश्वरपदने एक पण अमुक देव, चिरकाळ सुधी धारण करी रह्यो होय तेवु वेदमंत्रोमा जणातु नथी, एम कहीए तोपण मूत्र मेलु नथी के वदकालथी माडीने ते छेक आज पर्यंतमा पण, आर्यधर्ममा सर्वमान्य कोई अमुक तेज ईश्वर, एवो निर्णय थयोज नथी ने ते नथी थयो एमाज ए धर्मने खीलवानो अवकाश मल्यो छे जे जे देशमा ए भावना स्थिरताने पामी छे ते ते

देशमा धर्मवृद्धि अटकी छे पण आर्यदेशमा ईश्वरत्व भावनानी सादी आकृति मूल्थी उता, अमुक रगरूपथी भराई सर्वमान्यरीते ते कदापि स्थिर ठरी नथी, एटलामाज ए धर्मने खूब खिलावानो अवकाश मल्यो छे वेदमन्त्रोमा आ देव पेलो देव, एम घणा देवने ऋषिओ वारा फरती ईश्वररूपे पूजे छे पण अमुक एक ईश्वर नियत ठरावेलो जणातो नथी ”

अने ते दशमा काव्यना त्रिजा अने चोथा पदमा कह्यू छे के—

नृशसदुर्बुद्धिपरिग्रहाच्च ब्रूमस्त्वदऽन्यागममप्रमाण ॥ १० ॥

आ बे पदनो भावार्थ मणिलालभाईना आपेला लेख उपरथी जणातु छु तेमणे जणाव्यु छे के—“ मोटा यज्ञोमा एक बेथी सो सो सुधी पशु मारवानो सप्रदाय पडेलो नजरे पडे छे ” इत्यादि “ वली आ रक्तश्रावमा आनद मानवा उपरात सोमपानथी अने छेवटना वखतमा तो सुरापानथी पण आर्यलोको मत्त थता मालूम पडे छे परमभावनाना अग्रणीपदने पामेला ऋषिओमां एवो सप्रदाय जणाय ए अत्यत आश्चर्य पेदा करवावालु छे ”

पुनरपि “ नाटकादिकोथी जणाय छे के सारा महर्षिओ माटे पण—मधुपर्कमा गोवध करेलो छे आश्चर्यनी वात छे के जे

गाय आने बहु पवित्र गणाय छे तेने प्राचीन समयमा यज्ञ माटे तथा मधुपर्क माटे मारवानो रीवाज हतो

आ ये फतराथी विचार करवानो ए छे के—जे लोको आर्य नरोके प्रसिद्धिने पामेला—अने आमारा वडोने न माने ते—नास्तिक —नास्तिक कही जगत्ना अज्ञान वर्गमा, जुठी अफवा फेलावना-वाळा अने जे महर्षिओना नामथी पूज्य हरीने मनाएला तेओ पण—गाय, अश्व, जेवा उत्तम प्राणीओने मारीने तेनु मांस खावावाळा अने तेवा हिंसक शास्त्रो रचीने अघोर कर्त्तव्य करवावाळा, तेमने निर्दय कहवा के दयावान्? दुर्बुद्धिवाळा केहवा के सुबुद्धिवाळा? अने तेवा हिंसक शास्त्रोने प्रमाणभूत मानवा के अप्रमाणभूत? तेनो विचार वाचकवर्गज करी लेशे

वळी ई. स. १८६६ मा करसनदास मूळजीए बहार पाडेला 'वेदधर्म' नामना पुस्तकना पृ. २ मा—

"वैदथी लोकोने वाकेफ करवा माटे तेओ ना पाडे छे केम के—पुराणादिक ग्रंथोमा कह्यु छे के—कलियुगमा ब्राह्मण शिवाय कोइए वेद वाचवा अथवा सांभळवा नहि आटलुज नहीं पण वेदना वचन पण लोकोना कान पडवा देवा नहीं आवो अटकाव करवानु कारण तपासी जोता मालम पडशे के—पुराण

विगेरेना ग्रंथोमा आवेली घणीएक वातोनो वेदनी साथे मुद्दल संबंध नथी पुराणादिक ग्रंथोमा लखेला विष्णुना अवतार संबंधी वेदमा कांई लख्यु नथी तथा वेदमा मूर्त्तिपूजन विषे पण लख्युं नथी ते छता वेदनी सत्ता तो बधा ग्रंथोए कबूल राखी छे आ कारण माटे ज वेदथी लोकोने अज्ञान राखवा एवी ए पुराणिक ग्रंथ लखनाराओनी मतलब उघाडी मालम पडे छे "

आ सर्व पंडितो खास वेदमतना आग्रहवाळा छे छतां पण वेदोमा हिंसाना स्वरूपनी श्रुतिओ घणीज तेमना जोवामां आववाथी सेहज पोतानी अरुचि जाहेर करी छे वळी दयानंद-सरस्वतीजीए तो पूर्वना आचार्योए करेला वेदोना अर्थो उपर पाणी फेरवी आजकालनी पद्धत्तिने अनुसरीने पोताना मनमाना अर्थो करीने कांई जुदो ज प्रकार करी मुक्यो छे बवाए ब्राह्मणो वेदोने ईश्वरकृत कहीने अनादि कहे छे जेना हिंसा ए मुख्य धर्म तरीके वर्णवेलो छे अने हिंसानी ज सेंकडो श्रुतिओथी तेनु बंधारण थएलु छे अने तेनो अर्थ पण महीधर, मम्हट, सायन, कर्काडिक आचार्योए हिंसा वरवाना स्वरूपनो करीने बतावेलो छे अने ते लेखोथी एम पण जणाय छे के-ते पूर्वना आचार्योए अने तेवा मोटा गणाता महर्षिओए राज्याश्रयने

मेळ्नीने लाखो पशुओना उपर कतल चलावेली जग जाहेर थई चुकी छे अने वेदोमा तेवा हिंसक पाठो पण डगले डगले जोवामा आवी रह्या छे तेमा केटलीक श्रुतिओ तो एवा प्रकारनी छे के श्रवण गोचर थवानी साथे सज्जन पुरुषो लज्जित ज थई जाय विचार करी जोतां एम मालम पडे छे के आ वदो ईश्वरना करेला तो नथी ज तेम कोई धर्मात्माना रचेला होय तेवा प्रकारनु पण अनुमान करवामा आपणु हृदय प्रेरातु नथी पण मात्र एवाज अनुमान तरफ दोराय छे के– आ वेदनी हिंसक श्रुतिओ कोई विद्याभ्यासना धधावाळा मदिरा मासना भक्षको रचना करता गया होय, तेना गानमा मस्त बनता गया होय, साथे लोकोने पण सुनावता गया होय अने पोते महर्षिना नामोथी प्रसिद्ध थता गया होय, तेमज स्वार्थी लोको पण तेनो अमल करता गया होय तेवा अवसरमा यथार्थतत्त्वज्ञानिना अभावे अमारो वेदधर्म, अमारो वेदधर्म, एम अयोग्य महत्व आपता गया होय तेनु बधारण जोता आवाज अनुमानो उपर आवीने बेसवु पडे छे केमके तेमा श्रुतिओ पण तेवाज प्रकारनी छे जूवो के– हे इद्र ! अमारी गायनी रक्षा कर, चोराईने गई छे तेने पाछी लावीने आप हे इद्र ! अमारा बकरानी रक्षा कर, आ श्रुति उपर एक दक्षणी पडिते एवी तर्क करी हती के आजकाल कोई एवा

पडित हशे क पोताना बकरानी रक्षा करवाने माटे इद्रनी स्तवना करीने इद्रने बोलावे ? वळी आगळ बीजी श्रुतिओ जोईए छे तो तेमा पण कदी तो इद्र, अने कदी तो वरुण, धन दे, पुत्र दे, वर्षा कर, एनी ए कडाकुट ! आवा प्रकारना स्वार्थनी कडाकुट वाली श्रुतिओना सग्रहथीज वेदोनुं बधारण थएलु जोवामा आवे छे. मणिलालभाई पण एमज लखे छे के-" वदीमा त्रण देव अने पछीमां पेला देव एम घणा देवने ऋषिओ वारा फरती ईश्वररूपे पूजे छे पण अमुक ईश्वर नियत ठरावलो जणातो नथी " वळी पडित मैक्समूल्लर पण पोताना सस्कृतसाहित्यग्रन्थमा लखे छे के-' वेदोनो छन्दोभाग एवो छे के जाणे कोई अज्ञानिओना मुखथी अकस्मात् वचन निकळेला होय तेम जणाय छे '

वळी करसनदास मूळजी काई बीजोज अभिप्राय कही बतावे छे तेनो विचार तेज लेख उपरथी करी लेवो

वळी जगत्नी उत्पत्तिना विषयनो वेदोमा तपास करीए तो कोई अनेक प्रकारनी कल्पनावाळी श्रुतिओ जूदा जूदा ऋषिओना मुखथी प्रगट थएली आपणी नजरे पडे छे अने ते पृथ्वी कोणे पदा करी अने केवी रीते पेदा थई तेनो निर्णय पण आज सुधी कोई पडित करी शक्योज नथी तो पछी ते वेदनी कल्पित

श्रुतिओथी आपणे केवी रीते निर्णय करी शकवाना? आ जगत्नी उत्पत्तिना सबंधे वेदोमां केवा केवा प्रकारनी श्रुतिओनो संग्रह थएलो छे तेनो पण परिचय आपवानुं धारुं छुं

आ ठेकाणे विचार करवानो एटलोज के— जे वेदो ईश्वरकृत अनादि तरीके मनाएला छे तेना हाल शुं एक चीथरीया देव जेवा थएला जोवामां आवे खरा के? सज्जनो! स्वार्थी लोकोना कथन उपर भरोसो राखी केवल अंधारा कुवामां डुबी न मरतां कोई सत्पुरुषना वचनो तरफ लक्ष्य करी सत्याऽसत्यनो विचार करीने जुवो, अने सत्यमार्गे चलो। के जेथी आ मनुष्य जन्मनुं साफल्यपणुं थाय आटलुंज लखीने आ ठेकाणेथी विरमुं छुं॥

॥ श्री हेमचन्द्राचार्यनी बत्रीशीना–दशमा काव्यनुं स्वरूप किंचित् विशेष कह्यु

हवे पृ १२९ मांना बारमा काव्यनुं किंचित् विशेष कहीए छीए

क्षिप्येत वाऽन्यैः सदृशीक्रियेत वा तवाऽङ्घ्रिपीठे लुठनं सुरेशितुः।
इदं यथाऽवस्थितवस्तुदेशनं परैः कथंकारमपाकरिष्यते॥ १२॥

आ काव्यनो भावार्थ ए छे के—हे जिनेश्वर देव! बीजा मतना पंडितो, ऋषिओ, तमारा माटे जूठुं साचुं लखी सिद्धि बनवानो प्रयत्न गमे तेटलो करे पण आ यथार्थपणे प्रगट थएलुं तमारुं पदा-

योंनु सत्यस्वरूप छे तेनो इनकार केवी रीते करी शकवाना छे ? ज्यारे सत्य वस्तुने तपासवावाळा सज्जनपुरुषो प्रगट थशे त्यारे ते पदार्थोनु सत्य स्वरूप प्रगट थया वगर रहेशे नहीं. ॥ अने अमोए तेवा सज्जन पुरुषोना लेखोनो संग्रह करीने आ पुस्तकमा बताव्यो छे तोपण आ जगो उपरते लेखोमाथी किंचित् इसारो करी बतावु तो ते अस्थाने नहीं गणाय अने स्थान शुन्य पण नहीं रहे

जुवो–वा० न० उपाध्येनो लेख–तेओ पृ १२ मा लखे छे के–" घणा स्मृतिग्रन्थोमा शास्त्रीयग्रन्थोमा अने टीकाग्रन्थोमां जैन अने बौद्ध एओने वद गाय माने छे जैनग्रन्थोनु सुक्ष्मावलोकन करता जैनधर्म ए जूनो धर्म नथी पण उपनिषत्कालीन अने ज्ञानकांडकालीन, महान् महान् ऋपिओना जे उत्तमोत्तम मतो हता ते सर्वे एकत्र ग्रथित करीने बनावलो धर्म होय एम देखाई आवे छे, अर्थात् जैनधर्मनु प्रथमनु स्वरूप कहीए तो विशुद्ध छे. एटले जे वैदिक धर्म ते ज जैन धर्म छे एना अनेक प्रमाणो छे " इत्यादि

आ फकरायी विचार करवानो ए छे के–प्रथम वेदकाल अने ते पछी ज्ञानकांडकाल एम क्रमा पडिनो मानी बेठेला छे

आ ठेकाणे—पृ ११३ मा श्रीसिद्धसेनसूरिजीना तथा पृ ११४ मा जणावेल महाकवि धनपाल पंडितना काव्यनी सत्यतानो ख्याल करो तेमणे वह्यु हतु के " परमतना शास्त्रोमा जे जे प्रमाणभुत वचनो जोवामा आवे छे ते बधाए वचनो हे जिनदेव ! तमारा ज्ञान समुद्रमाथी उडी उडीने बहार पडेला वचन बिन्दुओज छे अने तेथीज ते शोभान पात्र थया छे " अहिया विशेष एज छे क—जैनोना प्रबल उदय-काल पेहला—वैदिकमार्गमा अने ब्राह्मणधर्ममा केवल जीवोना उपर कतल चालती होवाथी धर्ममार्गनो कहो के परम ब्रह्ममार्गनो कहो तेनो तो लोपज थईने रहेलो हतो एम आ बधा पंडितोना तरफथी निकळेला वचनोना उद्गारोज आपणने सुचवी आपे छे आ बधा वचनोना उद्गारो छे ते पण सामान्य पुरुषोना नथी पण महान् महान् पंडितोना छे अने पोते वद धर्मना पण पुरेपूरा आग्रही होवा छता पण सत्यने सत्यपणे कहनु पडयू हशे

सज्जनो ! विचार करो क—जैनोना तत्वज्ञानमा कटली बधी गहनता रही हशे

॥ ॐ नमः सिद्ध ॥

जगत्कर्त्ताविषे विविध मतो.

॥ अवधू सो जोगी गुरु मेरा–ए चाल ॥

सृष्टि कब किसीने बनाई, संतो ! कब किसीने बनाई;
वाकी खोज किसीने न पाई, सृष्टि कब० ए टेक

वेद पुराण कुरान जैनलर्म, भिन्न भिन्न कर गाई;
एक एक सब भिन्न कहत है, मिलत न मेली मिलाई ॥वा १॥

भावार्थ—कुरानवाला कहे छे के–"खुदाके हुकममे सब कुछ होता है" ए वात प्रसिद्धज छे

बायबलवाला कहे छे के–"इसु ख्रिस्तीए सात दिवसनी अंदर बधा जगत्नी रचना करी, आठमा दिवसे ते ध्यानमा लीन थईने बेठा" ए वात पण बायबलमा प्रसिद्धज छे मात्र वेद पुराणादिकमाज घणा मतभेदो थएला जोवामा आवे छे तेथी तेनो विचार थोडोक करी बतावीशु सृष्टिकर्त्ताना संबंधे बनाए

मतवालाओना विचारो जुदा जुदा थवाथी ए विषे यथार्थपणे कोई समजेला नथी ए वात सिद्धज छे तेथी तेमना तत्त्वविचारना संबंधे पण यथार्थ बधारण थयेलु नथी एज विचार उपर आवीने अटकवु पडे छे

ऋग्वेदमें ऐत्तरीय आरण्यमें, आतमसे उपजाई।
यजुर्वेदको खोलके देखा, विराट् पुरुषे पसराई॥ बाकी ७॥

भावार्थ—ऋग्वेदमा लख्यु छे के—"प्रथम एक आत्माज हतो चल अने अचल एमांनु काई पण न हतु ते वखत आत्माए विचार कर्यो के हु जगतनी रचना करु पछी तेणे जल ज्योतिप् आदि बनाव्यां, फरीथी विचार कर्यो के एनो रखवाळो पण बनावु विचारनी साथे जलमाथी एक पुरुष निकल्यो तेनु मुख खुल्लु थवाथी एक शब्द निकल्यो ते शब्दथी अग्नि पेदा थई पछी ते पुरुषनु नाक खुल्लु थयु तेथी श्वास आववा जवा लाग्यो तेथी

१ सहस्रशीर्षा पुरुष इत्यादि सृष्टिनी उत्पत्तिविषयक विचार ऋग्० अष्टक ८ अ ४ व० १७। १८। १९ मा पण छे जुवो—अमारा शुक्लयजु—तत्त्वनिर्णयप्रासाद पृ १५७ थी पुन—नासदासीन्नोसदासीत्तदानी इत्यादि सृष्टिनी उत्पत्ति विषय ऋ० अ ८ अ० ७ व० १७ म० १० मा पण सविस्तर छे जूवो तत्त्व० पृ १९१ थी॥

आकाशनी उत्पत्ति थई पछी आग्नो उपटी तेथी ज्योतिप् प्रगट थई ते ज्योतिथी सूर्य उत्पन्न थयो, इत्यादिक सर्व झाड वीढ मृत्यु विगेरे पेश पुरुषथीज उत्पन्न थयु " एम विस्तार साथे ऐतरीयआरण्यमा लखेलु छे हवे यजुर्वेदमा लख्यु छे के– विराट्पुरुषथी आ सृष्टि उत्पन्न थई तेनु स्वरूप नीचे प्रमाणे– " जे वखते ए विराट्ने बीजाने उत्पन्न करवानी इच्छा थई तेज वखते स्त्री अने पुरुष ए बन्न एकज स्वरूपथी उत्पन्न थई गया पछी जुदा पडीने स्त्री भर्त्ता रूपे बनी गया त्याथी मनुष्यनी वशावळी चालु थई एज प्रमाणे पेलो पुरुप अने पेली स्त्री ए बन्नेए जे जे जातिनु स्वरूप धारण कर्यु त ते जातिनो विस्तार थतो गयो जेमके–बन्द ने गाय घोडो ने घोडी गधेडो ने गधेडी " इत्यादि, ए प्रमाणे आ सृष्टि पेला विराट्पुरुषना सकल्पथी उत्पन्न थई ॥ २ ॥

मंडूक उपनिपद् कहत है, मकडीजारके न्याई;
कूर्मपुराणे विचारी जोता, नारायण मूल निपाई ॥ वा ३ ॥

भावार्थ—"जेम करोळीयो पोते पोतानी जाते जाळु उत्पन्न करे छे अने पछी पाछु पोतानामाज समावी दे छे तेज प्रमाणे

जे एक अविनाशी पुरुष छे तेमाथी आ सृष्टि उत्पन्न थाय छे अने पाछळथी ते अविनाशी पुरुषमा पाछी समाई जाय छे " ए प्रमाणे मङ्क्रु उपनिषद्‌मा कहेलु छे ॥

अने कुर्मपुराणमा एवु लख्यु छे के–"हु नारायणदेव छु, मारे माटे पहिला रहेवानु स्थान न हतु में शेषनागनी शय्या करी, पछी मारी दयाथी चतुर्मुख ब्रह्माजी अकस्मात् पेदा थया के जे जगत्‌ना पितामह छे पछी ब्रह्माए पोताना मनथी पोताना जेवा पाच पुरुषो बनाव्या तेना नाम–१ सनक, २ सनातन, ३ सनन्दन, ४ रुद्र, ५ सनत्कुमार । पोताना मनने ईश्वरमा आशक्त करीने आ सृष्टि रचवानी मनसा करी त्यारे ब्रह्मा मायाए करीने मोहने प्राप्त थया त्यारे जगतमाथी महामुनि विष्णुए पोताना पुत्र ब्रह्माने बोधित कर्या, पछी ब्रह्माए उग्र तप कर्यो, घणा काल सुधी करेलु तप फलीभूत न थवा लेथी खेद थयो, आखोमाथी पाणी निकल्यु तेथी पापणो वाळी गइ तमाथी महादेवजी उत्पन्न थया, ब्रह्माजीनी आज्ञाथी तेमणे भूतप्रेतादि गणो रच्या अने उत्पन्न थवानी साथेज ते भूतादिगण भक्षण करवाने लागी गया, आवु स्वरूप जोईने ब्रह्मा पण विस्मित बनी गया " इत्यादि कूर्म पुराणमा विस्तारपणे कहेलु छे ॥ ३ ॥

मनुस्मृति के पहिले अध्याये, तममात्र बतलाई;
उहासे प्रगटे स्वयंभू स्वामी, ताते तिमिर मिटाई ॥वा० ४॥

भावार्थ—मनुस्मृतिना पेहला अध्यायमा लख्यु छे के—"प्रथम आ जगत्मा अंधकारमात्रज हतो, ते एवो हतो के जाणी शकाय नही अने तेमा तर्क पण चाले नहीं निद्रावशनी अवस्थानी तेरे पडेलो हतो, मात्र कोई अतींद्रिय प्रत्ययीन ग्रहण करवाने योग्य हतो, तेमा अव्यक्त महाभूतादिवन्तवालो स्वयंभू भगवान् ते अंधकारने हटाववावालो उत्पन्न थयो ते भगवान सृष्टि उत्पन्न करवानो विचार कर्या प्रथम तेणे पाणी बनाव्यु पछी तेमा बीज नाख्यु ते बीजथी सोनानु इंडु उत्पन्न थयु ते इंडामा सर्वलोकनो पितामह एवो ब्रह्मा उत्पन्न थयो तेमा ब्रह्मना एक वर्ष अर्थात् मनुष्यना—३१,१०,४०,००,००,०००, वर्ष तक रह्या पछी ध्यान करीने ते इंडाना बे भाग कर्या एकथी आकाश

---

१ अध्याय पेल्लाना श्लोक पांचमाथी ते ४१ सुधीमा सृष्टीउत्पत्ति वर्णव छे जम के—" आसीदिदं तमोभूत-मप्रज्ञातमलक्षण । अप्रतर्क्यमविज्ञेयं, प्रसुप्तमिव सर्वत ॥ ५ ॥ ततः स्वयंभू भगवानव्यक्तो व्यञ्जयन्निदं । महाभूतादिवृत्तौजाः प्रादुरासीत्तमोनुद ॥ ६ ॥ " इत्यादि

अने बीजा टुकडाथी पृथ्वी उत्पन्न थई दिशा विगेरेना पण जुदा जुदा नाम पडया पछी १ अग्नि, २ वायु अने ३ सूर्य पण उत्पन्न थया ए त्रणथी- ऋग्वेद, यजुर्वेद, अने सामवेद, पण यज्ञनी सिद्धिने माटे उत्पन्न थया पछी–तप, वाणी, रति, काम, क्रोधादिकने उत्पन्न कर्या पछी सुख, दुःखादिकनी योजना करी पछी पोताना–मुख, हाथ, जंघा अने पगथी चारो वर्ण उत्पन्न कर्या पछी पोताना शरीरना बे भाग करीने स्त्री अने पुरुषरूपे बनीने विराट्रूपने धारण कर्यु पछी–दश मुनियो, सात मुनियो, देवताओ, कीटपतंगादिकनी उत्पत्ति करी दीधी " ए वर्णन मनुस्मृतिमा ऋग्वेदना मतथी प्राये मळतु कहेलु छे ॥ ४ ॥

कोइ कहे कालीकी शक्ति, वाकी न्यारी न्यारी चतुराई; लिंगपुराणे शिवजीके वदनसें, विष्णु ब्रह्मादिक थाई ॥ रा ५॥

भावार्थ–"कालीदेवीए कह्यु के हु आदिशक्ति थईने बीजरूपे थइ छु अने पहिले शिव अने शिवनी शक्ति रूपे उत्पन्न थई पछी विष्णु अने विष्णुनी शक्ति रूप उत्पन्न थइ तेथी आ बधा सृष्टिनी उत्पत्तिना कारण रूप हुज थयेली छु " ए कालीदेवीना माटे बीजा ग्रथमा एम पण लख्यु छे के–"कालीदेवी छे ते आदि शक्ति छे अने ए देवीए त्रण इडा उत्पन्न कर्यां,

तेमाथी ब्रह्मा, विष्णु, अने महेश, ए त्रण देवो बहार आव्या. तेमणे आ जगतनी रचना करी " इत्यादि हवे शिवपुराणमां लखेलु तेनो विचार करीए छीए जेमके-"आ ब्रह्माण्डमाथी प्रथम शिवजी उत्पन्न थया पछी शिवजीनी डाबी बांहथी विष्णु अने लक्ष्मीजी ए बे उत्पन्न थया अने तेमनी जमणी बाहथी ब्रह्मा अने सरस्वतीजी उत्पन्न थयां पछी शिवजीए गुणमयुरपणे रहेली प्रकृतिने सूक्ष्मपणाथी देखी ते वखत प्रकृतिए शिवजीनुं सामर्थ्य धारण करी महत्तत्वादिकने उत्पन्न कर्या पछी तेमाथी त्रण अहंकार उत्पन्न थया प्रथम सात्विक अहंकारथी देवताओ उत्पन्न थया अने बीजा राजस अहंकारथी इद्रो उत्पन्न थया अने त्रीजा तामस अहंकारथी पाच तत्वो उत्पन्न थया, अने ते पाच तत्वो-थीज आ बधा ब्रह्माण्डनी उत्पत्ति थती जाणी " इत्यादि शिव-पुराणमा विस्तारथी जोई लेवु ॥ ५ ॥

ब्रह्मवैवर्त्तपुराण यु बोल्य, यतो कृष्णकी चतुराई;
भितर भेदका पार न पावे, क्या विलुणी करे फिलुणाई ॥ ६॥

भावार्थ—ब्रह्मवैवर्त्तपुराणमा एवु कह्यु छे के-"आ बधा जगत्नी रचना कृष्णजीथी थई कारके-कृष्णजीना जमणा हाथथी विष्णुजी अने डाबा हाथथी शिवजी. आ कृष्णजीनी नाभिथी

ब्रह्माजी उत्पन्न थया ए त्रणे देवोए प्रथम कृष्णजीने पूज्या तेमनी आज्ञा मेळवीने आ सृष्टिनी रचना करी इत्यादि सविस्तर ते पुराणथी जोई लेवु ॥ ६ ॥

वेदनो पण कोइ भेद न पावे, क्या करे गडमथ्थाई,
मारग छोड उन्मारग जाके, फेगल धूम मचाई ॥ वा ॥७॥
मतममताको छोडके देखो, कोई पुरुष अतिसाई,
पुछ पाछ कर भितर खोजो, पीछे आतम काज सवाई ॥वा ॥८॥
गुरुकृपासे सृष्टिसबधका, किंचित् भेदको पाई,
अमर कहे हम अमर भये हे, अतर भरम गमाई ॥वा ॥९॥

॥ इति सृष्टिसमुत्पत्तिसबधे भिन्नभिन्नविचारदर्शक गीत ॥

॥ सृष्टिनी उत्पत्तिना सबधे—बीजी पण घणा प्रकारनी कल्पनाओ थयेली छे ते पण प्रसगना वशथी थोडीक लखीने बतावीए छीए—

१ जवो के—य० वा० म० अ० १७ म० ३० नी श्रुति—
तमिद्गर्भं प्रथम दध्र आपो यत्र देवा' समगच्छन्त विश्वे
अजस्य नाभावध्येकमर्पितं यस्मिन् विश्वानि भुवनानि तस्थुः॥

भावार्थ—ब्रह्मकुशल उदासीकृत–ऋग्वादिभाष्यभूमिके नाम पुस्तकना भापार्थनो तात्पर्य—

" सपूर्ण सृष्टिनी आदिमा जे जल हतु तेणे गर्भ धारण कर्यो ते एवो के–सपूर्ण जगत्‌ना कारण जे ब्रह्मा जेनामा देवताओ उत्पन्न थई गयेला छे जन्मादिकथी रहित परमात्मा पोते छे तेनी नाभिमा जे कमल छे तमा सपूर्ण जगत्‌ना बीजरूप ब्रमा छे जेनामा सपूर्ण चतुर्दश भुवन रहेला छे "

आ उपरनी श्रुतिनो दयानन्दसरस्वतीजीए भापामा करेला अर्थनो तात्पर्य नीचे मुजब—

" मनुष्योने एवु करवु जोईए के जे जगत्‌नो आधार योगीओने प्राप्त थवा योग्य अन्तर्यामी पोतपोतानो आधार सर्वमा व्याप्त छे तेनी सेवा सर्व लोको करे "

आ एकज वदनी श्रुतिनो अर्थ बे पंडितोए करेलो छे तेना तात्पर्यमा केटलो तफावत छे ? प्रथमना अर्थमा ब्रह्मान जगत्‌ना बीज रूप ठराव्या छे सरस्वतीजी एक अंतर्यामी कहीने तेमनी सेवा करवानु पूर्वाचार्योथी विरुद्ध कहे छे तो आमा भरोशो कोनो करवो ? इतो व्याघ्र इतस्तटी

२ पुन—य० वा० स० अ० २३ म० ६३ मा—

सुभू स्वयंभू प्रथमोऽन्तं महत्यर्णवे ।
दधे ह गर्भमृत्वियं यतो जातः प्रजापतिः ॥ ६३ ॥

तात्पर्य—सुंदर भुवन ते सुभु, इच्छाथी शरीर धारे ते स्वयंभू, एवो परमात्मा महाजलसमूहमां प्राप्तकाले ह–प्रसिद्ध तेणे गर्भ धारण कर्यो ते केवो छे के जेमाथी ब्रह्माजी उत्पन्न थया ॥ ६३ ॥

३ पुन —शत० का० ७ अ० ५ ब्रा० १ क ५ मा—

स यत्कूर्मो नाम। एतद्वै रूप कृत्वा प्रजापति प्रजा असृजत यत्सृजताऽकरोत् तद्यदकरोत्तस्मात्कूर्मः कश्यपो वै कूर्मस्तस्मादाहु सर्वाः प्रजा काश्यप्य इति ॥

तात्पर्य—वेदोमां प्रसिद्ध जे कूर्म अर्थात् प्रजापति जे परमेश्वर तेमणे कूर्मनु रूप धारण करीने था बधा जगत्नी रचना करी करवानु हतु ते करवाथी कूर्म कहेवाया, निश्चयथी तो कूर्मज कश्यप नामथी प्रसिद्ध थया तेथी बधा ऋषिओ संपूर्ण प्रजाने काश्यपनी कहे छे

अहिंया जुवो पहेलो यजुर्वेदनो अने बीजो शतपथब्राह्मणनो पाठ केटलो बधो तफावतमा छे ? आवा प्रकारना बीजा विरोधी पाठो घणा छे अने मोटा मोटा छे तेथी आ नानकडा पुस्तकमा लखी शकाय नहीं जिज्ञासा होय तेमणे अमारा गुरुत्रयकृत–तत्त्वनिर्णयप्रासाद जोई लेवो

४ पुन —अथर्व स० काड० १० । प्र० २३ । अ० ४ । म० २० मा—

यस्मादृचो अपातक्षन् यजुर्यस्मादपाकषन् । सामानि यस्य लोमानि अथर्वाङ्गिरसो मुख । स्कम्भन्तम् ब्रूहि कतमः स्विदेव सः ॥

भावार्थ—जे परमात्माथी ऋग्वेद उत्पन्न थयो अने जे परमात्माथी–यजुर्वेद उत्पन्न थयो अने सामवद जे परमात्माना रोम (केश) छे अने अथर्ववेद जे परमात्मानु मुख छे एवो जे सर्वनो आश्रयभूत छे ते कोण छे ? कहो तो ते परम-ब्रह्म परमात्माज छे, बीजो कोइ नथी

५ पुन —ऋग्० अष्टक ८ । अ० ४ । व० १८ । म० १० मा—

तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥ ९ ॥

भावार्थ —सर्वहुत –पूर्वोक्तयज्ञथी ऋच सामानि–सामवेद उत्पन्न थयो ते यज्ञथी छन्दांसि–गायत्री आदि उत्पन्न थया अने तेन यज्ञथी यजुर्वेद पण उत्पन्न थयो ॥ ९ ॥

आ अथर्ववेदनी अने ऋग्वेदनी ऋचामा केटलो फरक छे तेनो विचार वाचक वर्गे करी लेवो

६ पुन —शतपथ का० १४ । अ । ब्रा० ४ क १० मा—

एव वा अरेऽस्य महतो भूतस्य नि॰श्वसितमेतत् ।
यदृग्वेदो यजुर्वेद सामवेदोऽथर्वाङ्गिरस ॥ इत्यादि ॥

भावार्थ —आ जे परमात्मा छे तेमनो नि श्वास छे ते ज ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अने अथर्ववेद छे ॥

७ पुन —तैत्तिरीयब्राह्मणे अष्टक २ अध्या० ३ अनु० १० मा—

प्रजापति सोम राजानमसृजत । त त्रयो वेदा अन्व-सृज्यन्त । तान् हस्तेऽकुरुत

भावार्थ —प्रजापति–ब्रह्मा तेणे प्रथम सोमराजाने उत्पन्न करीने पछी त्रण वेदोने उत्पन्न कर्या ते त्रणे वदोने सोमराजाए पोताना हाथमा लेई लीवा

८ पुन शतपथका० ११। अ० ५ ब्रा० ३ क० १।२।३ मा—

प्रजापतिर्वै इदमग्र आसीत्। एक एव। सोऽकामयत। साप्रजायेयेति। सोऽश्राम्यत्। स तपोऽतप्यत। तस्माच्छ्रान्ता-त्तेपानात् त्रयो लोका असृज्यन्त। पृथिव्यतरिक्षद्यौः॥ १॥ स इमा स्त्रींल्लोकानऽभितताप। तेभ्यस्तेभ्यस्त्रीणि ज्योतिः-ष्यऽजायताऽग्निर्योय पवते सूर्यः॥ २॥ तेभ्यस्तेभ्यस्त्रयो वेदा अजायन्ताऽग्ने ऋग्वेदो वायोर्यजुर्वेदः सूर्यात् साम-वेदः॥ ३॥

भावार्थ—प्रथम निश्चयथी एक प्रजापति ज हतो ते प्रजा-पतिने इच्छा थई के हु अनेकरूपवालो थई जाउ पछी तेणे शातपणाथी तप करवा माड्यो तपना प्रभावथी त्रण लोकनी रचना करी–१ पृथ्वीलोक २ आकाशलोक अने ३ स्वर्गलोक पछी ते प्रजापतिए आ त्रणे लोकनी पासे तप कराव्यो तेमना

तपना प्रभावथी त्रण ज्योति एटले प्रकाशस्वरूपवाला त्रण देवता उत्पन्न थया १ अग्नि २ सर्वजगत्ने पवित्र करवावालो वायु अने ३ सूर्य पछी ए त्रणेना तपथी त्रण वद उत्पन्न थया जेमक अग्निथी १ ऋग्वद २ वायुथी यजुर्वेद, अने ३ सूर्यथी सामवेद ॥ ३ ॥

९ पुन —तैत्तिरीयसहिता का० ७ प्र० १ अनु० ९ मा—

आपो वा इदमग्रे सलिलम् आसीत् तस्मिन् प्रजापतिर्वायुर्भूत्वाऽचरत् । स इमामपश्यत् तां वराहो भूत्वाऽऽहरत् । इति ॥

भावार्थ —अग्रे अर्थात् सृष्टिनी उत्पत्तिना पहला जल ने जल हतु ते जल्मा प्रजापति वायुनु स्वरूप धारण करीने फरवा लाग्यो तेमा फरतां फरता आ पृथ्वीने देखी पछी तेणे वराहनु (शूकरनु) रूप धारण करीने जलना उपर खेंची लाव्या

१० पुन —गोपथ० पू० प्र० १ ब्रा० ६ मा यथा—

स भूयोऽश्राम्यद्‌ भूयोऽतप्यत । भूय आत्मान समतपत् । स आत्मत एव त्रींल्लोकान्निरमिमत । पृथिवीमतरिक्ष दिवमिति । स खलु पादाभ्यामेव पृथिवीं निरमिमतोदरा

दन्तरिक्ष मूर्ध्नो दिव । स तांस्त्री * लोकानऽभ्यश्राम्यदऽभ्यतपत । तेभ्यः श्रातेभ्यस्तप्तेभ्यः संतप्तेभ्यस्त्रीन् देवान्निरमिमताऽग्नि वायुमादित्यमिति । स खलु पृथिव्या एवाऽग्नि निरमिमताऽन्तरिक्षाद्वायु दिव आदित्यम् । स तांस्त्रीन् देवानऽभ्यश्राम्यदऽभ्यतपत । समनपत् । तेभ्यः श्रातेभ्यस्तप्तेभ्यः संतप्तेभ्यस्त्रान् वेदान्निरमिमत । ऋग्वेद यजुर्वेदं सामवेदमिति ॥

भावार्थ—ते प्रजापति फरीथी शात थयो फरीथी पाछो तप कर्यो फरीथी आकरो तप करी पोताना आत्माने खूब तपाव्यो पछी पोताना आत्माथीज त्रणे लोकनी रचना करी एटले पोताना व'पगथी १ पृथ्वीलोक, २ उदरथी (पेटथी) आकाशलोक अने पोताना मस्तकथी ३ स्वर्गलोक ए प्रमाणे त्रणे लोकनी रचना करी पछी ए त्रणे लोक शात थये तेमनी पासे तप कराव्यो पछी ए त्रण लोक तप करी शात थये तेमनी पासेथी त्रण देवोनी उत्पत्ति करावी जेम के—१ पृथ्वीलोकथी अग्निदवनी, २ आकाशलोकथी वायुदेवनी अने ३ स्वर्गलोकथी सूर्यदेवनी उत्पत्ति करावी फरीथी ए त्रणे देवोनी पासेथी तप कराव्यो, तपथी शात थये, अग्निथी ऋग्वेदनी, वायुथी यजुर्वेदनी अने सूर्यथी सामवेदनी उत्पत्ति करावी इत्यादि

अहीया अमोए वंदन लगना ज मात्र दश पाठो नमुना रूपेज आप्या छे

१ तेमा पहेला पाठनो अर्थ एक उदासीनो करेलो अने बीजो अर्थ दयानन्दीनो करेलो ते कटला बधा फेरफारथी थयेलो छे ते बताव्यो छे

२ बीजा पाठमा—जे परमात्मा सुदर भुवनाविवाने छे तेणे जलमा गर्भ धारण कर्यो तमाथी प्रजानी उत्पन्न थया एवो अर्थ सूचवेलो छे

३ त्रीजा पाठमा—परमात्माए कूर्मनु रूप धारण करी आ सृष्टिनी रचना करी तेथी ते काश्यपी कहेवाइ

४ चोथा पाठमा—परमात्माथी व वद उत्पन्न थया त्रीजो तेमना रोमथी (केशथी) अने चोथो गुनथी एम चार वद जेमनाथी उत्पन्न थया छे तेज बधानो आधारभूत छे

५ पाचमा पाठमा—जे यज्ञ कर्या हतो तमाथी सामवद, गायत्री आदि, अने यजुर्वेद, उत्पन्न थया अहींया परमात्मानु नाम छोडी दीधु छे

६ छठा पाठमा—परमात्माए नि श्वास छोड्यो तेमाथी चारे वेदोनी उत्पत्ति थइ

७ सातमा पाठमा—प्रजापतिए प्रथम सोमराजाने उत्पन्न कर्यो अने पछी त्रण वेदोने उत्पन्न कर्या ने त्रणे वेदोने सोमराजाए पोतानी मुठीमा लेई लीधा

८ आठमा पाठमा—प्रथम प्रजापति एकलोज हता तेने घणा रूप थवानी इच्छा थवाथी तप करवा माड्यो तेमना प्रभावथी त्रण लोक उत्पन्न थया ते त्रण लोकने पाछो तप कराव्यो तथी त्रण ज्योतिरूप त्रण देवो उत्पन्न थया पाछो तमने पण तप कराव्या तेथी त्रण वेद उत्पन्न थया जेमके—अग्निदेवथी ऋग्वेद, बीजा वायुदेवथी यजुर्वेद, अने त्रीजा सूर्यदेवथी सामवेद

९ नवमा पाठमा—प्रजापति पोते वायुनु रूप धारण करीने पाणीमा फर्या त्या तमणे आ पृथ्वी जोई पछी पोते वराहनु रूप धारण करी ने पृथ्वीने बहार लेती लाव्या

१० दशमानो पाठ आठमा पाठनी साथे घणो मळतो छे विशेष ए छे के—दशमा पाठमा प्रजापतिना—पगथी—पटथी अने मस्तकथी त्रणे लोकनी उत्पत्ति थइ, आठमा पाठमा मात्र प्रजापतिनातपना प्रभावथी पोतानी मेळे उत्पन्न थइ गइ

आ उपरना लेखोनो किंचित् विचार करी बताबु तो अजाण वर्गने सुगम पडे

मान्य एवी मनुस्मृतिमा जणावेलामा आव्यु हतु के—"स्वयमू

भगवाने पाणी बनावी बीज नाख्यु ने सोनानु इडु थयु तेमा ब्रह्माजी मनुष्यना सर्व निखव वधा सुधी रह्या पछी ध्यान धरीने वे भाग कर्या तेथी आकाश अने पृथ्वी ने बनी गया." प्रथम आकाश अने पृथ्वी वेमाथी एक न हतु तो पाणी शेमा राख्यु ? अने बीज क्या नाख्यु ?

हवे जूवो अमोए जे दश पाठ मुक्या छे तेमानो पेहलो यजुर्वेदनो पाठ—परमात्मानी नाभिना कमलमा ब्रह्माजी चउद भुवनने लेईने रहेला हता ते शा कारणथी अने केटला वर्ष सुधी रह्या तेनो खुलासो काइ करेलो नथी पण विचार करवानी जरूर छे केम के प्रजापतिने अनादि मानेलो छे

बीजो पाठ पण यजुर्वेदनोज छे तमा एम जणाव्यु छे के परमात्माए पोते जलमा रहीने गर्भ धारण कर्या तेमाथी ब्रह्माजी उत्पन्न थया तो जाणवानु ए छे के जल क्या रहेलु हशे वारु ?

हवे त्रीजा शतपथब्राह्मणना पाठमा—"परमात्माए कूर्मनु रूप धारण करीने आ सृष्टिनी रचना करी तेथी आ सृष्टि काश्यपी कहेवाई" प्रथम आ सृष्टिज न हती तो ते परमात्मा क्या रह्या हशे ? अने कूर्मनु रूप कये ठेकाणे रहीने धारण कर्यु हशे वारु ? बीजू कोइ पण रूप न धारण करता कूर्मरूपज धारण करवामा शु विशेष हशे वारु ? अमोने तो आ लेखोज काई विचित्र जेवा लागे छे

इय जूओ आठमो पाठ शतपथब्राह्मणनो

अने दशमो-गोपथब्राह्मणनो तेमा एवु जणाववामा आव्यु छे के-" प्रथम प्रजापति एकलोज हतो तणा रूप थवानी इच्छा करीने तप कर्या " एवो कयो तप कर्या हश ? क जे तपना प्रभाववी त्रण लोकनी रचना करवानी शक्ति उत्पन्न थइ ? खैर, फरीथी त्रणे लोकनी पासे तप कराव्यो तेमा बीजो लोक तो आकाश छे ते तो शून्यरूप (पोलार रूप) छे तेनी पासे तप केवी रीते कराव्यो ? केम के ते आकाश तो रूप अने रंग विनानो छे वली दशमा पाठमा तो-निरंजन निराकार परमात्माना पग पेट अने मस्तक सुद्धा बनावी देई तेमाथी त्रण लोकनी उत्पत्ति बतावी दीधी ? अने कहे छे के-चारे वेदो तो परमात्माना तरफथीज बक्षीश रूपे मळेला छे तेनी उत्पत्ति पण विचित्र प्रकारथीज अमारा महापुरुषोए (?) बतावी छे तेनो पण विचार ते दश पाठोमाथीज थोडोक करीने बतावु छु ॥

जुवो-(४) चोथो पाठ-अथर्व सं० का० १० मानो-ऋग्वेद अने यजुर्वेद ए बे तो खास परमात्माथी उत्पन्न थया पण ते क्या अगथी अने केवी रीते उत्पन्न थया अने ते कई चीजमा राखवामा आव्या ते बातनो खुलासो काई पण कर्यो नथी था

विचार एटला मात्र उत्पन्न थयो के त्रीजो वेद परमात्माना कशरूप अने चोथो वेद मुखरूप उत्पन्ने छे तथीज था विचार करवानी जरूर पडी छे ॥

५ पाचमो पाठ—ऋग्वेद अष्टक ८ मानो छे तेमा एवु छे के—यज्ञ करवा मांड्यो हतो—तेमाथी—सामवेद, गायत्री आदि अने यजुर्वेद उत्पन्न थया आमा ऋग्वेद बताव्यो नथी यज्ञमाथी तो ज्वालाओ निकले पण वेदो केवा स्वरूपथी निकल्या हशे अने ते शेनामा झीली लीधा हशे ! वळी विना यज्ञनी विधि शेनाथी करी हशे ?

६ छठो पाठ—शतपथ का० १४ मानो छे तेमा ता-परमात्मानो निःश्वासथीज चारे वेदोनी उत्पत्ति थाती तो विचार ए थाय छे के—अनादि स्वरूपना परमात्माए शु ते निःश्वास एकत्र वखत लीधो हशे ? शु हवे फरीथी निःश्वास लेतो नहीं होय ? अने लेतो हशे तो हवे शी वस्तुनी उत्पत्ति थती हशे ? परमात्मा तो शरीर विनानो कहेलो छे तो तेणे निःश्वास नाक विना कवी रीते अने क्याथी मुक्या हशे ? आ बधी कल्पनाओ योग्य थइ होय एम अमोने काइ लागतु नथी बाकी तो वाचक वर्गनी ध्यानमा आवे ते खरु ॥

७ सातमो पाठ—तत्तिरीय ब्राह्मण भा अष्टकीनानो छे तेमा तो प्रजापति जे परमात्मा तमणे प्रथम सोमराजान उत्पन्न कर्या अन पछीथी त्रण वर्णन उत्पन्न कर्या अन ते वेदोन सोमराजाए पोतानी मुठीमा लेई लीधा सोमराजाने प्रथम उत्पन्न कर्या ता प्रजा विना राजा नेनो थयो हशे ! अने मुठीमा वेदोन श्री रीते पकडीने राख्या हश थाए ? ॥

८ हुव आठमो पाठ—शतपथ ब्राह्मण काड ११ मा आपेलो ८ त अन (१०) दशमो पाठ—गोपथब्राह्मण रूम उठानो छ ामा तो—प्रजापतिए पोता तप करीन त्रणलोकनी उत्पत्ति करी, नाए त्रणलोकनी पासे तप करावीने त्रण देवोनी उत्पत्ति कराती, त्यार बाद ते त्रणे देवोए तप कर्या तेना पछी त्रण वदोनी उत्पत्ति थई आ वदोत्पत्तिनी बात ८ मा अने १० मा पाठमा मळ्ता आवनी छे

सज्जनो ? आ सृष्टिनी उत्पत्तिना सबधे तेमज वदोनी उत्पत्तिना सबध जो पुराणोमा सत्य प्रमाण मळशा जईए तो कोई पुराण बनावनार—ब्रह्माजी, तो कोई शिवजी, कोई विष्णु तो कोई कालिकेवी, तथी तन ना पहिनो प्रमाणमा मुकता देता नथी पण अमोए जे जे प्रमाण आपला छे तेमा केटलाक तो खास

वदनाज छे अने बीजा पण वदनुरय ग्रथोनात छे ज्यारे एवा ग्रथोमायी पण मुख्य वातोनु सत्य न मली शके तो पछी बीजे क्ये ठेकाणेथी सत्य शोधी लाववु ? माटे अमोने निश्चय थयो छे क जैनोना तीर्थंकरोनी बरोबरी करवाने बीजो कोई पण पुरुप आज सुधी थएलो नथी अने तेमना कथन करेला तत्त्वग्रथोने जोड-पणा एक तत्त्ववक्ताओ स्तुति करवाने प्रेराएला छे अने तेवा लेखोज आ पुस्तकमा अपाया छे वली जुलै-जून १८९९ ना सुदर्शनमा आवला-प्रो० आनदशकर बापु भाइ ध्रुवना उद्गारो-×
" २ बौद्ध अन जैनधर्मनो पण विशाळहृत्ययी आ योजनामा समावश करवो घटे छे कारण के-ए धर्मानो उपदेश मूलमा ब्रह्मधर्मने अगेज थयो हतो अने ते ते समयमा प्रवर्त्तमान अनेक प्रकारना कचरान ब्राह्मधर्मना प्रवाहमाथी दूर करवाने ए धर्मो शक्तिमान थया छे " विचार एटलोज के-ते तीर्थंकरो केवा उच्च गुणोने धारण करवावाला हशे ! हवे मात्र तमना टुक गुणोना परिचयवाली एक महा कविए करेली स्तुतिने आ पुस्तकमा दाखल करी आ प्रथम भागनी समाप्ति करवानु धारीये छे

× सन्ट्रल हिंदु कॉलेज-बनारसना मथालाना लेखथी ॥

॥ परमपरमात्माना स्वरूपनु अवतरण ॥

आ दुनियामा अनादिकाल्थी रहेला अनत जीव पदार्थो छे तेमज अनादि काल्थी रहेला परमाणु आदि अजीव पदार्थो पण छे ते पदार्थोना यथार्थ स्वरूपनो प्रकाशक पुरुष कयो थाय अन त कवी रीतथी उत्पन्न थाय तेनु किंचित्मात्र स्वरूप जणाववाने आ अवतरण करी वतानु छु

ते अनत जीवोमाथी गम ते जीव, पोताना विशुद्ध चारित्रवडे अनक भवोथी (अनक जन्मोथी) पोताना आत्मानी शुद्धी मळवतो मेळवता, उत्तमोत्तमताना स्वरूपन प्राप्त थतो, छेवट पोताना मोक्षनी प्राप्तिना भवमा पण—राज्य, स्त्री, पुत्र, वनादिक जे जे बाह्यपदार्थो आत्माने विकार करना वाला छे तनाथी सर्वथा दूर रहीने अर्थात् प्रव्रज्या ग्रहण करीने, रागद्वेष मोह अज्ञानादिक ज जे आत्मगुणोना घातक अतरगना महादूषणो छे तमनो सर्वथा नाश करीने, प्राप्त कर्यु छे—रूपी अरूपी सर्वचराऽचर पदार्थोनो प्रकाश करवावाळु कवळज्ञान, तेनीज साथे प्रगट थयु छे—जगतना जीवोने उपदेश करवाना स्वरूपनु तीर्थंकर नाम कर्म जेमने, ते परमात्मा पोते आ

दुनियामा अनादिकालथी रहेला अनंतजीव पदार्थो अने अनंत परमाणुओ आदि अजीव पदार्थो वस्तोवखत कोइ एक विरारन प्राप्त थवाथी उत्पन्न थता अने तेवाज कारणथी रूपांतरने प्राप्त थता जाणीने, अज्ञानाधकूपमा पडेला भव्यप्राणीओने इन्द्रियाऽगोचर सूक्ष्ममा सूक्ष्म पदार्थोनो बोध आपी सुवर्ण जेवा प्रकाशमा जेणे, तेवो परम परमात्मा शु एकज थयो हशे ? ना, ते एकतो नहीन पण–जैनसिद्धांतमा प्रसिद्ध–वीस कोडाकोडी सागरोपमनु जे एक कालचक्र छे–तेमा एक उत्सर्पिणी काल छे, तेमा ते धर्मना प्रवर्तको चोवीसज थाय अने तेज प्रमाणे बीजा अव सर्पिणीकालमा. पण धर्मनी प्रवृत्ति करावनारा अधिकारवाला ते चोवीशज थाय बाकी अधिकार विनाना पोताना कर्मोनो सर्वथा नाश करीने घणे तेला मोक्षे जाय तो तो नियम जैन सिद्धांतमा नथी पण ते मोक्षे गयेला फरीथी पाछा आ दुनियामां आवे नहीं ए नियम तो जरूर छेज आवा प्रकारना नियमथी अतीतकालमा अनंती चोवीशी थई गई अने भविष्यकालमा पण अनंती चोवीशीओ थया करवानीज, तेथी तेवा अनंत परमात्मा एकज प्रकारथी उपदेशनो अधिकार भोगवी भोगवीने पोताना उद्धारनी साथे सत्य तत्त्वोनो प्रकाश करीने आ दुनियानो पण

उद्धारज करता गया छे तथी ते परमात्मा अनतज छे परतु अनादिकालनो एकज नियता आ दुनियानो उद्धार कर्याज करे छे एवा प्रकारनी गुजरन जेनतत्त्वोना त्ताने रहेतीन नथी अने आवा प्रकारनी मान्यता छे ते सयुक्तिकज छे पण युक्ति विनानी नथीन ते पग्म परमात्मामा कया कया दूषणोनो नाश थई केवा केवा प्रकारना अलौकिक गुणो प्रगट थता हशे, तेवा गुणोनेज टुकमा जणावनाना हेतुथी महर्षि श्रीसिद्धसेनसूरीश्वरजी मात्र बत्रीश काव्यमा ते पम परम त्मानी स्तुति करता पोते कहे छे के–तेवा गुणवाला परमात्मानु शरणथीज मारु कल्याण थाओ, एम कहेता थका पोते बीजा भव्य प्राणिओने पण तेमनुज शरण लेवानु सूचवी रह्या छे तेज स्तुति अमो पण बीजा जीवोना उपकारना माटे आ ग्रन्थो पर दाखल करीने बतावीए छीए—

श्री ।

॥ श्रीसिद्धसेनसूरिविरचिता ॥

परमपरमात्मस्तुतिद्वात्रिंशिका.

सदा योगसात्म्यात् समुद्भूतसाम्य
प्रभोत्पादितमाणिपुण्यप्रकाश ।
त्रिलोकीशवन्द्यस्त्रिकालज्ञनेता
स एक परात्मा गतिर्मे जिनेन्द्रः ॥ १ ॥

भावार्थ—पूर्णज्ञानादिकना योगथी उत्पन्न थयु छे सदा समतापणु जेमने अने तेज ज्ञानादिकनी प्रभाथी कर्यो छे धर्मनो प्रकाश जेमणे, तथा जे इन्द्र १ नागेन्द्र २ अने राजेन्द्रथी वन्द्य, त्रिकालज्ञानिओना पण ईश छे ते एकज जिनेन्द्र परमात्मा अमारा कल्याणने माटे थाओ ॥ १ ॥

शिवोऽथादिसङ्ख्योऽथ बुद्धः पुराणः
पुमानप्यलक्ष्योऽप्यनेकोऽप्यथैकः ।
प्रकृत्यात्मवृत्त्याऽप्युपाधिस्वभावः
स एकः परात्मा गतिर्मे जिनेन्द्रः ॥ २ ॥

भावार्थ—जे निरुपद्रव, तीर्थस्थापवामां आद्य, ज्ञानवान्, सर्वमां वृद्धरूप पुरुष, इन्द्रियोथी अगम्य, ज्ञानथी अनकल्पवाळो पण निश्चयथी तो एकज कर्मनी उपाधिथी मुक्त थई आत्मलीन-स्वभावमय छे ते एकज जिनेन्द्र परमात्मा अमारा कल्याणने माटे थाओ ॥ २ ॥

जुगुप्साभयाऽज्ञाननिद्राऽविरत्य—
ऽङ्गभूहास्यशुग्द्वेषमिथ्यात्वरागैः ।
न यो रत्यरत्यन्तरायैः सिषेवे
स एकः परात्मा गतिर्मे जिनेन्द्रः ॥ ३ ॥

भावार्थ—१ दुगन्छा, २ भय, ३ अज्ञान, ४ निद्रा, ५ अविरति, ६ कामाभिलाप, ७ हास्य, ८ शोक, ९ द्वेष, १० मिथ्यात्व, ११ राग, १२ रति, १३ अरति, अने दानादि पांच अन्तराय एव मळी १८ दोषोथी जे सेवाएलो नथी (सर्वथा मुक्त) ते एकज जिनेन्द्र परमात्मा अमारा कल्याणने माटे थाओ ॥ ३ ॥

न यो बाह्यसत्वेन मैत्रीं प्रपन्न-
स्तमोभिर्न नो वा रजोभिः प्रणुन्नः ।

त्रिलोकीपरित्राणनिस्तन्द्रयुक्त
स एक परात्मा गतिर्मे जिनेन्द्रः ॥ ४ ॥

भावार्थ—जे लौकीकवाह्यसरखी मेत्री (पुद्गलरागदशा) ने प्राप्त थएलो नथी अने रजोगुणथी तथा तमोगुणथी पण प्रेराएलो नथी त्रणे लोकनी रक्षा माटे अप्रमत्तपणे वृत्ति छे जेमनी एवो ते एकज जिनेन्द्र परमात्मा अमारा कल्याणने माटे थाओ ॥ ४ ॥

हृषीकेश ! विष्णो ! जगन्नाथ ! जिष्णो !
मुकुन्दाच्युत ! श्रीपते ! विश्वरूप !
अनन्तेति सम्बोधितो यो निराशैः,
स एकः परात्मा गतिर्मे जिनेन्द्रः ॥ ५ ॥

आ ४ ५ अने ७ मा काव्यमा-कृष्णस्वामिना नामो नामाथी स्तुति करवामा आवी छे ते ते शब्दोना अर्थ प्रमाण करता गुणोना तो एज परमपरमात्मा छे बाकी पौराणिकवालाओए तो नाममात्रथीज कल्पी लावेला छे कारण के तो तेवा अलौकिक गुणोवाली त द ना कल्पेली मूर्तिमा के ता तो तेवा गुणोवाला ते देवोना चरित्रो लखाएला जोवामा आवे छे मात्र तमोए कल्पना ते देवो नामथीज ना खरा परंतु गुणोथी नहीं एवो आ स्तुतिकारनो आशय छे

भावार्थ—हे हृषीकेश– अतीन्द्रियज्ञानिन् ! (१) हे विष्णो– ज्ञानथी सर्वव्यात ! (२) हे जगन्नाथ– जगत्ना जीवोना नाथ ! (३) हे जिष्णो– रागादिकने जितनार ! (४) हे मुकुन्द– पापथी छोडावनार (५) हे अच्युत– निजपदथी अच्युत ! (६) हे श्रीपत– केवलादि लक्ष्मीना पति ! (७) हे विश्वरूप– असंख्य प्रदेशथी आवृत ! (८) हे अनन्त– अन्तविनाना सिद्ध ! (९) एवी रीते जे आशा विनाना लोकोथी सबोधाएलो छे ते एकज जिनेन्द्र परमात्मा अमारा कल्याणने माटे थाओ ॥ ५ ॥

पुराऽनङ्गकालोऽरिरकाशकेशः
कपाली महेशो महाव्रत्युमेशः ।
मतो योऽष्टमूर्त्तिः शिवो भूतनाथः
स एकः परात्मा गतिर्मे जिनेन्द्रः ॥ ६ ॥

भावार्थ—(१) जे क्षपकश्रेणीसमये मलीन कामदेवनो शत्रु, (२) अन्तना आकाशनो ईश, (३) ब्रह्मचर्यने पालनार, (४) ऐश्वर्यने भोगनार, (५) महाव्रती, (६) केवलज्ञानरूप पार्वतीनो ईश, (७) सर्वजीवोने सुख करनार, (८) सर्वप्राणिओनो नाथ ए आठ मूर्तिरूपथी मनाएलो छे ते एकज जिनेन्द्र परमात्मा अमारा कल्याणने माटे थाओ ॥ ६ ॥

विधिर्ब्रह्मलोकेशशम्भूस्वयम्भू-
चतुर्वक्त्रमुख्याभिधाना विधानम् ।
ध्रुवोऽथो य ऊचे जगत्सर्गहेतुः
स एक परात्मा गतिर्मे जिनेन्द्र ॥ ७ ॥

भावार्थ—ब्रह्मा (१) लोकेश (२) शम्भू (३) स्वयंभू (४) चतुर्मुख (५) आदि नामोने धारण करनार अने जगत्ना भव्यप्राणिओने मोक्षमार्गनी रचना करवामां हेतुरूप ध्रुवपणे थतो एवो ते एकज जिनेन्द्र परमात्मा अमारा कल्याणने माटे थाओ ॥ ७ ॥

न शूलं न चापं न चक्रादि हस्ते
न हास्यं न लास्यं न गीतादि यस्य ।
न नेत्रे न गात्रे न वक्त्रे विकारः
स एक. परात्मा गतिर्मे जिनेन्द्रः ॥ ८ ॥

भावार्थ—जेमना हाथमां नथी तो त्रिशूल, धनुष, चक्रादिक अने जे नथी करतो हास्य नाट्य गीतादिक, तेमज नथी तो जेमना नेत्र, शरीर अने मुख उपर विकार एवो ते एकज जिनेन्द्र परमात्मा अमारा कल्याण माटे थाओ ॥ ८ ॥

न पक्षी न सिंहो वृषो नापि चाप
न रोषप्रसादादिजन्मा विकारः ।
न निन्द्यैश्चरित्रैर्जने यस्य कम्पः
स एकः परात्मा गतिर्मे जिनेन्द्रः ॥ ९ ॥

भावार्थ—तथा नथी तो जेमने पक्षी, सिंह अने बलदादि-वस्तु वाहन तेमज धनुष् विनानो अने रागद्वेषजन्य विकारथी मुक्त, अने जेमना निन्द्यचरित्रोथी, लोकोने पण भय नथी, एवो ते एकज जिनेन्द्र परमात्मा अमारा कल्याणने माटे थाओ ॥ ९ ॥

न गौरी न गङ्गा न लक्ष्मीर्यदीय
वपुर्वा शिरो वाऽप्युरो वा जगाहे ।
यमिच्छाविमुक्तं शिवश्रीस्तु भेजे
स एकः परात्मा गतिर्मे जिनेन्द्रः ॥ १० ॥

भावार्थ—नथी तो जेमना शरीर साथे पार्वती अने नथी जेमना मस्तके गङ्गा, तेमज नथी जेमना वक्षःस्थल उपर लक्ष्मी उता पण जे इच्छारहित प्रभुने मोक्षलक्ष्मी वरी छे, एवो ते एकज जिनेन्द्र परमात्मा अमारा कल्याणने माटे थाओ ॥१०॥

जगत्सम्भवस्थेमविनाशहेतुं
रुलीस्थितालैर्यो जीवलोकम् ।
महामोहकूपे निचिक्षेप नाथ
स एकः परात्मा गतिर्मे जिनेन्द्रः ॥ ११ ॥

भावार्थ—जगतनी उत्पत्ति करवारूप, नाश करवारूप अने धारणरूपी भोग इन्द्रजालना स्वरूपथी जेमणे लोकोने महामोहरूपी कूवमां पण नाख्या नथी एवो ते एकज जिनेन्द्र परमात्मा अमारा कल्याणने माटे थाओ ॥ ११ ॥

समुत्पत्तिविध्वंसनित्यस्वरूपा
यदुत्था त्रिपथ्येव लोके विचित्रम् ।
हरस्य हरिव्रं मतेर्बा स्वभावैः
स एकः परात्मा गतिर्मे जिनेन्द्रः ॥ १२ ॥

भावार्थ—तथा उत्पत्ति १ नाश २ अने नित्यरूप ३ जे त्रिपदी जेमनाथी प्रगट थएली तेज पोतपोताना स्वभावथी आ

१ अनादि अनन्तगाथा रहला-जीव अजीवादि पर्यायो कारणथी उत्पन्न थने भ्रम थई ने पण पाछा पोतपोताना स्वभावने प्राप्त थवाना एवो ज निश्चय थाता उपज्या छे तेने त्रिपदी कहवामां आवे छे

लोकमा ब्रह्मा १ विष्णु २ अने महेश ३ पणाना स्वरूपने धारण करीने रही छे एवो ते एकज जिनेन्द्र परमात्मा अमारा कल्याणने माटे थाओ ॥ १२ ॥

त्रिकालत्रिलोकत्रिशक्तित्रिसन्ध्य-
त्रिवर्गत्रिदेवत्रिरत्नादिभावैः ।
यदुक्ता त्रिपदेव विश्वानि वव्रे
स एकः परात्मा गतिर्मे जिनेन्द्रः ॥ १३ ॥

भावार्थ—जेमनी कहेली उत्पाद १ व्यय २ ध्रौव्य ३ रूपी त्रिपदी– भूत १ भविष्य २ अने ३ वर्त्तमान काळथी । स्वर्ग १ मृत्यु २ अने ३ पातालना लोकथी । प्रभुत्व १ उत्साह २ अने ३ मन्त्रनी शक्तिथी । प्रात १ मध्यान्ह २ अने ३ सन्ध्याना रूपथी। धर्म १ अर्थ २ अने ३ काम ए त्रण वर्गथी ।ब्रह्मा १ विष्णु २ अने शिव ३ ए त्रण देवथी । ज्ञान १ दर्शन २ अने चारित्र ३ ए त्रण रत्नथी । ए आदि अनेक भावोथी सारा जगत्मा व्यापी रहेली छे एवो ते एकज जिनेन्द्र परमात्मा अमारा कल्याणने माटे थाओ ॥ १३ ॥

यदाज्ञा त्रिपद्येव मान्या ततोऽसौ
तदस्त्येव नो वस्तु यन्नाधितष्ठौ ।

अतो ब्रूमहे वस्तु यत्तद् यदीय
स एकः परात्मा गतिर्मे जिनेन्द्र ॥१४॥

भावार्थ—जेनी त्रिपदी छे ते ज मान्य छे दुनीयामा कोई तेवी वस्तु पण नथी के जे त्रिपदीने धारण न करती होय एटलाज माटे कहिये छे के जेनी ए त्रिपदी छे ते एकज जिनेन्द्र परमात्मा अमारा कल्याणने माटे थाओ ॥ १४ ॥

न शब्दो न रूप रसो नाऽपि गन्धो
न वा स्पर्शलेशो न वर्णो न लिङ्गम् ।
न पूर्वापरत्व न यस्यास्ति सञ्ज्ञा
स एकः परात्मा गतिर्मे जिनेन्द्रः ॥ १५ ॥

भावार्थ—जेमने शब्द, रूप, रस, गन्ध, अने स्पर्श ५ ए पाचे विषयो नथी। श्वेतादिवर्ण, पुरुषादिलिंग, अने आ पहेलो आ बीजो एवी सञ्ज्ञा पण नथी एवो ते एकज जिनेन्द्र परमात्मा अमारा कल्याण माटे थाओ ॥ १५ ॥

छिदा नो भिदा नो न क्लेदो न खेदो
न शोषो न दाहो न तापादिरापत् ।
न सौख्य न दुःख न यस्यास्ति वाञ्छा
स एक परात्मा गतिर्मे जिनेन्द्र ॥ १६ ॥

भावार्थ—जेमनो शस्त्रादिथी छेद, करवतादिथी भेद, जला-दिथी आर्द्रपणु, खेद, शोप, दाह, ताप, आपत्ति, सुख, दु:ख, घाछादि पण नथी एवो ते एकज जिनेन्द्र परमात्मा अमारा कल्याणने माटे थाओ ॥ १६ ॥

न योगा न रोगा न चोद्वेगवेगाः
स्थितिर्नो गतिर्नो न मृत्युर्न जन्म ।
न पुण्यं न पापं न यस्याऽस्ति बन्धः
स एकः परात्मा गतिर्मे जिनेन्द्रः ॥ १७ ॥

भावार्थ—मन, वचन अने कायाना योगो, अने रोगो, चित्तोद्वेग, आयु स्थिति, भवान्तरगति, मरण अने जन्म, पुण्य, पाप, तेमज कर्मनो बन्ध, ए सर्व प्रकार पण जेमने रहेलो नथी-एवो ते एकज जिनेन्द्र परमात्मा अमारा कल्याण माटे थाओ ॥ १७ ॥

तपः संयमः सूनृतं ब्रह्म शौचं
मृदुत्वार्जिवाऽकिञ्चनत्वानि मुक्तिः ।
क्षमैवं यदुक्तो जयत्येव धर्मः
स एकः परात्मा गतिर्मे जिनेन्द्रः ॥ १८ ॥

भावार्थ—तप १ संयम २ सत्य ३ ब्रह्मचर्य ४ अचौर्यता ५ निरभिमानता ६ सरलता ७ अपरिग्रहता ८ निर्ममता ९ अने क्षमा १० ए दश प्रकारनो यतिधर्म जेमनो कहेलो जयवतो वर्त्ते छे एवो ते एकज जिनेन्द्र परमात्मा अमारा कल्याणने माटे थाओ ॥ १८ ॥

अहो निष्पाधारभूता धरित्री
निरालम्बनाधारमुक्ता यदास्ते ।
अचिन्त्यैव यद्धर्मशक्तिः परा सा
स एकः परात्मा गतिर्मे जिनेन्द्रः ॥ १९ ॥

भावार्थ—अहो इति आश्चर्ये जगत्‌ने आधारभूत आ पृथ्वी आलम्बन अने आधार विना रही छे ते पण जेमना कहेला दश प्रकारना यति धर्मनीज अचिन्त्य शक्ति छे एवो ते एकज जिनेन्द्र परमात्मा अमारा कल्याणने माटे थाओ ॥ १९ ॥

न चाऽम्भोधिराप्लावयेद्‌ भूतधात्रीं
समाश्वासयत्येव कालेऽम्बुवाहः ।
यदुद्भूतसद्धर्मसाम्राज्यवश्यः
स एकः परात्मा गतिर्मे जिनेन्द्रः ॥ २० ॥

भावार्थ—जे प्रभुथी उत्पन्न थयेला दश प्रकार सद्धर्मना साम्राज्यने वश थएलो आ समुद्र पृथ्वीने डुबावतो नथी तेमज वर्षा पण वखतो वखत वर्षीने लोकोने धीरज आप्या करे छे एवो ते एकज जिनेन्द्र परमात्मा अमारा कल्याणने माटे थाओ ॥२०॥

न तिर्यग् ज्वलत्येव यज्ज्वालजिव्हो-
यदूर्ध्वं न वाति प्रचण्डो नभस्वान् ।
स जागर्त्ति यद्धर्मराजप्रभावः
स एकः परात्मा गतिर्मे जिनेन्द्रः ॥ २१ ॥

भावार्थ—जे भगवतना कहेला दश प्रकार धर्मराजाना जाग्रत प्रतापथी अग्नि तिरछो ज्वलित थतो नथी अने प्रचण्ड वायु पण उचो वातो नथी एवो ते एकज जिनेन्द्र परमात्मा अमारा कल्याणने माटे थाओ ॥ २१ ॥

इमौ पुष्पदन्तौ जगत्यत्र विश्वो-
पकाराय दिष्टचोदयेते वहन्तौ ।
उरीकृत्य यत्तुर्यलोकोत्तमाज्ञा
स एकः परात्मा गतिर्मे जिनेन्द्रः ॥ २२ ॥

भावार्थ—जे चारे लोकमा उत्तम एवा लोकोत्तर भगवान्नी (परम परमात्मानी) आज्ञाने अगीकार करीने आ चन्द्र अने सूर्य पण आ दुनीयाने उपकार करवा माटे खुशीथी उदय थया करे छे एवो ते एकज जिनेन्द्र परमात्मा अमारा कल्याणने माटे थाओ ॥ २२ ॥

अवत्येव पातालजम्बालपाताद्
विधायाऽपि सर्वज्ञलक्ष्मीनिवासान्।
यदाज्ञाविधित्साश्रितानङ्गभाजः
स एकः परात्मा गतिर्मे जिनेन्द्रः ॥ २३ ॥

भावार्थ—जे भगवन्तनी आज्ञा करवानी इच्छाने आश्रित थएला भव्य प्राणिओ छे तेमने सर्वज्ञलक्ष्मीना घररूप बनावी, नरक निगोदादिक कादवमा पडताथी बचाव करे छे एवो ते एकज जिनेन्द्र परमात्मा अमारा कल्याण माटे थाओ ॥ २३ ॥

सुपर्वद्रुचिन्तामणीकामधेनु-
प्रभावा नृणां नैव दूरे भवन्ति।
चतुर्थे यदुत्थे शिवे भक्तिभाजां
स एकः परात्मा गतिर्मे जिनेन्द्रः ॥ २४ ॥

भावार्थ—जे प्रभुथी प्रकट थएला चोथा लोकोत्तर मोक्ष-मार्गमा जे पुरुषो भक्तिवाळा थया छे तेमनाथी कल्पवृक्ष, चिन्तामणिरत्न अने कामधेनुना प्रभावो पण वेगळा रहेता नथी एवो ते एकज जिनेन्द्र परमात्मा अमारा कल्याणने माटे थाओ २४॥

कलिव्यालवन्हिग्रहव्याधिचौर-
व्यथावारणव्याघ्रवीव्यादिविघ्नाः ।
यदाज्ञाजुपा युग्मिनां जातु न स्युः
स एकः परात्मा गतिर्मे जिनेन्द्र ॥ २५ ॥

भावार्थ—जे परम प्रभुनी आज्ञाने सेवन करनारा स्त्री पुरुषो छे तेमने क्लेश, सर्पभय, अग्निभय, ग्रहपीडा, रोग, चोरभय, हस्ति वाघनी श्रेणीनो भय इत्यादि दुष्ट विघ्नो कदी पण थता नथी एवो ते एकज जिनेन्द्र परमात्मा अमारा कल्याणने माटे थाओ ॥ २५ ॥

अबन्धस्तथैकः स्थितो वा क्षयीवा
ऽप्यसद्वा मतो यैर्जडैः सर्वथाऽऽत्मा ।
न तेषां त्रिमूढात्मना गोचरो यः
स एकः परात्मा गतिर्मे जिनेन्द्रः ॥ २६ ॥

भावार्थ—जे अज्ञानिओए आत्माने एकान्तपणे कर्मना बन्धथी रहित, वडातिओनी पेठे। एकान्तपणे एकज, स्थिर, अने बौद्धनी पेठे विनाशी—स्वप्नवत् असत् माने छे ते जड पुरुषो विशपीतो ए सर्वे गुणोवालो आत्मा छे पण एकांतपणाथी नहीं एम कथन करवावाला जे सत्य प्रभुने नथी ओळखी शक्या एवो ते एकज जिनेन्द्र परमात्मा अमारा कल्याणने माटे थाओ ॥२६॥

न वा दुःखगर्भे न वा मोहगर्भे
स्थिता ज्ञानगर्भे तु वैराग्यगर्भे ।
यदाज्ञानिलीना ययुजन्मपारं
स एक. परात्मा गतिर्मे जिनेन्द्रः ॥ २७ ॥

भावार्थ—जे प्रख्यो सत्य प्रभुनी आज्ञाने वश थया छे ते ससार—समुद्रथी पारने पण प्राप्त थया छे ते प्रभुनी आज्ञा दुःखगर्भवैराग्यमा के मोहगर्भवैराग्यमा रहेली नथी पण ते ज्ञान-गर्भवैराग्यतत्त्वमा रहेली छे एवो ते एकज जिनेन्द्र परमात्मा अमारा कल्याणने माटे थाओ ॥ २७ ॥

विहायाऽऽश्रवं संवरं संश्रयैव
यदाज्ञा पराऽभाजि यैर्निर्निमेषैः ।

स्वकर्मैरकार्येव मोक्षो भवो वा
स एकः परात्मा गतिर्मे जिनेन्द्रः ॥ २८ ॥

भावार्थ—रे जीव ! आश्रवने त्यागी संवरनो आश्रय ले, एवा सामान्य वैराग्यवाळा पुरुषो होवा छता पण जे परम प्रभुनी आज्ञाना सेवनथी पोतानो भव (जन्म) मोक्षरूप बनाव्यो छे अर्थात् जीवनमुक्तरूप थया छे एवो ते एकज जिनेन्द्र परमात्मा अमारा कल्याणने माटे थाओ ॥ २८ ॥

शुभध्याननीरैरुरीकृत्य शौच
सदाचारदिव्यांशुकैर्भूषिताङ्गाः ।
बुधाः केचिदर्हन्ति य देहगेहे
स एकः परात्मा गतिर्मे जिनेन्द्रः ॥ २९ ॥

भावार्थ—केटलाक महापुरुषो धर्मध्यानरूप जलथी शौच अंगीकार करीने अने सदाचाररूप दिव्य वस्त्रोथी भूषित थइने, पोताना शरीररूप मन्दिरमा जे परमात्माना स्वरूपनी पूजा करे छे ते एकज जिनेन्द्र परमात्मा अमारा कल्याणने माटे थाओ ॥ २९ ॥

दयासूनृतोऽस्तेयनिःसङ्गमुद्रा–
तपोज्ञानशीलैर्गुरूपास्तिमुख्यैः ।
सुमैरष्टभिर्योऽर्च्यते धाम्नि धन्यैः
स एकः परात्मा गतिर्मे जिनेन्द्रः ॥ ३० ॥

भावार्थ—दया १ सत्यवचन २ पारका धनथी दूर रहेवु ३ परिग्रहथी मुक्त ४ इच्छानो रोध ५ तत्त्वनो बोध ६ महाव्रत ७ गुरुनी सेवा ८ ए आठ गुणनी प्राप्तिरूप पुष्पोथी पोतानी ज्ञान-ज्योतिमां पुण्यवत पुरुषो जे परमात्माने पूजी आठ कर्मनो क्षय करी रह्या छे ते एकज जिनेन्द्र परमात्मा अमारा कल्याणने माटे थाओ ॥ ३० ॥

महार्चिर्धनेशो महाज्ञामहेन्द्रो
महाशान्तिभर्ता महासिद्धसेन. ।
महाज्ञानवान् पावनीमूर्त्तिरर्हन्
स एक. परात्मा गतिर्मे जिनेन्द्र ॥ ३१ ॥

भावार्थ—जे अर्हन् भगवान् महाज्योतिरूप ऋद्धिना स्वामी छे, महाज्ञा करवामा महेन्द्र छे, महाशान्तरसथी भरेला छे, परम सिद्धोनी सेनावाळा छे, आ ठेकाणे सिद्धसेन एवु कविए

पोतानु नाम पण सुचन्यु छे, महाज्ञानवान् छे, अने जेमनी मूर्त्ति जगतने पवित्र करवावाळी छे ते एकज जिनेन्द्र परमात्मा अमारा कल्याणने माटे थाओ ॥ ३१ ॥

महाब्रह्मयोनिर्महासत्त्वमूर्त्ति-
महाहंसराजो महादेवदेवः ।
महामोहजेता महावीरनेता
स एकः परात्मा गतिर्मे जिनेन्द्रः ॥ ३२ ॥

भावार्थ—जे महानसज्ञाननी उत्पत्तिना कारणरूप, जे महाधैर्यनी मूर्त्तिरूप, सर्व जीवोनो पण जे महात्मा, महादेवोनो पण जे देव, जे महामोहने जीतनावाळो अने जे महावीरोनो पण अग्रेसर छे ते एकज जिनेन्द्र परमात्मा अमारा कल्याणने माटे थाओ ॥ ३२ ॥

इतिश्री सिद्धसेनसूरिविरचिता परमात्मस्तुति-
द्वात्रिंशिका समाप्ता ।

आ उपर लखेली बत्रीशीमा सर्वज्ञनी स्तुतिद्वारा परमात्माना स्वरूपनु वर्णन करी बतावेल छे तेवा योग्य परमात्माना कथन करेला यथार्थ तत्त्वोने ग्रहण करवा विचारी पुरुषो प्रेराय ते स्वभाविक छे पण यद्वातद्वा पुरुषोना कहेला यद्वातद्वा तत्त्वोने विचार कर्या वगर केवी रीते मानी शकाय ? कह्यू छे के—

श्रुतिर्विभिन्ना स्मृतयो विभिन्ना नैको मुनिर्यस्य वचः प्रमाणम्।
धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां महाजनो येन गतः स पन्था ॥

भावार्थ—वेदनी श्रुतिओ भिन्न भिन्न कथन थएली छे, तेम स्मृतिओना मत पण मळता नथी, न तो कोइ तेवो ऋषि थएलो छे के जेनु वचन प्रमाणिक थएलु छे, धर्मनो तत्त्व न जाणे कई गुफामा मुकी गया छे, छेवटनो रस्तो एज छे के महापुरुषो गया होय ते मार्गे चाल्या जवु ।

सज्जनो ! जैनधर्मवाळाओने आ श्लोकमा करेली उदासीनता रहेती नथी, केमके—सूक्ष्ममा सूक्ष्म तत्त्वोनो परस्पर विरोधरहित विचार एकज सर्वज्ञ पुरुषना मुखथी प्रकट थएलो अने सर्व विचारी पुरुषोने अक्षरे अक्षर मान्य थएलो छे आम होवा छता पण जणाववामा आव्यु छे के—

पुराण मानवो धर्मः साङ्गो वेदश्चिकित्सितः ।
आज्ञासिद्धानि चत्वारि न हन्तव्यानि हेतुभिः ।

भावार्थ—१८ पुराण, मनुनो कहेलो धर्म, अंगोनी साथे वेदो, अने वैद्यक आ च्यार शास्त्रोमा जे प्रमाणे कहेलु होय ते प्रमाणे मानी लेवु पण कोईए तर्क करीने तेनु खंडन करवु नहीं

विचार करो के प्रत्यक्ष विरुद्ध बाबतमा पंडितो तर्क कर्यां वगर रहे खरा के ? पुराणोमा केटली पोल छे ते तो दयानन्द-सरस्वतीना मंडले (आर्यसमाजे) जगत्मा प्रसिद्ध करीने मुकी छे वदोनी मान्यताने लईने थती हिंसानो अणगमो जैन अने बौद्धोने तो प्रथमथीज थएलो जगजाहेर छे, ते सिवाय भागवत धर्मवाला, कबीरदास, तुकाराम, विगेरे अनेक महापुरुषोए पण वदोथी थती हिंसानो अणगमो जाहेर करेलो छे तेमज दयानन्द-सरस्वतीजीने पण हिंसक श्रुतिओनी अरुचितो पुरेपुरी थएली हती पण सत्य क्या छे तेनु शोधन न करता केवल बापदादाना कुवामां पडीने डूबी मरवु कबूल राखी चवा वदोनो अर्थ चालती रूढि-प्रमाणे फेरवी जूदोज प्रकार करीने बताव्यो, तो ते आजकालना अल्पज्ञ पुरुषोनो करेलो वेदोनो अर्थ सत्यतत्त्वोना जिज्ञासुओने

आ उपर रखेली बनीशीमा सर्वज्ञनी स्तुतिद्वारा परमात्माना स्वरूपनु वर्णन करी बतावल छे तेवा योग्य परमात्माना कथन करेला यथार्थ तत्त्वोने ग्रहण करवा विचारी पुरषो प्रेराय ते स्वभाविक छे पण यद्वातद्वा पुरुषोना कहेला यद्वातद्वा तत्त्वोने विचार कर्या वगर कवी रीते मानी शकाय ? कह्यू छे के—

श्रुतिर्विभिन्ना स्मृतयो विभिन्ना नैको मुनिर्यस्य वच. प्रमाणम्।
धर्मस्य तत्त्व निहितं गुहाया महाजनो येन गत. स पन्था. ॥

भावार्थ—वेदनी श्रुतिओ भिन्न भिन्न कथन थएली छे, तेम स्मृतिओना मत पण मळता नथी, न तो कोई तेवो ऋषि थएलो छे क जेनु वचन प्रमाणिक थएलु छे, धर्मनो तत्त्व न जाणे कई गुफामा मुकी गया छे, छेवटनो रस्तो एज छे के महापुरुषो गया होय ते मार्गे चाल्या जवु।

सज्जनो ! जैनधर्मवाळाओने आ श्लोकमा करेली उदासीनता रहेती नथी, केमके—सूक्ष्ममा सूक्ष्म तत्त्वोनो परस्पर विरोधरहित विचार एकज सर्वज्ञ पुरुषना मुखथी प्रकट थएलो अने सर्व विचारी पुरुषोने अन्तरे असर मान्य थएलो छे आम होवा छता पण जणाववामा आव्यु छे के—

पुराण मानवो धर्मः साङ्गो वेदश्चिकित्सितः ।
आज्ञासिद्धानि चत्वारि न हन्तव्यानि हेतुभिः ।

भावार्थ—१८ पुराण, मनुनो कहेलो धर्म, अंगोनी साथे
वेदो, अने वैद्यक आ च्यार शास्त्रोमा जे प्रमाणे कहेलु होय ते
प्रमाणे मानी लेवु पण कोईए तर्क करीने तेनु खंडन करवु नहीं

विचार करो के प्रत्यक्ष विरुद्ध बाबतमा पंडितो तर्क कर्या
वगर रहे खरा के ? पुराणोमा केटली पोल छे ते तो दयानन्द
सरस्वतीना मंडले (आर्यसमाजे) जगत्मा प्रसिद्ध करीने मुक
छे वेदोनी मान्यताने लईने थती हिंसानो अणगमो जैन अ
बौद्धोने तो प्रथमथीज थएलो जगजाहेर छे, ते सिवाय भागव
धर्मवाला, कबीरदास, तुकाराम, विगेरे अनेक महापुरुषोए प
वेदोथी थती हिंसानो अणगमो जाहेर करेलो छे तेमज दयानन्द
सरस्वतीजीने पण हिंसक श्रुतिओनी अरुचितो पूरेपुरी थएली ह
पण सत्य क्यां छे तेनु शोधन न करता केवल बापदादाना कुवा
पडीने डूबी मरवु कबूल राखी बधा वेदोनो अर्थ पोतानी रु
प्रमाणे फेरवी नूतन प्रकार करीने बताव्यो, तो ते आजकाल
अल्पज्ञ पुरुषोनो करेलो वेदोनो अर्थ सत्यतत्त्वोना जिज्ञासुओ

मान्य थाय खरो के ? तथा 'न हन्तव्यानि हेतुभिः' ए वाक्यथी तो हिंसाथी थतो अत्याचार तेमज ब्रह्मा विष्णु अने शिवजीना नामथी लखी मुकेला अनाचार अने परस्परविरुद्ध लखाएला असत्य विचारोनेज मनाववा कोशीस करेली होय एम प्रत्यक्षपणे सिद्ध थाय छे, एटलाज माटे कोई महात्मा कही गया छे के—

अस्ति वक्तव्यता काचित् तेनेद न विचार्यते ।
निर्दोष काञ्चन चेत् स्यात् परीक्षायां बिभेति कः ? ॥

भावार्थ—वेद पुराणादिकमा घणी गरबड थएली छे तेथीज विचार करवानी ना पाडी रह्या छे, ए पण एक जातनो हठज छे जेनु सोनु निर्दोष छे ते शु परीक्षा कराववाथी कदी डरे खरो के ? सत्य होय ते तो न्यायी पुरुषोना आगळ सत्यज प्रगट थाय उदाहरण तरीके अमोए आ चोपडीमा दाखल करेला जैनधर्मविषयक लेखोना लेखक्रमदाशयोज बस छे बीजा उदाहरणोनी जरूरज शी छे ? वदपुराणोमा लखेला बधाए सृष्टिना कर्त्ता साचाज छे तो अमारा करेला आ नव प्रश्नोना खुलाशा न्यायपूर्वक युक्तियुक्त कोइ प्रकट करशे तो घणा लोकोने विचार करवानी तक मळशे

१ अनादिना एकज परमात्माए आ जगत्नी रचना करी त्यारे तो जगत्नी आदि अने परमात्मानी अनादि थाय के नहीं?

२ परमात्मा अनादिनो छे तो ते पहेला केटला कालसुधी बेशी रह्या पछी रचना करवानी उपाधिमा पड्या हशे ?

३ आ पृथ्वी अने आकाश बनता पहेला परमात्मा पोते कया ठेकाणे रहेला हशे वारु ?

४ वळी कहो छो के– परमात्मा तो निरञ्जन निराकार छे, तो तेने पग, पेट, माथु होय खरु के ?

५ कहेशो न होय, तो पछी वेदनीज श्रुतिओमा परमात्माना पेट, पग अने माथाना क्रमथी नरक, मर्त्य अने स्वर्ग ए त्रण जगत्नी उत्पत्ति केम लखी हशे ?

६ अने ते त्रणे लोकनी उत्पत्तिनी श्रुतिओ झूठी लखी हशे के साची ?

७ जीवो अने परमाणुओ तो लोकोमा अनादि मनाय छे तो ते सृष्टिनी रचना पहेला हता के नहीं ?

८ कदाच कहेशो के जीवो अने परमाणुओ सृष्टिनी रचना पूर्वे हता तो पछी परमात्माए कई वस्तुनी रचना करी ?

९ जो जीवो अने परमाणुओ प्रथम न हता तो निरंजन निराकार परमात्मा आ प्रत्यक्ष देखाता जीवो अने परमाणुओ क्या स्थानमांथी लावीने आपणा प्रत्यक्षमां मुक्या हशे ? जो कहेशो के बनाव्या वगर कोई चीज बननी जोइ ?, हा, वर्षाऋतुमां करोडो चीजो थाय छे त्यां कयो ईश्वर बनाववा आवतो जोयो ? तथा पहेल्पेलो कोई बनावनार जोइए एम जो कहेशो तो परमात्मानो पण कोई बनावनार केम न जोइए ?

अमारा समजवा प्रमाणे आ सृष्टि अनादिकाळना प्रवाहथी चालती आवेली छे छतां जो कोई कर्त्ता मानवामां आवे तो ते कर्त्तांना सबबे असंख्य दूषणोनी गाठ उभी थाय छे ते घणुज अनिष्ट थाय छे, अने ते अनेक दूषणो बतावनारां अनेक पुस्तको जैनधर्मविजिओना तरफथी प्रगट थई गएला छे, तेथी आ विषयने वधारे न लंबावता मात्र वाचकोने विचार करवानी खातर आ नव प्रश्नोनो उल्लेख करी फॉर्मने पूर्ण करुं छुं सुज्ञेषु किं बहुना ।

जैनेतरदृष्टिए जैन.

द्वितीय भाग

यूरोपियन विद्वानो ना अभिप्रायो

डॉ. हर्मनजेकोबीनी जैनसूत्रोनी प्रस्तावना.

(प्रथम भाग.)

[अनुवादक-शाह अंबालाल चतुरभाई, बी ए]

'[1] × × × × × अत्यार सुधीनी आपणी सघळी चर्चा जैनोना पवित्रग्रंथोमांथी उपलब्ध थती परंपरागत कथाओनी प्रमाणिकता उपर ज चालेली छे परन्तु एक अतिशयविशाल-ज्ञानवाला अने कुशलविचारक विद्वाने ए प्रमाणिकताना सम-ग्रमाज शंका करेली छे ए विद्वान् ते मी बार्थ (Barth) छे

---

१ उपरना भागमां जैनोना अन्तिमतीर्थंकर श्री महावीर थया छे तेमनी उत्पत्तिनो सबन्ध बौद्धोथी भिन्न ठराववा प्रयत्न करेलो छे ते प्राय वसुदेव नरहर उपाध्यना लेखनी साथे मळता जेवा होवाथी छोडी दई मात्र जैनोना पवित्रग्रंथोनी कथानो पाछलो भाग अक्षरश अमोए लीधलो छे, माटे जेओने पूर्वनो भाग जोवानी इच्छा थाय तेमणे जैनसाहित्य-संशोधक त्रिमासिकना भाग १ नो अंक बीजो जोइ लेवो ....

ते पोताना Revue de ll' Histoire des Religions Vol III P 90 मा नातपुत्त नामनी एक ऐतिहासिक व्यक्तिनो स्वीकार करे छे खरो, परन्तु जैनोना पवित्रग्रन्थो, छेक ई० स० नी पाचमी सदीमा–एटले केए सप्रदायनी स्थापना थया पछी लगभग एक हजार जेटला वर्षो व्यतीत थया बाद, लखाएला होवाथी तेना आधारे कोई पण सबळ अनुमान करी शकवाना सबधमा ते मोटी शका धरावे छे जैनधर्मना सबधमा तेनो एवो अभिप्राय छे क ए सप्रदायना ते प्राचीन काळथी लई पुस्तको लखाता सुधीना समय सुधीना, स्वमवदित अने सतत एवा अस्तित्वनो–अर्थात् तेना खास खास सिद्धातो अने नोंधोनी निरतर परपरानो–हजी सुधी निर्णयात्मक रीते निकाल थयो नथी वली ते जणावे छे के ' घणी शदियो सुधी तो जैनो, तेमना जेवा बीजा अनेकसन्यासीवर्गो क जे फक्त अप्रसिद्ध अने अस्थिररूपे पोतानो जीवन गाळता हता तेओथी भिन्नरूपे ओळखायाज नहोता ' तेथी मि बार्थना अभिप्राय मुजब जैनोनी साम्प्रदायिकपरपराओ त मात्र बौद्धपरपराओना अनुकरणरूपे, तेमणे पोताना अस्पष्ट अने अनिश्चित स्मरणोमाथी उपजावी काढेली छे

मी बार्थेनो आ मत एवा अनुमान उपर स्थिर थएलो मालुम पडे छे के, जैनो पोतानु पवित्र ज्ञान एक पेढीथी बीजी पेढीने आपवामा अगाउ वडरकार रह्या हता, अने तेम रहेवामां कारण ए छे के, ते बधी शदीओ सुधी मात्र एक नानो अने अनुपयोगी सम्प्रदाय हतो मि बार्थनी आ दलीलमा हु काई प्रकारनु वजन जोई शकतो नथी हु अहीं ए प्रश्न पूछु छु के— जे धर्म पोताना थोडाक अनुयायिओ वडे एक मोटा प्रदेश उपर पथराएलो होय ते धर्म पोताना मौलिकसिद्धातो अने परपराओने वधारे सुरक्षित राखी शके छे, के जे धर्मने एक मोटा जनसमूहनी धार्मिक जरुरीआतो पूरी पाडवानी होय छे ते ? ए बेमानी कई बाबत वधारे सभवित छे ? जो के एकदरगीते आ प्रकारनी हेत्वाभासात्मक तर्कपद्धतिथी आवा प्रश्नो निर्णय थवो तो अशक्यज छे उपर्युक्त बे पक्षोना प्रथम पक्षमा याहुदी तथा पारसीओनु उदाहरण रजु करी शकाय छे अने बीजा पक्षमा रोमन कॅथोलिक धर्मनो दाखलो आपी शकाय छे परन्तु जैनो सबधी प्रस्तुत प्रश्नना वादविवादनो निर्णय करवामा आवी जातना सामान्य सिद्धातो उपर आधार राखवानी काई आवश्यकता नथी कारण के तेओने (जैनोने) पोताना सिद्धातोनु एटलु बधु स्पष्ट ज्ञान हतु के तेओए अगीज बनीवी बाबतमा मतभेद धरावनार

पुरुषोने पण निन्हवरूप जाहेर करी, पोताना श्रद्धाळुओना विशाळ समुदायमांथी तेमने जुदा करी दीधा हता आ कथननी सत्यताना प्रमाण तरीके डॉ ल्यूमने (Dr Leumonn) प्रकट करेली श्वेताम्बरसम्प्रदायनी सात निन्हवो विषेनी परंपरा छे तथा दिगम्बरो जे श्वेताम्बरोथी महावीरनिर्वाण पछी प्राय बीजी अथवा त्रीजी शताब्दिमा जुदा पड्या हता, तेओ कांई तेमना प्रतिस्पर्द्धिओ (श्वेताम्बरो) थी तात्त्विक सिद्धांतोमा मोटो मतभेद धरावता नथी छता पण आचारविषयक तेमना केटलाक भिन्न नियमोने लीधे, श्वेताम्बरोए तेमने पाखंडियोना नामे वगोव्या छे

आ सघळी हकीकतो उपरथी आ बाबत स्पष्ट रीते सिद्ध थाय छे के जैनागमो (नु हाल्नु स्वरूप) नक्की थया पहेलां पण जैनधर्म एवा अव्यवस्थित अथवा अनिर्दिष्ट स्वरूपमा विद्यमान न हतो, के जेथी, तेनाथी अन्यतभिन्न एवा अन्यधर्मो (दर्शनो)-ना सिद्धांतो द्वारा तेनु अमल स्वरूप परिवर्त्तित अगर कलुषित थयु हतु, एम माननाने आपणने कारण मळे परन्तु आथी विरुद्ध उपर्युक्त प्रमाणो एम तो सिद्ध करी आपे छे खरा के तेमनी सूक्ष्ममा सूक्ष्म मान्यता पण सुनिश्चित स्वरूपवाळी हती

---

१ See Indische Studien, XVI

जेवी रीते जैनोना धार्मिक सिद्धान्तोनी वातनो आ
ले सिद्ध थई शके छे तेवीज रीते तेमनी ऐतिहासिक-
परंपराविषयक वातनो पण सिद्ध थई शके तेवी छे
वंशपरम्परायी चालती आवती जे विविधगच्छोनी निम्ना-
रयुक्त गुर्वावलिओ मळी आवे छे तथा जैन आगमग्रंथोमा जे
स्थविरावलिओ उपलब्ध थाय छे ते स्पष्ट बतावी आपे छे के
जैनो पोताना धर्मनो इतिहास राखवामा केटलो बधो रस धरावता
हता हु एम काई चोक्कस नथी कहेतो के आवी गुर्वावलिओ
पाछळथी पण जोडी कढाती नथी के अपूर्ण पट्टावलिओने पूर्ण,
एटले हिंदुओना शब्दमा कहिये तो 'पकी' बनावी शकाती
नथी, कारण के दरेक सम्प्रदायने, पोतानो सम्प्रदाय एक प्रतिष्ठित
आप्तपुरुषथी प्रमाणीक रीते उतरी आवेलो छे, एम बताववा
खातर पोतानी गुरु परपराना नामो उपजावी काढवानी स्वाभा-
विक रीतेज जरूर पडे छे परन्तु कल्पसूत्रमा जे एक, स्थविरो,
गणो अने शाखाओनी विस्तृत नामावली आपेली छे तेने कल्पी
काढवामा जैनोने कोई पण प्रकारनु प्रयोजन होय तेम हु मानी
शकतो नथी कल्पसूत्रमा जेटली विगतो आपेली छे—तेटली पण

१ See Dr Klatt, Ind Ant. Vol XI

विगतोनु ज्ञान त्यारे पछीना जैनोने रह्यु न हतु तेम तेथी अधिक जाणवानो तओए क्यारे डोळ पण कर्यो न हतो गुरुपरपरानो नोंधयोग्य बधो व्यवहार चलाववा माटे कल्पसूत्रमा आपेली सक्षिप्त स्थविरावलि पर्याप्त हती तेम छता पण तेमा आवेली विस्तृत स्थविरावलि के जेमा पण केटलाक तो एकला नामोज जोवामा आवे छे–ते ए बाबत स्पष्ट रीते जणावे छे के जैनो पोताना प्राचीन धर्माचार्यो—स्थविरोनी यादगिरी राखवामा केटलो बधो रस धरावता हता ते स्थविरावलीमा आलेखेला युगो तथा बनावोनी यथार्थ माहिती तेना पछी थोडीकज सदीओमा नष्ट थई गई हती परन्तु मात्र आटलु सिद्ध करी बतावववापी के जैनो तेमना आगमोनु स्वरूप नक्की थया पहेला पण पोताना धर्म तथा सप्रदायने सतत चालु राखवा माटे, तेमज अन्यदर्शनीयसिद्धातोना समिश्रणयोगे उत्पन्न थती भ्रष्टताथी तेने बचावी सुरक्षित राखवा माटे योग्य गुणसपन्न हता, आपणे आ विषयमा कृतकार्य थई शकता नथी आपणे ए पण बतावी देवु जरूरनु छे के तेओमा जे जे बाबत करी शकवानु सामर्थ्य हतु त सघळु तेमणे सपूर्ण रीते कर्यु हतु आ चर्चा उपरथी आपणे स्वाभाविक रीतेज वर्तमान जैनसाहित्यना काळनी चर्चा उपर आवी जइए छीए आ

विषयमा जो आपणे आटलु सिद्ध करी शकीए के जैनसाहित्य अथवा तो छेवटे ते पैकी जे केटलाक सौथी प्राचीन ग्रथो छे, ते जैनपुस्तकारोहणना समयथी घणी सदीओ पहेला रचाएला हता तो ते द्वारा आपणे जैनोना अतिमतीर्थंकर अने प्राचीनमां प्राचीन ग्रथो ए बन्ने वचेना गाळान, जो क सर्वथा दूर नहीं करी शकीए तो पण घणे अशे अल्प करी आपवा समर्थ थई शकीशु सर्वसम्मत सप्रदायनी अनुसार जैनसिद्धात वलभिनी सभामा देवर्द्धिगणिना अध्यक्षपणा नीचे निश्चित करवामा आव्यो हतो आ बनाव वीरनिर्वाण पछी ९८० (अथवा ९९३) मा वर्षे एटले इ० स० ४५४ (अगर ४६७) मां[१] बन्यो हतो एम कल्पसूत्र [§ १४८] उपरथी जणाय छे सप्रदाय एवो छे के ज्यारे देवर्द्धिगणिए सिद्धातने नष्ट थई जवाना जोखममा जोयो त्यारे तमणे तेने पुस्तकाधिरूढ कराव्यो तेनी पहेला आचार्यो क्षुल्लकोने सिद्धात शिखवती वखते लिखितग्रथोनो बिल्कुल उपयोग करता न होता देवर्धिगणिना समय पछी ज लिखितपुस्तकोना उपयोग शरू थयो आ हकीकत तद्दन साची छे कारण

---

१ समकित न लागतु होवा छतां ए शक्य छ क सिद्धातनिर्णयनो समय था वर्ता ६० वष पछी एटले इ स ५१४ (अथवा ५२७) होवो जोइए जुओ कल्पसूत्र, उपोद्घात पृ १७

के प्राचीन समयमा पुस्तकोनो बिलकुल उपयोग थतो नहतो एम आपणने बीजी हकीकतो उपरथी पण जणाई आव छे ब्राह्मणो तो लिखितपुस्तक करता पोतानी स्मरणशक्ति उपरज विशेष आधार राखता हता अने निसन्देहरीते जैनोए तेमज बौद्धोए तेमनीज आ प्रथानु अनुकरण कर्यु हतु परन्तु अत्यारे जैनयतिओ पोताना शिष्योने शास्त्र शीखववी वखते लिखित पुस्तकोनो उपयोग अवश्य करे छे आ उपरथी आपणे मानवु पडे छे के शिक्षणपद्धतिमा थएलो आ फेरफार देवर्द्धिगणिने आभारी छे, एम बतावनारो वृद्धसंप्रदाय तद्दन साचो छे कारण के आ बनाव बहुज महत्वनो होवाथी भुली शकाय तेम नथी प्रत्येक आचार्यने अथवा तो छेवटे प्रत्येक उपाश्रयने आ पवित्र आगमोनी नकलो पूरी पाडवा माटे देवर्द्धिगणिने सिद्धांतना पुस्तकोनी खरेखर घणी मोटी संख्या तैयार करावबी पडी हशे हवे देवर्द्धिगणिए सिद्धांतने पुस्तकारूढ कराव्यो एवो जे लेखी संप्रदाय मळे छे तेनो भावार्थ प्राय उपर प्रमाणेनो ज होवो जोईए कारण के एतो भाग्येज मानी शकाय तेवु छे के तनी पहेला जैनसाधुओ जे काई कण्ठस्थ करता हशे तेने सर्वथा नज लखता होय ब्राह्मणो वेदनु अध्ययन करावबामां लिखित

पुस्तकोनो उपयोग करता नथी छता पण तेमनी पासे तेवा पुस्त-
को तो जरूर जोवामा आवे छे तेओ (ब्राह्मणो) आ पुस्त-
कोने खानगी उपयोग माटे एटले के गुरुनी स्मरणशक्तिने मदत
करवा माटे राखे छे मारू दृढ मानवु छे के जेनो पण आज पद्धतिने
अनुसरता हशे वरके तेओ (जेनो) ब्राह्मणोथी पण वधारे आ पद्धतिनु
अनुसरण करता हशे, केमके ब्राह्मणोनी माफक तेओनु एवु मानवु
तो हतु ज नही के लिखितपुस्तको अविश्वस्य छे तेओ तो
मात्र जे एक प्रचलित रिवाज हतो, के आगमनु ज्ञान मोखिक-
रीते ज एक पेढी द्वारा बीजी पढीने अपावु जोईए तेने लईने
जेन लिखितग्रन्थोनो विशेष उपयोग करवामा सकोचाता हता.
हु अहीं एम प्रतिपादन करवा इच्छतो नथी के जेनोना पवित्र
आगमो असल्थी ज छुटा छवाया पण आवी रीते पुस्तकोमां
लखेलाज हता अने एम न कहेवानु खास कारण बीजू काई
नहीं परन्तु बौद्धभिक्षुओ पासे लिखितपुस्तको न हता एम जे
कहेवाय छे तेज छे बौद्धभिक्षुओ पासे आवा पुस्तको नहता तेना
प्रमाण तरीके एवु कहेवामा आवे छे के तेमना सूत्रोमां, ज्यारे
प्रत्येक जगमवस्तुथी लईने नानामा नानी अने क्षुद्रमा क्षुद्र
एवी घरमा वापरवा लायक वासणो जेवी चीजोनो पण कोईने

कोई रीतिए उल्लेख थएलो अवश्य जडे छे ' त्यारे लिखितग्रन्थ-कोनो क्याए पण बिल्कुल उल्लेख थएलो जोवामा आवतो नथी आ कथन, मारा मानवा प्रमाणे, ज्यासुधी जैनयतिओ भ्रमणशील जीवन गुजारता हता त्यां सुधी तेमने पण लागु पडे तेवु छे परन्तु ज्यारथी तेओ पोताना तावाना अथवा पोताना माटे बनावेला उपाश्रयोमा रहेवा लाग्या त्यारथी तेओ पोताना हस्तलिखित पुस्तको पण अन्यारनी माफक राखवा लाग्या हता आ दृष्टिए जोता, देवर्द्धिगणिनो जैनआगमसाहित्य साथेनो सबध साधारण रीते जेम मनाय छे, तेनाथी कोई विलक्षण प्रकारनो होय तेम जणाय छे तेमणे वस्तुत तेमनी पहेला अस्तित्व धरावता हस्तलिखित ग्रन्थोने सिद्धातना आकारमा गोठवी दीधा हता अने तेम करती वखते जे जे सूत्रो—आगमोना हस्तलिखितग्रन्थो उपलब्ध थया नहोता ते सघळा तमणे विद्वान् आचार्योना मुखेथी लखी लीधा हता

वळी, आवी रीते धार्मिकशिक्षणपद्धतिमा दाखल थएला आ नवा फरफारने लीधे पुस्तको एक अत्यावश्यक साधनरूप

---

1 Sacred Books of the East, Vol XIII, Introduction P XXXIII

थई पडेला होवाथी प्रत्येक उपाश्रयने ए आगमग्रन्थोनी नकलो पूरी पाडवा माटे तेनी घणी नकलो करावबामा आवी हशे आ रीते जोता देवर्द्धिगणीनी सिद्धान्तनी आवृत्ति ते तेमनी पहेला अस्तित्व धरावता पवित्र सिद्धान्तग्रंथोनो लगभग प्राचीनज आकारमा निर्णीत करेलो एक नवो पाठ मात्र छे आ आवृत्तिकारे, संभव छे के, प्राचीन सिद्धातमा कोईक कोईक उमेरा कर्या हशे. परन्तु आटला उपरथी सपूर्ण सिद्धात नवो बनाववामा आव्यो छे एम तो खरे खर नज कही शकाय आ अन्तिमआवृत्तिमा निर्णीत थएला पाठनी पूर्वेनो सिद्धातपाठ पण केवळ यतिओनी स्मरणशक्तिना आधारे ज रखवामा आवता पाठ जेवो अव्यवस्थित नहोतो परंतु ते पाठ हस्तलिखितप्रतिओ साथे मेळवेलो हतो.

आटलु विवेचन कर्या बाद हवे आपणे जैनोना पवित्र आगमोनी रचनानो समयविषयक विचार करीए सपूर्ण आगमशास्त्र प्रथम तीर्थंकरनु ज प्ररूपेलु छे ए जातना जैनोना विचारनु तो निराकरण करवा खातरज हु अहीं सूचन करूछु सिद्धातना मुख्यग्रन्थोनो समय नक्की करवा माटे आपणे आना करता वधारे सारा प्रमाणो—पुरावाओ एकत्र करवा जोईए छूटक अने असबद्ध सत्रालापको गमे त्यारे आगमग्रन्थोमा दाखल थई गया होय] तथा

देवर्द्धिगणीए पण भले तेने पोतानी आवृत्तिमा स्वीकारी लीधा होयें पण तेटला उपरथी आपणे कोइ प्रकारनु मक्कम अनुमान करी शकीए नहीं हु म्लेन्छ अथवा अनार्य जातिओनी[1] जे यादिओ ए सूत्रोमा मळी आवे छे ते उपर वधारे वजन मुकी शक्तो नथी तेमज साते निन्हवो के जेमानो छेल्लो वीरनिर्वाण पछी ५८४ वर्षे थयो[2] हतो तेना उल्लेख उपरथी पण काई अनुमान करी शकाय नहीं आवा प्रकारनी विगतोना सबन्धमा जो एम मानवामा आवे के जे आचार्यो पोतानी शिष्यपरंपराने पेढी दरपेढीए लिखित या कथितरूपे सिद्धान्तपाठ सोंपता गया हता, तेओए ते (विगतो) ने सिद्धातनी टीका टिप्पणीरूपे अगर तो मूल मुद्दामा पण दाखल करी दीधी हती तो तेमा काई अस्वाभाविकता जेवु नथी परन्तु सिद्धान्तमा एक महत्त्ववाळी बाबत ए जणाय छे के तेमा कोई पण स्थळे ग्रीकलोकोना खगोळशास्त्रनी गन्ध सरखी

---

१ अनार्यजातिओमानो 'आरव' शब्द त वेवरना धारवा प्रमाणे कदाच 'आरब' वाचक बने, परंतु मारा मानवा प्रमाण ते शब्द तामिलो ' ना वाचक छे, कारण के तामिलोनी भाषाने द्रविडीयन लोको अरवमु कह छे

२ See Weber Indische Studien XVI, P 237.

जोवामा आवती नथी कारण के जैनज्योतिषशास्त्र ते, वास्तविकमां एक अर्थरहित अने अश्रद्धेय कल्पनामात्र छे तेथी आपणे एम अनुमान करी शकीए छीए छे के जैनज्योतिषशास्त्रकारोने ग्रीकजातिना खगोळशास्त्रनी सहेज पण माहिती होत तो तेवु अर्थबद्ध तेओ जरूर न रचत हिंदुस्थानमा ग्रीकनु आ शास्त्र ई स नी त्रीजी अगर चोथी शताब्दिमा दाखल थयुं हतु एम मनाय छे, आ उपरथी आपणे ए रहस्य काढी शकीए छीए के जैनोना पवित्र आगमो ते समयनी पहेला रचाया हता

जैन आगमोनी रचनाना समयनिर्णय माटे बीजु प्रमाण ते तेनी भाषाविषयक छे परन्तु, कमनसीबे हजी सुधी ए प्रश्नतु स्पष्ट निराकरण थयु नथी के जैनागमो जे भाषामा अत्यारे आपणने उपलब्ध थाय छे तेज तेनी मूळभाषा छे अर्थात् जे भाषामा सौथी प्रथम तेनी संकलना थई हती तेज भाषामां अत्यारे आपणने उपलब्ध थाय छे, के पाछळथी पढी दरपेढीए तें ते काळनी रूढ (प्रचलित) भाषानुसार तेमा उच्चारणपरिवर्तन थता थता छेक देवर्द्धिगणिना नवीन संस्करणवखतनी चालु भाषाना उच्चारण पर्यन्तनी भाषाथी मिश्रित थएल आजे मळे छे? - आ बे विकल्पोमानो मने तो बीजोज विकल्प स्वीकरणीय लागे-

छे कारण क ए आगमोनी प्राचीन भाषाने चालु भाषानी रूढिमा फेरववानो वहिवट ठेठ देवर्द्धिगणि सुधी चालु रह्यो हतो अने अन्ते देवर्द्धिगणीना संस्करणेज ते वहिवटनो अन्त आण्यो हतो, एम मानवाने आपणने कारणो मळे छे जैनप्राकृतभाषामा स्वरूपसगत वर्णविन्यासनो जे अभाव दृष्टिगोचर थाय छे तेनु कारण जे लोकभाषामा (Varnacular Language) ते पवित्र आगमो हमेशा उच्चाराई रह्या हता, ते भाषामा निरन्तर थतु रहेलु क्रमिक परिवर्त्तनज छे जैनसूत्रोनी सघळी प्रतिओमा एक शब्द एकज रीते लखेलो जोवामा आवतो नथी आ वर्णविन्यासविषयक विभिन्नताना मुख्य कारणोमानु एक कारण तो बे स्वरो वच्चे आवता असयुक्तव्यजननो प्रकृतिभाव (तदवस्थ राखवा रूप), लोप क मृदुकरण थवा रूप छे, अने बीजु कारण बे सयुक्तव्यजनोनी पूर्वेना ए अने ओने तदवस्थ एटले कायम राखवा रूप अथवा तेने क्रमथी इ अने उ ना रूपमा परिवर्तित करवा (लघूकरण) रूप छे, ए तो अशक्यज छे के एकज शब्दना एकज समयमा एकथी वधारे शुद्ध गणवा लायक उच्चारो होई शके उदाहरण तरीके—भूत, भूय, उदग, उदय अने उअय, लोभ, लोह, इत्यादि आपणे आ प्रकारनी

१ हु एम नथी कहतो के कोई पण शब्दना एक काळमा बे प्रयोज

जुदी जुदी लेखनपद्धतिओने ऐतिहासिक लेखनपद्धतिओ मानवी जोईए एटले के देवर्द्धिगणीवाळा सिद्धान्तसम्स्करणमा साहायभूत बनेली बधी हस्तलिखितप्रतिओमा जे जे भिन्न भिन्न लेखनपद्धतिओ मळी आवती हती ते बधी प्रमाणिक मानवामा आवी हती अने तेथी ज सघळी पद्धतिओने ए सूत्रनी नकलोमा सचवी राखवामां आवी हती आ विचार जो युक्तियुक्त जणातो होय तो आपणे सहुथी प्राचीन अने रूढिबहिष्कृतलेखनपद्धतिने आगमरचनाना आदिसमयनी अथवा तो तेना निकटसमयनी उच्चारसूचक मानी शकीए अने सहुथी अर्वाचीन लेखनशैलिने सिद्धान्तना अन्तिम-सम्स्करणना समयनी अगर तेनी नजीकना समयनी उच्चारदर्शक मानी शकिये वळी सहुथी प्राचीनरूपमा उपलब्ध थती जैन-

---

न होइ शक बन्ने रुपो थाड्रा घणाज शब्दो थया हशे परन्तु प्राय प्रत्यय शब्दना बन्ने त्रण त्रण रुपो एक साथे प्रचलित रहेवानी बाबतमा मने जरुर शका रहे छे

१ काइ कहीं एवी दलाल कया करे छे के आवी जाप एटले रूढि-बहिष्कृतलखपद्धतिना अस्तित्वनु कारण मात्र सस्कृतभाषानी असर छे परन्तु जैनोनु प्राकृतभाषानु ज्ञान हमेशा एटल बधु सगीन रह्यु हतु के एथी तमन पोताना आगमाने समजवा माटे सस्कृतनी सहायता लेवीज पडती नहोती के जथी तनी तेना उपर असर पडे, परन्तु आथी उल्टु

प्राकृतभाषाने, पाली तथा हाल मेतुबंध विगेरेनी (पाछला समयनी) प्राकृत साथ जो आपणे सरखावीशु तो आपणने स्पष्ट जणाशे के जैनप्राकृत ए पाछलनी प्राकृत करता पालीने वधारे मळती आवे छे आ उपरथी आपणे एवा निर्णय उपर आवी शकीए छीए के कालगणनानी दृष्टिए पण जैनोना आगमो त्यार पछीना समयमा थएला प्राकृतग्रथकारोना ग्रथो करता दक्षिणना बौद्धसूत्रो [ना रचनासमय] साथे वधारे समीपता धरावे छे

परन्तु आपणे जैन आगमोनी रचनाना समयनी मर्यादा, तेमा प्रयोजाएला छदोनी मददथी, आथी पण वधारे निश्चित रीते आंकी शकीए तेम छीए हु आचाराग अने सूत्रकृतागसूत्रना प्रथम-स्कधोने सिद्धातना सहुथी प्राचीन भाग तरीके मानु छु अने मारा आ अनुमानना प्रमाण तरीके हु आ बे ग्रन्थोनी (स्कन्धोनी) शैली बतावीश सूत्रकृतागसूत्रनु आखु प्रथम अध्ययन, वैतालीयवृत्तमा रचाएलु छे, आ वृत्त धम्मपद आदि दक्षिणना अन्य बौद्ध ग्रथोमा

जैनोना सस्कृतप्रधानी प्रतिओमा प्राकृतशब्दो जेना रचेला घणा शब्दो मळी आवे छे उपर प्रमाणे मानता पण केटलीक जोडणीओ तो एवी मळी आवे छे के जने सस्कृतीकरणनी दृष्टिए पण समजावी शकाय तेम नथी च त दारयन बदल मळतु दारा एवु रूप स्वदए आ शब्दनु सस्कृत-प्रतिरूप ' दारक ' थाय छे परन्तु ' दारग ' एवु थतु नथी

पण वपराएलो जोवामा आवे छे परन्तु पालीसूत्रोना पद्योमा प्रयो-
जाएलो वैतालीयवृत्त त सूत्रकृतागसूत्रना पद्योमा मळी आवना
वैतालीयवृत्तनी दृष्टिए जोता, वृत्त ना विकासक्रमना प्राचीन स्वरू-
पनो द्योतक छे आ बाबतमां हु अहीं वधारे न लखता थोडा ज
समयमा जर्मन ओरिअन्टल सोसाइटीना जर्नलमा 'वेदनी पछीना
काळना छन्दो' ('Post Vedic Metres') ए मथाळा नीचे
प्रकट थनारा मारा लेखमा विस्तृतरीते चर्चवा इच्छु छु सस्कृत-
साहित्यना सामान्य वैतालीय (वृत्तना) श्लोको, के जेमाना
केटलाक ललितविस्तरामा पण मळी आवे छे, तनी साथे सुका
बलो करी जोता, सूत्रकृतागना वैतालीयवृत्त तथी वधारे
प्राचीन रूपनो जणाय छे वळी ए बाबत पण अहीं लक्ष्यमा लेवा
लायक छे के प्राचीनपालीसाहित्यमा आर्यावृत्तमा गुथेला पद्यो
मळी आवता नथी धम्मपदमा तो ते सर्वथा नवीन तेम अन्य
बौद्धग्रन्थोमां पण तेवां पद्यो मारा जोवामा आव्या नथी परन्तु
आचारांग अने सूत्रकृताग सूत्रोमा तो एक एक सपूर्ण अध्ययन
आर्यावृत्तमा लखेलु मळी आवे छे आ आर्यावृत्त, सामान्य
[रीते ओळखाता] आर्यावृत्तथी स्पष्ट रीते प्राचीन तथा तेनो
जनकस्वरूप देखाय छे सामान्यआर्यावृत्त तो, सिद्धातना वधारे
अर्वाचीनभागोमा तथा प्राकृत अने सस्कृत भाषाना ब्राह्मण-

ग्रन्थोमां अने ललितविस्तरादि जेवा उत्तरना बौद्धग्रन्थोमा पण नजरे पडे छे प्राचीनजैनग्रन्थोमां प्रयोजाएलो त्रिष्टुम् छद पण पालीग्रन्थोमां मळी आवता ते छद करता अर्वाचीनरूपनो अने ललितविस्तरामाना करता प्राचीनरूपनो छे अन्ते, ललितविस्तरादि ग्रन्थोमां जोवामां आवता आ सिवायना बीजा अनेकप्रकारना कृत्रिमवृत्तो—जेमानो एक पण वृत्त जैनसिद्धान्तमां जडी आवतो नथी ते उपरथी एम सिद्ध थतु होय तेम जणाय छे के आ प्रकारना अर्वाचीनग्रन्थोनी रचनाना समयपूर्वे जैनोनी साहित्यविषयक अभिरुचि निश्चित थएली हती आ सघळी बाबतो उपरथी आपणे एवो निर्णय करी शकीए जीए के, जैनोना सहुथी प्राचीन साहित्यनी समयमर्यादा पालीसाहित्य अने ललितविस्तरा ए उभयना रचनाकाळनी वच्चे निश्चित थाय छे पालीपिटकोनु पुस्तकाधिरोहण (अर्थात् पुस्तकरूप लखाण) वट्टगामणि जेणे ई स पूर्वे ८८ वर्षे पोतानु राज्यशासन शरु कर्यु हतु तेना समयमां थयु हतु जो क आ समयथी केटलीक सदीओ पूर्वे पण ते पिटको अस्तित्व तो धरावता हताज आ विषयनी चर्चा करता छेवटे प्रो मेक्समूलरे नीचे प्रमाणेना विचारो जणाव्या छे ' तेटला माटे, मारा विचार प्रमाणे, अत्यारे तो आपणे बौद्धसूत्रोना अर्वाचीनमा अर्वाचीन रचना-समय तरीके ई स

पूर्वे ३७७ मा वर्षने निर्णीत करी, संतोष मानवो जोईए–के जे समये द्वितीय संगति मळी हती[1] ' त्यार बाद पण ए पालीसूत्रोमां उमेरा तथा फेरफारो थया होय ए असंभवित नथी परन्तु आपणी प्रस्तुत दलील धम्मपदना कोई एकाद फकरा के भागने आधारे उभी थएली न होई, तेमा तथा अन्य पालीग्रन्थोमा मळी आवता विविध छन्दो उपरथी तारवी कहाडता छन्द शास्त्रना नियमोना पाया उपर स्थापित करवामा आवेली छे तेथी ए ग्रन्थोमा दाखल थएला उमेरा या फेरफारोथी अमारा ए निर्णयने–के समस्तजैनसिद्धांतसाहित्य ई स पूर्वे चोथी शताब्दि बाद रचाएलुं छे, तेने कोई पण प्रकारनी हानि पहोंची शकती नथी

आपणे उपर जोई गया के जैनसिद्धांतनो सौथी प्राचीन विभाग ललितविस्तरानी गाथाओथी अधिक जूनो छे आ ग्रंथ (ललितविस्तरा) ना विषयमा एवु कहेवाय छे के तेनो ई स ६९ मा चीनीभाषामा अनुवाद थयो हतो आ उपरथी वर्तमान जैनसाहित्यनी उत्पत्तिनो समय ई स नी शरुआत पहेला मानवो जोईए वळी दक्षिण अने उत्तरना पद्यात्मक बौद्ध-

१ Sacred Books of the East, Vol X, P. XXXII

ग्रन्थोनी ढब अने भाषाशैली विषयक विशिष्टताओना प्राचीनतम पद्यात्मक जैनसिद्धांतोमा मळी आवता अल्प या अधिकांश साम्यद्वारा, आपणे जो आ बे सीमाओ वच्चे भावला प्रस्तुत विवादास्पद समयना कालविषयक अंतरनो विचार करीए तो जैनसाहित्यनी शरुआतनो समय उत्तरना बौद्धसाहित्यना समय करता पालीसाहित्यना समयनी अधिक समीप ठरे छे

वळी आ प्रकारना अनुमानने श्वेताम्बरसंप्रदायनी एक परंपरागत कथाद्वारा समर्थन पण मळे छे परंपरा एवी छे के जे वखते भद्रबाहु युगप्रधान हता ते वखते बार वर्षनो एक दीर्घ दुष्काळ पड्यो हतो ते दुष्काळना अन्ते पाटलीपुत्रमा संघ भेगो थयो हतो अने तेणे सघळा अंगो एकत्र कर्यां हता

आ भद्रबाहुना अवसाननी तारीख श्वेताम्बरोना कथन प्रमाणे वीर पछी १७० वर्षे छे, अने दिगम्बरोना कथन प्रमाणे ते १६२ वर्षे छे आ उपरथी तओ चंद्रगुप्त, के जे श्वेताम्बरोना उल्लेखानुसार वी नि पछी १५५ मा वर्षे गादीए आव्यो हतो, तेना समयमा थया हता प्रो मेक्समूलरे चंद्रगुप्तनो समय ई स

---

१ परिशिष्ट ९७५

पूर्वे ३१९–२९१ जणावेलो छे, तथा वस्टरगार्ड (Westergaard) अने केर्न (Kern) वधारे संभवित रीते ते समय ई स पूर्वे ३२० जणावे छे आ बन्ने वच्चे जे अल्प तफावत छे ते महत्वनो नथी लगभग आ हिसाबे जैनसिद्धान्तनो रचनासमय ई स पूर्वे चोथी सदीना अन्तमा अगर तो त्रीजी शतीनी शरुआतमा आवे छे साथे साथे ए पण लक्ष्यमा राखवानु छे, के उपरोक्त संप्रदाय–परपरानो भावार्थ ए छे के पाटलिपुत्रना संघे भद्रबाहुनी साहाय्य सिवायज अगिआर अगो एकठा कर्या हता. भद्रबाहुने दिगम्बरो अने श्वेताम्बरो बन्ने सरखी रीते पोताना आचार्य माने छे, तेम छता श्वेताम्बरो पोताना स्थविरोनी यादिने भद्रबाहुना नामथी आगळ नही चलावता, तेमना समकालीन स्थविर संभूतिविजयना नामथी आगळ लावे छे ए उपरथी एम फलित थाय छे के पाटलिपुत्रना संघे एकत्र करेला अगो मात्र श्वेताम्बरोनाज सिद्धांतो मनाया हशे पण आखी जैनसमाजना नही आवी वस्तुस्थिति होवाथी, आपणे सिद्धातरचनाना काळने जो युगप्रधान श्रीस्थूरभद्रना समयमा एटले ई स पूर्वे त्रीजी शताब्दिना प्रथमभागमा स्थिर करीए तो ते खोटु नहीं गणाय

[1] Geschiedenis van het Buddhisme in Indie, II, p 266 note

आपणी उपरोक्त तपासनु परिणाम जो प्रमाणिकताने पात्र बनतु होय,--अने ते बनवुज जोईए कारण के तेना बाधक प्रमाणोनो अभाव छे--तो वर्त्तमान जैनसाहित्यनी उत्पत्तिनो समय ई स पूर्वे लगभग ३०० वर्ष पहेला अथवा ए धर्मनी उत्पत्ति पछी लगभग बे शताब्दी पहेला मूकी शकाय नहीं परन्तु आ उपरथी एम तो खास कांई मानी लेवानी जरूर नथीज के जैनो पासे पोताना अन्तिमतीर्थंकर अने सिद्धांतरचनाना आ समय बचेना अन्तराळमा, एक अनिश्चित अने असकलित धार्मिक तथा पौराणिक परंपरा उपरांत खास आधार राखवा योग्य वधारे सुदृढ धर्मसाहित्य हतुज नहीं कारण के एम जो मानवामा आवे तो पछी जैनपरंपरानी विश्वसनीयताना विषयमा जे विरोधदर्शक प्रमाणो मी बार्थे रजु करेला छे ते वास्तविकमा पायाविनाना छे एम कही शकाय नही

तथापि एक बाबत अहीं ध्यानमा लेवा लायक छे, अने ते ए छे के श्वेताम्बरो अने दिगम्बरो ए बन्नेनु एम कहेवु छे के अंगो सिवाय पहेलाना कालमा तेनाथी पण वधारे प्राचीन एवा चौद पूर्वो हता अने ते पूर्वोनु ज्ञान क्रमथी नष्ट थतु थतु अंते सर्वथा नष्ट थई गयु हतु चौद पूर्वोना विषयमा श्वेताम्बरोनी मान्यता आ

प्रमाणे छे– चौद पूर्वो ए दृष्टिवादनामना बारमा अगमा समाएला हता अने ते महावीरनिर्वाण पछी १००० वर्ष व्यतीत थया पहेला नष्ट थया हता जो के आ कथन प्रमाणे चौद पूर्वो तो सर्वथा नष्ट थई गया छे तोपण दृष्टिवाद अने तेमा अन्तर्गत थएला चौद पूर्वोना विषयोनी विस्तृतसूचि अद्यावधि समवायागनामना चोथा अगमा तथा नन्दीसूत्रमा आपेली जोवामा आवे छे [1] आ दृष्टिवादमा आवला पूर्वो ते खास मल पूर्वो ज हता क जेम हु मानु छु तेना साररूप हता तेनो आपणे निश्चय करी शकता ,नथी गमे तेम हो परन्तु तेमा समाएला विषयोना सबधमा एक घणी विस्तृतपरपरा तो अवश्य जोवामा आवे छे खरेखर आपणे कोई पण नष्ट थई गएला एवा अतिप्राचीन ग्रन्थ या ग्रन्थसमूहना विषयमा मळी आवती परपराने साची मानी लेवामा घणीज सावधानी राखवानी जरूर छे कारणके आवा प्रकारनी प्राचीन परपरा, घणीक वखने केटलाक ग्रन्थकारोद्वारा पोताना सिद्धातोनी प्रमाणीकताना पूरावा रूपे कल्पी काढवामा आवी होय छे परन्तु प्रस्तुत बाबतमा, पूर्वोना विषयमा मळी आवती आटली बधी सामान्य अने प्राचीन परपरानी सत्यताना विषयमा शका करवाने आप

---

[1] See Weber, Indische Studien, XVI p 341.

णने कोई कारण जणातु नथी कारण के अंगोनी प्रमाणिकता ते काई पूर्वोने लइन मानवामा आवती नथी अगो तो जगतना निर्माणना समकालीन (एटले अनादीज) मनाय छे तेथी जो पूर्वो सबधी आ परपराने मात्र एक छूटलेख रूपेज मानीए तो तेनो काई पण अर्थ थई शके नहीं परन्तु तेन जो सत्यरूपे मानी लईए तो जैनसाहित्यना विकासविषयक आपणा विचारो साथे ते बराबर बध बेसती आवी जाय छे ' पूर्व ' ए नामज ए वातनी पूरेपूरी साक्षी आपे छे के तेनु स्थान पाछळथी बीजा एक नवा सिद्धाते लीधु हतु अर्थात् पूर्वनो अर्थ पहेलानु एवो थाय छे[१] अने आ दृष्टिए ज्यारे आपणे विचारीए छीए त्यारे नि सदेहरीते प्रतीत थाय छे के जे समये पाटलीपुत्रना सघ अगसाहित्य एकत्र कर्यु हतु, तेज समयथी पूर्वोनु ज्ञान व्युच्छिन्न थतु चाल्यु हतु, एवी जे हकीकत कहेवाय छे ते तद्दन वास्तविक छे उदाहरण तरीके भद्रबाहु पछी चौदमाथी दशज पूर्वोनु ज्ञान अव-

१ ' पूर्व ' शब्दनो अर्थ जैनाचार्योए नीचे मुजब समजावेलो छे—तीर्थकरे पोतन प्रथम पोताना गणधरनाम प्रसिद्ध शिष्योने पूर्वोनु ज्ञान आप्यु हतु, त्यार पछी गणधरोए अगोनी रचना करी आ कथा, पहेलाज तीर्थकर अगो 'रचेला' छे एवा आग्रह साथ जन्मेले अर्थ एकदम घटावातु नथी तटस्थ अर्थ ते खरेखर सत्यगर्भित लेखावा योग्य छे

शिष्ट रह्यु हतु एवु जे कथन छे ते आपी शकाय छे आ उपरथी खात्री थशे के चौदपूर्वविषयक प्रचलितपरपरानो अर्थ जे एवो खुलासो करेलो छे के पूर्वो ते मौथी प्राचीन सिद्धातग्रन्थो हता, अने तेना पछी तेनु स्थान एक नवा सिद्धाते लीधु हतु, ते युक्तिसगत छे परन्तु आटलो खुलासो आप्या बाद आ प्रश्न उभो थाय छे के–आवी रीते प्राचीनसिद्धातनो त्याग करवामा तथा नवा सिद्धान्तनु निरूपण करवामा शु प्रयोजन उपस्थित थयु हशे ? आ विषयमा मात्र कल्पना शिवाय अन्य कोई गतिनथी अने तदनुसार मारो स्वतत्र अभिप्राय आ प्रमाणे छे– आपणे जाणीए छीए क दृष्टिवाद नामना बारमा अगमा चौद पूर्वो आवेला हता तथा ते पूर्वोमा मुख्यत्वे करीने दृष्टिओनु एटले जैन अने जैनेतर दर्शनोना तात्त्विकविचारो–अभिप्रायोनु वर्णन करेलु हतु आ उपरथी आपणे एम कल्पी शकीए छीए के तेमा महावीर अने तेमना प्रतिस्पर्द्धिधर्मसस्थापकोनी वच्चे थएला वादोनु वर्णन आवेलु हशे मारा आ अनुमानना समर्थनमा प्रत्येक पूर्वना नामना अन्त जे 'प्रवाद' ए शब्द मुकवामा आव्यो छे ते आपी शकाय छे आ उपरात ए पण एक वात ध्यानमा राखवानी छे, क महावीर कोई एक नवा धर्मना सस्थापक न हता, परन्तु जेम मे सिद्ध करेलु छे, तेओ एक प्राचीनधर्मना सुधारक मात्र ज

हता तथी पण ए घणुन समवित छे के महावीरने पोताना प्रतिपक्षिओना अभिप्रायोनु मजबुत रीते खडन करवु पडयु हशे, अने जाते स्वीकारेला अगर सुधारेला एवा पोताना सिद्धातोनु घणुन समर्थन करवु पटयु हशे आम कहेवानु कारण ए छे के प्रत्येक धर्मसस्थापकने यथार्थमा पोताना नवा सिद्धातोनु प्रतिपादन करवा पूरतो ज प्रयत्न करवानी आवश्यकता रह छे तने एक सुधारकना जेटलो प्रवादी बनी जवाना जोखमने उपाडवानी आवश्यकता रहती नथी हवे वखत जतां ज्यारे महावीरना ते प्रतिस्पर्धिओ आ जगतमाथी अदृश्य थई गया हता, तथा तेओद्वारा स्थापित थएला सप्रदायो पण नामशेष थई गया हता त्यारे महावीरना ए प्रवादो, के जे तेमना गणधरोए स्मरणमा राख्या हता तथा तेओद्वारा पाछळनी शिष्यपरपराने पण जे सोंपवामा आव्या हता, ते पाछळना लोकोमा महत्ववाळा न मनाया होय ए स्वाभाविक छ ए कोण कही शके एम छे क जे एक जमानामा आ प्रकारना दार्शनिकोना तत्त्वज्ञानविषयक विविध प्रवादो अन कलहो व्यावहारिक उपयोगितावाळा जणाया होय तेज प्रवादो अने कलहो, सर्वथा परिवर्त्तित थएला एवा अन्यजमानामा पण तेवा ज उपयोगी सिद्धातो तरीके मनाई शके ? आज विचारानुसार नवा जमानाना जैनसमाजने पोतानी सामयिकपरिस्थितिने अनुकूल आवे तेवा एक नवा

सिद्धातनी जरूर जणाई हशे अने तेने परिणामे, मारु मानवु छे के, नवा सिद्धातनी रचना अने जूना सिद्धातनी (पूर्वोना ज्ञाननी) उपेक्षा थवा पामी हशे

प्रो वेबरे दृष्टिवाद अगने नष्ट थवामा एवु कारण जणावे छे के श्वेताम्बरसमाज ज्यारे एक समये एवी अवस्थाए आवी पहोंच्यो हतो क जे वखते तेने पोताना (प्रचलित) विचारो अने ते ग्रन्थमा (दृष्टिवादमा) आलेखित विचारोनी वच्चे अत्यत अनुपक्षणीय अतर स्पष्ट देखावा लाग्यु, त्यारे ए चौद पूर्वोवाळु दृष्टिवाद अग उपेक्षाने पात्र थयु हतु परन्तु प्रो वेबरनी आ कल्पनानी विरुद्ध श्वेताम्बरोनी माफक दिगम्बरो पण पोताना पूर्वो अने ते उपरात अगो सुद्धाने व्युच्छिन्न थएलां जणावता होवाथी, हु तेमना मतने मळतो थई शकतो नथी तेमज निर्वाणनी तुरतज पछीनी बे शताब्दीमा जैनसमाजे एटली बधी झडपथी प्रगति करी लीधी होय के जेथी ते समाजना बन्ने मुख्य सप्रदायोने पोताना पूर्वसिद्धातनो त्याग करवा जेटली आवश्यकता जणाई होय, एम पण मानी बेसवु तद्दन असमवित लागे छे, बीजी ए पण बाबत लक्षमा राखवा योग्य छे, के जैनधर्ममां

---

१ Indische Studien, XVI p 248.

बे सप्रदायो थया पछी तेना तत्त्वज्ञानमा बिल्कुल फरफार थयो नहोतो—अर्थात् ते तद्दन स्थिरज रह्यु हतु आनु प्रमाण मात्र एज छे के आ बन्ने सप्रदायोना तत्त्वज्ञानमा कोइ विशेष उल्लेख योग्य भेद नजरे पडतो नथी आचारशास्त्रना विषयमा अलबत आ बन्ने सप्रदायोमा केटलाक भिन्न भिन्न विचारो जोवामा आवे छे, परतु अत्यारे पण ज्यारे श्वेताम्बरोमा लाबा समयथी, तेमना वर्तमानसिद्धातसमूहमा विहित थएला घणाक आचारोनु पालन बध थएलु होवा छता पण तेओ तेना तरफ उपेक्षा धरावता नथी त्यारे तेवाज कारणने लईने ते वखते अस्तित्व भोगवता एवा तेमना पूर्वात्मकसिद्धातसमूहना विषयमा श्वेताम्बरोए तेटला बधा आवशमा आवी जई पोताना पूर्वसाहित्यनो सर्वथा त्याग सुधा करी नाख्यो हतो एम मानवु युक्तिसगत जणातु नथी आ उपरात नवासिद्धातनो जे समय आपणे उपर निर्णीत कर्यो छे, ते समय पछी पण लाबा वखत सुधी पूर्वो विद्यमान हता एम मानवामा आवे छे परतु आखरे ज्यारे पूर्वोना प्रवादमय साहित्य करता नवा सिद्धान्त द्वारा जैनतत्त्वो वधारे स्पष्टरीते प्रकाशित थता देखावा लाग्या अने वधारे व्यवस्थासर लोको समक्ष मूकावा लाग्या त्यारे पूर्वो स्वाभाविक रीतेज, नहीं के तेमनी बुद्धिपूर्वक कराएली उपेक्षाने लीधे अदृष्ट थया हता

आपणी प्रस्तुत चर्चा जे आ स्थले समाप्त थाय छे ते उप-रथी हु धारु छु के आटली बाबतो प्रकट रीते सिद्ध थएली छे— जैनधर्मनी उत्क्राति (प्रगति कोई पण समये कोई पण) अत्यत असाधारण एवा बनावोथी जबरदस्त अटकाव पामेली नथी बीजु ए के आपणे आ उत्क्रातिनी शरुआतनी अवस्था उपरात तेनी सघळी विविध अवस्थाओनो पत्तो मेळवी शकीए छीए, अने त्रीजु ए क जैनधर्म ए निर्विवादरीते स्वतत्र मनाता एवा कोई पण धर्मनी माफक स्वतत्ररीते उत्पन्न थएलो छे—परन्तु कोई अन्यधर्म अने खास करीने बौद्धधर्मनी शाखारूपे बिलकुल प्रवर्तलो नथी आ विषयनी विशेष विगतोना सशोधननु कार्य भावि शोधखोळ उपर निर्भर छे तेम छता मने आशा छे, के हु जैनधर्मनी स्वतत्रताना सबधमा तथा तेना पवित्रग्रन्थो (आगमो) ने, ते धर्मना प्राचीन इतिहासने प्रकट करवामा केटलाक लेखी साधनोरूप स्वीकारवाना विषयमा, अत्यार सुधी जे केटलाक विद्वानोना मनमा अमुक सन्देहो स्थान पामी रह्या छे, तेने दूर करवा सफळ थयो छु

(द्वितीय भाग)

जैनसूत्रोना मारा भाषातरना प्रथम भागने प्रकट थए दश वर्ष थया ते दरम्यान केटलाक उत्तमविद्वानोद्वारा जैनधर्म अने तेना इतिहास विषयक आपणा ज्ञानमा घणो अने महत्वनो वधारो थयो छे हिंदुस्थानना विद्वानोए संस्कृत अने गुजरातीमा लखेली सारी टीकाओ साथे सूत्रग्रन्थोनी साधारण आवृतिओ बहार पाडी छे प्रो ल्यूमर्न[1] अने प्रो होर्नले[2] आ सूत्रग्रथोमाना बे सूत्रोनी गुण–दोषना विवेचनवाली आवृत्तिओ पण प्रकट करी छे, अने तेमाए प्रो होर्नले तो पोतानी आवृत्ति साथे मूळनु काळजीपूर्वक करेलु भाषातर अने पुरता उदाहरणो पण आप्या छे प्रो वेबरे पोते तैयार करेला वर्लिनना हस्तलेखोना विस्तृत

---

१ दम् औपपातिक सूत्र –Abhandlungen fur die kunde des Morgenlondes नामनी ग्रन्थमाला पुस्तक ८ दशवैकालिक सूत्र अने निर्युक्ति, जर्नल आफ धी ओरिएन्टल सोसायटी पु ४५

२ उवासगदसाओ (बिब्लिओथिका इन्डिका) भाग १ मूळ अने टीका, कलकत्ता १८९०, भाग २ इग्रेजी भाषान्तर, १८८८.

सुचिपत्रमाँ संपूर्ण जैनसाहित्यनु साधारण अवलोकन कर्युं छे तेमज तेमणे जैनसूत्रो उपर एक अतिविद्वत्तापूर्ण मोटो निबंध पण प्रकट कर्यो छे[४] प्रो ल्युमने वळी जैनवाङ्मय अने शास्त्रना विकाशनु सारु अध्ययन कर्युं छे, तथा केटलीक जैनकथाओ अने तेना ब्राह्मण अने बौद्धकथाओ साथेना सबन्धनी तपासणी पण करी छे[५] श्वेताम्बरसंप्रदायना जुना इतिहासनी माहिती आपनारो एक महत्वनो ग्रन्थ मैं पण संपादित कर्यो छे[६], तथा तेमना केटलाक गच्छोनो इतिहास होर्नेल अने क्लाटद्वारा जाहिरमा आव्यो छे आमानो छेल्लो विद्वान् (क्लाट) जे अत्यारे आपणी वच्चे मौजुद नथी, तेणे सघळा जैनलेखको अने ऐतिहासिक

३ बर्लिन १८८८ अने १८९२

४ Indische Studien पु १६, पृ २११ आदि इ ए मा अनुवाद तथा जुदा पुस्तकरूप, मुंबई १८९३

५ Actes du VI Congres International des Orientalistes, section Arienne पृ ४५९ तथा Wienerzeitschrift fur die Kunde des Morgenlandes पु ५ अने ६, वळी जर्नल आफ धी जर्मन ओरिएन्टल सोसायटी पु ४८

६ हेमचन्द्राचार्यरचित परिशिष्टपर्व, कलकत्ता

ष्ठल्योनो एक जीवनचरित्रात्मक महान् नामकोप (Onomosticon) तैयार कर्या छ अने जेना कत्लाक नमुना प्रकट पण थया छे होफ्रेट बुल्हरे सर्वविद्याविशारद एवा प्रसिद्धविद्वान् हेमचंद्रनु विस्तृत जीवनचरित्र लख्यु छे' वली तेमणे घणाक जुना शिलालेखोना अर्थो पण प्रसिद्ध कर्या छे डॉ फुहररे मथुरामाथी खोदी काढेला कोतरकामोनु विवरन कर्यु छे' अने मि लेवीस राइसे श्रवण बेल्गोल्माना घणाक महत्वना शिलालेखो बहार पाड्या छे ' एम् ए बार्थे जैनधर्मविषयक आपणा ज्ञाननी समालोचना करी छे ' बुल्हरे पण एक नानो निबन्ध लख्यो तेवी

---

७ Denkschriften der philos-histor Classe der Kaiserl Akademie der Weissens Chaften, Vol XXXVII, p 171 ff

८ Wiener Zeitschrift fur die Kunde des Morgenlandes, Vols II and III Epigraphia Indica, Vols I and II

९ बेंगलोर १८८९

१० The Religions of India Bulletin des Religions de l'Iande, 1889-94

आलोचना प्रकट करी छे " अने डॅाक्टर भाडारकरे संपूर्ण जैन-धर्मनी एक महत्वनी अने घणी उपयोगी रूपरेखा आलेखी प्रसिद्धिमा मुकी छे " आ रीते, आपणा जैनधर्मविषयक ज्ञानमा थएला वधाराओए (जेमाना मात्र खास नोंधवा लायक ग्रन्थोनो ज मे अहीं उल्लेख कर्यो छे) आ आखा विषय उपर एटलु बधु अजवाळु पाड्यु छ के जेथी हव मात्र कल्पनाने आ विषयमा घणोज थोडो अवकाश रहेशे अने ऐतिहासिक तेमज भाषा-विज्ञानात्मक सारी पद्धति, ते साहित्यना सघळा भागोने लागु पाडी शकाशे, तेम छता हजी केटलाक मुख्य प्रश्नोना खुलासा करवा बाकी रह्या छे, तथा जे निराकरणो आ अगाउ थई गया छे त हजी बधा विद्वानोने मान्य थया नथी, तेथी आ सुअवसरनो लाभ लई आनन्दपूर्वक हु अहीं केटलाक विवादग्रस्त मुद्दाओनु स्पष्टीकरण करवा इच्छु छु आ मुद्दाओना खुलासाओ माटे आज पुस्तकमा भाषांतरित थएला सूत्रोमाथी घणी किंमती सहायता मळी शके तेम छे

११ Uber die Indische Secte der Jaina, Wien 1881.

१२ रीपोर्ट सन १८८३–८४

ए बावत तो हव सर्वसम्मत थई चुकी छे के नातपुत्त (ज्ञातपुत्र) जे साधारण रीते महावीर अथवा वद्धमानना नाम ओळखाय छे ते बुद्धना समकालीन हता निगठो (निग्रथो)[१३] जे हाल्मा जैन अथवा आर्हतना नामथी वधारे प्रसिद्ध छे, तेओ ज्यारे बौद्ध धर्म स्थपाई रह्यो हतो त्यारे एक महत्वशाली सम्प्रदायनरीके क्यारनाए प्रसिद्ध थइ चूक्या हता परतु हजी ए प्रश्ननु निराकरण थवु बाकी रह्यु छे के– ए प्राचीननिग्रथोनो धर्म, ते खास करीने वर्त्तमान जैनोना आगमो अने बीजा ग्रन्थोमा ज वर्णवेलो छे तेज हतो, के सिद्धातो पुस्तकारूढ थया त्या सुधीना समयमा तणो रूपातरित थइ गयो हतो !

आ प्रश्ननु निराकरण करवा माटे, अत्यार सुधीमा प्रकट थएला बधा बौद्ध ग्रन्थोमा, जेमने आपणे सौथी जुना समजीए छीए तेमाथी जैन निगन्ठो, तेमना सिद्धान्तो अने तेमना धार्मिक

---

१३ निगट ए स्पष्टरूपे मूळरूपज होय एम जणाय छे कारण के अशोकना शिलालेखोमा पालीमा अने वेदलीय वगेरे ग्रन्थोमा पण एज रूपे मळी आवे छे, पण आ शब्दे पालीआना व्याकरणना नियमो प्रमाणे तो तेनु वधारे वास्तविकरूप ' निग्रन्थ ' एवु थवु जोइए अने आवु रूप जैनग्रन्थोमा स्वीकारेलु पण मळी आवे छे.

आचारोना विषयमां जेटला प्रमाणो जडी आवे ते बधानो ऊहापोह करवो जोईए

अंगुत्तरनिकाय ३,७४ मां वैशालीना लिच्छविओमांनो अभय नामे विद्वान् राजकुमार निगन्ठोना केटलाक सिद्धान्तोनुं नीचे प्रमाणे वर्णन करे छे —" भदन्त ! निगन्ठ नातपुत्त जे सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी छे, जे संपूर्ण ज्ञान अने दर्शनथी संपन्न होवानो (आ आगळ जणावेला शब्दोमां) दावो करे छे के " चालता, ऊठता, ऊंघता अने जागता हुं सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी छुं " ते जुना कर्मोनो तपस्यावडे नाश थवानुं प्ररूपे छे अने संवरद्वारा नवा कर्मोने रोकवानो उपदेश आपे छे ज्यारे कर्मनो क्षय थाय

---

१४ आ नामना, स्पष्टरीते बे पुरुषो मळी आवे छे बीजो अभय श्रेणिकनो पुत्र हतो अने जैनोना सहायक हतो तेनो जैनोना सूत्रो तेमज कथाओमां उल्लेख थएलो छे मज्झिमनिकायना मां (अभयकुमार) सुत्तमां एवुं वर्णन छे के निगण्ठ नातपुत्ते तेने बुद्धनी साथे वाद करवा मोकल्यो हतो प्रश्न एवो चालाकी भरेलो तैयार करवामां आव्यो हतो के बुद्ध तेनो गमे तेवा होकार अगर नकारमां जवाब आपे पण ते न्यायशेष-वाळा न्यायशास्त्रप्रसिद्ध दोषमां सपडाया विना रहे नहीं परंतु आ युक्ति सफल थइ नहीं अने परिणाम ऊंधुं एवुं आव्युं के अभय बुद्धानुयायी थइ गयो आ वर्णनमां नातपुत्तना सिद्धान्त उपर प्रकाश पाडे एवुं काइं तत्त्व नथी

छे त्यारे दु खनो क्षय थाय छे ज्यारे दु खनो क्षय थाय छे त्यारे वेदनानो अन आव छे ज्यारे वेदना मटे त्यारे सर्व दु खनो क्षय थश आ रीते ज्यारे पापनो पूरो नाश थशे त्यारे मनुष्य वास्तविक मुक्ति मेळवशे "

आ विभागनु जैनप्रतिबिम्ब उत्तराध्ययनना २९ मा अध्ययनमा मळी शके छे—" तपथी मनुष्य कर्म छेदी शके छे २७ ' योगना त्यागथी अयोगपणु प्राप्त थाय छे, कर्म रोकवाथी ते नवीन कर्म ग्रहण करी शकतो नथी अने पूर्वे ग्रहण करेला कर्मोनो क्षय करे छे ३७ '

आ प्रकारनी प्रवृत्तिनी बे अन्तिम दशाओ (सूत्र ७१ अने ७२ मा) वर्णवामा आवली छे अने वळी अध्ययन ३२, गाथा ९, ७ मा आवली नीचेनी हकीकत जाणीए छीए—' जन्म अने मरणनु कारण कर्म छे अने जन्म अने मरण एज दु ख कहेवाय छे आ उपरात बीजी पण उपरना अर्थने मळती ३४, ४७, ६०, ७३, ८६, अने ९९ मी गाथाओनो सक्षिप्त अर्थ नीचे प्रमाणे छे–' परन्तु जे मनुष्य इन्द्रियोना विषयोथी अने मानसिक लागणीओथी [आनो अर्थ बौद्धतत्वज्ञाननी वेदनाना अर्थ साथे घणोज मळतो आवे छे] उदासीन रहे छे

तेने शोक स्पर्श करी शकतो नथी जो के ते संसारमां मौजुद छे तोपण ते दु खपरंपराथी, जेम कमळनु पान पाणीथी अलिप्त रहे छे, तेम ते मनुष्य पण अलिप्त रहे छे '

आ सिवाय बौद्धग्रन्थमा, नातपुत्त सर्वज्ञान अने सर्वदर्शन प्राप्त करवानो दावो करे छे, ए प्रकारनु जे कथन छे तेने स्पष्ट करवा माटे प्रमाण आपवानी जरूर नथी कारण के आ तो जैन-धर्मनु खास एक मौलिक मन्तव्यज छे

निगन्ठोना सिद्धांतविषयक बीजी वधारे माहिती महावग्ग ६, ३१, (S B E पु १७, पृ १०८) आदिमाथी मळी आवे छे ए स्थळे सीहनु[१५] एक वृत्तान्त आपेलु छे ते सीह लिच्छविओनो सेनापति हतो अने नातपुत्तनो उपासक हतो ते बुद्धने मळवा इच्छतो हतो परन्तु नातपुत्त क्रियावादी होई बुद्ध अक्रियावादी हतो तेथी तेनी पासे जवानी तेने ना कहेवामां आवती हती परन्तु ते तेनी आज्ञाने उल्लघी पोतानी मेळे बुद्ध

१५ 'सीह' ए नाम भगवती [कलकत्ता आवृत्ति, पृ १२६७ जुओ होर्नलनी उवासगदसाओ, परिशिष्ट पृ १०] मा महावीरना एक शिष्य तरीके पण आवेलु छे, परन्तु ते साधु होवाथी महावग्गमां आवता आ नाम साथ तेनी एकता थवाथी शकाय तेम नथी

पासे गयो अने बुद्धनी सुभाषितना परिणामे ते तनो अनुयायी बन्यो

आ वृत्तातमां निगंठोने जे कियावादी जणाववामा आव्या छे, ते बाबत आ पुस्तकमां अनुसादित सूत्रोना उल्लेखथी सुसिद्ध थाय छे—सूत्रकृताग १,१२,२१, (पृ ३१९) मां जणाव छे के 'तीर्थंकर–अर्हतो कियावाद प्ररूपवानो–उपदेशवानो अधिकार छे' आचारागसूत्र १,१,१,४ (भाग १, पृ २) मा पण आ विचार, आ प्रमाणे दर्शाववामा आव्यो छ —'ते आत्माने मान छे, जगत्ने माने छे, फळने माने छे, कर्मने माने छे, (एटले के– ते आपणाथ करेला छे आ जे आ प्रमाणेना विचारोथी स्पष्ट जणाय छे) त कर्म में कर्युं छे, ते बीजा पासे करावीश, ते हु बीजाने करता दईश ' इत्यादि

महावीरना जे बीजा शिष्यने बुद्धे पोतानो अनुयायी बनावी लीधो हतो तेनु नाम उपाली हतु, मज्झिमनिकायना ५६ मा प्रकरणमा जणाव्या प्रमाणे तेणे बुद्धनी साथे, ए बाबतनो वाद कर्यो हतो के– 'निगंठ नातपुत्त कहे छे तेम कायिक पाप मोटु छे, के बुद्ध माने छे तेम मानसिक पाप मोटु छे ? ए सवादना प्रारभमा उपालि कहे छे के मारा गुरु साधारणरीते कर्म अथवा कृत्य

माटे दण्ड (शिक्षा) शब्दनो उपयोग करे छे '' जो के आ उल्लेख साचो छे परन्तु संपूर्णरूपे नहीं कारण के जैनसूत्रोमा कर्म अर्थमा पण ' कर्म ' शब्दनो तेटलोज उपयोग थएलो छे अने दण्ड शब्दनो पण तेटलोज थएलो छे सूत्रकृताग २,२ (पृ ३९७) मा १३प्रकारना पाप कर्मनु वर्णन करेलु छे जेमा पाच स्थलमा 'दण्डसमादान' शब्द आवेलो छे अने बाकीना स्थलमा 'किरियाथान' शब्द आवेलो छे

निगंठ उपाली विशेषमा जणावे छे के कायिक, वाचिक अने मानसिक एम त्रण प्रकारनो दंड छे उपालीनु आ कथन, स्थानागसूत्रना त्रीजा प्रकरणमा (जुओ इंडि एन्टि पु ९, पृ० १५९) जणावेला जैनसिद्धातनी साथे पूर्ण मळतु आवे छे

उपालीनु बीजु कथन के, जेमा ते निगंठोने मानसिक पापो करता कायिक पापोने वधारे महत्व आपनारा जणावे छे, ते कथन जैनसिद्धात साथे बराबर मळतु आवे छे सूत्रकृताग २,४ (पृ० ३९८) मा एवा एक प्रश्ननी चर्चा करवामा आवी छे के अणजाणपणे कराएला कृत्यनु पाप लागे के नहीं, त्या आगळ स्पष्टरीते जणावेलु छे के निश्चितरीते तेनु पाप लागे छे (सरखावो पृ ३९९ टिप्पण ६) वळी तेज सूत्रना ६ ठा

अध्ययनमा (पृ० ४१४) बौद्धोना ए मन्तव्यनु के 'अमुक कर्म पापयुक्त छे के पापरहित छे तेनो निर्णय ते कर्म आचरनार मनुष्यना आशय उपर आधार राखे छे, खूब खंडन अने उपहास करवामा आव्यो छे

अगुत्तरनिकाय ३,७०,३ मा निगंठ श्रावकोना आचारनु वर्णन आपेलु छे ते भागनु नीचे प्रमाणे भाषान्तर आपु छु

'हे विशाखा, निगन्ठ नामे ओळखातो श्रमणोनो एक सप्रदाय छे तेओ श्रावकोने आ प्रमाणे उपदेश आपे छे "हे भद्र! अहिंयी पूर्वदिशा तरफ एक योजनप्रमाणभूमियी बहार रहेता जीवता प्राणिओनी हिंसाथी तमारे विरमवु, तवीज रीते दक्षिण, पश्चिम अने उत्तरदिशा तरफनी योजनप्रमाणभूमीथी बहार रहेता प्राणिओनी हिंसाथी विरमवु" आ रीते तओ केटलाक जीवता प्राणिओने बचाववानो उपदेश आपी दयानो उपदेश करे छे, अने एज रीते वळी तओ कटलाक जीवना प्राणिओने न बचाववानो बोध करी क्रूरता शिखवाडे छे ' ए समजावतु कठिन नथी, के आ शब्दो जैनोना दिग्विरतिव्रतने उद्देशीने कहेला छे के, जे व्रतमा श्रावकने अमुक हद बहार मुसाफरी के व्यापार विगेरे नहि करवा सबधिनो नियम उपदेशवामा आव्यो छे आ

मनतु पालन करनार मनुष्य, अन्वत, पोते छूटी राखेली भूमी बहारना प्राणिनी हिंसा तो नज करी शके एतो स्पष्टज छे परन्तु आवा एक निर्दोष नियमने विरोधीसम्प्रदाये केवा विकृतरूपमा आलेख्यु छे ? पण एमां ए आश्चर्य जेवु कशु नथी कारण के कोई पण धार्मिक सम्प्रदाय पासेथी, तेना विरोधीमतना सिद्धांतोनुं यथार्थ अने प्रमाणिक आलेखन मेळववानी आपणे आशा नज राखवी जोइए तओ स्वाभाविक रीते, ते सिद्धांतोनु आलेखन एवान रूपमा करशे के जेथी तेमा देखाई आवता दोषो वधारे मोटा प्रमाणमा बनावी शकाय जैनो पण आ बाबतमा बौद्धो करता लेशमात्र उतरे तेम नथी तेमणे पण बौद्धोना सिद्धांतोने. आजप्रमाणे विकृतरूपमा आलेख्या छे बौद्धोना ए मन्तव्यनु के– पाप ए तेना आचरनारने आशय उपर आधार राखे छे, तेनु जैनोए, आ पुस्तकना पृ० ४१४ उपर, केवु असत्य निरूपण कर्यु छे ते जोवा जेवु छे ए ठेकाणे जैनोए बौद्धोना एक

---

१ पाप ए आशय उपर आधार राखे छे, ते मात्र मनवाळा पचेंद्रियजीवोने आश्रिन कही शकाय पण निगोदादिकथी लइने असंज्ञिपन्चेन्द्रिय सुधीना जीवोने मन होतु नथी अने ते कायिक पापथीन बचा आवी शकता नथी, तेथी कायिकपापनो पण दरजो ओछो न गणी शकाय माटे जैनोनु कहवु ते एकान्तपक्षनु खण्डन मात्र छे.

सम्पादक.

महान् सिद्धातने मिथ्याकल्पित अने मूर्खतापूर्ण उदाहरण साथे मेळवी उपहासपात्र बनावी दीधो छे

अगुत्तरनिकायनो एक उल्लेख जेनी थोडीक चर्चा आ उपर करवामा आवी छे तेमा वळी आगळ चलावता जणाववामा आव्यु छे के–' उपोसथना दिवसोमा तेओ (निगठो) श्रावकोने आ प्रमाणे उपदेश आप छे के–' भद्र, तमारे सघळा वस्त्रो काढी नाखवा जोइए अने कहेवु जोइए के–हु कोइनो नथी, अने मारु कोई नथी " अहिं विचारवानु छे के–तेना माता पिता तेने पोतानो पुत्र तरीके माने छे अने ते पण तेमने पोताना माता पिता माने छे तेनो पुत्र अगर तेनी पत्नी, तेने पिता अगर पतिरूपे माने छे अने ते पण तेमने पोताना पुत्र अगर पत्नी तरीके माने छे तेना गुलामो अने नोकरो तेने पोतानो मालिक या शेठ माने छे अने ते पण तेमने तेओ पोताना गुलामो अगर नोकरो छे, तेम माने छे आ कारणथी (निगन्ठो) तेमने (श्रावकोने) उच्च रीते बोलवानु कही तेमनी पासेथी असत्य भाषण करावे छे वळी ए रात्री व्यतीत थया बाद तेओ ते ते वस्तुओनो उपभोग करे छे जे सर्व (तेमना माटे) अदत्तादान रूप छे आथी हु तेमने अदत्तादान लेवाना पण दोषी तरीके मानु छु '

' आ वर्णन उपरथी समजाय छे के निर्ग्रंथ- उपासकोना 'उपोसथना दिवसोवाळा नियमो साधुजीवनना नियमो' जेवाज होवा जोईए

गृहस्थ अने साधुजीवनना नियमोनु भिन्नत्व बीजा दिवसोमा रहेतु हतु परन्तु आ वर्णन जैनोना पोसहव्रतना नियमो साथे पूरेपूरु मळतु आवतु नथी श्री भाडारकर, तत्वार्थसारदीपिकाना आधारे पोसहव्रततु स्वरूप नीचे प्रमाणे आपे छे, अने आ वर्णन बीजा तेवा वर्णनो साथे बराबर सगत थाय छे भाडारकर रखे छे के—' पोसह एटले दरेक पक्षनी अष्टमी अने चतुर्दशीना पवित्र दिवसे उपवास करवो अथवा एकाशन करवु, अथवा एकज ग्रास खावो ते दिवसोमा यतिनी माफक वैराग्य धारण करी स्नान, लेपन, आभरण, स्त्रीसगमन, सुगधी धूप—दीप इत्यादिनो त्याग करवो ' जो के वर्त्तमानजैनोनु ए पोसहव्रत—पालन बौद्धो करता घणु सख्त छे, ए वात खरी छे, तो पण ते निगन्ठ—नियमो के जेमनु वर्णन उपर आपवामा आव्यु छे, तेना करता घणु शिथिल होय तेम जणाय छे मारा जाणवा प्रमाणे जैनगृहस्थ, पोसहमा कपडानो त्याग करतो नथी, पण वाळीना आभूषणो अने बीजा विलासोनो त्याग करे छे तेमज बीजा ग्रहण करती वखते जेम

साधुने त्यागना सूत्रो बोलवा पडे छे तेम तेन बोलवा पडता नथी आ उपरथी एम जणाय छे के का तो बौद्धोनु आ वर्णन मूलभरेलु अगर असत्यमूलक होय अने का तो जैनोए पोताना नियमोमा काइक शिथिलता दाखल करी होय

दीघनिकाय १, २, ३८ (ब्रह्मजालसूत्र) मा आवना निगण्ठविषयक उल्लेख उपरनी पोतानी टीकामा एक ठेकाणे बुद्धघोष लखे छे के–' निगण्ठो आत्मा वर्णरहित छे एम माने छे, अने आजीविको आत्माना वर्णनी अनुसार समस्त मानव ज्ञातिना ६ विभागो पाडे छे परन्तु मृत्यु पछी पण आत्मानु अस्तित्व धराव छे अने ते बधा रोगोथी मुक्त (अरोगो) होय छे, ए बाबतमा निगण्ठो अने आजीविको बन्न समानमतवाला छे ' छेवटना शब्दोनो अर्थ गमे तेम हो, परन्तु तनी उपरनु वर्णन तो आ पुस्तकना पृ १७२ उपर आपला जैनोना आत्म स्वरूपना वर्णन साथे बराबर मळतु आव छे एक बीजा फकरामा (I. C P 168) बुद्धघोष जणाव छे के–निगठ नातपुत्त थडा पाणीने सचेतन माने छे (सो किर सीतोदके सत्त सञ्ञी होति) अन तथी ते तनो उपयोग करता नथी जैनोनु आ मतव्य अत्यत प्रसिद्ध होवाथी तेनी साबिति आपवा माटे सूत्रो-

मायी अननरणो आपवानी आवश्यकताने हु निरर्थक मानु छुं पालीग्रन्थोमायी प्राचीननिगंठोना मनव्यो सबवी जे काई माहिती हु एकत्र करी शक्यो छु, लगभग ते सघी उपर आपी दीघी छे जो के आपणे इच्छिए तेना करता ते घणी अल्प-प्रमाणमा छे, तो पण तेयी तेनी किंमत बिल्कुल ओछी गणाय तेम नयी प्राचीननिगन्ठोना मतव्यो अने आचारोना मत्रधमा जे उल्लेखो आपणे एकत्र कर्या छे ते सघळा एक अपवादने बाद करता वर्तमान जैनमतव्यो अन आचारो साथे मळता आवे छे अने तेमाना केटलाक तो जेनोना खास मौलिक विचारो छे आ उपरयी आपणने एम सदेह करवानु जराए कारण नथी जटलु के, आ बौद्धग्रन्थोमानी नोंधो अने जैनसिद्धातोनी रचना वचेना अतर्वर्ती काळमा जैनसिद्धातोमा झाझो फेरफार थयो होय

म जाणी जोईनेज निगण्ठ नातपुत्तना मतविषयक एक प्रधान प्रकारनु विवचन करवु आ स्थले मुलतवी राख्यु छे कारण के ए फकरामा आपेली बाबत उपरथी आपणने एक नवीन पद्धतिए तपास करवानी जरूरत रहे छे आ फकरो दीघनिकायना सामञ्ञ-फलसुत्तमा आपेलो छे

१ सुमङ्गलविलासिनी [पालिटेक्स्ट सोसायटी] पृ ११९

हु तेनु अहीं सुमगलविलासिनीनामे बुद्धघोषवाळी टीकाना अनुसारे भाषातर आपु छु–' महाराज ! अहिया एक निगन्ठ चारे दिशाना नियमनथी सुरक्षितछे (चातुयामसवरसवुतो) हे महाराज केवी रीत निगन्ठ चारे दिशाना सवरथी रक्षित छे ? महाराज आ निगन्ठ सघळु (थडु) पाणी वापरता नथी सर्व दुष्ट कर्म करता नथी अने सघळा दुष्कर्मोना विरमनवडे ते सर्वपापोथी मुक्त छे अने सवप्रकारना दुष्कर्मोथी, सघळा पाप कर्मोथी निवृत्ति अनुभव छे आ प्रमाणे हे महाराज निगठ चारे दिशाना सवरथी सवृत छे, अने महाराज ! आ प्रमाणे सवृत होवाथी त निगन्ठ नातपुत्तनो आत्मा मोटी योग्यतावाळो, सयत अने सुस्थित छे ' अलबत, आ जैनधर्मनु यथार्थ तेमज सपूर्ण वर्णन नथी परन्तु तेमा जैनधर्मनु विरोधी तत्त्व पण नथी आना शब्दो जैनसूत्रोना शब्दो जेवाज छ म बीजे स्थळे जणाव्यु छे

१ ग्रीमजोव्ट Pali sept suttasma, गोगर्ली (Gogerly) अने बर्नफ (Burnouf)नो जे भाषातरो आपला छे त तमणे टीकानी सहायता लाधा विना करेला होवाथी दुर्लक्ष्य करवा जवा छे बुद्धघोषनु कथन परपरागत हतु के कल्पित हतु ते सन्दिग्ध छ

२ जुओ इन्डि एटि भा ९ पृ १५८ मा प्रकट थएलो मारो n Mahavir and his Predecessors नामनो निबध ।

तेम ' चातुयामसंवरसवुतो ' ए वाक्य मात्र टीकाकारेज नहीं परन्तु मूळ ग्रन्थकारे पण खोटी रीते समजेलु छे कारणके—पाली—शब्द ' चातुयाम ' ते प्राकृतशब्द ' चातुग्गाम ' नी बराबर थाय छे अने आ प्राकृतशब्दनो एक प्रसिद्ध जैनपारिभाषिक शब्द छे जे महावीरना (पंचमहाव्रत) पाच महाव्रतोथी भिन्न एवा पार्श्वनाथना चार व्रतोनो वाचक छे आथी आ स्थळे बौद्धोए जे सिद्धात वास्तविकमा महावीरना पुरोगामी पार्श्वनाथने लागु पडे छे तेने, महावीर उपर आरोपित करवामा भूल करेली छे, एम हु धारु छु आ उपरथी एम सूचित थाय छे के बौद्धोए आ शब्दने निगन्ठोना धर्मवर्णनमा लीधेलो होवाथी तेमणे ते पार्श्वनाथना अनुयायिओना मुखेथी साभळ्यो हशे. अने बीजी ए पण कल्पना थइ शके के महावीरना संशोधितमतो जो बुद्धना समयमा सर्वसामान्यरीते स्वीकाराया होत तो पार्श्वनाथना अनुयायिओ पण ते वखते ते शब्दनो उपयोग नहीं करता होत बौद्धोनी आ भूलद्वारा हु जैनोनी ए परपराने सत्य स्थापित करी शकु छु के महावीरना समयमा पण पार्श्वनाथना शिष्यो विद्यमान हता

आ पद्धतिए तपास करवानी शरुआत करता पहेला हु

बोद्धोनी एक बीजी पण अर्थपूर्ण भू तरफ वाचरनु ध्यान खेंचवा मागु छु बौद्धो नातपुत्तन अग्गिवेसन अर्थात् अग्निवेश्यायन कहे छे परन्तु जैनोना मतानुसार ते काश्यप हता, अने पोताना तीर्थंकरो सबधि आवी बाबतोमा जैनोनुज कहेनु विश्वासपात्र मानवु जोईए वळी महावीरनो एक मुख्यशिष्य जे सुधर्मा नामे हतो अने जेने सूत्रोमा महावीरना धर्मना मुख्य उपदेशक तरीके बता वेलो छे ते पोते अग्निवेश्यायन हतो, अने तेणे जैनधर्मनो प्रसार करवामा मुख्य भाग भजवलो होवाथी बहारना बीजा माणसो शिष्यने गुरु समजी लेवानी भूल करी होय अने तथी करीने शिष्यनु गोत्र गुरुने लगाडी देवामा आव्यु होय त पण सभवित छे आ रीतनी बौद्धोए करेली वेवडी भूल महावीरनी पूर्वे पार्श्व-नामना तीर्थंकरनी तथा महावीरना मुख्य शिष्य सुधर्मानी ह्याती-तीनी साक्षी आप छे

पार्श्व ए ऐतिहासिक पुरुष हता ते वात तो वधी रीते सभावित लागे छे केशी[1] के जे महावीरना समयमा पार्श्वना सम्प्रदायनो एक नेता होय तेम देखाय छे, तेनो तथा अन्य पण तेना अनुया-

---

१ राजप्रश्नीमा केशीगणधरन राजा पएसी साथ सवाद थयो हतो अने त्यार बाद राजाने तेणे पोतानो धर्मानुयायी बनाव्यो हतो

सिओना जैनसूत्रोमा घणे ठेकाणे उल्लेखो थएला छे अने ते उल्लेखो एवी सरळ रीते थएला छे के जेथी कोईने तेनी सत्यासत्यताना संबंधमा शंका उठाववाने कारण मळतु नथी उत्तराध्ययनना २३ मा अध्ययनमा जुना अने नवा संप्रदायनो परस्पर मेळ केवी रीते थई गयो हतो ते बतावनारी एक कथा आ नियमा घणीज अगत्यनी छे केशी अने गौतम के जेओ बंने जैनधर्मना बे संप्रदायोना प्रतिनिधि तथा नेता हता, तेओ पोताना शिष्यपरिवार सहित एक वखते श्रावस्तिपासेना उद्यानमा भेगा मळे छे अने महात्मोनी सम्यात्विविषयक तथा सचेलकाचेलक अवस्थाविषयक तेमना धार्मिकमतभेदो संबंधे विवेचन कर्या शिवाय मात्र सहन समजावीने दूर करवामा आवे छे अने त्यारथी मौलिक नीतिविषयकविचारोना संबंधमा प्रत्येक पक्ष दृष्टांतो द्वारा एक बीजाना विचारो समजी समजावी निःशंक बनी संपूर्ण एकमत थाय छे, बंने संप्रदायो वचे कांइक मतभेद जेवु जोवामा आवे छे, परन्तु परस्पर द्वेष या वैर बिलकुल जोवातु नथी जो के प्राचीन संप्रदायना अनुयायिओने ' पंचमहाव्रत प्रतिपादनार ' महावीरना धर्मनो स्वीकार करवो पड्यो हतो, ए वात खरी छे, तोपण तेओ पोतानी केटलीक जुनी रूढिओने पण वळगी रह्या हता खास करीने वस्त्र वापरवाना विषयमा के जे रूढिनो महावीरे त्याग

कर्यो हतो, तेम आपणे मानवु जोईए आ कल्पनानुसार आपणे श्वेताम्बर अने दिगंबर संप्रदायरूपी बे फिरकानी उत्पत्तिनु मूळकारण पण बतावी शकीए छीए, के जेना सबबमा श्वेताम्बर अने दिगम्बर बन्ने संप्रदायमा भिन्न भिन्न अने परस्परविरोधी दंतकथाओ प्रचलित छे [1] आ भेद देखीती रीतेज काइ आकस्मिक थयो नहतो, परन्तु असलनो एक मतभेद [उदाहरण तरीके जेवो के श्वेताम्बरमतना केटलाक गच्छोनी वच्चे अत्यारे ए हयाती धराव छे] काले करीने विभागना रूपमां परिणत थयो अने आखरे तेणे एक महान् धर्मभेदनु रूप लीधु

बौद्धग्रन्थोमा मळी आवता उल्लेखो, नातपुत्तनी पूर्वे पण निर्ग्रन्थोनी हयाती हती, ए प्रकारना आपणा विचारने दृढ करे छे ज्यारे बौद्धधर्मनो प्रादुर्भाव थयो त्यारे निर्ग्रन्थोनो संप्रदाय एक मोटा संप्रदायरूपे गणातो होवो जोईए ए निर्ग्रन्थोमाना केटलाकने बौद्धपिटकोमा, बुद्धना अने तेना शिष्योना विरोधी तरीके अने वळी केटलाकने तेना अनुयायी थएला तरीके वर्णवेला छे, के

---

१ श्वेताम्बर अने दिगम्बर संप्रदायोनी उत्पत्तिना संबधमा जर्मन ओरिएन्टल सोसायटीना जर्नलना ३८ मा भागमां प्रकट थएलो मारो निबंध जुओ

जे उपरथी आपणे उपर प्रमाणे अनुमान करी शकीए छीए एथी उल्टु ए ग्रन्थोमा कोई पण स्थले एवो उल्लेख के सूचन सरखु पण थएलु जोवामा नथी आवतु के निर्ग्रन्थोनो सम्प्रदाय ए एक नवीन सम्प्रदाय छे आ उपरथी आपणे अनुमान करी शकीए छीए के निर्ग्रन्थो बुद्धना जन्म पहेला घणा लाबा काळथी अस्तित्वे धरावता हशे. आ अनुमानने बीजी एक बातद्वारा पण टेको मळे छे बुद्ध अने महावीरना समकालीन एवा मक्खलि गोशाले मनुष्य जातिनी छ वर्गामा वहेंचणी करी हती[1] बुद्धघोषना[2] कहेवा मुजब आ छ वर्गमाना त्रीजा वर्गमा निर्ग्रन्थोनो समावेश करवामां आव्यो हतो हवे विचारीए के निर्ग्रन्थो जो तेज अरसामा ह्यातीमा आव्या होत तो तेमनी गणना एक खास एटले के मनुष्यजातिना एक स्वतत्र-पेटाविभाग तरीके कदापि न करवामा आवी होत.

---

१ दीघनिकाय, सामञ्ञफलसुत्त २०

२ सुमगलविलासिना पृ १६२ मा बुद्धघोष स्पष्ट जणावे छे के गोशाले पोताना शिष्यो ज चतुर्थवर्गना हता तेना करता निर्ग्रन्थोने हल्की प्रतिना गण्या छे गोशाले तो भिक्षुओने तेथीए हल्का प्रकारना गण्या छे क ज बाबत उपर बुद्धघोष लक्ष्य आप्यु नथी ते उपरथी स्पष्ट जणाय छे के आ भिक्षुओने बौद्धसाधुओ करता ते भिन्न मानतो हतो

जरूर तेणे निर्ग्रन्थोने एक महत्वना अने साथे मारा मानवा प्रमाणे प्राचीन बौद्धो मानता हता तेम एक प्राचीन संप्रदायरूपे रख्या हशे मारा उपरोक्त छेल्ला मतनी पुष्टिमां नीचे मुजबनी दलील पण छे मज्झिमनिकाय, ३५ मा बुद्ध अने सचक नामना एक निर्ग्रन्थपुत्र वचे थएला वादनु वर्णन आपेलु छे सचकवादमा नातपुत्तने हराव्यानी वडाई मारतो होवाथी ते निर्ग्रन्थ होय तेम लागतो नथी अने बीजु ए के जे सिद्धान्तोनु त समर्थन करवा मथे छे ते सिद्धान्तो जैनोना नथी आ उपरथी ए विचारवा जेवु छे के एक प्रसिद्धवादी के जेनो पिता निर्ग्रन्थ हतो अने जे पोते बुद्धनो समकालीन हतो, तेना पुरावा उपरथी निर्ग्रन्थोनो सम्प्रदाय बुद्धना समयमां स्थापित थयो हतो तेम भाग्येज मानी शकाय

हव आपणे जे जे जैनेतर पाखडी मतावलम्बिओ सामे जैनोए पोतानो तात्त्विकविरोध बताव्यो छे, अने ते सबध जे उल्लेखो तेओए कर्या छे, ते तपासीए, अने तेनी साथे बौद्धोना उल्लेखो सरखावीए सूत्रकृताग २,१,१५ (पृ ३८८) अने २१ (पृ ३४३) मा घणे अशे परस्पर मळता आवता एवा बे मतवादी सिद्धातोनो उल्लेख छे पहेला सूत्रमा जे लोको आत्माने एक अने अभिन्न माने छे तेमना एक अभिप्रायनु वर्णन छे, अने

बीजासूत्रमा पचभूतने नित्य अने बधु तेनुज बनेलु छे तेम माननार एक सिद्धातनुं वर्णन आपलु छे बन्ने मतना अनुयायिओ जीवतां प्राणीनी हिंसा करवामा पाप मानता नथी आवाज प्रकारनो मत सामञ्ञफलसुत्तमा पूरणकस्सप अने अजितकेशकम्बलीनो होवानुं बताव्यु छे पूरणकस्सप पुण्यअगर पाप जेवी कोई वस्तुने मानतो नथी, अने अजितकेसकम्बलीनो एवो सिद्धान्त छे के अनुभवातीत मंतव्य के जे लोकोमा प्रचलित छे तेने मळतु कोई तत्त्वज नथी आ उपरान्त ते एम माने छे क ' माणस (पुरिसो) चार भूतोनो बनेलो छे, ज्यारे ते मरी जाय छे त्यारे पृथ्वी पृथ्वीमां, पाणी पाणीमा, अग्नि अग्निमा, वायु वायुमा अने ज्ञानेन्द्रियो हवामा[1] (अथवा आकाशमा) विलीन थई जाय छे ठाठडीने उपाडनार, चार पुरुषो मुडदाने स्मशानभूमिमा लई जाय छे त्यारे कल्पात करे छे, कपोतरगना हाडका बाकी रहे छे अने बीजा सघळा (पदार्थो) बळीने भस्मीभूत थई जाय छे आ छेल्लु सूत्र थोडा फेरफार साथे सूत्रकृतागना पृ० २४० उपर आवे छे –' अन्यजनो मुडदाने बाळवा माटे लई जाय छे

१ आकाशने बौद्धग्रंथोमा पाचमा तत्त्व तराके मान्यु नथी, परन्तु जैनग्रंथामा त मान्यु छ जुओ आगळ पृ० ३८३ अने पृ० २३७ गाथा १५ आ मात्र एक शाब्दिकभेद छे नही के तात्त्विक

ज्यारे अग्नि तेने बाळी नाखे छे त्यारे मात्र कपोतरगना हाडका बाकी रहे छे अने चार उपाडनारा ठाठडीने लइ गाम तरफ पाछा, वळे छे'

जटवादना बीजा सिद्धान्त (पृ० ३४३, २२, अने पृ० २३७) ना सबन्धमा एक बीजी शाखानो पण उल्लेख थएलो छे ते मतमा पाच भूत उपरान्त छठु तत्त्व नित्यात्मा मनाय छे आ मत ते अत्यारे वैशेषिकनामना दर्शननी जे प्रसिद्धिमा आवेलु छे तेनु प्राचीन अथवा लोकप्रसिद्ध रूप छे बौद्धग्रथमा आ दर्शनना सस्थापक तरीके पकुधकच्चायन निर्दिष्ट थएलो छे तेनो मत एवो हतो के आखु विश्व सात वस्तुनु (पदार्थोनु) बनेलु छे अने ते सर्व पदार्थो नित्य निर्विकार अने परस्पर स्वतत्र छे ते पदार्थो चार भूत, सुख, दु ख अने आत्मा ए प्रमाणे छे आ सर्वनी एक बीजा उपर काई असर थती नहीं

१ टु आ स्थळ बन्ने मूळसूत्रोने साम साम मुकु छु जेथी करीने तेमनी वच्चेनु साम्य वधारे स्पष्ट रीते समजी शकाय —

आसन्दि पञ्चमा पुरिसा मतमादाय गच्छन्ति याव अळाहना पदानि पञ्चापेन्ति कापोतकानि अट्ठीनि भवन्ति भस्सन्ता हुतियो	आदहणाए परेहि निज्जइ अगणिझामिए सरीरे कवोतवण्णाइ अट्ठीनि आसन्दि पञ्चमा पुरिसा गाम पच्चा गच्छन्ति

होवाथी कोई पण पदार्थनो वास्तविक नाश थतो नथी माटे कहेवु जोईए के सुख अने दुखने नित्य मानवा छता पण ते बन्नेनी आत्मा उपर काई असर थती न मानवी, ते मारा अभिप्राय प्रमाणे तो अज्ञानता भरेलु छे परन्तु बौद्धोए कदाच असत्र सिद्धातोनु असत्य आलेखन कर्यु होय तो ते पण संभवित छे पकुधकच्चायनना विचारो अवश्य वर्गीने अक्रियावादमां अतर्गत थाय छे अने आ बाबतमा ते वैशेषिकदर्शन के जे क्रियावादी छे तेनाथी भिन्न पडे छे आ बन्ने वादो बौद्ध तेमज जैनसाहित्यमा आवता होवाथी तमनी विशेष व्याख्या करवी अही अस्थाने नहीं गणाय जे सिद्धात आत्माने क्रियाशील अने क्रियालिप्त (क्रियाथी जेना उपर असर थाय तेवो) मान छे ते क्रियावादी कहेवाय छे आ वर्गमा जैनधर्म, ब्राह्मणधर्मो(?) वैशेषिक अने न्यायदर्शनो (आ बे दर्शनोना स्पष्ट उल्लेखो बौद्ध अने जैनधर्मशास्त्रोमां थएला नथी) तथा बीजा पण एवा केटलाक दर्शनो—के जेनां नाम अत्यारे उपलब्ध थई शकता नथी परन्तु जेनी ह्यातीनी माहिती आपणे आपणा आ ग्रथोमाथी मेळवी शकीए छीए, ते सर्वेनो—समावेश थाय छे अक्रियावाद ते सिद्धान्त कहेवाय छे, जेमा आत्मानु नास्तित्व अगर निष्क्रियत्व अथवा कर्मालिप्तत्व प्रतिपादन करवामा आवे छे आ वर्गमा सरळा जडवादी मतो,

ब्राह्मणधर्मो पैकी वेदान्त, सांख्य अने योगदर्शनो, तथा बौद्ध धर्मनो अंतर्भाव थाय छे बौद्धधर्मना क्षणिकवाद तथा शून्यवादनो उल्लेख सूत्रकृताग १,१४,४ थी अने ७ मी गाथामा थएलो छे साथे ए पण जणावबु जोईए के वेदान्तिओ अथवा तेमना मन्तव्योनो पण सिद्धांतोमां घणे स्थळे उल्लेख आवे छे सूत्रकृतांगना बीजा पुस्तकना पहेला अध्ययनमा पृ २४४ उपर, बीजा पाखंड मत तरीके वेदान्तनु वर्णन थएलुं छे छट्ठा अध्ययनमा, पृ ४१७ उपर, तेनु फरीथी वर्णन आवलु छे परन्तु बौद्धोए गणावेला छ तीर्थिकोमा आ मतनो कोई पण आचार्य नहीं होवाथी आपणे ते उपर आ स्थळे ध्यान देता नथी[1]

सूत्रकृतांगना बीजा भागना प्रथम अध्ययनमा, चोथा पाखंड मत तरीके दैववाद (Fatalism) नु वर्णन आवेलु छे सामञ्ञफलसुत्तमा आ मतनु मक्खली गोसाल नीचे प्रमाणे प्रतिपादन करे छे—' महाराज ! जीवात्माओनी अपवित्रतामा कोई

---

१ एक वात याद राखवा ज्वी छे के वेदान्तिओ पण बुद्धना प्रतिस्पर्धि तरीके काम बजावता अने तेओ वैदिकपनना तत्त्वज्ञोमां आगळ पडता होवाथी आपणे एम अनुमान करवु जोइए के बुद्धधर्मनी असरवाळा प्रदेशोथी विद्वान् ब्राह्मणो दूर रहता

हेतु अगर पहेला हयाती धरावतु एवु काई कारण नथी, ते अन-न्यकृत छे तेमज ते पहेला हयाती धरावती कोई बीजी वस्तुथी उत्पन्न थएली नथी (तेवीज रीते) जीवात्माओनी पवित्रतामां पण कोई कारण अगर पूर्वे हयाती धरावतो कोई हेतु नथी ते अनन्यकृत छे तेमज तेनु कोई उपादान कारण नथी आनी उत्पत्ति व्यक्तिओना कोई आचारनु परिणाम नथी तेमज पारकाना कार्योनी पण तेना उपर असर नथी तेम मनुष्यप्रयत्ननु पण ते फळ नथी जेने उत्पन्न करवामां, पुरुषनी शक्ति, प्रयत्न, बल, धैर्य, अगर सामर्थ्य एमानु कोई कारणभूत थतु नथी सर्वे सत्त्व, सर्वे प्राणिओ, सर्वे भूतो, अने सर्वे जीवो,[1] एटली ते पशु, अगर वनस्पति गमे ते हो पण तेमनामाना कोईमां आतरबल, शक्ति

---

१ मूळमां सव्वे सत्ता, सव्वे पाणा, सव्वे भूता, सव्वे जीवा, एवो पाठ छे जैनसूत्रोमा पण आज क्रमथी अनेक ठकाणे ए पाठ आवे छे अने ए पाठनु नक्षेपमा all classes of living beings सचेतनप्राणीओना बधा वर्गो ' एवु भाषांतर करेलु छे बुद्धघोषनी टीकानु भाषांतर, हार्नले, उवासगदसाओना परिशिष्ट न २ जाना पान १६ उपर नीचे प्रमाणे आप्यु छे ' सव्वे सत्ता-एटले उंट, बळद, गधेडा, अने तेवा बीजा बधा पशुओ सव्वे पाणा-एटले एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय आदि चेतनावाळा प्राणिओ, सव्वे भूता-एटले अडज अने गर्भज जीवो अने सव्वे जीवा-एटले डांगर, जव, घउं इत्यादि (वानस्पतिक) जीवो

तथा सामर्थ्य नथी, परन्तु आ दरेक जीव पोतानी स्वभावनियतिने वश थई, छ प्रकारमानी कोई पण जातिमा रही सुख दु ख भोगवे छे इत्यादि ' आ सिद्धातोनु सूत्रकृतागमा (I C) आपेलु वर्णन जो के थोडा शब्दोमा छे, छता पण मरला भावार्थवालु छे, अलबत ते स्थळ आ सिद्धातो मक्खलीपुत्र गोशालना छे एम स्पष्ट कहेवामा आव्यु नथी जैनो प्रधाननया चार दर्शनोनो उल्लेख करे छे —क्रियावाद, अक्रियावाद, अज्ञानवाद अने वैनयिकवाद आमाथी अज्ञानिकोना मतोनु मूळमा स्पष्ट कथन करेलु देखातु नथी आ सघळा दर्शनोना विषयमा टीकाकारे जे समजुती आपेली छे, अने जे मे पृ ८३ नी २ नबरनी टीपमा नाधेली छे, ते घणीज अस्पष्ट अने गेरसमजुती उत्पन्न करे तवी छे परन्तु ए अज्ञेयवादनो यथार्थ ख्याल आपणने बौद्धग्रन्थोथी आवी शके तेम छे सामञ्ञफलसुत्तमा जणाव्या प्रमाणे ते मत सञ्जयनल- ट्ठिपुत्तनो हतो, अने त्या नीचे प्रमाणे तेनु वर्णन करेलु छे — 'महाराज ! जो मने तमे पूछशो के जीवनी कोई भावी अवस्था छे ? तो हु जवाब आपीश के जो हु भावी अवस्था अनुभवी शकु, तो पछी हु ते अवस्थानु स्वरूप समजावी शकु जो मने पूछशो के शु ते अवस्था आ प्रकारनी छे ? तो (हु कहीश के)

ते मारो विषय नथी शु ते ते प्रकारनी छे ? त मारो विषय नथी शु ते आ बन्नेथी भिन्न छे ? ते पण मारो विषय नथी. नथी एम नथी ? ते पण मारो विषय नथी ' इत्यादि आज रीते मृत्यु पछी तथागतनी हयाती रहे छे के नहीं ? रहे छे अने नथी रहेती ? रहे छे एम ए नथी ? अने नथी रहेती एम ए नथी ? आवा प्रश्नो जो कोई पूछे तो तेनो पण ते एज रीते जवाब आपे छे आ उपरथी स्पष्ट छे के अज्ञेयवादीओ कोई पण वस्तुना अस्तित्व अने नास्तित्वना सबंधमा सर्वे प्रकारनी निरूपणपद्धतिओ तपासता हता अने जो ते वस्तु अनुभवातीत मालुम पडती तो तेओ सर्वे कथननी रीतिओनो इनकार करता हता .

बुद्ध अन महावीरना समयमा प्रचलित एवा अन्य तात्त्विकविचारोना विषयमा जैन तथा बौद्ध ग्रन्थोमा मळी आवती नोंधो गमे तेटली जून होय, तो पण ते नामाङ्कितकालना इतिहासकारने अतिमहत्त्वनी छे कारण के आ नोंधोद्वारा त कालना धार्मिक सुधारकने केवा प्रकारना पाया उपर तथा कया साधनोनी मददथी पोतानो मत उभो करवो पड्यो हतो ते जणाई आवे छे एक बाजुए आ बधा पाखंडी मतोमा मळी आवती परस्परनी केटलीक साम्यता अने बीजी बाजुए जैन अगर बौद्धोनी जणाती विशिष्टता

उपरथी स्पष्टरीते अनुमान करी शकाय छे के बुद्ध अने महावीरे केटलाक विचारो तो आ पाखंडिओना मतोमांथी लीधा हतां, अने केटलाक तेओनी साथे चालता तेमना सतत वादविवादनी असरथी उपजावी कढाया हता मारु एम धारवु छे के संजयना अज्ञेय-वादनी विरुद्ध महावीरे पोतानो स्याद्वादनो मत स्थाप्यो हतो अज्ञानवाद जणावे छे के जे वस्तु आपणा अनुभवनी पछे तेना संबंधमा अस्तित्व अगर नास्तित्व अथवा युगपत् अस्तित्व अने नास्तित्वनु विधान, अगर निषेध करी शकाय नहीं तेज रीते पण तेथी उलटी दिशाए दोडतो स्याद्वाद एम प्रतिपादन करे छे के—एक दृष्टिए (अपेक्षाए) कोई पुरुष वस्तुना अस्तित्वनु विधान करी शके (स्याद अस्ति), तेम बीजी दृष्टिए तेनो निषेध करी शके (स्याद् नास्ति), अने तेवीज रीते भिन्न भिन्न कालमा ते वस्तुना अस्तित्व तथा नास्तित्वनु विधान करी शके (स्याद् अस्ति नास्ति), परन्तु जो एकज कालमा अने एकज

---

[1] पाताना मौलिक विचारोथी बधारण थएरा एक बुद्ध धर्मने पाछळथी बीजा पाखंडिओना विचारो लईने अने नवीन उपजावी काढेलाथी [illegible] बनावी धवाय खरो क [2] जो तेमज बनतु होय तो बधाए धर्मो [illegible] बन्या होत, पण तेम देखातु नथी माटे आ अनुमान विचावर लेवु लागे छे

सम्पादक.

दृष्टिए कोई मनुष्य वस्तुना अस्तित्वनु तथा नास्तित्वनु विधान करवा इच्छतो होय तेणे एम कहेवु जोईए के ते वस्तु विषे काई कही शकाय नहीं (स्याद् अवक्तव्य) ते प्रमाणे केटलाक सयोगोमा अस्तित्वनु विधान करवु अशक्य छे (स्याद् अस्ति अवक्तव्य), केटलाक प्रसगे नास्तित्वनु विधान करवु अशक्य छे (स्याद् नास्ति अवक्तव्य), अने केटलीक वखते मजेनु विधान करवु अशक्य होय छे (स्याद् अस्ति नास्ति अवक्तव्य)[१] आ वाद ते जैनोनो प्रसिद्ध सप्तभगी नय छे शु कोई पण तत्त्ववेत्ता पोताना भयकर प्रतिस्पर्द्धिने चूप कराववाना प्रयोजन सिवाय, जेने प्रमाणनी जरूर नथी, एवी उघाडी बाबतोनी व्याख्या करवानी इच्छा करे खरो ? एम लागे छे के अज्ञेयवादिओना सूक्ष्म-विवादोए प्राय तेमना घणा खरा समकालीन मनुष्योने गुचवणमा नाख्या हशे अगर ममाव्या हशे, अने तेथी करीने ते सर्वेने अज्ञानवादनी मूळ मुझामणीमाथी बहार निकाळवा माटे स्याद्वादनो सिद्धात एक क्षेम मार्ग तरीके देखायो हशे आ शास्त्रनी मदथी विरोधिओ उपर आक्रमण करनार अज्ञानवादिओ सामे थई जता हता आपणे नथी कही शकता के ७

१ भाडारकर रिपोर्ट सन् १८८३-४ पृ ९५.

केटला अनुयायिओ, आ सप्तभंगीनयना सत्यनी प्रतीति पामी महावीरना धर्ममां आवी गया हशे ?

अज्ञेयवादनी बुद्धना उपर पण केटली बधी असर थई हती ते आपणे पालीग्रंथोमा निरूपित बुद्धना निर्वाणविषयक सिद्धान्तमां जोई शकीए छीए आ प्रकारना निश्चयात्मक वाक्यो तरफ प्रथम ध्यान प्रो ओल्डनबर्गे खेंच्यु हतु, आ वाक्यो निःशकपणे जणावे छे के मृत्यु बाद तथागत (अर्थात् मुक्तात्मा अथवा जेने वास्तवमा व्यक्तित्वनो हेतु कही शकाय ते) हयाती धरावे छे के नहीं, एवा प्रश्ननो उत्तर आपवा बुद्ध चोख्खी ना पाडता हता जो तेमना समयना लोकोना सांभळवामां आवा विचारो बिलकुल न आव्या होत अने आवी केटलीक बाबतो के जे मनुष्यना मनथी अतीत होई ते घणी महत्वनी गणाय छे तेना संबंधमा, तेवा प्रकारना उत्तरोथी ते लोकोने सन्तोष न वळतो होत तो तेओ, तेवा कोई धार्मिक सुधारक के जे ब्राह्मणधर्ममां तर्कसिद्धनिरूपित सघळी बाबतोना सबन्धमा पोतानो स्पष्ट अभिप्राय न आपे, तेना उपदेशोने आदरपूर्वक सांभळे ए असभवित छे परन्तु वस्तुस्थिति जोता एम लागे छे के अज्ञेयवादे बौद्धोना निर्वाणना सिद्धांतने झीलवा माटे भूमि तैयार करी राखी

हती [1] एक बाबत खास नोंध लेवा जेवी छे—संयुतनिकाय जेनु भाषान्तर प्रो ओल्डनबर्गे करेलु छे, तेमा एक ठेकाणे पसेनदि राजा अने खेमा नामनी आर्या वच्चे थएलो सवाद आवे छे तेमा राजाए मृत्यु बाद तथागत हयाती धरावे छे के नही ए सबधमा प्रश्नो पूछेला छे, जे सूत्रोमा आ प्रश्नो पूछेला छे तेमा सामञ्ञफलसुत्त—के जेनु भाषातर उपर आपेलु छे, तमा जेवा शब्दो सजय वापरे छे तेवाज शब्दो वापरेला छे

बुद्धना समयना अज्ञेयवादनी असर बुद्ध उपर थई हती

---

१ निर्वाणना स्वरूपकथनमा बुद्धे जे मौन धारण कर्यु हतु ते तेमना वखतमा भले डहापण भरेलु गणायु होय, परन्तु ते सप्रदायना विकासने माटे तो तेना घणा परिणामो समाएला हता कारण के बौद्धमतना अनुयायिओने, ब्राह्मणदार्शनिको जेवा दूधमाथी पोरा काढनारा तर्कशास्त्रीओनी विरुद्ध पोताना मतने टकावी राखवानो होवाथी, आ महान् प्रश्न के जेना विषयमा तेमना धर्मसस्थापके काइ पण निश्चयात्मक कथन कर्यु नहोतु ते उपर वधारे स्पष्ट विचारो जणाववानी फरज पडी हती आ रीते पोताना गुरुए अधुरा राखेला महेलने पूर्ण करवा माटे सामग्री भेगी करवाना उद्देशथी बुद्धनिर्वाण पछी तरतज बौद्धधर्म पुष्कल सप्रदायोना रूपमा विभक्त थई गयो, एमो आश्चर्य पामवानी जरूर नथी के सिलोन जे ब्राह्मणविद्याविषयक केन्द्रथी घणु दूर आवेलु छे त्या बौद्धोना आ निर्वाणनो सिद्धान्त असररूपमा प्रकटित रही शक्यो छे

तेवा प्रकारना मारा अनुमाननी पुष्टिमा, हु महावग्ग १, २३, अने २४, मा आपेली एक परपरागत कथा अत्रे रजु करु छु ते कथामा एम जणावेलु छे के बुद्धना सौथी वधारे प्रख्यात एवा सारिपुत्त अने मोग्गल्लान नामना बे शिष्यो, तेमना अनुयायी थया पहेला सजयना शिष्यो हता अने पछीथी तेओए पोताना जूना गुरुना मतना २५० शिष्योने पण बौद्धमार्गी बनाव्या हता आ हकीकत बुद्ध बोधि प्राप्त कर्यु त्यार पछी तरतज बनी हती आथी ए समर्थित छे के पोताना नवा मतना प्रारभकालमा बुद्धे शिष्यो मेळववा माटे ते वखते प्रचलित एवा बीजा मतो तरफ सर्वप्रकारनी योग्य वर्त्तणुक राखवानी कोशीश करी हशे

महावीरना सिद्धान्तोना विकास उपर मारी मान्यतानुसार मक्खलीपुत्त गोसालनी मोटी असर थएली छे भगवती १५,१ मा आपेलो तेना जीवननो इतिहास, होर्नले पोताना उपासगदसाओना भाषातरने अन्ते, एक परिशिष्टमा सक्षेपमा भाषान्तरित करेलो छे तेमा ए प्रमाणे नोंधेलु छे के, गोशाल महावीरनी साथे तेमना शिष्यतरीके श्रमणधर्म पाळतो थको ६ वर्ष सुधी रह्यो हतो परन्तु पछी ते तेमनाथी जूदो थई गयो अने पोतानो नवो धर्म स्थापी जिन तरीके आजीविकोनो नायक कहेवडावा

लाग्यो परन्तु बौद्धग्रन्थोमा तेना सम्बन्धमां एवी नोंध मळी आवे छे के ते नन्द वच्छ अने किस सङ्किच्चनो उत्तराधिकारी हतो अने तेनो सम्प्रदाय साधुवर्गमा चिरस्थापित (लांबा वखत पूर्वे स्थापित थएलो एवो) मनातो होई अचेलक परिव्राजकना नामे प्रसिद्ध हतो जैनोनी ए हकीकत के महावीर अने गोसाळ ए बन्नेए केटलाक वखत सुधी साथे तपश्चर्या करी हती, तेमां शंका करवानुं काई कारण नथी परन्तु तेओ बन्ने वच्चे जे सबंध बतावनामां आवे छे ते वास्तवमा तेनाथी जूदा प्रकारनो होय तेम लागे छे,' मारु एवु मानवु छे, अने" मारा आ अभिप्रायना पक्षमां हुं हमणाज केटलीक दलीलो आपीश–के महावीर अने गोसाळ ए बन्ने पोताना सम्प्रदायोने एक करवाना अने एकने बीजामा मेळवी देवाना इरादाथी परस्पर सहचारी बन्या हता, अने लांबा वखत सुधी आ बन्ने आचार्यो साथे रह्या हता ए बाबत उपरथी चोक्स अनुमान थाय छे के ते बन्नेना मतोनी वच्चे केटलुक साम्य होवुज जोईए आगळ पृ २६ उपरनी टीपमा मे जणाव्यु छे के ' सव्वे सत्ता, सव्वे पाणा, सव्वे भूता, सव्वे जीवा ' ना स्वरूपनुं वर्णन गोसाळ तेमज जैनोनी वच्चे समान छे अने टीकामां जणावेल एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रियादि वर्गरूपे प्राणिओना विभागो के जे जैनग्रन्थोमा घणाज साधारण छे, तेवा विभागोनो गोसाळे

पण उपयोग कर्यो छे चमत्कारी अने लगभग अतन्याभासरूप छ लेश्यानो जैनसिद्धान्त,—जेने पहेलीज वखत दृष्टिगोचर कर्यानु मान प्रो० ल्यूमनने घटे छे—गोसाले करेला सघळी मनुष्यजातिमाटेना छ वर्गोना विभाग साथे संपूर्ण रीते मळतो आवे छे परन्तु आ बाबतना संबंधमा मारु एवु मानवु छे के जैनोए मूळ आ विचार आजीविको पासेथी लीधो हतो, अने पाछळथी पोताना बीजा बधा सिद्धान्तोनी साथे ते संगत बने तेवी रीते तेमा फेरफार कर्यो हतो आचारविषयक सघळा नियमोना संबंधमा जेटला प्रमाणो उपलब्ध थाय छे ते उपरथी लगभग सिद्ध थाय छे के महावीरे अधिक कठोर नियमो गोसालाना लीधा हता कारण के उत्तराध्ययन २३, १३ (पृ १२१) मा जणाव्या प्रमाणे पार्श्वना धर्ममा निर्ग्रन्थोने नीचे अने उपरना भागमा एकैक वस्त्र पेहरवानी छूट हती, परन्तु वर्द्धमानना धर्ममा कपडानो स्पष्ट निषेध करवामा आव्यो हतो नग्नसाधु माटे जैनसूत्रोमा अनेकस्थळे

---

१ गोशालानी पासेथी छलेश्यानो विचार लइन पाछळथी बधा सिद्धान्तनी साथे संगत करी देवानु अने थयेलखना विषयने केवानु लख्यु ते पण विचारवा जेवु छे. केम के बीजाओना विचारो लईने बधा सिद्धांतोनी साथे संगत करवानु आप सुधी कोई पण मतवाळाथी बनी शक्यु नथी अने तेम बने पण नहीं एम अमारु मानवु छे. संपादक.

मळी आवतो शब्द ' अचेलक[1] ' छे जेनो शब्दार्थ ' वस्त्ररहित ' एवो थाय छे बौद्धो अचेलको अने निर्ग्रन्थोने भिन्न भिन्न माने छे उदाहरण तरीके धम्मपद[2] उपरनी बुद्धघोषकृतटीकामा केटलाक भिक्षुओना सबंधमा जणावलु छे के, तेओ अचेलको करतां निर्ग्रन्थोने वधारे पसंद करता हता कारण के अचेलको तद्दन नग्न रहे छे (सब्बसो अपटिच्छन्ना) परन्तु निर्ग्रन्थो कोई जातनु टूकुं आवरण[3] राखे छे, जेने ते भिक्षुओ खोटी रीते 'लज्जानी खातर' मानता हता अचेलकशब्दद्वारा बौद्धो मक्खली गोशाळ अने तेनी पूर्वे थई गएला किस्स संकिच्च अने नन्द वच्छना अनुयायि-

---

१ बीजो एक शब्द ' जिनकल्पिक ' छे जेनो अर्थ ' जिनजेवो आचार पाळनार ' थई शके श्वेताम्बरो कहे छे के जिनकल्पने बदले प्राचीनकालमा ज स्थविरकल्प स्थिर करवामा आव्यो हतो जेनी अंदर वस्त्र राखवानी छूट आपवामा आवी हती

२ जुओ फुसबोलनी आवृत्ति, पृ ३९८

३ मूळमा आवेला 'सेसक पुरिससमपिता य पटिच्छादेन्ति' ए शब्दो बराबर स्पष्ट थता नथी, परन्तु तेम। जोतामां आवतो विरोध निःशकरीते एज भावार्थ सूचवे छे. पालीशब्द ' सेसक ' ते मारा धारवा प्रमाणे सस्कृत ' शिश्नक ' नु रूप छे. आ जो खरु होय तो उपरना शब्दोनु भाषातर नीचे प्रमाणे थई शके ' तेओ (नागोना) आगळ भाग उपर (कपडु) पहेरी मुखाग्रने ढाके छे '

ओने सूचवे छे, अने तेओना धार्मिक आचारोनु वर्णन मज्झिम-
निकायमा समुहित राख्यु छे, तेमा ते स्थले निगन्ठपुत्त सच्चक-
नी ओळखाण आपणने उपर थई गएली छे, ते—कायभावना एटले
शारीरिक पवित्रतानो अचेलकोना आचारने उद्देशीने अर्थ समजावे
छे सच्चकना वर्णनमानी केटलीक विगतो टीकाना अभावे नहीं
समजी शकाय तेवी दुर्बोध छे परन्तु केटलीक तो तद्दन स्पष्ट छे
अने ते केटलाक प्रसिद्ध जैनआचारो साथे सपूर्ण सादृश्य धरावे
छे दाखला तरीके अचेलको पण जैनसाधुओनी माफक भोजननु
आमत्रण स्वीकारता नथी, तेओने माटे अभिहित अथवा
उद्दिस्सकत अन्न लेवानो निषेध छे आ बन्ने शब्दो जैनोना
अभ्याहृत अने औद्देशिक शब्दो (जुओ पृ० १३२ टिप्पण)
समान होय तेम दरेक रीते संभवित छे वळी तेओने मास अने
मदिरा लेवानी छूट नथी ' केटलाक मात्र एकज घरे भिक्षा लेवा
जाय छे अने मात्र एकज ग्रास खोराक ले छे केटलाक वधारेमा
वधारे सात घेर भिक्षा माटे जाय छे केटलाक एकज वार आपेलु
अन्न लईने रहे छे, केटलाक वधारेमा वधारे सात वार सुधी आपेलु
लईने रहे छे ' आ प्रकारनाज जैनसाधुओना केटलाक आचारो
कल्पसूत्रनी समाचारीमा वर्णवेला छे (२६, भाग १, पृ ३००
अने आ ग्रन्थना पृ १७६, गाथाओ १९ अने १९) नीचे

वर्णवेलो अचेल्कोनो आचार अने जैनोनो आचार बराबर एकज छे एम स्पष्ट जणाय छे ' केटलाक हमेश एकज वखत भोजन करे छे अने केटलाक बे दिवसमा एकज वखत भोजन करे छे'- इत्यादि, अने ए रीते वखतामले केटलाक ठेठ एक पखवाडीए एकवार भोजन ले छे '[1] अचेल्कोना आता बधा नियमो अने जैनोना नियमो या तो लगभग एकज छे अगर तो अतिशय मळता छे, अने आ प्रकारनु साम्य जोवामा आवतो होवा छतां, तथा सचक एक निगन्ठपुत्त गणातो होवाना लीधे तेमना धार्मिक आचारोथी ते परिचित होवा छता, कायमावनाना आदर्श तरीके निर्ग्रन्थोनो उल्लेख करतो नथी ते खरेखर आश्चर्यजनक लागे छे परन्तु आ आश्चर्यजनक बाबतने नीचेनी कल्पनाद्वारा आपणे सहेलाईथी समजावी शकीए छीए, अने ते एवी रीते के बौद्ध-ग्रन्थोमा बहुधा जे असलना प्राचीन निर्ग्रन्थोनी बाबतना उल्लेखो मळी आवे छे, ते (निर्ग्रन्थो) जैनसमाजना जे एक वर्गे महावीरना उपदेशोनो स्वीकार कर्यो हतो तेओ नहीं, परन्तु

---

[1] आ प्रकारना उपवासोने जैनो चउत्थभत्त, छट्ठभत्त इत्यादि नामो आपे छे (जुओ ए. ल्युमान संपादित औपपातिकसूत्र ३० I A), अने आ उपवास करनारा साधुओ अनुक्रमे चउत्थभत्तिय छट्ठभत्तिय, इत्यादिनामोथी ओळखाय छे (जुओ दा. ब. कल्पसूत्र समाचारी २१)

ओने सूचवे छे, अने तेओना धार्मिक आचारोनुं वर्णन मज्झिमनिकायमां सग्रहित थएलु छे, तेमां ते स्थले निगन्ठपुत्त सच्चकथीनी ओळखाण आपणने उपर थई गएली छे, ते—कायभावना एटले शारीरिक पवित्रतानो अचेलकोना आचारने उद्देशीने अर्थ समजाव छे सच्चकना वर्णनमानी केटलीक विगतो टीकाना अभावे नहीं समजी शकाय तेवी दुर्बोध छे परन्तु केटलीक तो तद्दन स्पष्ट छे अने ते केटलाक प्रसिद्ध जैनआचारो साथे संपूर्ण सादृश्य धरावे छे दाखला तरीके अचेलको पण जैनसाधुओनी माफक भोजननुं आमंत्रण स्वीकारता नथी, तेओने माटे अभिहित अथवा उद्दिस्सकत अन्न लेवानो निषेध छे आ बन्ने शब्दो जैनोना अभ्याहृत अने औद्देशिक शब्दो (जुओ पृ० १३२ टिप्पण) समान होय तेम दरेक रीते समजित छे वळी तेओने मांस अने मदिरा लेवानी छूट नथी 'केटलाक मात्र एकज घेरे भिक्षा लेवा जाय छे अने मात्र एकज ग्रास खोराक ले छे केटलाक वधारेमा वधारे सात घेर भिक्षा माटे जाय छे केटलाक एकज वार आपेलुं अन्न लईने रहे छे, केटलाक वधारेमा वधारे सात वार सुधी आपेलुं लईने रहे छे' आ प्रकारनाज जैनसाधुओना केटलाक आचारो कल्पसूत्रनी समाचारीमां वर्णवेला छे (२६, भाग १, पृ ३०० अने आ ग्रन्थना पृ १७६, गाथाओ १६ अने १९) नीचे

धर्णवेलो अचेलकोनो आचार अने जैनोनो आचार बराबर एकज छे एम स्पष्ट जणाय छे 'केटलाक हमेशां एकज वखत भोजन करे छे अने केटलाक बे दिवसमां एकज वखत भोजन करे छे'[1] इत्यादि, अने ए रीते वधतानमे केटलाक ठेठ एक पखवाडीए एकवार भोजन ले छे' अचेलकोना आवा बधा नियमो अने जैनोना नियमो या तो लगभग एकज छे अगर तो अतिशय मळता छे, अने आ प्रकारनुं साम्य जोवामां आवतो होवा छतां, तथा सचक एक निगन्ठपुत्त गणातो होवाना लीधे तेमना धार्मिक आचारोथी ते परिचित होवा छतां, कायमासनाना आदर्श तरीके निर्ग्रन्थोनो उल्लेख करतो नथी ते खरेखर आश्चर्यजनक लागे छे परन्तु आ आश्चर्यजनक बाबतने नीचेनी कल्पनाद्वारा आपणे सहेलाईथी समजावी शकीए छीए, अने ते एवी रीते के बौद्ध-ग्रन्थोमां बहुधा जे असलना प्राचीन निर्ग्रन्थोनी बाबतना उल्लेखो मळी आवे छे, ते (निर्ग्रन्थो) जैनसमाजना जे एक वर्ग महावीरना धर्मनोनो स्वीकार कर्यो हतो तेओ नहीं, परन्तु

---

१ आ प्रकारना उपवासोने जैनो चउत्थभत्त, छठ्ठभत्त इत्यादि नामो आपे छे (जुओ ट त ल्युमन सपादित औपपातिकसूत्र ३० I. A), अने आ उपवास करनारा साधुओ अनुक्रमे चउत्थभत्तिय छठ्ठभत्तिय, इत्यादिनामोथी ओळखाय छे (जुओ डा ह कल्पसूत्र समचारी २१)

महावीरना मतना विरोधी न बनता जेओ ते संयुक्तसंप्रदायमां रहीने पण पोताना प्राचीनसंप्रदायना केटलाक खास आचारोने वळगी रह्या हता ते प्रकारना पार्श्वना अनुयायिओ हता आ प्रकारना केटलाक कठोर नियमो के जे प्राचीनधर्मना अंगभूत मनाता न हता अने जेमने महावीरेज दाखल करेला हता, ते समवितरीते तेमणे गोशालना अचेलक अथवा आजीविकनामे प्रसिद्ध अनुयायिओना लीधा हता, अने आनु कारण ते तेओए (महावीरे) जे छ वर्ष सुधी गोसालनी साथे अत्यंत निकट सहचर तरीके रही तपश्चर्या करी हती ते छे आ प्रमाणे आजीविकोना केटलाक धार्मिक विचारो अने आचारोनो स्वीकार करवामां महावीरनो आशय गोसाल अने तेना अनुयायिओने पोताना पक्षमां लेवानो होय एम लागे छे, अने केटलाक समय-सुधी तो आ उद्देश सफल पण थयो होय परन्तु आखरे बंने नेताओनी वच्चे मतभेद थयो हतो, के जेनु कारण घणु करीने ए प्रश्न हतो के आ संयुक्तसंप्रदायनो नेता कोण बने गोसालना साथे थएला आ टुक समयना सबंधथी स्पष्ट रीते महावीरनी पदवी घणी सुस्थित बनी हती परन्तु गोसाले जैन हकीकतो अनुसार पोतानी प्रतिष्ठा गुमावी हती अने आखरे तेना शोकपूर्ण अवसानथी तेना संप्रदायना भावीने सखत फटको लाग्यो

आपणे जो के ते वधु साबित न करी शकिए परन्तु महावीरे अन्यसप्रदायोमाथी घणु लीधु छे ए वात निःसशय छे. जैनधर्म यथार्थमा एक सस्थितिरूप दर्शन नहीं होवाथी तेमा नवा मतो तथा सिद्धान्तोना उमेरा घणा सहेलाईथी थई शके तेम हतु.

जे जे सप्रदाय अगर तो तेना भागो महावीरनी सफल कार्यदक्षताने लईने जैनधर्ममा आवता गया ते सघळा सप्रदायोना केटलाक प्रीतिपात्र विचारो तेमज तेमना प्रियगुरुओ, जेओने तेओ चक्रवर्ती अथवा तीर्थंकरना नामे ओळखता हता, ते सघळा दाखल थई गया होय तो तेमा नवाई नथी अलबत् आ एक मात्र मारु अनुमान छे परन्तु आ अनुमाननी मददथी आपणे जैनोनी आचार्यो साधुओ विषयक विलक्षण परपरानु उत्पत्ति-कारण समजी शकीए छीए. प्रत्यक्षप्रमाणनो ज्या सर्वथा अभाव होय त्या आपणने अनुमानो उपरज आधार राखवो पडे छे,

१ खरेखर महावीर तेमना पोताना भागमा एक महान् व्यक्ति हतो, तेमज तेमना समकालीन पुरुषोमा ते एक उत्तमप्रकारना नेता पण हशे, तेमा शक नथी तेमनी तीर्थंकरपदप्राप्तिमा जेटले अंशे, तेमणे पोताना मतनो प्रसार करवाथी सपादित करेलो तमनो यश कारणभूत थयो छे ' [illegible] सघळु पवित्रजीवन कारणभूत थयु हतु

अने जे अनुमानोमां पण जे अनुमान विशेष सत्य–साभळता स्र लागे एवुं–होय ते स्वीकारवा योग्य बने छे फक्त आ बाबतने छोडीने बाकीनी जे जे बाबतो आ प्रस्तावनाना प्रारंभना भागोमां में मारी कल्पनानुरूप रजू करेली छे ते सघळी आगना करता वधारे प्रमाणभूत छे, ए हुं अहीं खास जणावी दउं छुं ए बधा विचारोमां मारा कोई पण कथनथी जैनपरंपरागत कथन के–जे रेसी पुरावाओना अभावमा आपणने एक मात्र ते ज मार्गदर्शक बने छे–तेने आघात पहोचतो नथी अने बीजुं, मारी एके कल्पना पण एवी नथी के जे ते समयनी परिस्थिति अनुसार असंभवित लागे जैनधर्मना प्राचीन इतिहासनी रचनामां मुख्य स्थान रोकनार जे ए एक हकीकत छे के, महावीरना समयमा पार्श्वनाथना शिष्यो हयाती धरावता हता अने जेनो निर्देश बनावती परंपरा पण विद्यमान होई तेनी सत्यता पण अत्यारना सघळा विद्वानो एके अवाजे स्वीकारे छे, तेनोज मे अहिं उपयोग कर्यो छे

हवे आ रीते जो जैनधर्म ए एक प्राचीनकालथी चाल्यो आवतो धर्म होय अने महावीर तेमज बुद्ध करता वधारे जुनो होय तो तेना तत्त्वज्ञानना स्वरूपमा पण काइक प्राचीनताना

चिन्हो देखावा जोईए आतु एक चिन्ह ए धर्ममा तास मळी आवे छे, अने ते तेनो, सघळी वस्तु चैतन्ययुक्त छे, एम बतावतो सचेतनवाद छे ते वाद जणावे छे के–मात्र वनस्पतिमात्र नहीं परन्तु पृथ्वी, पाणी, अग्नि, अने वायुना कणोमा पण आत्मतत्त्व रहेलु छे मानवजातिशास्त्र (Ethnology) आपणने एम शीखवे छे के जंगलीलोकोनी तत्त्वज्ञानविषयक सघळी मान्यताओ सचेतनवादमूलक होय छे आ सचेतनवाद जेम जेम जनसंस्कृति वधती जाय छे, तेम तेम शुद्ध मनुष्यत्त्व रूपमान मात्र परिणत थतो जाय छे आथी करीने जो जैनधर्मनुं नीतिशास्त्र मोटे भागे आ प्राचीन सचेतनवाद–मूलक होय तो जैनधर्मनी पहेल वहेली उत्पत्तिना समये ते सचेतनवादनो सिद्धान्त हिन्दुस्थाननी प्रजाना मोटा भागोमा विस्तृतरूपे विद्यमान होवो जोईए आ परिस्थिति ते अति प्राचीन समयनी होई शके के जे वखते हिन्दुस्थानना मनुष्योना मन उपर उंचा प्रकारनी धार्मिक मान्यताओए अने पूजानी पद्धतिओए असर करी नहोती

जैनधर्मनी प्राचीनतानु बीजु चिन्ह ते तेनी वेदान्त अने सांख्य जेवा बे सौथी प्राचीन ब्राह्मणदर्शनोनी साथे रहेली सिद्धान्तविषयक समानता छे ते प्राचीनकालमां तत्त्वज्ञानना

(Metaphysics) विकासक्रममा गुणनामना पदार्थनो जेवो जोईए तेवो खुल्लो अने स्पष्ट ख्याल थई चूक्यो नहोतो, परन्तु ते पदार्थ द्रव्यपदार्थमांथी उत्क्रान्त थई रह्यो हतो एम लागे छे जे जे वस्तुने आपणे गुण तरीके ओळखीए छीए ते, ते वखते भूलथी वारंवार द्रव्य तरीके मनाई जती अने केटलीक वखते द्रव्य साथे तेनु मिश्रण पण थई जतु वेदान्तमा परब्रह्मने शुद्धसत्ता, ज्ञान, अने आनन्दरूप स्वाभाविकगुणथी सयुक्त नहीं, परन्तु सत्, चित्, अने आनन्दस्वरूपज मानवामा आव्यु छे सांख्यमा पुरुष अथवा आत्माना स्वभावनु वर्णन करती वखते तेने ज्ञान अथवा तेजोरूप बनाववामां आव्यो छे अने वो के—सत्त्व, रजस्, अने तमस्, ए त्रण पदार्थोने गुणरूपे गणाव्या छे खरा, परन्तु गुणनु जे लक्षण आपणे स्वीकारीए छीए ते अनुसार ते गुणो थई शकता नथी

प्रो० गार्बेना जणाव्या प्रमाणे वास्तवमा ते मूळप्रकृतिना अवयवो ज छे आ ज प्रकारना सिद्धान्तो घणा सामान्यरीते जैनोना प्राचीनसूत्रोमा द्रव्य अने तेना पर्यायोनो ज मात्र उल्लेख करेलो होय छे सूत्रोमा गुणपदार्थनो ज्यारे कोईक ज ठेकाणे उल्लेख थएलो मळी आवे छे त्यारे पाछळना बीजा बधा ग्रंथोमा

ते नियमित रीते वर्णवेलो होय छे आ उपरथी एम स्पष्ट जणाय
छे के ते पाछळना काळमा स्वीकारवामा आव्यो होवो जोईए, अने
तेनु कारण न्याय वैशेषिक दर्शनोना तत्त्वज्ञान अने साहित्यनी जे
असर धीमे धीमे भारतवर्षना वैज्ञानिकविचारो उपर थती हती
तेज होवु जोइए पर्याय एटले विकार अगर अवस्थान्तरनी मान्य-
तामा गुण जेवा स्वतन्त्रपदार्थने स्थान ज मळी शके नेम नथी
कारण के द्रव्य दरेककाळमा तेना पर्यायना स्वरूपमां ज रहे छे,
अने तेथी करीने पर्याय गुणात्मक होय छे, अर्थात् पर्यायोनी
अंदर गुणोनो समावेश थई ज जाय छे अने आज विचार
प्राचीनसूत्रोमा लीधेलो होय तेम जणाय छे अन्य एक
उदाहरण, जैनोए जे अदृश्यन्नयुक्त पदार्थ उपर द्रव्यत्वनो आरोप
करी, वास्तविकरीते जे वस्तु गुणना वर्गमा आवी जाय छे तेवी
'धर्म' अने 'अधर्म' ए बे वस्तुओ, विषयक छे आ बे
वस्तुओने जैनोए द्रव्य तरीके वर्णवी छे के जेनो भाव जीवनो
सबब रहेलो होय छे. आ द्रव्योने आकाशनी साथेन सरखा

---

१ आ कल्पना मूळ वैदिक हिंदुओना हती, एम ओल्डनबर्गे पोताना Dio Religiou des veda नामना पुस्तकना पृ. ३१० उपर जणाव्यु छे

लोकव्यापी मानेला छे वैशेषिको पण आकाशने द्रव्य माने छे जो ते समयमा द्रव्य अने गुण ए बन्ने पदार्थोनुं भिन्न भिन्न वर्गीकरण थयुं होत अने बन्ने अन्योन्याश्रित मनाता होत, के जेम वैशेषिको माने छे, (गुणाश्रय द्रव्य अने द्रव्यान्तर्वर्ती गुण) तो उपर जणावेल गोटाळा भरेला विचारो जैनोए कदापि स्वीकार्या नहीं होत

उपरोक्त विवेचन उपरथी स्पष्ट जोई शकाय छे के वैशेषिक दर्शन साथे जैनोना केटलाक विचारो मळता आवता होवाथी जैनधर्मनी उत्पत्ति तेना पछी थई छे, एवो जे मत डॉ भांडारकरे[1] उपस्थित करेलो छे तेनी साथे हु समत थई शकुं तेम नथी

वैशेषिकदर्शनना स्वरूपनु सक्षिप्त वर्णन नीचे प्रमाणे आपी शकाय के संस्कृतभाषा बोलनार तथा समजनार बधा माणसोए मनन करेला सर्वसाधारण विचारोनी जे पद्धतिसर व्यवस्था अने तेनुं जे तात्त्विक प्रतिपादन–निरूपण, एज वैशेषिकदर्शन छे आ प्रकारनु पदार्थविज्ञानशास्त्र प्राप्त करवानु काम तो घणा प्राचीन काळथी शुरु थयुं हशे अने कणादना सूत्रोमा जेवु ए शास्त्र सपूर्णरूपे प्रतिपादित थयु छे तेवु तैयार थता पहेला

1 जुओ तेमनो रिपोर्ट, सन १८८३–८४, पृ १०१

मनुष्योने घणी सदीओ सुधी भीरजनी मानसिक परिश्रम उठाववो पड्यो हशे, तेमज तत्त्वज्ञानविषयक सतत चर्चाओ चलाववी पडी हशे आपी वैशेषिकदर्शननी आदि अने अन्तिम स्थापनानी वचेना काळमा जो वैशेषिक विचारो लई लेवानो खोटो या खरो आरोप जैनो उपर मुकवामा आवे तो ते कदाच तेम समजि शकु खरु आ स्थळे बीजी एक बाबतनो उल्लेख करवो अस्थाने नहीं गणाय, अने ते ए छे के जे मुद्दाओ हु अने चर्चवा इच्छुं छु ते मुद्दाओने लईने डॉ० भाण्डारकरनो एवो मत थएलो छे के "जैनोना विचारो ते एक बाजु साख्य अने वेदान्तदर्शन अने बीजी बाजु वैशेषिकदर्शन एम बे पक्षनी वचेना समन्वयना आकारना छे" परन्तु प्रस्तुत चर्चाने माटे तो ते बन्ने प्रकारना विचारो सरखा छे—एटले के साक्षात् लेवु अगर बे प्रकारना विरुद्ध विचारोनुं तडजोड करवु ए एकज छे उपरोक्त मुद्दाओ नीचे प्रमाणे छे—

(१) जैनदर्शन अने वैशेषिकदर्शन ए बन्ने मिथ्यावादी छे. अर्थात् ते बन्नेनु मानवु छे क आत्मा उपर कर्म, कषायो तथा वासनादिनी साक्षात् असर थाय छे (२) बन्ने दर्शनो असत्कार्यना सिद्धान्तने माने छे. एटले के तेमना मते कार्य ते

तेना उपादान कारणथी भिन्न छे परन्तु वेदान्त अने साख्य बंने सत्कार्यवादने माने छे अर्थात् कार्य कारणने भिन्न माने छे (३) ए बन्ने दर्शनोमा गुण अने द्रव्यनो पृथक् विभाग थएलो छे ए छेल्ली बाबत तो आपणे उपर चर्ची गया छीए, तेथी हवे आपणे प्रथम बे मुद्दाओना संबधमां विचार करवानो रह्यो छे

(१) अने (२) मा जे मन्तव्योनु निरूपण करेलु छ, ते व्यवहारिक ज्ञान—साधारण बुद्धिना विचारो छे (अर्थात् सहु कोई समजी शके तेवा छे) कारण के आपणा उपर वासनाओनी साक्षात् असर थाय छेज, तेमज कारणथी कार्य भिन्न छे ते पण आपणा अनुभवनी बहारनी वात नथी उ त बीज अने वृक्ष ए बंने परस्पर भिन्न छे, एम दरेक विवेकी माणस जाणे छे, अने ते मात्र सामान्य अनुभवनो विषय छे तेम पण शास्त्र विना नहीं रहे आवा विचारोने अमुकदर्शनना खास लक्षणरूपे मानी शकायज नहीं, अने एक बीजा मतोमां आवा विचारो समानरूपे जोवामां आवे ते ते उपरथी ते, एक बीजाना मतमाथी लीधेला छे तेम पण कही शकाय नहीं परन्तु जो बे भिन्न दर्शनोमां परस्पर विपरीते विचारदर्शी एकत्र सिद्धान्त आव्यो होय

तो ते एकज दर्शनमांथी उत्पन्न थएलो होय छे अने ते तेमां सुप्रतिष्ठित थया पछीज अन्यद्वारा स्वीकृत थाय छे दिग् अने आकाश ए बन्ने भिन्न द्रव्यो छे, ए जातनो वैशेषिकोनो खास स्वतंत्र तर्कसिद्ध सिद्धान्त छे ते जैनदर्शनमा बिलकुल देखातो नथी वेदान्त अने साख्य जेवा अधिक प्राचीन दर्शनोमा तथा जैनदर्शनमा आकाश अने दिक् वच्चे बिलकुल भेद करवामा आव्यो नथी ए दर्शनोमा एकलु आकाशज बन्नेनु प्रयोजन सारे छे

वैशेषिक अने जैनदर्शननी वच्चे मूल सिद्धान्तोमा भेदसूचक एवा केटलाक उदाहरणो नीचे प्रमाणे छे पहेलाना मते आत्माओ अनत अने सर्वव्यापी (विभु) छे परन्तु बीजाना (जैनोना) मते तेओ मर्यादित परिमाणवाळा छे वैशेषिको धर्म अने अधर्मने आत्माना गुणो माने छे परन्तु उपर जणाव्यु तेम जैनो ते बन्नेने एक जातना द्रव्यो माने छे एक बाबतमा, एक विरुद्ध वैशेषिक विचार अने तद्भिन्न जैनसिद्धान्त वच्चे केटलुक सादृश्य जोवामां आवे छे वैशेषिकमतमा चार प्रकारना शरीरो मानेला छे पार्थिव शरीर जेवु के मनुष्य पशुआदिनु, जलात्मकशरीर जेम वरुणनी सृष्टिमा छे, अग्निशरीर जेम अग्निनी सृष्टिमा छे, अने वायवीयशरीर जेम वायुनी सृष्टिमां मळी आवे छे आ

विचित्र विचार साथे सदृक्षता धरावनारो जैनदर्शनमा पण एक विचार छे जैनो पृथ्वीकाय, अप्काय, तेजस्काय, अने वायुकाय, एम चार काय माने छे आ चार ४ मौलिक पदार्थो के जे मूळ तत्त्वो छे अथवा तो तेना पण सूक्ष्म भागो छे तेनी अंदर एक एक विशिष्ट आत्मा रहेलो छे एम तेओ माने छे आ जड-चैतन्यवादनो सिद्धांत उपर जणाव्या प्रमाणे असल सचेतनवादनु परिणाम छे वैशेपिकोनो एतद्विषयकविचार जो के मूळ एकज विचारप्रवाहमाथी उत्पन्न थएलो छे खरो, परन्तु तेमणे ते विचार लौकिकपुराणोना अनुरूपे गोठवलो छे आ बन्नेमा जैनमत वधारे प्राचीन छे अने ते वैशेपिक दर्शनना चार प्रकारना शरीरवाळा मतना करता पण तत्त्वज्ञानना वधारे पुरातन विकासनमना समयनो छे मारा अभिप्राय मुजब वैशेपिक अने जैनदर्शननी वच्चे एवो कोई पण सबंध न हतो के जेथी एक दर्शने बीजामाथी विचारो लीवा छे, एम स्थापित करी शकाय छता पण हु एम कबूल करु छु के ए बे दर्शनो वच्चे केटलुक विचारसादृश्य अवश्य रहेलु छे वेदान्त अने साख्यना मूळ तत्त्वभूत विचारो जैनविचारोथी तद्दन विरुद्ध छे, अने तेथी करीने जैनो पोताना सिद्धान्तने काई पण आच आव्या दीधा सिवाय तेमना विचारो स्वीकारी शकेज नहीं परन्तु वैशेपिक ए एवा प्रकारनु दर्शन छे के जेथी जैनसिद्धान्त

पोताना मनने आघात पहोंचाड्या सिवाय केटलीक हद सुधी तेनी साथे समत थई शके छे अने आथीज न्याय-वैशेषिकदर्शन उपरना ग्रन्थकारोमा जैनोना पण नामो जोवामा आवे तो तेमा; नवाई पामवा जेवु नथी जैनो तो आनाथी पण आगळ वधीने त्या सुधी जणाव छे के वैशेषिकदर्शन स्थापनार तेमना मतनो एक कोशिकगोत्रीय छडुल्लुय रोहगुप्त नामनो निन्हव हतो जेणे वि स ५४४ (ई स ४८८) मा त्रैराशिकमत नामनो छठो नेन्हविक सम्प्रदाय स्थाप्यो हतो आ दर्शननु जे वर्णन आवश्यक-सूत्र VV 77-88 मा आपेलु छे ते वाचवाथी जणाय छे क ते सघळु वर्णन कणादना वैशेषिक दर्शनमाथी लीधेलु छे कारण के तेमा (सात नहीं पण) ७ पदार्थो अने तेना पदभेदोनु वर्णन-आपेलु छे, अने आ उपरान्त गुणना वर्गमा (२४ नहीं परन्तु) १७ वस्तुओनु वर्णन करवामा आवलु छे, जे वैशेषिकदर्शन १,१ मा आपेली हकीकत साथे बराबर मळी रहे छे

मारु मानवु छे के जैनो अनेक बीजी बाबतोनी माफक, हिंदुस्ताननना प्रत्येक प्रसिद्ध पुरुषने पोताना धर्मना इतिहास साथे जोडी देवानी बाबतमा पोताने ने तेना करता अधिक माननो हक करे छे, उपरोक्त जैनदन्तकथाने असत्य मानवामा माग

कारणो नीचे मुजब छे — वैशेषिकदर्शन वास्तवमा एक आस्तिक ब्राह्मणदर्शन मनाय छे अने ते मुख्यत्वे करीने स्वधर्मचुस्त हिंदुओद्वारा विरचित थयु छे आम होवाथी तेमणे सूत्रकारनुं जे नाम तथा काश्यप एवु जे गोत्र बताव्यु छे ते सत्रवमा तेओ असत्यालाप करे छे, एवी शंका करवानु जराए कारण जणातु नथी अने बीजु ए के समग्रब्राह्मणसाहित्यमा क्यांए उल्लेख मळी आवतो नथी के वैशेषिकदर्शनना कर्तानु नाम षड्गुप्त हतु तथा तेनु गोत्र कौशिक हतु तेमज रोहगुप्त अने कणाद ए बन्ने नामो एकज व्यक्तिना होय एम पण मानी शकाय नहीं, कारण के तेओना गोत्र स्पष्ट भिन्न भिन्न जोनामा आवे छे 'कणादनो अनुयायी ते काणाद' ए शब्द, व्युत्पत्तिशास्त्रना अनुसारे कावमक्षक एटले घुवड वाचक छे, अने एथी ते दर्शननु उपहासात्मक नाम औलूक्यदर्शन पडलु छ रोहगुप्तनु बीजु नाम छडुलूय छे, जेनु संस्कृतरूप षडुलूक[2] थाय छे तेमा घुवड अने घणु करीने काणादोनु सूचन थाय छे ए स्फुट छे,

---

१ जुओ कल्पसूत्रनी मारी आवृत्ति पृ ११९

२ अक्षरश छ घुवड था शब्दनो पहलो 'छ' शब्द वैशेषिकदर्शनना छ पदार्थोना सूचक छे

परन्तु उलूकशब्द जैनोए रोहगुप्तना गोत्रने अर्थात् कौशिकने[1] उद्देशीने लखेलो होय तेम जणाय छे कौशिक शब्दनो अर्थ पण घुवड थाय छे परन्तु आ बाबतमा जैनोनी दन्तकथा करता सर्वब्राह्मणसमत परपरा वधारे पसद करवा लायक होवाथी, आपणे जैनोना परंपरागत कथनने एवी रीते समजावी शकीए के रोहगुप्ते आ वैशेषिकदर्शनन नवु प्रवर्त्युं न होतु परन्तु पोताना जैन्हविकविचारोने समर्थित करवा वैशेषिकमतनो मात्र अगीकार कर्यो हतो

आ भागमा भाषान्तरित करेला उत्तराध्ययन अने सूत्रकृताग सूत्रना विषयमा प्रो॰ वेबरे Indische Studien, Vol XVI p 259 ff. अने Vol XVII p 43 ff मा जे लख्यु छे ते उपरान्त मारे काइ विशेष उमेरवानु नथी आ बन्नेमा, सूत्र-कृताग ए बीजु अग गणाय छे अने जैनआगमोमा अगोने प्रथम–प्रधान–स्थान आपवामा आवे छे, तेथी ते उत्तराध्ययनसूत्र के जे प्रथम मूलसूत्र गणातु होई सिद्धान्तमा तेने छेल्लु स्थान मळेलु छे, तेना करता वधारे प्राचीन छे चोथा अगमा आपेला

---

[1] भाग १ पृ॰ २९०, परन्तु प्रो॰ ल्युमने I C P 121 उपर भाषान्तर करेली एज दन्तकथामा तेनु गोत्र 'छलुक' तरीके लख्यु छे.

सिद्धान्तोना सार उपरथी जणाय छे के सूत्रकृतागनो मुख्य उद्देश नवीनसाधुओने विरोधी आचार्योना पाखडीमतोथी सरक्षित राखवानो अने ते रीते सम्यग्दर्शनमा स्थिर बनावी तेमने परमश्रेय प्राप्त कराववानो छे आ हकीकत एकदर साची छे, परन्तु सर्वांग पूर्ण नथी, ए आपणे आ पुस्तकनी शरुआतमा आपेली विषयसूची उपरथी जोई शकीए छीए ग्रन्थनी शरुआतमा विरोधीमतोनु निराकरण आपवामा आवलु छे अने तेनो तेज विषय फरीथी अधिक विस्तार साथे बीजा श्रुतस्कधना प्रथम अध्ययनमा चर्चवामा आवलो छे प्रथम श्रुतस्कधमा आवी पछी पवित्र जीवन गाळवा सबधी, साधुना परिषहो सबधी, जेमा खास करीने तेमना मार्गमा बनाववामा आवता प्रलोभनो, तथा असाधुजनो तरफथी मळता शारीरिक कष्टो, सबधी तथा धर्मना आदर्शभूत महावीरनी स्तुतिविषयक अध्ययनो आवेला छे, तेनी पछी बीजा पण तेवाज विषयोपर अध्ययनो छे बीजो श्रुतस्कध जे लगभग सपूर्ण गद्यमाज लखाएलो छे तेमा पण आवाज प्रकारना विषयोनु निरूपण करेलु छे, परन्तु तेना विविध भागो वचे कोई पण देखीतो सबध जोवामा आवतो नथी आ उपरथी ते श्रुतस्कध अनुपूर्त्तिरूपे गणी शकाय अने

तेथी ते पाछळना काळमा प्रथम स्कंधमा थएलो एक उमेरो छे. प्रथम स्कन्धनो उद्देश स्पष्ट रीते जुवानसाधुओने मार्ग बताववानो छे[1] तेनी रचनाशैली पण आज प्रयोजनने उपकारक थाय तेवी राखवामा आवी छे तथा त्रण छंदोनो पण उपयोग करवामा आव्यो छे, जेथी तेमा कवित्वनो पण समावेश थएलो छे एम मानवु जोईए आमाथी केटलीक गाथाओनु रूप कृत्रिम लागे छे अने ते उपरथी ए ग्रन्थ एकज कर्तानो रचेलो होय तेम आपणे मानी शकीए छीए बीजो स्कंध प्रथम स्कंधमा चर्चेला विषयो उपर लखेला निबंधोनो एक समूह होय एम जणाय छे

उत्तराध्ययन अने सूत्रकृताग बन्ने सूत्रोनो उद्देश तथा तेमा चर्चाएला केटलाक विषयो परस्पर समान छे, परन्तु सूत्रकृतागना मूळभाग करता उत्तराध्ययन वधारे लाबु छे तेमज ते सूत्रनी योजना पण वधारे कुशळतापूर्वक करवामा आवी छे तेनो मुख्य आशय नवीन साधुने तेनी मुख्य फरजोनो बोध आपवानो तथा विधि अने उदाहरणो द्वारा यतिजीवननी प्रशसा करवानो, तेना दीक्षाकाळ दरम्यान आवता विघ्नो सामे चेतवणी आपवानो

---

१ पुराणी परपरा अनुसार दीक्षा लीधा पछी चार वर्ष वीत्या बाद सूत्रकृतागनु अध्ययन करावबामा आवतु हतु

तथा केटलुक तात्त्विक ज्ञान आपवानो पण छे पाछडी मतोनु घणाक ठेकाणे सूचनमात्र करवामा आव्यु छे परन्तु तेमने विस्तृतरीते चर्चवामा आव्या नथी त दिशामाथी आवता विरनो जेम जेम वखत जता गाज्यो तम तेम स्पष्ट रीते ओळखता गया अने जैनधर्मनी मर्यादाओ सुदृढरीते स्थिर थती गई. नवीनसाधुओने जीवाजीवनु बराबर ज्ञान थवाने उपयोगी मनातु होय तेम लागे छे कारण के आ विषय उपर एक मोटु अध्ययन आ ग्रथना अन्ते आपवामा आव्यु छे पा क आ आखा ग्रन्थमा आवेला जुदा जुदा घणा अध्ययनोनी पसन्गी तथा गोठवणीमा कादक योजना जेवी देखाय छे लागे परन्तु ते सघळा अध्ययनो एकज कर्त्ताना रचेला छे क लेखी अगर मौखिक परपरागत साहित्यमाथी चूटी काढेला छे ए एक विचारणीय बाबत छे कारण क आवा प्रकारनु साहित्य जैनसम्प्रदायमा, तेमज अन्य सम्प्रदायोमा पण धर्मशास्त्रग्रन्थोनी रचनानी पूर्वे वर्त्तमान होवु ज जोइए मारु एम मानवु छे के आ अध्ययनो प्राचीनपरपरागत-साहित्यमाथीज उद्धृत करी लीधेला छे, कारण के तेनी वर्णनशैली तथा भाषाशैली परस्पर भिन्न होय तेम स्पष्ट जणाई आवे छे अने ते बाबत एकज कर्त्तानी कल्पनामाथे सगत थई शकती

नथी अने आम मानवानु बीजु कारण ए छे के वर्तमानसिद्धान्तोमा घणा ग्रथो आज प्रकारे उत्पन्न थया छे एम मान्या विना छुटको नथी कया समयमा आ प्रस्तुतग्रथो रचवामा, आव्या अथवा तो वर्तमानस्वरूपमा मुकवामा आव्या ते प्रश्ननो सतोषदायक निर्णय करी शकाय तेम नथी परतु आ ग्रथनो वाचनार स्वाभाविकरीते आ बाबतमा भाषातरकारनो अभिप्राय जाणवानी आशा राखतो होवाथी, हु अत्यन्तसकोचपूर्वक मारो मत जाहेर करु छु के, सिद्धान्तग्रथोना घणाखरा भागो, प्रकरणो तथा आलापको खरेखर जुना छे अगोनु आलेखन प्राचीनकालमा (परपरानुसार भद्रबाहुना समयमा) थयु हतु, सिद्धातना अन्य ग्रथो कालक्रमे घणु करीने ई स पूर्वेनी पहेली शताब्दिमा सग्रहित थया हता परन्तु देवर्द्धिगणिए सिद्धातोनी आ छेल्ली आवृत्ति तैयार करी (वि स ९८० ई स ९२४) त्यासुधी तेमा उमेराओ तथा फेरफारो थता गया हता

उत्तराध्ययन अने सूत्रकृतागनु भाषान्तर, म, मने मळेली सौथी प्राचीन टीकाओमा स्वीकारेला मूळना आधारे करेलु छे आ मूळ हस्तलिखित अन्यप्रतिओ तथा मुद्रितप्रतिओना मूळथी थोडेर अशेन भिन्न छे मे एकत्रित करेली केटलीक हस्त-

लिखित प्रतिओ उपरथी एक स्वतन्त्र मूळ तैयार करी लीधु हतु के जे मने मुद्रितमूळ साथे मेळवी जोवामा घणु उपयोगी थई पडयु छे

उत्तराध्ययनसूत्रनी कलकत्तावाळी आवृत्ति (सवत् १९३६ ई १८७९) मा गुजराती विवरण उपरात खरतरगच्छीय लक्ष्मीकीर्त्तिगणिना शिष्य लक्ष्मीवल्लभनी रचेली सूत्रदीपिका आपेली छे आ टीकाथी वधारे प्राचीन देवेन्द्रनी टीका छे अने तेज टीका उपर म मुख्य आधार राख्यो छे ए टीका स ११७९ एटले ई स ११२३ मा रचाई छे अने ते प्रकटरीत शान्त्याचार्यनी बृहद्वृत्तिना साराशरूप छे शान्त्याचार्यवाळी वृत्ति म वापरी नथी मारी पासे स्ट्रासबर्ग युनिवर्सिटी लाइब्रेरीनी मालिकीनी अवचूरिनी पण एक सुन्दर प्राचीन हस्तलिखित प्रति छे आ ग्रथ पण स्पष्टरीत शान्त्याचार्यनी वृत्तिनो सक्षेप मात्र छे कारणके लगभग ए तेज अक्षरश मळतो आवतो जणाय छे

सूत्रकृतागनी मुबईवाळी आवृत्ति (स १९३६, ई स १८८०) मा त्रण टीकाओ आपेली छे (१) शीलाकनी टीका, जेमा भद्रबाहुनी निर्युक्ति पण आवली छे आ टीका सर्वे विद्यमानटीकाओमा सौथी प्राचीन छे परन्तु आना पहेला पण बीजी टीकाओ थएली हती कारणके शीलाक केटलेक स्थळे प्राचीनटीकाकारोनो उल्लेख करे छे शीलाक नामी शतादिना

पश्चार्द्धमा थई गया होय एम जणाय छे, कारणके तेमणे आचारांगसूत्रनी टीका शक वर्ष ७९८ एटले ई स ८७६ मा समास करी हती एम कहेवाय छे (२) ए टीकामाथी हर्षकुशले करेलो संक्षेप जेनु नाम दीपिका छे, ते संवत १९८३ अथवा ई स. १९२७ मा रचेलो छे मारी पासे दीपिकानी एक प्रति छे जेनो म उपयोग कर्यो छे (३) पार्श्वचंद्रनो बालावबोध--एटले गुजराती टीका माहितीना मुख्यमयतरीके मे साधारण रीते शीलांकनीज टीका वापरी छे ज्यारे शीलांक अने हर्षकुल बन्ने मळता आवे छे त्यारे टिप्पणमा म तेमने बतावना ' टीकाकारो ' एम लख्यु छे ज्यारे शीलांकनो अमुक टीकाश हर्षकुले पडतो मूकेलो होय छे त्यारे हु मात्र शीलांकनुज नाम आपु छु, अने ज्यारे कोई उपयोगनी असल हकिकत हर्षकुलज आपे छे त्यारे त्या आगळ मे तेनुज नाम आपेलु छे मारे आ स्थले खास जणावी देवु जोईए के मारी एक हस्तलिखित प्रतिमा हांसियामा तथा ए बे टीटीओनी वचे केटलीक संस्कृत नोटो आपेली छे के जेनी मददथी हु कटलीक वखते मूळनो खास अर्थ निश्चित करी शक्यो -

बोन
नवेंबर १८९४ } एच् जेकोबी.

धर्मसंबन्धि तुलनात्मकशास्त्रमा

जैनधर्मनु महत्त्व तथा दरज्जो

(डॉ ओ परटोल्ड एम ए पी एच् डी साहेबे धूलिया-मुकामे ता २१-८-२१ ना रोजे आपेलु भाषण[1])

विषय—धर्मसंबंधी तुलनात्मकशास्त्रमा जैनधर्मनो दरज्जो अने महत्त्व

धर्मोनी सरखामणीना विज्ञानमा जेनधर्मवाळाने क्यु स्थान आपी शकाय अने तेना विज्ञानमा केटलु महत्त्व छे ए बतावबानो मारो प्रयत्न छे आ विषयमा प्रवेश करता पहेला सामान्यथी धर्मनी सरखामणीनु विज्ञान एटले शु ? अने ते विज्ञानना हेतु कया कया ? ए विषयनु थोडु विवेचन करु छु अने तेना माटे सामान्यथी धर्मना विकासनु ऐतिहासिक दृष्टिथी स्थूल स्वरूप कहुं छु

धर्मोनी सरखामणीनु विज्ञान ए शास्त्र नवीनज छे अने ते

---

१ आ भाषण मूळ इंग्लिश उपरथी मराठी अनुवाद करावी धूलियाना श्रावक तरफथी छपावेल छे तेनु गुजराती भाषांतर छे

शास्त्रना उत्पादक सस्कृतना मोटा पण्डित प्रो मेक्समूल्लर साहेब हता तोपण ए शास्त्र खिस्तीना १८ मा शतकमा ईश्वरविज्ञान-नामक अंग्रेजी तत्त्वविवेचनपद्धतिमा अने जर्मनीना धार्मिकतत्त्व-विज्ञानमा बीजरूपथी जोवामा आवे छे, परन्तु ते बीजरूप विचा-रोने प्रो मेक्समूल्लरे पद्धतिसर स्वरूप आपेलु अने ते शास्त्रने मानवज्ञानमा एक स्वतन्त्र शास्त्र तरीके तेओए बनावीने मुंकी दीधु मेक्समूल्लर साहेबना पछी घणा विद्वानोए अने विशेष करीने यूरोपियनविद्यापीठमाना प्राचीनविद्याविशारदोए आ शास्त्रने वृद्धिगत कर्यु आ विद्वान्लोको पैकी हालंडदेशमाना लायडन विद्यापीठना माजी प्रो टीले–एओनु काम विशेष महत्वनु होईने तेओए आ सर्वधर्मविज्ञाननी पुनर्घटनाज करी छे अने धर्म-विज्ञानना सोपपत्तिक (पद्धतिसर) सशोधननो खरो पायो नाखेलो छे, यूरोपखडमाना विद्यापीठमा प्राचीनविद्याना एक भाग तरीके मानीने धर्मविज्ञानशास्त्रनो अभ्यास शुरु थता ग्रेटब्रीटनमा शरुआ-तथीज तेने स्वतत्र शास्त्र तरीके समजवामा आवतु गयु छे ते देशमा आ शास्त्रनी वृद्धि माटे बे गृहस्थोए बे स्वतन्त्र सम्थाओ पण स्थापन करेली छे ते सस्था एटले इंग्लाडमानी हिबर्टनी व्याख्यानमाला अने स्कॉटलंडमानी गिफर्डनी व्याख्यानमाला छे.

आ शास्त्रनो हेतु विविध प्रकारनो थएलो छे जगतमाना सर्वधर्मोनु सविस्तरपणे ज्ञान ग्रहण करवु अथवा तेओनु वर्गीकरण करवु अने ते उपरथी सामान्यथी धर्ममानु मुख्य अने खरु तत्त्व शु छे ते शोधी काढवु, ते प्रमाणे आ तत्त्वानुसार धर्मनी योग्य व्याख्या ठरावीन हालमा धर्म तरीक प्रसिद्ध थएला मतोमा खरो धर्म कयो अने केवळ नाममात्रनो कयो ए बतावयो अने सामान्य पणे धर्मना विकासनो काल कयो ए ठराववो एवो आ शास्त्रनो उद्देश थएलो छे आ मुख्य उद्देशन पछीन बीजा जे अनेक प्रश्नो उत्पन थाय छे अन ते प्रश्नोना उत्तरो आ शास्त्रवडे आपवा पडे छे, अने धर्मना सविस्तर ज्ञाननु ध्येय जोटवानु काम सुगम थाय एटला माटे बीजी पण घणी शोधो ते शास्त्रवाळा-ओने करवी पडे छे

आ धर्मविज्ञानना शास्त्रमानो एक अत्यन्त महत्वनो प्रश्न एटले बने पक्ष तरफथी मर्यादा ठरावची ए छे वधारे सहेली भाषामा कहेवु होय तो धर्मनामने यथार्थ योग्य बाबतोना अत्युच्च अने अत्यन्त कनिष्ठ स्वरूपो निश्चित करवा ए आ शास्त्रमानो बहु महत्वनो प्रश्न छे

हव धर्मना अत्युच्च स्वरूप विषये विचार करता निःसशयपणे

एनु जोवामा आव छे, के ऐतिहासिक कालमा पण छेवट कोई पण मनुष्यजाति धर्मविहीन हती एम देखातु नथी तेथी धर्मनु कनिष्ठ स्वरूप ठरावनु एटलुज काम प्रथम बाकी रहे छे ए काम प्रथम प्रो० मॅरेट नामना अग्रजविद्वाने नवीन सारी रीते करी मुकेलु छे आ पण्डितना मतथी कनिष्ठ धर्मनु स्वरूप आस्ट्रेलियादेशमाना सम्आतना लोकोना टॅबू अने मान ए शब्दोमा दृष्टिगोचर थाय छे आ बे शब्दोना निषेध अने स्फूर्ति एवा अनुक्रमे अर्थ होईने पेहला उपरथी धार्मिक बन्धनोनो अने बीजा उपरथी दैनिकशक्ति अने इन्द्रजालविद्यानो बोध थाय छे

आ प्रमाणे धर्मकल्पनानु कनिष्ठ स्वरूप समजाया पछी तेनो (धर्मनो) उच्चतम स्वरूप ठराववानो बाकी रहे छे अने ते काम बहुज कठीन छे कमके पोत पोताने ' अत्युच्च ' एवु समजनारा अनेक धर्मो हाल विद्यमान छे, पण धर्म कल्पनानु उच्चपणु अगर उदात्तपणु, ए बेनो धर्मनी उच्चतम मर्यादानी साथे कई पण सबन्ध नथी तथी करीन खरेखर कयो धर्म अत्युच्च छे ए ठराववु जो के सर्वथा अशक्य नथी तो पण बहु कठिन छे ए वात खरी छे मारो पोतानो मत तो एवो छे के मनुष्यप्राणीनी सामान्य

सुधारणाने अनुसरी धर्मसुधारणाना पण नानाप्रकारनां पायीया छे धर्मनी अत्युच मर्यादा उपरथी धर्मकल्पनानी वृद्धि, धर्मनु स्वरूप नष्ट न थाय एवी रीते क्या सुधी थई शके छे ते आपणे जाणवु जोईए, आ प्रश्ननो विचार करवो होय तो पण सामान्यथी धर्मना इतिहास तरफ नजर नाखवी जोईए एम करता प्राचीन कालथी अत्यार सुधीना सर्वे धर्मोनो समग्र इतिहास जोवोज जोईए एम नथी पण वर्त्तमानमा प्रचलित धर्मोमा जेमनु स्वरूप घणी सारी रीते वृद्धिगत थयु छे एवा जातिविशिष्ट धर्मोनु सिंहावलोकन करीए तो पण आपणु काम थवा जेवु छे आवी उच्च पायरी सुधी जेओनी धर्मकल्पनानो विकास थयो छे एवी नि सशयं बे जातिओ तो छे ज, अने ते सेमेटिक[1] अने आर्य ए छे धर्मविकासना इतिहास माटे अने धर्मकल्पनानी उच्चतम मर्यादा समजी लेवी होय तो आपणने आ बे जातिनो इतिहास कइक थोडो सविस्तर जोवो जोइए

× × × × ×

आर्यलोकोनी आ देशामां वसति थया पहेला अहिया अनेक जातना लोको वसता हता एमा सशय नथी आ लोकोनो अव-

---

१ क्रिस्ती याहूदीन, मुसल्मीन, आरब विगेर

शेष मिछ, सताळ, तोट, इत्यादि पहाडी लोकोना स्वरूपथी आज पण ओळखाय छे

आ लोकोना मूळधर्मनो पत्तो लागतो नथी तोपण आजनो चालतो लौकिकसंप्रदाय अने प्राचीन धर्मशास्त्र आ बेनी सरखामणीवाळा मनुष्यशास्त्रना अने प्राचीन रहेला सम्प्रदायना माहात्म्यथी सूक्ष्म विचार करीए तो ते धर्मनी काईक बाबतो ओळखी शकाय तेम छे आ विचार उपरथी एम देखाई आव छे के आर्यपूर्वकालना हिन्दुस्थानमा छेवट बे विशिष्टजातिओना धर्म हता आ बन्ने वर्ग जीवद्देवस्वरूपना (animistic) हता के एक वर्ग जीवद्देवस्वरूपनो थईने बीजो जडदेवस्वरूपनो (Fetshistic) हतो ए यथार्थ कही शकाय नही पण तेनो प्रादुर्भाव केवी रीते थयो ए कही शकाय तेम छे तेमाथी एक जे स्वभावथी जडदेवस्वरूप होवानो संभव छे तेनो प्रादुर्भाव काइक गूढ कारणथी उत्पन्न थएलो, क्षोभावस्थामा उत्कट भक्तिना अन्तपर्यन्त उन्मादमा अथवा आनन्दातिरेकमा मग्न थवाथी उत्पन्न थयो जीवद्देवना स्वरूपवाळो जे बीजो वर्ग हतो तेमा वैराग्य अने तपस्विवृत्तिनो सबन्ध हतो आ बे तत्त्वना सबन्धथी मूळ आर्यधर्मनो विकास थए अनेक पन्थ किंवा घणुकरीने अनेक जुदा जुदा

धर्मज उत्पन्न थया, अने ते बधामा तात्त्विकज्ञान, कर्मकाट-पशु, भक्ति अने वैराग्य आदि बधाए विभागो अवश्य लगीर जोवामा आवे छे आ बधाए पन्थोनी वृद्धि थयथी उपर कहेला अनार्यधर्मो शिवाय क्रिस्ती अने मुसल्मानी धर्मोनो पण तेना उपर असर थयानु सभवित छे अत्यारसुधीनु विवचन प्रस्तुत विषयना सबन्धथी केवळ प्रस्ताविक तथा उपोद्घातना रूपनुज छे हवे आगळ यूरोपियन पद्धतिथी एटले चिकित्सकपद्धतियी जैन-धर्मनो विचार करवानो छे आ विवेचन कदाच कोईने शुष्क अने रसहीन लागशे पण तेमा अशास्त्रीय अगर पूर्वनी समजथी दूषित एवु कई पण देखाशे नहीं एवी मारी खात्री छे क्रिस्तीशकनी पूर्वे ८ मा शकमा ब्राह्मणोना कर्मकाडपणानो द्वेष करवा माटे आ देशमा शरु थएल धर्मविचारोमाथी जैनधर्म उत्पन्न थयो एम मान वानी साधारण प्रवृत्ति छे ते वखत ब्राह्मणोना कर्मकाडमानो कोई पण विधिविधान धर्मनामने छाजे एवो नहतो जैनधर्मनी उत्प-त्तिना सबन्धनो आ मत सामान्यथी यूरोपियन पण्डितोमा प्रच लित छे अने ओछावत्ता मतभेदथी जैनधर्मीलोको पण तेने मान्य करे छे, परन्तु आ मतभेदनु मूळ जैनसप्रदायमा घणा प्राचीनका-ळथी जोवामा आवतु होवाथीज जैनधर्मनी उत्पत्तिना सबन्धे

अमारा यूरोपियन पण्डितोनो ए मत भूल भरेलो छे, ए कल्पना मारा मनमा उत्पन्न थई

आ विचारने अधिक स्पष्ट करवा माटे आ विषयना सबन्धे अनेक मतो एकत्र कहेवानी जरूर छे युरोपीय पण्डितो पैकी जुनीशाखाना विद्वान् लोको एवु मानता हता के महावीर ए गौतमबुद्ध करतां जराक उमरथी मोटा समकालीन हता, अने तेमणेज जैनधर्मनी स्थापना करी परन्तु आजकालमा आ मत भूल भरेलो छे एम सिद्ध थएलो छे हालमा यूरोपीय पण्डितोमा प्रचलित थएलो आ विषयनो मत एवो छे के, जैनधर्मनो संस्थापक पार्श्वनाथ होइने महावीर ए एक ते धर्मनी जागृति करनार पुरुष हतो, पण खुद जैनधर्मिओना परपरागतनो मत एथी जूदो छे तेओना मत प्रमाणे जैनधर्म अनादि होईने ते धर्मने जे अनेक व्यक्तिओ तरफथी जागृति मळी छे तेज चौवीश तीर्थंकरो अथवा जिनो छे आ जैनोनो परपरागत मत लक्ष्यमा राखवा जेवो होईने तेने नि भशय असरु इतिहासनो आधार मळे छे, अने मने एम पण जणाई आव्यु छे के हिंदुस्थानमाना प्रत्येक प्रत्येक साप्रदायिकमताने ऐतिहासिक आधार होय छे ज हवे जैनधर्मना सबन्धे आ मतने क्यो आधार छे ए कहेवु अत्यारे घणु कठिन

छे, कारण के आ सम्बन्धनो शोध मे हमणा ज शरु कर्यो छे तोपण जैनधर्म अने नीति ए विषय उपरना हेस्टिंग्स साहेबना विस्तृतनिबन्धनवाळा ग्रन्थमा अने प्रो जेकाबीना निबन्धमा जे एक विधान जोवामा आवे छे तेना उपरथी प्रस्तुतविषयना शोधनी योग्य दिशा समजी शकाय तेम छे आ निबन्धमा "जैनधर्म पोताना काईक मतो प्राचीन जीवदेवना स्वरूपवाळा धर्ममाथी लीधेला होवा जोईए" एवु कहेलु होवाथी प्रत्येक प्राणी तो शु पण वनस्पति अने खनिज पदार्था पण जीवस्वरूप ज छे एवो जे जैनधर्मनो तत्व छे तेनी साथे ते मळतो होवाना कारणथी ते घणो महत्त्वनो छे

आ कारणथी जैनधर्म ए अत्यन्त प्राचीन छे (कोइ पण धर्म अनादिनो छे एम कोई पण विचारी पंडित कहेता नथी) एम मने भासमान थवाथी तेज वातने हु शीघ्रपणे शास्त्रीयदृष्टिथी सिद्ध करवानो छु आ धर्मनु मूळ हिंदुस्थानमा आर्य पूर्वकालना प्राचीन लोको सुधी पहोंचीने आगळ जता ते धर्मे आर्यधर्ममाथी जेटलु जेटलु अत्युत्तम अथवा छेवट जे आपणाथी सारु देखायु ते बधुंए ग्रहण कर्यु अने आर्यधर्मना ब्राह्मणीयपथना बराबर तेमणे पोतानी वृद्धि करी लीधी जैनोना निर्ग्रन्थोनो उल्लेख वेदोमा

ण छे ते उपरथी आ मारा कथननी प्रतीति थशे, परन्तु जैन-धर्मनी उत्पत्तिना सबंधे पहेला कहेलो ते मत ग्रहण करीए किंवा अत्यारे कहेलो आ मारो नवीन मत ग्रहण करीए तो पण तेना उपरथी ते धर्म विषे आगळ हु जे अनुमानो बतावनारो छु तेमा कोई पण प्रकारथी फरक पडनारो नथी

लोकोने-धर्म आ सबन्धथी जैनधर्मनो विचार महावीरना पछी ते धर्मने जे स्वरूप प्राप्त थयु ते उपरथी ज करवो पडे छे, अथवा श्वेताम्बर अने दिगम्बर ए बे महत्वना पन्थो उपरथी तेनु जे प्रचलित स्वरूप देखाय छे तेना उपरथी करवो पडे छे एम कहेवु अधिक शोभापात्र गणाशे धर्मनी सरन्जामणीवाळा शास्त्रनी दृष्टिथी सुद्धा विचार करीए तो पण आ प्रचलित स्वरूपनोज करवो जोईए कारण के तेज तेनु निश्चित अने निर्विवाद स्वरूप होय छे

जैनधर्मनु वर्तमानकालीन स्वरूप मूळ अनार्यलोकोनी प्रवृत्ति थया पछी झाझा चिन्हवाळु देखाई रह्यु छे पण तेज स्वरूप आर्यधर्मनो ऊचामा ऊचो आदर्श छे जैनधर्मनु मुख्य काम एटले तेणे धर्मना मूळ उपर फटको मारनारा ब्राह्मणोनो नास्तिकवाद अगर जेने अज्ञेयवाद पण कहेनामा आवे छे

तेने, अने महावीरनी सुधारणा पहेला ब्राह्मणधर्मना विधिविधानमा जे केवल अत्याचार थएलो हतो तेने पाछो हटाव्यो ते हतुं महावीरना सुधारा पछी बौद्धधर्म जेटलो जो के जैनधर्मनो विस्तार थयो नथी तो पण बौद्धधर्म करता तेनुं महत्व हिन्दुस्थानवाळाने वधारे छे कारण ते जैनधर्मथी इतर आर्यधर्मपन्थोमा पण तेनी प्रतिक्रिया (जैनधर्मवाळानी क्रिया) शरु थवाथी तेना सम्बन्धे प्रत्यक्ष नहीं पण परोक्षरीते हिन्दुस्तानमाना आर्यधर्मना पाछला विचारोनो वधारो थवाथी बचाव थतो गयो

पण जैनधर्मनु खरं महत्व कहिए तो धर्मना जुदा जुदा अगोनी यथाप्रमाण वहेंचणी थवाने लीधे कोइ पण इतर धर्मनो प्रमाणथी अधिक वधारो न थता तओना अतरगने जे पूर्णावस्था आवी हती ते सेटगमा ज रहीं हती आ एक लक्षणथी सामान्य रीते हिन्दुस्थानमाना सर्व धर्मोनी अने विशेषथी जैनधर्मनी इतर धर्मथी अने विशेषथी समेटिक[१] धर्म पासेनी अने तेमा पण तेना खिस्ती धर्म पासेथी भिन्नता बतावी शकाय तेम छे तेनो थोडो घणो खुलासो करु छु प्रत्येक धर्मना भावनोद्दीपक कथा पुराणो, बुद्धिवर्द्धक तत्त्वविज्ञान, अने आचारवर्द्धक कर्मकाण्ड,

१ यहुदी आरब विगेरेना धर्मो

एवा त्रण मुख्य अगो होय छे, वणागरा धर्मोना [illegible] स्वरूप जे कर्मकाट–वेनोज सर्व धर्मो उपर प्रचार थने [illegible] अगो गौणपणे थईने रहेला होय छे, अने तेमनामा [illegible]- दीपक कथापुराणोनु अग मात्र लोकप्रिय होय छे बौद्धिक एटले तत्त्वज्ञान स्वरूपना अगोनी अभिवृद्धि ए आर्य धर्मोना स्वरूपनु मुख्य लक्षण होय छे, पण ए त्रणे अगोनी एटला जैनधर्मप्रमाण सरखापणाथी वहेंचणी करेली होवाथी प्राचीन ब्राह्मणधर्म अने बौद्धधर्म एमा बौधिक अगोनु विना कारण मोटापणु वधारेलु छे.

बीजा इतर धर्मना प्रमाणमा जैनधर्मने क्यु स्थान आपी शकाय एनो निश्चय करवा माटे हवे आपणे तेना अतरानो थोडो अधिक विचार करीए जैनधर्मनो सपूर्णपणे विचार करवो ए एक नाना सरखा व्याख्यानमा थई शके नहीं अने तेवो प्रयत्न करवानो मारो उद्देश पण नथी तेनो स्वरूप श्रोताओने (आपणने) मालुम छे एवो विचार करीने हु [illegible] कहु छु [illegible]माना सर्व धर्मोमा जैनधर्मने [illegible]

देवविषयोना सबन्धे जैनधर्मनो प्रमाण तरीके मानेगे मन एज तेनामा पहेली मोटी महत्त्वनी वात छे आ दृष्टियी विचार करी जोता जैनधर्म एटले मनुष्योत्सारी (नरयी नारायण सुवी चढेलो) धर्म ठरे छे वैदिक धर्म अन ब्राह्मणधर्म ए पग मनुष्यो त्सारी छे खरा, पग ते बाबतोमा पण ते जैनधर्मथी कमळ औपचारिकज छे कारण के तेओमा देव एटले कोई मनुष्यातीत प्राणी छे, अने तने आपणा भक्तोथी वश करीने आपणी इष्ट प्राप्ति करी लेवाय छे एवु मानी लीधेलु छे पण खरु मनुष्योत्सारी पणु जैनधर्ममा अन बौद्धधर्ममाज देखाई आवे छे आगळ जाता मात्र बौद्धधर्मनु ईश्वरविषयकमत मूळ कल्पनाथी घणो जुदो बनी गयो छे शिवाय आ बाबतमा मूळ बौद्धमत पण घणोज आगळ गएलो होवाने लीधे मूळमाज ते अनीश्वरवादी हतो के केम ? एवो सशय उत्पन्न थई जाय छे

जैनोनी देवविषयक कल्पना विचारी मनुष्योना मनमा स्वाभाविक रीते आवी शके तेवी छे तओना मतमा देव ए परमात्मा छे पण ईश्वर नयी एटले जगत्नो स्रष्टा अने नियन्ता नयी पण ते पूर्णावस्थाने पहोंचेलो जीवज होईने अपूर्णावस्था-वाळाओनी पेठे जगत्मां पाछो आववानो अशक्य होवाने लीधे

पूज्य, वन्दनीय थयो छे जैनोनी देवविषयक कल्पना सुप्रसिद्ध जर्मन महातत्त्वज्ञ निट्से (जेओने हु ओगणीसमा सैकामा पोताना अध्यात्मगुरु तरीके मानु छु एम मने कबूल करवु जोईए) एमनो सुपरमैन एटले मनुष्यातीत कोटीनी कल्पना साथे आ वात मळती आवे छे, अने आज जगतमा मने जैनधर्मनो अत्युदार स्वरूप देखावा लाग्यो छे, अने जे लोको जैनधर्मने अनीश्वरवादी समजीने तेमना धर्मत्व उपर हल्लो करीने चढाई करवानु धारे छे तेमनी साथे हु जोरथी विरोध करवाने तैयार छु आ बाबतमा मारो मत एवो छे, के नैतिक विषयोनी उत्तम परिपुष्टि करवाने माटे जरूर तेटलाज उत्तम ध्येयने¹ जैनधर्मवाळाए हाथे धर्यो छे देवनी कल्पना धर्मवाळाओने अवश्य होवाने लीधे पोताना धर्मपणाने कायम राखवाने माटे धर्मना मुख्य लक्षणो तेमणे आपणामाथी जवा दीधेलाज नथी आ बधा कारणोने लीधे जैनधर्मने आर्यधर्मोनीज नही पण एकन्दर सर्व धर्मोनी परम-मर्यादावाळो समजीए तोपण कोई प्रकारनी हरकत आवे तेम नथी.

आ परमतत्त्वनी सीमावाळा स्वरूपना मूळथीज धर्मोनी सरखामणीना विज्ञानमा जैनधर्मने मोटु महत्त्व प्राप्त थएलु छे

---

¹ ध्यान करवाने योग्य देवनी मूर्तिने

आ प्रमाणे आपणे जोईए तो धर्मनी उपरनी हृद (मर्यादा) मळी गई, अने तेना उपरथी मनुष्यविषयकना बीजा विचारो अथवा भावनाओना सबंधे निर्णय करवामा फावी शकीशु पछी ते विचारो के भावनाओ धर्मनामने छाजे तेम होय के नहीं पण धर्मनी सरखामणीना विज्ञानमा जैनधर्मनु एटलुज एक महत्व नथी परन्तु आ दृष्टिथी जोता जैनोनु तत्त्वज्ञान, नीतिज्ञान, अने तर्कविद्या पण देखीए तो तेटलाज महत्त्ववाळां छे

आ विषयनो एथी सविस्तर विचार करवाने मने आज वखत नथी तोपण जैनधर्मना श्रेष्ठपणाना हजु काईक थोडा लक्षणो कहेवा जोईएज अनन्तसख्यानी उत्पत्ति तेमना लोकप्रकाश नामना ग्रन्थमा कहेली छे ते हालना गणितशास्त्रनी उत्पत्ति साथ अत्यन्त मळती आव छे तेमज दिक अने काल एमना अभिन्नत्वनो जे प्रश्न ईन्स्टीननी उत्पत्तियी आ तरफना शास्त्रज्ञोमा वादनो विषय थई रहेलो छे तेनो पण निवडो जैनतत्त्वज्ञानमा करेलो होवाथी तेना निर्णयनी तैयारी तेमनामा करीने मुकेली छे

हवे जैनोना नीतिशास्त्रनी बेज बाबतोनो हु अहिंया उल्लेख करु छु तेमना शास्त्रमा ते विषयनो बहु पूर्णताथी विचार करेलो छे तेमाथी पहेली बात ए छे, के जगत्माना सर्व प्राणिओन सुख

समाधानीथी एकत्र केवी रीते रहेता आवे ? ए प्रश्न छे आ प्रश्नना आगळ अनेक नीतिवेत्ताओने हाथज टेकवा पड्या छे कारण ते विषयनो संपूर्ण निर्णय आज सुधी कोई पण करी शके-लो नथी, पण आ प्रश्ननो निर्णय जैनशास्त्रमा बहुज सरल रीते अने तेटलाज पूर्णविचारथी निर्णय करीने मुकेलो छे बीजाओने दुःख न देवु ज्यारे अहिंसा था वातनो जैनशास्त्रमा केवल तात्त्विकविधियीज नहीं पण खिस्तीधर्ममा तत्सदश दश आज्ञाओ करता अधिक निश्चयथी अने कडकपणाथी तेनो आचार कहेलो छे, अने तेटलीज सुलभताथी तथा पूर्णताथी जेनो खुलाशो जैनधर्ममा कोलो छे एवो बीजो प्रश्न एटले—स्त्री पुरुषोना पवित्र-पणानो छे आ प्रश्न खरु जोता केवल नीतिशास्त्रनोज नथी पण जीवनशास्त्र अने समाजशास्त्रमा पण तेनो घणो संबन्ध आवे छे

× × × × × × ×

जैनधर्मने सामान्यपणाथी सर्वधर्मनी अने विशेषथी आर्य-धर्मनी परमहदवाळो मानवो जोईए, आ वात में पहेलाज कहेली छे आ उपरथी धर्मना विशिष्ट विषयोनु साम्यावस्थान जैनधर्ममा सारी रीते राखेलु होवाथी तेनु बधारण मनुष्यने केन्द्रस्थान सम-

जीने करेलु छे, अने [1]बौधिक विषयोनें पण बाजु उपर न मूकता तेमना धर्मपणाने बाध न आवे एवी जुगतिथी तेमणे तेनो विकास करेलो छे [2]आ बाबतमा जैनधर्मनी बाजू घणी मजबूत रचाएली छे क्रिस्तीधर्मनु धवारण नायकल्ना पाया उपरथी थएलु होवाथी तेमा बौधिक प्रश्नोनो विशेष ऊहापोह के विवेचन थएलु नथी कारण, के मनुष्यनी भावना उपरज कार्य करवानो तमनो उद्देश थएलो हतो आगळ पण तेमा आरिस्टॉटलना विज्ञानमाना तत्त्वोनो स्वीकार करेलो छे, अने हजु पण तेज तत्त्वोने त धर्म एटले रोमन कॅथोलिकपथी वळगीनेज रहेल होवाथी ते तत्त्वोनी हालनी शास्त्रीयवृद्धिनी साथे सरखामणी करी शकाय नहीं भावनानी दृष्टिथी जोता क्रिस्ती धर्म बीजा कोई पण धर्मनि पाछा पाडेला छे ए बात घणा भागे खरी छे पण मारा मत प्रमाणे हालनी शास्त्रीयदृष्टिना माणसोने हालना धर्मस्वरूपमा भावना उपर विशेष भार मुकवो इष्ट लागतो नथी, कारण के धर्मने पण भौतिक शास्त्रोनी गतिथी चालता आवडवु जोईए, एवी रीते तेमनी समजुती थएली छे

---

१ तात्त्विकविचारोने

२ तात्त्विकविषयोनी बाबतमा

टुंकमां सारांश कहेवानो ए छे के-उच्च धर्मतत्त्वो अने ज्ञानना पद्धति ए बन्नेनी दृष्टिथी जोतां जैनधर्म ए धर्मनी सरखामणीवाळा शास्त्रोमां घणोज आगळ पहोंचेलो छे, एम तो मानवुंज पडे छे, अने दुन्यानुं ज्ञान करी लेवाने माटे तेमां जोडी दीधेलो स्याद्वादनुंज एक वर्त्तमानपद्धतिनुंज स्वरूप जुओ एटले बस छे धर्मना विचारोमां जैनधर्म ए एक निःसंशयपणे परमहद्दवाळो छे, अने ते केवळ स्याद्वादनी दृष्टिथी सर्वधर्मोनुं एकीकरण करवाने माटेज नहीं पण विशेषपणाथी धर्मोना लक्षणो समजवाने माटे अने तेना अनुसारथी सामान्यपणे धर्मनी उपपत्ति सगत (गोठवी) करी लेवाने माटे तेनो काळजीपूर्वक अभ्यास करवानी खास जरूर छे

इटालियन विद्वान् डॉ एल पी टेसीटोरी पोताना एक व्याख्यानमा कहे छे के—" जैनदर्शन बहुतही ऊची पंक्तिका है, इसके मुख्य तत्त्व विज्ञानशास्त्रके आधार पर रचे हुए है ऐसा मेरा अनुमान ही नहीं पूर्ण अनुभव है ज्यो ज्यो पदार्थविज्ञान आगे बढता जाता है जैनधर्मके सिद्धांतोंको सिद्ध करता है × × ×

जैनसाहित्यना संबन्धमा जर्मनीना डॉ हर्टल पोताना लेखमा जणावे छे—

"Now what would Sanscrit poetry be without this large Sanscrit Literature of the Jainas! The more I learn to know it, the more my admiration rises"

Jain Shasan Vol I No 21

अर्थात्—" जैनोना महान् संस्कृतसाहित्यने अलग पाडवामा आवे तो संस्कृतकवितानी शी दशा थाय ? आ विषयमा मने जेम जेम अधिक जाणवानु मळे छे तेम तेम मारा आनंदयुक्त आश्चर्यमा वधारो थतो जाय छे "

" जैनशासन पु १ अंक २१ "

जैनदर्शन और जैनधर्म।

(मूल लेखक-मिस्टर हर्बर्टवारन साहेब)

मि लालनना गुजराती अनुवाद उपरथी हिन्दी अनुवादक—
कन्हैयालाल गार्गीय, ब्यावर

जैनदर्शनमे जैनतत्त्वज्ञानका और जैनधर्ममे जैन नीति, जैनियोंके चरित्र और उनकी धर्मक्रियाका वृत्तान्त हो सकता है। जैनियोंकी श्रद्धाको भी जैनधर्ममे ले सकते हैं। हिन्दुस्तानकी जातियोंमे जैनियोंकी भी एक जाति है। जो न्यूनाधिक सब देशमें फैली हुई है। परन्तु उनका मुख्य निवास उत्तर, पश्चिम दिल्ली, बम्बई और अहमदाबादमे है। यह एक प्रतिष्ठित जाति गिनी जाती है। परंतु इनकी संख्या घटती जाती है इस लिये वर्तमानमे य अनुमान पन्द्रह लाखके अन्दर है। साधारणत यह धनवान लोग हैं और जिन थोडेसे मनुष्योंसे मुझे लन्दनमे मिलनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है वे बहुत अच्छे और कुलीन गृहस्थ हैं।

पश्चिमी देशोंमे जैनसिद्धान्त उचितरूपमें नहीं पहुचे, और

जो पहुंचे हैं व समझाये नहीं गये और अशुद्धरूपमें दर्शाये गये हैं। जैनियोंका मुख्यसिद्धान्त " प्राणीमात्रको कष्ट नहीं देना " है। और इस सिद्धान्तका मूल विश्वके प्रमाणिक ज्ञान पर निर्भर है। जब मनुष्य अपना और विश्वका ज्ञान प्राप्त कर लेता है तब वह लोगोंके माने हुए विचारोंको माननेके लिये वाध्य नहीं होता है यही नहीं किन्तु वह अपने स्वीकृतमन्तव्योंको समझानेके लिये दूसरे मनुष्योंके वास्ते उक्त ज्ञानका द्वार बन जाता है। ज्यों ज्यों मनुष्य अपना तथा अन्यलोगोंका जितना जितना ज्ञान प्राप्त करता जाता है उतना ही उसमें प्रेमभाव बढ़ता जाता है। " प्राणीमात्रको कष्ट नहीं देना " यह सिद्धान्त प्रेम ही पर निर्धारित है और ज्यों ज्यों मनुष्यमें प्रेम उत्पन्न होता है त्यों त्यों यह सिद्धान्त उसको मन, वचन, और कायासे अन्य-लोगोंको कष्ट पहुचानेसे रोकता है।

जैनी, विकाश (Development) के विचारकी प्रतिष्ठा करते हैं। और मानते हैं कि सजीव प्राणी अपनी पूर्णदशा तक विकाश कर सकता है। ज्ञान और चरित्रकी पूर्ति अथवा पूर्ण योग्यता इसीमें है कि किसी भी प्राणीको किसी भी प्रकारसे कष्ट नहीं पहुंचाना, (तथा किसी प्रकारका अज्ञान नहीं

रखना) उनका लक्ष्य किसी प्रकारसे संसत्तासे कम नहीं, किन्तु आशावादी (Oppimistic) है। वह आत्माको अनन्त नशाली तथा आनन्दयुक्त मानते हैं।

विश्व।

समारज्ञान यह है कि संसार अनादिकालसे है, और रहेगा भी। वास्तु, उसका आदिकाल खोजना निरर्थक है। अमुक २ वस्तु नित्य होती रहती हैं और मिटती रहती हैं तथापि भिन्न भिन्न वस्तुओंकी उत्पत्ति और नाशकी अवस्था होने पर भी संसार नित्य हैं। जब कोई वस्तु प्रगट होनी होती है तो वह वस्तु कोई दूसरी वस्तुमसे निकल कर प्रगट होती है अर्थात् जब पक्षी जन्मता है तो जिस अण्डेमें वह था वह नाश होजाता है, परन्तु जिस पदार्थसे वह अण्डा तथा वह पक्षी बना था वह द्रव्य सर्वदा उपस्थित रहा है—अण्डेका तथा पक्षीका ऐक्य है। यह सिद्धान्त प्रत्येक पदार्थके लिये सत्य है। केवल अवस्थामें परिवर्तन होता है, परन्तु पदार्थ ज्योंका त्यों रहता है। जिस द्रव्यमेंसे वस्तुएं बनती हैं वह किसी न किसी दशामें और किसी न किसी स्थान पर रहता ही है और रहेगा ही। अति-पूर्वकालमें किसी भी समय या कोई भी कालमें दृष्टि करनेसे उस

कालको जगत्‌का आदिकाल मानना उचित नहीं। जिस पदार्थका यह जगत् बना है उसी पदार्थका बनना आ रहा है। अस्तु, अति प्राचीनकालमें जाने, तथा उस कालको जगत्‌का आदिकाल माननेके स्थानमें हम अभीके जगत्‌को ही आदि समझने लगें तो ठीक होगा इसीको आदि गिन करके दूर दूर तक सब दिशाओंमें आगे पीछे ज्योति फैलाव (अर्थात् जैनधर्मके सिद्धान्तोंको विस्तृतरूपसे प्रचार करें) जिस प्रकार समुद्रके किनारे पर खड़ा हुआ मनुष्य अपनी दृष्टिके विस्तारको सीमाबद्ध नहीं कर सकता इसी प्रकार हम देश तथा कालका अन्त कभी नहीं पा सकेंगे। समुद्रमें जहाज कहीं भी हो परन्तु वहांसे दृष्टि सीमाबद्ध हो सकती है वैसे ही देश अथवा कालके किसी भागको आदिरूपमें गिन लो परन्तु उसकी पहिली सीढी क्या या कहां समाप्त है? यह प्रश्न हमेशा उठेहीगा।

संसार किसका बना हुआ है?

दो मुख्य वस्तुओंका। अर्थात् पदार्थ और द्रव्यसे विश्व बना हुआ है चैतन्य और जड (सचराचर) जीव। जैनशास्त्र इन दो पदार्थोंको मानता है अर्थात अनन्त पदार्थ और जड जीव। निस्सन्देह इन दोनोंकी स्थिति देश तथा कालमें है।

काल तो साधारणतया सत्य गिना जाता है परन्तु देश तो सत्य ही है और जो सत्य है सो अवश्य स्थित है। चार पदार्थ अर्थात् आकाश (देश) काल, जीव और अनन्त परमाणु, यह कोई क्रिमीक पैदा किये हुए हों यह आवश्यक नहीं क्योंकि पदार्थोंका स्वभाव है कि व स्वयं स्थित रहें।

व अनादिकालसे थे, हैं, और रहेंगे। ईसाईधर्मम यह विचार एक जीवके लिये मानते हैं परन्तु जैन प्रत्येक जीवन लिये यह विचार स्वीकार करता है अर्थात् आप, मैं, कुत्ता, बिल्ली इत्यादि सर्व प्राणी नित्य हैं।

यदि वर्तमानकालकी रसायनिकशोधकी दृष्टिसे जवन्ययक अन्तिमपरमाणुको आप न गिने परन्तु वह अधिकतरसूक्ष्मपरमाणुओंका बना हुआ है। अस्तु, इसके लिये हमको जडद्रव्यका अतिसूक्ष्म अन्तिमभाग, या कोई दूसरा शब्दव्यवहार करना चाहिये।

जीव और जड।

अब अपने जीवके सम्बन्धमें जो हम अभीके समारसे शोध करना आरम्भ करें तो पहिली ध्यान देने योग्य बात यह

है कि हम देहधारी संसारी जीव शरीर तथा आत्मासे बने हुए हैं अर्थात् जड और चैतन्य मिश्रित हैं।

अपने चारों ओर जो हम सब जीव देखते हैं जैसे मनुष्य, बिल्ली, कुत्ते, घोडे, वृक्ष यह सब शरीरसहित आत्मा दोनों एक हैं तो भी परस्पर भिन्न हैं। मेरा शरीर है सो मैं स्वयम् नहीं हूं यह भेद जानना अत्यन्त आवश्यक है, यह शरीर नहीं किन्तु आत्मा है जिसे बुद्धिमान व्यक्ति (Consience, Santienty entity) कहता है।

आत्मा ही सब कुछ जानता है शरीर कुछ नहीं जानता। सारा जीवन ज्ञानसहित, विचारसहित और प्रामाणिक है और जिस परिणाममें विचार सत्य होते हैं वहीं तक जीवन भी सत्य है।

आत्मद्रव्य।

वस्तुद्रव्य अपने मूलगुणोंसे भिन्न कभी नहीं रह सकती अर्थात् हम गुणको द्रव्यसे यथार्थमें पृथक् नहीं कर सकते विचाररूपमें ऐसा अवश्य सम्भव है। हम देखते हैं कि मरते समय शरीर अपनी सुधि खो देता है अस्तु, यह सिद्ध होता है

कि विवेक और सुधि शरीरके गुण नहीं हैं अर्थात् जीते हुए शरीरके साथ कोई सत्य वस्तु होनी चाहिये कि जिसके गुण उसके साथ रहते हैं इस वस्तुको जीव कहते हैं जीवके पर्याय-वाची अनेक शब्द हैं यथा आत्मा, अह, स्वय (Self, Spirit, age, soul)

शरीररहित या शरीरसहित जीव।

जब जीव पूर्णतया पवित्र होता है तो वह कोई प्रकारके भी शरीर विना रह सकता है। सूक्ष्मातिसूक्ष्म शरीर भी नहीं हो तो भी ठहर सकता है। परन्तु वह किसी प्रकारकी स्थिति धारण करे तब तक सजीव प्राणी दो वस्तुओं अर्थात् जड और आत्मासे मिलकर बना है।

यह समय आव तब तक आत्मा और स्थूलशरीर भिन्न होनेका यह अर्थ नहीं कि आत्मा जडशरीरसे मुक्त होजाय, जीव जिस प्रकार स्थूल शरीरको छोड जाता है वैसे ही मरती समय वह अन्य दो शरीरोंसे नहीं छूट सकता परन्तु वे शरीर उसकी नई अवस्थामें उसके साथ ही रहते हैं इनमेसे एकमें उत्तेजक शक्ति होती है जिससे फिर सजीव प्राणी स्वयं अपना नवीन शरीर पैदा करता है।

जीवको होती हुई भ्रांति ।

संसारी देहधारी जीव सामान्यरूपसे अनेक बलप्रवाहों (अर्थात् शक्तियों) का केन्द्र होता है । ये शक्तियें आत्माका गुण नहीं हैं परन्तु उनके साथ आत्माका अत्यन्तसूक्ष्मरूपसे सम्बन्ध है और वह उनको अपने समझ लेता है और मानता है कि मैं उनका बना हुआ हूं । इस मिथ्याभावमसे वह जागृत हो अर्थात् अपने आपको माने वहां तक उसको इस अवस्थामें पड़ा रहना पड़ता है ।

बलप्रवाहशक्ति अर्थात् कर्म ।

हमारे आसपास चारों ओर जो समस्त फेरफार दृष्टिगत होते हैं उनका कारण यही है । यह अन्तर केवल स्थूलशरीर-मात्रके ही है यही नहीं, परन्तु सद्गुण, दुर्गुण आदिका भी प्रभाव पड़ता है ।

आत्माका स्वभाव कैसा है ।

आत्मा स्वभाविकतया दैवी है और शुद्धदशामें समान-भातिसे ज्ञानवान् वीर्यवान् तथा चारित्रवान् है । पापी आत्माके समान जगत्में कुछ नहीं है जो मनुष्य पाप करता है तो अपनेमें

स्थित इन अस्वाभाविक शक्तियोंके कारण करता है क्योंकि वे सन्देहवश दुष्कर्मोको अपने गुण समझ लेता है। मनुष्य अज्ञानता अथवा दुर्बुद्धिके कारण पापकर्म करता है परन्तु आत्मा तो स्वभावसे ही सर्वज्ञ है अस्तु, उसके सब विचार सत्य ही होते हैं। मेरे ध्यानमें पापकर्म करते समय कोई मनुष्य यह नहीं जानता होगा कि मैं पाप करता हूं। यदि विचार करता होगा तो यही कि मैं भला करता हूं अन्यथा ऐसा कदापि नहीं करता, अस्तु यह दोष उसकी दुर्बुद्धिका ही रहा। ऐसे ही यदि कोई मनुष्य कपट करता है तो भ्रमवश वह उसे भी अच्छा ही समझ कर करता है। परन्तु समय पड़ने पर जब वह समझ लेता है कि यह कर्म बुरा है तब वह उसे छोड़नेका प्रयत्न करता है और अन्तमें शुद्ध इच्छा होने पर छोड़ भी सकता है।

कर्मोंका मूल।

ऊपर लिखित अस्वभाविकस्वप्रवाह कर्मोंके मूल अर्थात् जड़ हैं और वे अत्यन्तसूक्ष्म होती हैं उनको यह कर्म अपनेमें मिला देते हैं और उसके परिणामका अनुभव आत्माको करना पड़ता है। अस्तु, कतिपय परिणाम उत्तम तथा कितनोंका बुरा

होता है। अर्थात् कुछ सुखकर तथा कुछ दुःखके कारण होजाते हैं।

कर्मोंके स्वभाव।

इस प्रकारके अस्वाभाविक कर्मोंका स्वभाव आत्माके कितने ही गुणोंको ढँक देना है उससे समझमें आ जायगा कि क्यों कुछ मनुष्य दूसरे मनुष्योंसे अधिक अज्ञानी, दुःखी, सुखहीन, अल्पायु तथा निर्बल अथवा विशेष सुखी, सुन्दर स्वरूप, दीर्घायु तथा सबल होते हैं कुछ उच्चवर्णमें उत्पन्न होते हैं और कुछ नीचवर्णमें। इत्यादि जहां तक विचार करें यह कर्मका ही फल ज्ञात होगा।

कर्मको रोकनेसे भविष्य परिणाम।

अब ज्यों २ इन कर्मोंको ग्रहण करके अपने साथ मिलानेकी क्रिया बन्द की जाती है और ज्यों ज्यों पूर्वजन्मान्तरोंमें एकत्रित किया कर्मोंका समूह अपनेसे दूर किया जाता है त्यों २ मनुष्यके अज्ञान, क्रूरता, दुःख, दुर्बलतामें कमी होती जाती है और इस प्रकारसे वे सत्य चरित्रवान बन जाते हैं।

इस प्रकार अपने विचारशक्तिका केन्द्र यदि हम वर्त्तमान युग तथा विश्वको मानलें तो हमारे चारों ओर यावत् जीते हुए प्राणी जो हम देखते हैं वे सब आत्मा तथा जड़ पदार्थके मिश्रितरूपमें दिखाई देंगे।

शाश्वत जीवन।

यदि संसारको हम यह समझें कि यह नित्य है तो इसके प्रत्येक व्यक्तिगत जीव जन्म (जन्मान्तर) पहिले ही विश्वमें विद्यमान थे और यह देहिक शरीर या जीवनके अन्तम भी जीते रहेंगे। अर्थात् जितने जीव अभी इस कालमें हैं व अनादिकालसे अनन्तकाल तक रहेंगे। हम नहीं कह सक्ते कि ये कब हुए थे और कब नाश हो जायगे। जीवनके पूर्व यह अपना जीवन नहीं था त्यों ही अन्तम भी जीवन नहीं होगा क्योंकि कोई ऐसा जीवन नहीं कि जिसके पहिले जीवन नहीं हुआ हो, न कोई ऐसा है कि जिसके अन्तम जीवन नहीं हो। अस्तु, कोई जीवन ऐसा नहीं है कि जिसके पश्चात् जन्म मरण न हो अस्तु, यह सिद्ध हुआ कि आत्मा अनादि तथा अनन्त है।

देहमुक्त हुए उपरान्त जीवन।

शरीररहित आकृतिमें अन्तिमजीवन भी होता है। इस स्थितिके पीछे पहिलेकी भांति मनुष्यको जन्म मरण ऐसा नहीं होता। भूतकालके विषयमें यह विचार होता है कि ऐसा कोइ समय नही था जब कि यह आत्मा शरीररहित आकृतिमें रहा हो। साथ ही यह भी निर्णय नहीं है कि शारीरिक जीवन इस पृथ्वी पर ही रहा हो। जीवनकी ऐसी स्थितियें हैं कि यदि पृथ्वीपरके जीवोंसे विशेषसूक्ष्मतरजातक शरीर होते हैं तो उनको साधारण बोलीमें देवशरीर कहते हैं और इस श्रेणीमेंके जीव शुभ तथा अशुभ दोनों प्रकारके होते हैं (अर्थात् देव और दैत्य दोनो होते हैं) तथा अन्यभाषाम स्वर्गनिवासी और नर्कवासी होते हैं।

चार प्रकारके जीव।

जैनी मानते हैं कि जीव ४ प्रकारके ही होते हैं अर्थात् मनुष्य, तिर्यञ्च, नारक (दैत्य) और देव (देवता) तिर्यञ्चमें केवल, वनस्पति ही नहीं परन्तु मनुष्ययोनिके अतिरिक्त अन्य सब योनियें यथा पक्षी, मछली, पशु इत्यादि सबका समावेश होता है।

जीवके शरीरोंकी जाति ।

जीते प्राणीके शरीरको मनुष्यके अथवा पशुके रूपको हम जानते हैं परन्तु स्वर्ग अथवा नर्कमें प्राणीके शरीर अत्यन्तसूक्ष्म होते हैं । ऐसा विचारमें आता है, और स्वर्गमें दुःखसे सुखकी मात्रा बहुत अधिक है परन्तु नर्कमें तो दुःख ही दुःख है सुख नामको भी नहीं ।

जैनोपदेश ।

मेरे विचारमें जैनियोंके यहां एकसे दूसरा विशेष उच्च करते करते १६ स्वर्ग (श्वेताम्बरोंके १२ तथा दिगम्बरोंके १६) और एकसे दूसरा अधिक नीचा करते करते ७ प्रकारके नर्कका उपदेश दिया गया है । तथापि जीवनकी इन चारों स्थितियोंमें जीव शरीरकी शक्ति शुद्ध आत्मा नहीं है । उसका कोई न कोई प्रकारका जड शरीर होता ही है । स्थूल या सूक्ष्म

पञ्चमी स्थिति ।

परन्तु इन चारों जीवनकी स्थितियोंके पश्चात् एक अन्तिम पांचवीं विशुद्धतम शरीररहित स्थिति है जो यदि एकवार प्राप्त

होगई तो सत्ता बनी ही रहती है इन चारोंमसे प्रत्येक रूपकी अवधि मर्यादित है अर्थात् आयु नियमित है कि जिसका अन्त कभी न कभी आता ही है यद्यपि यह काल स्वर्ग नर्कमें तो विशेष होता है तथापि अन्त तो है ही, परन्तु उस विशुद्ध शरीररहित स्थितिमें जीवनकी लम्बाई अमर्यादित है कि जिसका अन्त कभी नहीं आता और यह स्थिति तब ही प्राप्त होती है जब हमारी विकाशपानेकी स्थिति पूर्णदशा पर पहुचती है और यह दशा ही जीवनका लक्ष्य (अर्थात् Gool है) और प्रत्येक व्यक्तिको यह प्राप्त हो सकती है और क्रम २ से विकाश पाते २ वहा तक पहुचती है। इस अन्तिम स्थितिके प्राप्त होनेके लिये यदि कोई जीवन उपयोगी है तो वह मनुष्य जीवन है।

चार दुर्लभता।

मुझे यहा याद आता है कि चार बात दुलभ है (१) मानुष्यजीवन प्राप्त होना दुर्लभ है (२) मनुष्यजीवन प्राप्त होने पर सत्य उपदेश प्राप्त होना (३) सत्य उपदेश मिलने पर उस पर श्रद्धा होना और (४) श्रद्धा होने पर उस पर मनन करके उसके अनुसार चलना यह चारों बातें दुर्लभ हैं।

जिस स्थितिमें हमने जन्म लिया है वह कोई अकस्मात् हमको नहीं मिली है। पूर्व जन्ममें जैसी करणी करी हो वैसा ही पाश्चात्य जीवन प्राप्त होता है। अलबत्ता उपदेश ऐसा है कि जितने ही हम भले या बुरे होते हैं उतना ही हमको सुख या दुःख मिलता है। ईसाई लोग भी यही मानते हैं तथापि जहा वे लोग यह मानते हैं कि नारकीजीवन सर्वेव नित्य रहता है वहा जैनी यह मानते है कि नर्कके जीवनका भी कभी न कभी अन्त आजाता है।

यह उपदेश कहासे लिया गया है?

जिस भाति ईसाई (ख्रीष्टीय) ईसाके अनुगामी है उसी भाति जैनी महावीर जिनश्वरके माननेवाले है। महावीरजिन ईसाके पूर्व छठवीं शताब्दीमे उत्पन्न हुए थे उनका जन्म भारतमें हुआ था और अपनी आयुके पिछले ३० वर्ष इन्होंने उपदेश देनेमे व्यतीत किये, उनको जन्मके साथ २ ही अवधिज्ञान विश्वदर्शन तथा विश्वश्रवण आदि लब्धियें प्राप्त हुई थी। तत्पश्चात् उनको वह परमज्ञान प्राप्त होगया जिससे दूसरेके हृदयका भाव जान सकते थे ४२ वर्षकी आयु होने पर तपश्चर्या तथा अपने ज्ञान विकाश होनेसे व सर्वज्ञ होगये

थे और जब तक आप सर्वज्ञ नहीं हुए थे तब तक उपदेश करना नहीं प्रारम्भ किया था (इस प्रकार अर्थात् जैनी एक सर्वज्ञ महात्माके उपदेशको मानने वाले हैं तथा उनके ही अनुगामी हैं ऐसी परम्परा है) जिस भाति बाइबिल क्रीष्टके उपदेशोंका सग्रह है उसी भाति जैनशास्त्र महावीरके उपदेशोंका भण्डार है।

जिनदेवके लक्षण।

देव अर्थात् धर्मनियताके कैसे लक्षण होने चाहियें इस विषयमे जैनियोंका दृढ विश्वास है कि धर्मनेता (Religions leader) सर्वज्ञ होना चाहिये अन्यथा वह लोगोंके जीवनके लिये धर्मशास्त्र तथा नियम (Code of rules of) बनाने योग्य नहीं है, यह बात भली भाति प्रगट है क्योंकि यदि सर्वज्ञ न हो तो कुछ ऐसा होगा जो कुछ कम जाने और जिस वार्ताको वह न जाने उसको करने या न करने की शिक्षा हमको दे तो सम्भव है कि हम लोग उसकी सीख कर उनसे अधिक रूपमें उस कार्यको करने योग्य होजायँ।

और उसको निद्रा भी न आनी चाहिये ताकि उसके ज्ञानकी सर्वज्ञतामें कोई भी प्रकारका Discontinuity विक्षेप

हो यथा क्रोध, भय, लोभ आदि द्वारा और उसमें यह गुण भी होना चाहिये कि उस पर चाहे कुछ भी किया जाय परन्तु क्रोध न आवे, किन्तु सबको क्षमा करे विरोधी चाहे कितना ही दुष्ट क्यों न हो। इसके उपरान्त अन्य लक्षण भी श्रीजिनेश्वरके बतलाये हैं मैंने इस निबन्धके प्रारम्भमे कहा था कि सब उपदेशोंका सार इस महावाक्यमें है कि "अहिंसा परमो धर्म" अर्थात् 'किसीको कष्ट नही देना' यही सबसे बडा धर्म है।

समाप्तम्

सूचना.

... शिवाय बीजा पण घणा
... दृष्टियी अभ्यास करी पोत-
... सुरतने बाहर आवशे छे अने
... जिज्ञासुजनोने मळवानो संभव

... पृ० १० मु ... ता २० मी
... मागृ १९ ... पृ २१४॥

... पोतानो

एक्तुज नहीं पण वणाए नो पोते कबूलेला निबंधो अत्यार अगाउ मोकली आप्या छे आवा निबंध लखवा बहार आवेल सारो तथा निबंधो अत्यार सुधीमा नीचे मुजब मळी थया छे

१ जैनोनो कर्मसिद्धात लखनार डो टी डा डेगोन होलेंड ॥
२ जैनमत धर्म छे या तत्त्वज्ञान लखनार डो ओ पेर्टोल्ड पी एच डी
३ जैनमतमा ईश्वरनी मान्यता ले डो ओ पेर्टोल्ट पी एच डी
४ हेमचंद्राचार्यनी विद्वत्ता ले डो जोन नावल बरलीन तथा श्रीयुत ए जे सुनावाला, भावनगर
५ जैनमतमा अहिंसानो सिद्धान्त ले० श्रीयुत बाहुबलीनाथ तनोर
६ जैनमतमां द्रव्यनु स्वरूप ले डो हेल्मुथवान ग्लासेनेप बरलिन
७ बौद्धसाहित्यमा जैनमत ले विमलचरण ला एम ए. कलकत्ता
८ तीर्थंकर भगवाननु जीवन ले प्रो हीरालाल आर कापडीया. मुंबाइ

श्री

वाचकवर्गने सूचना

अमोए प्रसिद्धिमा मूकेला लेखो शिवाय बीजा पण घणा जैनेतर विद्वानो जैन तत्त्वोनो बारीक दृष्टियी अभ्यास करी पोत-पोताना अभिप्रायो प्रसिद्धिमा मूकवाने बाहर आवेला छे अने तेओना लेखो थोडाज वखतमा जिज्ञासुजनोने मळवानो संभव पण छे

जुवो—जैन पत्र पु० २० मु अक १८ मो ता ३० मी एप्रील सने १९२२ ॥ सवत् १९७८ वैशाख सुदि ३ पृ २१४॥

जैन साहित्यनी योजना

दुनियाना विद्वानपुरुषोना हाथे जैन साहित्यनु सशोधन अने स्पर्द्धा

" जैन साहित्यना रसिक जैनेतर विद्वानोना अनुभवनो लाभ लेवाने आचार्यश्री विजयधर्मसूरिए घणान नोतर्या हता जाणीने संतोष थशे के तेना परिणामे नीचेना साक्षरोए साथेज जणावेल विषय उपर पोतानो खास निबध लखवाने कबूलात आपी दीधी

एटलुन नहीं पम जणाए तो पोते कबूलेला निबंधो अत्यार अगाउ मोकली आप्या छे आवा निबंध लखवा बहार आवेल साक्षरो तथा निबंधो अत्यार सुधीमा नीचे मुजब नक्की थया छे

१ जैनोनो कर्मसिद्धात लखनार डो टी टा डेगोन होलेंड ॥

२ जैनमत धर्म छे या तत्त्वज्ञान लखनार डो ओ पेर्टल्ड पी एच डी

३ जैनमतमा ईश्वरनी मान्यता ले डो ओ पेर्टोल्ट पी एच डी

४ हेमचद्राचार्यनी विद्वत्ता ले डो जोन नाबेल बरलीन तथा श्रीयुत ए जे सुनावाला, भावनगर

५ जैनमनमा अहिंसानो सिद्धात रे० श्रीयुन बाहुबलीनाथ तमोर

६ जैनमतमा द्रव्यनु स्वरूप ले डो हेल्मुथवान नोसनेप बरलिन

७ बौद्धसाहित्यमा जैनमत ले विमलचरण ला एम ए कलकत्ता

८ तीर्थंकर भगवाननु जीवन ले. प्रो. हीरालाल आर कापडीया. मुबाई

९ जैनज्योतिष् ले डो डवल्यु किरफल बोन जर्मनी
१० जैनकानुन ले श्रीयुत जे एल जैनी दील्ही तथा पी जोस एज्यम बर्नल्ली बोन जर्मनी
११ जैनसाहित्यनी युरोपद्वारा खोज ले डो जोह नोवेर बरलीन
१२ प्राचीन जैनसाहित्य ले डो डवल्यु शुब्रिंग हैमवर्ग-
१३ युरोपमा जैनधर्मना प्रचारक एवरेट वेबर ले फिनहेनरिच जर्मनी
१४ जैन साहित्य अने कौटिल्य अर्थशास्त्र ले डो जे जोली जर्मनी
१५ जैनधर्ममा मारो अभ्यास ले डो हर्मनजेकोबी बोन जर्मनी
१६ भारतनु प्राचीन तत्त्वज्ञान अने तेनी साथ जैनधर्मनो सबंध ले डो हर्मन जेकोबी बोन जर्मनी
१७ भारतीय साहित्यमा जैनोनु स्थान ले डो विन्टरनेस प्रेता
१८ बुद्ध अने महावीर ले प्रो एर्नेस्त ल्युमेन बेडन
१९ खारवेल शिलालेख ले डो स्टेनकौनो नार्वे
२० जैन गृहस्थोनो धर्म ले डॉ आर शामशास्त्री महीसुर

२१ संयुक्तप्रांत अने बिहारमां शेष प्राचीन वस्तुओ. ले राव-बहादुर हीरालाल डीपूटी कमीशनर अमरावती

२२ अन्यन्यायो साथे जैनन्यायनी तुलना ले हरिसत्यभट्टाचार्य एम ए हुगली

२३ गुजरात अने जैनोनी मध्यकालीन राज्यनीति' ले श्रीयुत कन्हैयालाल मुनशी एडवोकेट मुंबाई

२४ जैनशिक्षण अने विद्या, ले नरेंद्रनाथ लॉ एम ए कलकत्ता

२५ जननीतिशास्त्र ले प्रो ए जे विजरी वडोदरा

२६ जैनोनी ईश्वरमान्यता ले श्री ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी मुंबाई

आ उपरांत महामहोपाध्याय हरप्रसादशास्त्री ढाका। श्रीयुत विधुशेखर भट्टाचार्य शांतिनिकेतन, मोलपुर । श्रीयुत बनारसीदास एम ए लाहोर, श्रीयुत पूर्णचन्द्र नाहार एम ए, कलकत्ता । विगेरे विद्वानोए पण निबंधो लखी मोकलवानु वचन आप्यु छे परंतु तेमणे हजु विषयना नामो लखी मोकल्या नथी "

आ बधा लेखक महाशयोना लेखो प्रसिद्ध आव्या पछी

पण्डित पुरुषो जैनमतना स्वरूपने घणा प्रकाश स्वरूपथी जोई शकशे तेमा शक नथी

तेमा पण पाच सात लेखो तो जैनोना खास मौलिक सिद्धान्त स्वरूपनाज छे एवी अमारी समज थएली छे वाचक वर्ग पण तेवा स्वरूपथी जोई शकशे एवी अमारी धारणा छे

संग्राहक—
मुनिश्री अमरविजयजी
महाराज

इत्यल विस्तरेण

आ पुस्तक छपाववामां साहाय्य आपनार सद्गृहस्थोना नाम.

भरुच

रु.	नाम	रु	नाम
१०१	शा डाह्याभाई दलपनभाई	१९	शा नगीनदास झवेरचद तोलाट
५	शा फूलचद वखतचद		शा नाथाभाई वखतचद चोपडी ७

वडोदरा		खेडा	
१०१	शा ईश्वरलाल गुलाबचद	१०१	श्री जैनशाला सघ तरफथी

डभोई		मीयागाम	
१०१	शा छोटालाल छगनलाल कांनी	७९	शा कस्तूरचद भगवानदास वनमाळी

सीनोर

रु	नाम	चोपडी	नाम
२९	शा नाथाभाई नरोत्तमदास	१९	शा मोतीचद धर्मचद
२९	बाई हरकोर, हस्ते त्रिभोव नदास पीताबरदास	११	शा मोतीचद वजेचद
		११	शा नाथाभाई शकर
१९	शा चपकलाल छगनलाल	१०	शा गरबड
१९	शा हिंमतलाल जी मास्तर (जैनज्योतिषी) मुबई	१०	शा लल्लुभाइ नरोत्तमदास
		७	शा त्रिभोवनदास पीताबरदास
१०	शा गरबड दलपतराम	७	शा वजेचद लल्लुभाइ
१०	शा नाथाभाई नदलाल	७	शा मोतीलाल शामजी
७	शा नरोत्तमदास शकरलाल	९	शा कालीदास हीराचद
९	शा भोगीलाल मगनलाल	९	शा मूलचद बहेचरदास
९	शा छगनलाल करमचद	९	शा गुलाबचद डाह्याभाई
९	बाई मणि (शा लल्लु नर शीनी विधवा)	९	शा गरबड शिवलाल
		९	पार्वतीबेन हस्ते नानचद शकर
९	शा छोटालाल हरगोविंददास	९	शा त्रिभोवनदास हरगोविंद (लिलोड)
९	शा नदलाल मोहनलाल		
९	शा नानचद हरगोविंद	९	शा वीलाभाइ केसूर

नाम

५ शा हरिलाल नेमचद
५ शा नदलाठ लखमीचद
५ शा फूलचद शिवलाल
५ शा मगनलाल लल्लुभाई
५ बाई देवकोर (शा छोटा-
लाल माणेकलालनी मातुश्री)
३ बेन चोकस (शा नरोत्तम
हीराचदनी दिकरी)
३ शा मगनलाल दीपचद
३ शा फूलचद जगजीवनदास
३ शा ईश्वरलाल लालचद
३ शा चुनीलाल वजेचद
२ शा मोतीलाल पीताम्बरदास
२ शा नरोत्तमदास दीपचद.
२ शा चीमनलाल लखमीचद
२ शा मगनलाल चुनीलाल
२ शा छोटालाल नानचद
२ शा चदुलाल मोहनलाल

चोपडी नाम

५ शा छगनलाल मोतीचद
५ शा हिंमतलाल चुनीलाल
५ शा. छगनलाल शकरलाल
५ शा नाथाभाई शकर
५ शा. चुनीलाल कालीदास
५ शा मोहनलाल भगवानदास.
५ शा. नदलाल चुनीलाल
५ शा नाथाभाई नदलाल
५ शा वाडीलाल सखीदास
५ शा शकरलाल पीताम्बरदास
५ शा. नगीनदास मोतीचद
५ शा घारशीभाई कचराभाई
५ शा चुनीलाल नरोत्तमदास
४ शा मगनलाल लालचद
४ शा छोटालाल गिरधर
३ शा चुनीलाल भवानीदास
३ शा. फोगटलाल पीताम्बरदास
३

ह	नाम
२	शा कस्तुरचद अमीचद
२	शा फूलचद शिवलाल (मा-ल्पुरवाळा)
२	शा हेमचद रणछोड (माडवा)
२	शा छोटालाल पीतांबरदास
४	शा लल्लुभाई मगनलाल डभोईवाळा
२	शा त्रिभोवनदास देवचद (साढली)
२०४	

चोपडी	नाम
३	शा गोरधनदास वीरचद
३	शा मूलचद लखमीचंद (लाडली
३	शा गुलाबचद लखमीचद ,
३	शा गरबड नाथाभाई
३	शा छोटालाल हरिलाल
३	शा धर्मचद भवानीदास
३	शा लल्लुभाई पीतांबरदास
३	शा हरगोविंद नरोत्तमदास
२	शा छीताभाई पानाचद
२	शा दलपतभाई लालचद
२	शा नाथाभाई हरिलाल
२	शा नरोत्तमदास हीराचद
२	शा मगनलाल रगनाथ
२	शा छगनलाल कपूरचद
२	मालसर लाइब्रेरी
१	शा चुनीलाल नाथाभाई
२३४	

उपरोक्त महाशयोए आ पुस्तक छपाववामां अमूल्य साहाय्य आपीने परोपकारवृत्ति दर्शावी छे माटे तेमनु कृत्य अनुमोदनानं पात्र छे

बीजा पण सद्गृहस्थो आ मार्गनु अनुसरण करशे तो विशाळ जैनसाहित्यने खीलववामां वार नहीं लागे

आ पुस्तकनी किंमत केवळ नाममात्रनी रुपियो पोणो राखवामां आवी छे, उत्पन्ननी रकम ज्ञानखातामांज जवानी छे

॥ इति शम् ॥

शुद्धिपत्र.

प्रस्तावना.

पृष्ट	ओळी	अशुद्ध	शुद्ध
७	८	जनोना	जैनोना
८	८	जनधर्म	जैनधर्म
९	१२	तत्वन	तत्त्वना
१३	११	जनआचार्योंम	जैनआचार्योमें
१५	१	दशन	दर्शन
१५	३	कहे	कहे छे
१९	१४	जनीयोमां	जैनीयोमा
२१	८	मेरी	मेरी
२१	११	गवर्नमेंट	गवर्मेंट
२१	१९	जनी	जैनी
२१	टीपमां	मोनी	मोनीलालजी
२२	१२	पुरुषाय	पुरुषार्थ
२२	१९	वैय	वये
२३	७	प्रयोन	प्रयोजन

पृष्ठ	ओळी	अशुद्ध	शुद्ध
२३	११	निभर्त्सना	निर्भर्त्सना
२४	१४	जनोंनी	जैनोंनी
२६	६	जनधर्म	जैनधर्म
२८	१८	जनोंए	जेनोंए
२९	९	ग्रथ	ग्रंथ
२९	१४	जनाचार्य	जैनाचार्य
३०	७	जनशास्त्रासे	जैनशास्त्रोंसे
३१	२	ग्रथसमुदाय	ग्रन्थसमुदाय
३१	९	पृण	पूर्ण
३१	९	जनदर्शन	जैनदर्शन
३१	११	जनमत	जैनमत
३१	१४	जनादिदर्शनोंका	जैनादिदर्शनोंका
३१	१९	दशन	दर्शन
३२	१	दाशनीकोंक	दार्शनिकोंक
३२	२	जनमत	जैनमत
३५	११	यथाथ	यथार्थ
३८	९	मर्ति	मूर्ति
४३	३	ज्यार	ज्यारे

पृष्ट	ओळी	अशुद्ध	शुद्ध
४३	९	ग्रथो	ग्रंथो
४३	११	माण	प्रमाण
४५	११	निग्रथो	निर्ग्रंथो
४६	१०	जनधर्म	जैनधर्म
४७	६	जनो	जैनो
४७	८	जनआगमो	जैनआगमो
५३	१७	जनोना	जैनोना
६०	१२	पदाथ	पदार्थ

प्रथम भाग.

पृष्ट	ओळी	अशुद्ध	शुद्ध
१२	७	जनधर्म	जैनधर्म
१२नी नोट ८		जनोना	जैनोना
२६	१३	सार्वभाम	सार्वभौम
३२	१९	दिग्दशन	दिग्दर्शन
४१	९	स्वयभ	स्वयंभू
४७	३	लोकाना	लोकोना
४९	२	श्रष्ठ	श्रेष्ठ
४९	६	चतन्य	चैतन्य

पृष्ट	ओली	अशुद्ध	शुद्ध
४९	९	जनयति	जैनयति
४९	९	महावीर	महावीरे
४९	१२	जनोए	जैनोए
६०	८	वत्तु	वर्तेतु
६२	२	कयु	कर्यु
६२	६	क्यु	कर्यु
६७	१४	क्यु	कर्युं
६८	१	आथ	आर्य
६१	८	आश्चय	आश्चर्य
६१	९	धमसम्यापको	धर्मसस्यापको
६२	१७	क्युं	कर्यु
६३	३	जनोना	जैनोना
६३	१३	जनोना	जैनोना
६४	१०	पाखड	पाखंड
६६	८	गन्थो	ग्रन्थोनु
७१	१	० औत्त रिय	छे, तेमा पण औत्तरीय
७१	२	जटली	जेटली

पृष्ठ	ओळी	अशुद्ध	शुद्ध
८१	८	तत्वादम	तत्वादर्श
९१	१०	हमारही	हमारेही
९३	९	दशन	दर्शन
१०७	८	यथाथ	यथार्थ
१२६	१०	यथाथ	यथार्थ
१४०	१	वदका	वेदका
१४४	८	मागमा	मार्गमा
१५३	२	तात्पय	तात्पर्य
१६०	२	अथ	अर्थ
१८९	३	धम	धर्म

भाग बीजो.

पृष्ठ	ओळी	अशुद्ध	शुद्ध
१	९	वाय	वार्य
७	७	जनसिद्धात	जैनसिद्धात
१०	७	ुस्तको	पुस्तको
१०	८	मनव	मनव
११	१७	सत्रालापको	सूत्रालापको
१६	१२	शाी	शास्त्री

पृष्ठ	आळी	अशुद्ध	शुद्ध
२२	७	मल	मूल
२५	१९	चीन	प्राचीन
९९	१	जनवर्मनी	जैनवर्मनी
१०७	८	सत	सर्व
११०	८	म्या	ज्यों
१११	१४	व न	वर्णन
११२	१५	पदाप	पदार्थ
१२९	८	जननीति	जैननीति

आ प्रमाणे केटलाक टाइप छापतां बटके टाइप ऊभी जवाने लीधे अक्षरो, काना मात्रा अने रेफ विगेरेनी अशुद्धिओ थवा पामी छे, माटे वाचनारे सुधारी वांचवा भलामण करीए छीए.